बी.एड. स्पेशल (मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा)

स्व-अधिगम सामग्री

SECD-02

First Year

संवेदी विकलांगता का परिचय

(Introduction to Sensory Disabilities)

मध्यप्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय, भोपाल (म.प्र.)

बी.एड. स्पेशल (मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा)

स्व–अधिगम सामग्री

SECD-02

First Year

संवेदी विकलांगता का परिचय
(Introduction to Sensory Disabilities)

मध्यप्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय,
भोपाल (म.प्र.)

संरक्षक

डॉ० रवीन्द्र कान्हेरे

कुलपति

मार्गदर्शन

श्री अरुण सिंह चौहान

कुलसचिव

संपादक मण्डल

संयोजक

डॉ० वर्षा सागोरकर

निदेशक, बहुमाध्यमीय शिक्षा विभाग

समन्वयक व सलाहकार

डॉ० हेमलता दिनकर

विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग

समन्वयक

डॉ० कंचन जिज्ञासी

रीडर (शिक्षा)

समन्वयक

डॉ० सालेहा सिद्दीकी

लेक्चरर (शिक्षा)

Printed by : **P Square Solutions** Mini Industrial Area, Barari, Mathura-281005

अनुक्रमणिका

इकाई–1	श्रवण बाधिता : प्रकृति तथा वर्गीकरण	5-56
इकाई–2	श्रवण बाधिता के प्रभाव	57-90
इकाई–3	दृष्टिबाधिता : प्रकृति तथा आंकलन	91-124
इकाई–4	दृष्टिबाधितों के शैक्षिक निहितार्थ	125-176
इकाई–5	बहरापन–अंधापन	177-232

NOTES

1 श्रवण बाधिता : प्रकृति तथा वर्गीकरण

अध्याय में सम्मिलित विषय-सामग्री :

- उद्देश्य
- प्राक्कथन
- श्रवण बाधित बालक
- अवधारणा
- परिभाषाएँ
- विशेषताएँ
- भाषा संबंधी विशेषताएँ
- शैक्षिक विशेषताएँ
- बौद्धिक विशेषताएँ
- सामाजिक व व्यवसायिक विशेषताएँ
- सामान्य श्रवण विकास
- श्रवण बाधित बालकों के प्रकार
- कम श्रवण बाधित बालक
- मन्द श्रवण बाधित बालक
- गंभीर श्रवण बाधिक बालक
- पूर्ण श्रवण बाधित बालक
- श्रवण प्रक्रिया
- श्रवण क्षतियुक्तता के कारण
- जाननिक कारण
- जन्म के पश्चात्
- श्रवण बाधिक बालकों की पहचान
- श्रवण बाधित बालकों की पहचान के महत्वपूर्ण संकेत
- श्रवण बाधित बालकों की पहचान हेतु परीक्षण
- कक्षा कक्ष में CWHI के प्रबंधन हेतु युक्तियाँ एवं रणनीतियाँ
- दृष्टि बाधित बालक
- अवधारणा
- परिभाषा

NOTES

- विशेषताएँ
- दृष्टि बाधित बालकों का वर्गीकरण
- आंशिक दृष्टि बाधित बालक
- गंभीर दृष्टि बाधित बालक
- दृष्टि अक्षमता के कारण
- दृष्टि अक्षमता का व्यक्तित्व पर प्रभाव
- दृष्टि विकार
- पहचान
- कक्षा कक्ष में CWVI के प्रबंधन में युक्तियाँ एवं रणनीतियाँ
- आंशिक दृष्टि बाधित बालकों की शिक्षा
- दृष्टि बाधित बालकों की शिक्षा
- दृष्टि बाधित हेतु विस्तारित पाठ्यक्रम
- दृष्टि बाधित के प्रति सामाजिक अभिवृत्तियाँ
- सकारात्मक अभिवृत्तियों के निर्माण व विकास में अध्यापक की भूमिका
- दृष्टि बाधितों की शिक्षा के लिये उपकरण
- परीक्षापयोगी प्रश्न

उद्देश्य–

इस अध्याय अध्ययन के पश्चात् आप निम्न तथ्यों को समझ सकेंगे–

- श्रवण बाधित बालक
- अवधारणा
- परिभाषाएँ
- विशेषताएँ
- भाषा संबंधी विशेषताएँ
- शैक्षिक विशेषताएँ
- बौद्धिक विशेषताएँ
- सामाजिक व व्यवसायिक विशेषताएँ
- सामान्य श्रवण विकास
- श्रवण बाधित बालकों के प्रकार
- कम श्रवण बाधित बालक
- मन्द श्रवण बाधित बालक

NOTES

- गंभीर श्रवण बाधिक बालक
- पूर्ण श्रवण बाधित बालक
- श्रवण प्रक्रिया
- श्रवण क्षतियुक्तता के कारण
- जाननिक कारण
- जन्म के पश्चात्
- श्रवण बाधिक बालकों की पहचान
- श्रवण बाधित बालकों की पहचान के महत्वपूर्ण संकेत
- श्रवण बाधित बालकों की पहचान हेतु परीक्षण
- कक्षा कक्ष में CWHI के प्रबंधन हेतु युक्तियाँ एवं रणीनीतियाँ
- दृष्टि बाधित बालक
- अवधारणा
- परिभाषा
- विशेषताएँ
- दृष्टि बाधित बालकों का वर्गीकरण
- आंशिक दृष्टि बाधित बालक
- गंभीर दृष्टि बाधित बालक
- दृष्टि अक्षमता के कारण
- दृष्टि अक्षमता का व्यक्तित्व पर प्रभाव
- दृष्टि विकार
- पहचान
- कक्षा कक्ष में CWVI के प्रबंधन में युक्तियाँ एवं रणनीतियाँ
- आंशिक दृष्टि बाधित बालकों की शिक्षा
- दृष्टि बाधित बालकों की शिक्षा
- दृष्टि बाधित हेतु विस्तारित पाठ्यक्रम
- दृष्टि बाधित के प्रति सामाजिक अभिवृत्तियाँ
- सकारात्मक अभिवृत्तियों के निर्माण व विकास में अध्यापक की भूमिका
- दृष्टि बाधितों की शिक्षा के लिये उपकरण

NOTES

प्राक्कथन

श्रवण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें ध्वनि की जागरूकता, भिन्नता, पहचान तथा समझने का बोध होता है। श्रवणबाधिता का सरल एवं सामान्य शब्दों में अर्थ की क्षमता में कमी। यह क्षति मनुष्य को दूसरों की बात और वातावरण की अन्य ध्वनियों को सुनने में समस्या उत्पन्न करती है। अत: हम कह सकते हैं कि किसी मनुष्य द्वारा पूरी तरह से ध्वनि सुनने में अक्षम होना श्रवण विकलाँगता कहलाता है। भाषा के विकास के लिए 'सुनना' एक जरूरी प्रक्रिया है। एक छोटा बच्चा आस पास के लोगों के संवाद को सुनकर ही अपनी भाषा का विकास करता है। श्रवण विकलाँगता एक छिपी हुई विकलाँगता है। क्योंकि कोई भी मनुष्य जो श्रवण विकलाँगता से ग्रसित है वह किसी भी प्रकार के शारीरिक लक्षण दर्शाता नहीं है जिससे यह प्रतीत हो कि वह इस विकलाँगता से ग्रसित है। इस विकलाँगता को पहचानने के लिए सूक्ष्म निरीक्षण की जरूरत होती है। श्रवण विकलाँगता व्यक्ति के स्वतंत्र रूप से सोचने तथा सीखने पर गहरा प्रभाव डालती है। श्रवण हमें खतरों से भी सावध ान करता है। जन्म से लेकर जीवन पर्यन्त श्रवण प्रक्रिया हम वातावरण पर नियंत्रण करने में सहायता करती है। ध्वनि तथा कान सुनने की प्रक्रिया के लिए सबसे महत्वपूर्ण है। ध्वनि की सूक्ष्मता को मापने की इकाई को डेसीबल (डी०बी०) (db) कहते हैं।

1.0 श्रवण बाधित बालक (Hearing Impaired Child)

1.1 अवधारणा (Concept)

जब कोई व्यक्ति सामान्य ध्वनि को सुनने में असमर्थ पाया जाता है, तो हमें उसे अक्षम कहा जा सकता है और इस स्थिति को श्रवण क्षतिग्रस्तता कहा जाता है। हमारे देश में इस प्रकार की समस्या से ग्रसित प्राय: हर आयु वर्ग के लोग पाये जाते हैं, जिसके कई कारण हैं। इसका सबसे बड़ा कारण ध्वनि प्रदूषण एवं कई प्रकार की बीमारियाँ हैं। श्रवण क्षतिग्रस्तता को समझने के लिए यह बहुत जरूरी होता है कि इस सामान्य श्रवण प्रक्रिया के विषय में जानकारी रखें।

भारत एक विशाल क्षेत्र वाला देश है। जिसमें 1 अरब से अधिक जनसंख्या वास करती है। इस जनसंख्या के कुछ प्रतिशत लोग किसी-न-किसी विकलांगता से ग्रसित हैं। देखा जाये तो देश की स्वतंत्रता के पश्चात् भी विकलांगता के क्षेत्र में अप्रत्याशित परिवर्तन हुए हैं। जनगणना 1931 के

अनुसार मूल बधिर व्यक्तियों की जनसंख्या 2,31,000 थी। देश की भौगोलिक संरचना के आधार राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण संगठन 1991 के आंकड़ों के आधार पर लगभग 32,42,000 व्यक्ति श्रवण अक्षमता से ग्रसित पाये गये। आंकड़ों के अनुसार श्रवण बाधिता 60 वर्ष या उससे अधिक आयु के व्यक्तियों में बहुत पायी गयी। विभिन्न सर्वेक्षणों के अनुसार पता चलता है कि 1 प्रतिशत बच्चे जन्मजात श्रवण दोष से पीड़ित होते हैं। इस प्रकार हमारे देश में अति अल्प, 25 प्रतिशत अल्प, 19 प्रतिशत अल्पमत्, 42 प्रतिशत गंभीर एवं 12 प्रतिशत अति गंभीर होते हैं। इस तरह चलित श्रवण क्षति, संवेदी श्रवण क्षति, केन्द्रीय श्रवण क्षति एवं मिश्रित श्रवण क्षति समस्त वर्ग के बच्चे पाये जाते हैं। इनके शिक्षण एवं प्रशिक्षण हेतु मानव संसाधन विकसित किये जा रहे हैं। जिससे इनका पुनर्वास किया जा सके।

1.1.1 परिभाषाएं (Definitions)

श्रवण क्षतिग्रस्तता को विभिन्न संगठनों द्वारा समय-समय पर निम्नलिखित प्रकार से परिभाषित किया गया है –

1. राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण संगठन (1991) के अनुसार- "श्रवण बाधित उसे कहा जाता है, जो सामान्य रूप से सामान्य ध्वनि को सुनने में असमर्थ हो।"

2. भारतीय पुनर्वास परिषद् के अनुसार "जब बधिरता 70 डेसीमल हो, तो व्यावसायिक और जब 55 डेसिमल तक हो, तो उसे शिक्षा के लिये उपयोग में लेना चाहिए।"

3. योजना आयोग एवं विकलांग जन अधिनियम (1995) के अनुसार "वह व्यक्ति श्रवण बाधित कहा जायेगा, जो 60 डेसिमल या उससे अधिक डेसिमल पर सुनने की क्षमता रखता हो।"

4. समाज कल्याण के अनुसार "जब किसी मनुष्य के एक कान में 60 डेसिमल श्रवण क्षतिग्रस्तता हो और दूसरा कान अच्छा हो, तो वह उच्च शिक्षा के लिए उपयोगी हो सकता है।"

उपर्युक्त परिभाषाओं से यह असमर्थ होता है कि जब व्यक्ति सुनने में असमर्थ हो तथा दूसरों की सहायता लेता है, उससे यह ज्ञात होता है कि व्यक्ति को श्रवण दोष है। श्रवण दोष एक अदृश्य तथा छुपी हुई विकलांगता है, जो देखने से नहीं दिखाई देती है। कोई व्यक्ति हाथ या

NOTES

पैर से विकलांग है तो वह वैसाखी, व्हील चेयर, ट्राईसाइकिल इत्यादि का प्रयोग करता है। जिससे उसकी शारीरिक विकलांगता का पता चलता है तथा एक मानसिक विकलांग बच्चा अपने हाव-भाव, क्रिया-कलापों तथा व्यवहार यह तय करता है कि वह मानसिक मन्द है।

1.1.2. विशेषताएँ (Characteristics)

श्रवण बाधित बालकों में कई विशेषताएं पायी जाती हैं। इनमें से प्रमुख निम्नलिखित होती हैं–

1. भाषा संबंधी विशेषताएं
2. शैक्षिक विशेषताएं
3. बौद्धिक योग्यता संबंधी विशेषताएं
4. सामाजिक एवं व्यावसायिक विशेषताएं
5. अन्य महत्वपूर्ण विशेषताएं

1.1.2.1 भाषा संबंधी विशेषताएँ (Language Characteristics) – बालकों की भाषा से संबंधित विशेषताएँ निम्नलिखित होती हैं –

(1) श्रवण बाधित बालकों की भाषा भी बहुत प्रभावित होती है।

(2) इनको प्रशिक्षण के द्वारा उचित शिक्षा प्रदान की जाती है।

(3) गंभीर बाधितों में यह सबसे बड़ी परेशानी होती है कि वह बालक का सामान्य विकास नहीं कर पाते।

(4) यह भाषा का बहुत कम प्रयोग करते हैं।

(5) इनके गहन प्रशिक्षण के द्वारा भाषा का सामान्य विकास हो जाता है।

(6) इन बालकों की अभिवृत्ति ऐसी होती है कि वो अपने को बोलने में अयोग्य समझते हैं, किन्तु वह वैज्ञानिक आधार नहीं होता है।

1.1.2.2 शैक्षिक विशेषताएँ (Academic Characteristics) – श्रवण बाधित बालकों की शैक्षिक विशेषताएं निम्नलिखित होती हैं –

(1) इन बालकों में शिक्षा संबंधी कई विशेषताएं होती हैं।

(2) इनका बौद्धिक स्तर तो ऊंचा होता है, किन्तु फिर भी इनकी शैक्षिक उपलब्धि ऊंची नहीं होती।

(3) इन बालकों की शैक्षिक निष्पत्ति के हालात अधिक उच्च नहीं होते, क्योंकि शैक्षिक निष्पत्ति में शाब्दिक योग्यता की भूमिका उच्च होती है।

(4) इन बालकों को पढ़ने में परेशानी होती है, क्योंकि इनकी भाषा का सही विकास नहीं होता है।

1.1.2.3. बौद्धिक विशेषताएँ (Intellectual Characteristics) – बौद्धिक योग्यता संबंधी विशेषताएं निम्नलिखित होती हैं –

(1) श्रवण बाधित बालकों का मानसिक विकास सामान्य बच्चों के समान ही होता है।

(2) इन बालकों में बौद्धिक कार्य सामान्य बच्चों के जैसे ही होते हैं।

(3) इनकी चिन्तन शक्ति सामान्य बच्चों जैसी होती है।

(4) यह बालक अशाब्दिक भाषा से बौद्धिक कार्य करने में सक्षम होते हैं।

(5) इन बालकों की बौद्धिक अशाब्दिक परीक्षा (Non-verbal intelligent test) में इनकी बुद्धि-लाब्धि उच्च होती है।

1.1.2.4 सामाजिक व व्यावसायिक विशेषताएँ (Social and Occupational Characteristics)

सामाजिक व व्यावसायिक विशेषताएँ निम्नलिखित होती हैं –

(1) श्रवण बाधित बच्चे अपने ही समूह में रहना पसंद करते हैं और उनसे संबंध बनाते हैं उनकी रुचियां भी समान होती हैं।

(2) सम्प्रेषण की कठिनाईयों के कारण समाज में इनकी अन्तःप्रक्रिया नहीं हो पाती हैं।

(3) इन बालकों की इच्छाएं तो ज्यादा होती हैं क इन्हें सामाजिक मान्यता मिले व सामाजिक अन्तः प्रक्रिया हो तथा इस इच्छा पूरी न होने से उनमें हीन भावना अधिक हो जाती है।

(4) श्रवण बाधित बालकों के सामाजिक तथा व्यक्तित्व संबंधी विशेषताएं सामान्य बालकों से पृथक होती है।

(5) श्रवण बाधित बालकों में भावात्मक समायोजन में सामान्य बालकों के समान होते हैं। सामान्य बालकों की तरह पर्यावरण के घटक उनके भावनात्मक पक्ष को प्रभावित करते हैं।

NOTES

- **अन्य महत्वपूर्ण विशेषताएं (Other Important Characteristics)** – कुछ शोध अध्ययनों के परिणामस्वरूप यह पता चला है कि श्रवण बाधित बालकों की मानसिक योग्यता कम होती है तथा इनकी शैक्षिक योग्यता एवं समायोजन भी विशेष नहीं होता है।

1.1.3. सामान्य श्रवण विकास (Normal Hearing Development)

बालकों में सामान्य विकास हो रहा है अथवा नहीं, जानने के लिए नीचे दिये गये निर्देशों पर ध्यान देना चाहिए। यदि बच्चे द्वारा इस तरह की अनुक्रियाएँ नहीं की जा रही हैं, तो श्रण दोष की आशंका की जानी चाहिए।

03 माह – यदि ताली की आवाज जोर से दी जाय तो बालक चौंकता है।

6–9 माह – सामान्यतः बच्चे अपने मां की आवाज को पहचानते हैं और उनकी आवाज सुनने पर चुप हो जाते हैं। बच्चों के समक्ष बात की जाये, तो वे मुस्कुराते भी हैं और यदिखेल रहे हैं तो आवा होने पर खेलना बंद कर देते हैं। यदि उनके पास सुखदायी एवं नवीन आवाज उत्पन्न की जाये, तो वे अच्छी तरह सुनते हैं।

6–9 माह – इस आयु के बच्चे आवाज होने पर उस दिशा में गर्दन घुमाकर देखते हैं।

9–18 माह – इस उम्र के बच्चे बुलाने पर देखते हैं तथा कुछ शब्दों को समझते भी हैं, जैसे- मुंह बंद करो, मुंह खोलो इत्यादि। सामान्य निर्देश को समझते हैं।

1½–2½ वर्ष – आग्रह करने पर बालक उस पर प्रतिक्रिया करते हैं, जैसे - मुझे गुड़िया दो। यदि बच्चे का व्यवहार का सावधानीपूर्वक आकलन करते हैं, तो प्रायः श्रवण दोष की पहचान की जा सकती है।

1.1.4. श्रवण बाधितों का वर्गीकरण / प्रकार (Classification/Types of Hearing Impairment)

जिन बालकों को सुनने में बहुत कठिनाई का सामना करना पड़ता है, वह श्रवण बाधित कहलाते हैं। इनमें ध्वनि को सुनने की क्षमता से 1 से 130 डेसीबल्स (Desibles) तक होती है। यदि वह 130 डी.बी. से ऊपर जाये, तो यह आवाज दर्द की संवेदना देती है। श्रवण-बाधित बालकों को दो वर्ग में विभक्त किया जाता है –

1.1.4.1 कम श्रवण बाधित बालक (Mild Hearing Loss Child) – कम श्रवण बाधित बच्चे होते हैं, जिन्हें सामान्य स्तर पर बोलने पर सुनायी देता है, किन्तु यदि बहुत धीमी बोला जाये, तो यह सुन नहीं पाते हैं। इनकी बातचीत को सामान्य स्तर 65 डी.बी. होता है। यह बाक किंचित श्रवण बाधित बालकों को 31 से 51 डी.बी. की श्रवण बाधिता लिए हुए होते हैं। यानि कि यह बालक 54 डी.बी. तक की आवाज नहीं सुन पाते हैं, इसलिए इन्हें कम श्रवण बाधितों की श्रेणी में माना जाता है।

1.1.4.2 मन्द श्रवण बाधित बालक (Moderate Hearing Loss Child) – यह बच्चे मंद रूप से श्रवण बाधितों की श्रेणी में इसलिए आते हैं क्योंकि वह बालक 55 से 69 डी.बी. का क्षय रखते हैं। अत: सामान्य स्तर 65 डेसीबल्स पर यह नहीं सुन पाते हैं। अत: ये बच्चे कम सुनते हैं।

1.1.4.3. गंभीर श्रवण बाधित बालक (Severely Hearing Impaired Child) – इन बालकों में 70-80 डी.बी. तक की श्रवण बाधिता होती है तथा वे बालक काफी कम सुनते हैं।

1.1.4.4. पूर्ण श्रवण बाधित बालक (Profoundly Hearing Loss Child) – यह बालक कतई नहीं सुन पाते हैं। इनकी श्रवण बाधिता 90 डी. बी. एवं इससे आगे के स्तर की जोती है। यह बहुत ऊँचा बोलने पर थोड़ा – सा ही सुन पाते हैं। यह बालक बधिर (Deaf) की श्रेणी में आते हैं।

1.1.5. श्रवण प्रक्रिया (Hearing Procedure) – व्यक्ति विशेष की वैसी अक्षमता जो उस व्यक्ति में सुनने की बाधा पैदा करती है। श्रवण अक्षमता कहलाती है। इसमें श्रवण–बाधित व्यक्ति अपनी श्रवण शक्ति को अंशत: पूरी तरह गंवा देता है तथा उसे सांकेतिक भाषा पर निर्भर रहना पड़ता है। श्रवण अक्षमता को सही तरीके से समझने के लिए यह आवश्यक है कि सर्वप्रथम श्रवण प्रक्रिया (Hearing procedure) को समझने की कोशिश की जाये कि वास्तव में श्रवण प्रक्रिया किस प्रकार संचलित होती है। श्रवण प्रक्रिया अनेक चरणों में होकर सम्पन्न होती है जो कि निम्नानुसार है –

श्रवण प्रक्रिया में कान के द्वारा ध्वनि को ग्रहण करना और संदेश को केन्द्रीय तंत्रिका तंत्र (सेन्ट्रल नर्वस सिस्टम) में भेजना सम्मिलित है। श्रवण प्रक्रिया से लोग अपने आस-पास के वातावरण से संबंध रखते हैं। जो भाषा को सीखने का एक मुख्य मार्ग है। श्रवण हमें खतरों से भी सावधान करता है। जन्म से लेकर जीवन भर श्रवण प्रक्रिया हमें पर्यावरण पर नियंत्रण करने के

NOTES

श्रवण प्रक्रिया अनेक चरणों से होकर सम्पन्न होती है। इसमें सर्वप्रामि बाह्य वातावरण की ध्वनि कर्ण से टकराकर वाह्य कर्ण नलिका में प्रवेश करती है, जो कान के पर्दे के सम्पर्क में आकर विशेष प्रकार के तंतुओं से जुड़ी मध्य कर्ण की अस्थियों से टकराती है तथा आगे बढ़ती हुई, वहीं ध्वनि फेनेस्ट्रो ओवलिस में पहुँचती है। इससे स्कैला बेस्टीबुला में कम्पन्न होने लगता है।

इस कम्पन्न के परिणामस्वरूप कण। के अन्तः भाग के रिनर्स झिल्ली से होते हुए ध्वनि टेक्टोरियस झिल्ली में पहुँचती है, जिससे हलचल पैदा होती है। यह झिल्ली हलचल को समायोजित करके ध्वनि को आगे की तरफ प्रेषित करती है। इसे काटांई नामक अंग ग्रहण करके 8वीं श्रवण तंत्रिका में भेज देता है। श्रवण तंत्रिका उपयुक्त ध्वनि को मस्तिष्क में भेज देती है, जिसके परिणामस्वरूप व्यक्ति को ध्वनि का प्रत्यक्षण होता है। इस सम्पूर्ण श्रवण प्रक्रिया को दिये गये निम्नलिखित सूत्र एवं चित्र के माध्यम से आसानी से समझा जा सकता है।

श्रवण दोष बच्चे की वाक् उत्तेजना में बाधा डालता है। जबकि भाषा – विकास के लिए सामान्य श्रवण का होना जरूरी होता है। श्रवण दोष का अंश जो एक सामान्य बुद्धि वाले मनुष्य में समस्या नहीं उत्पन्न करता, वहीं मानसिक मंद बच्चे में बड़ी समस्या खड़ी कर सकता है। डाउन सिंड्रोम से ग्रसित अधिकांश बच्चों में श्रवण दोष तथा कान के संक्रामक रोग देखे गये हैं।

सुनना (Listening) –

श्रवण प्रक्रिया और सुनना एक ही प्रक्रियाएं नहीं है। सुनना एक श्रवण प्रक्रिया है, जिसका उद्देश्य अर्थ निकलना है अथवा शब्दों के अर्थ देने के उद्देश्य से शब्द ग्रहण करना होता है। इसमें प्रमुख रूप से सम्मिलित प्रक्रिया है। इसकी तुलना में श्रवण प्रक्रिया एक शारीरिक क्रिया है।

श्रवण दोष –

श्रवण दोष के तात्पर्य सुनने की अक्षमता है। श्रवण दोष व्यक्ति में दूसरों की बात और वातावरण की अन्य ध्वनियों को सुनने में परेशानी उत्पन्न होती है।

1.1.6. श्रवण क्षतियुक्तता के कारण

बालकों के विकास को जन्म से पहले जन्म के समय तथा जन्म के बाद विभिन्न कारक प्रभावित करते हैं श्रवण क्षतियुक्तता के निम्न कारण हैं –

श्रवण क्षतियुक्तता के कारण

जन्म के पूर्व व जन्म के समय	जन्म के पश्चात
जाननिक कारण	बीमारी
जर्मन खसरा	दुर्घटना
गर्भावस्था में श्रवण शक्ति	उच्च ध्वनि
असामयिक प्रसव	आयु
असुरक्षित प्रसव	असंतुलित आहार

1.1.6.1 जाननिक कारण – आनुवंशिकता श्रवण संबंधित दोषों का प्रमुख कारण है। सामान्यत: यह देखा गया है कि जिन बालकों के माता-पिता बहरे होते हैं उन्हें श्रवण दोष देखने को मिलता है। यदि बहुत निकट संबंधी आपस में विवाह करते हैं तब इस तरह के दोष की संभावना रहती है। जन्मजात श्रवण दोष का कारण जाननिक तब भी हो सकता है जब माता-पिता और अन्य भाई बहनों में यह दोष न हो क्योंकि यहाँ श्रवण दोष का कारण माँ अथवा पिता या दोनों में विद्यमान जीन्स हो सकते हैं। श्रवण दोष जीन्स की निम्न विशेषताओं की वजह होती है :

(i) माता तथा पिता दोनों में विद्यमान एक अपगामी जीन्स

(ii) माता और पिता दोनों में से किसी में विद्यमान प्रबल जीन्स

(iii) लिंग संबंधी जीन्स जो सिर्फ माँ में होता है और केवल पुत्र को प्रभावित करता है।

(2) जर्मन खसरा – 1980 में जर्मन खसरा एक महामारी के रूप में फैला यह देखा गया कि जो गर्भवती माताएं इस बीमारी से पीड़ित हुई उनके बालक श्रवण क्षतियुक्त हुई। तब यह निष्कर्ष निकाला गया कि जर्मन खसरा भी श्रवण विकलांगता का एक वजह है।

(3) गर्भावस्था में श्रवण क्षतियुक्तता – जब बालक गर्भ में होता है तब उस समय श्रवण दोष होने की संभावना होती है। इसके निम्न कारण हो सकते हैं –

(i) माँ कोई जहरीले खाद्य पदार्थों का सेवन कर ले।

(ii) शराब का सेवन करें।

NOTES

(iii) असंतुलित भोजन ग्रहण करें।

(iv) दूषित भोजन करें।

(v) बीमार रहे।

(4) असामयिक प्रसव – असामयिक प्रसव की श्रवण दोष उत्पन्न करता है हालांकि यह अभी निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता है। कभी-कभी इससे पैदा हुए बालक में श्रवण दोष दिखाई पड़ता है।

(5) असुरक्षित प्रसव – यदि प्रसव के समय रक्त प्रवाह ज्यादा हो जाये या रक्त का विकृत संचार हो ऑक्सीजन की कमी हो तो तब बालक के श्रवण यंत्र कुप्रभावित हो जाते हैं।

1.1.6.2. जन्म के पश्चात

अधिकतर ऐसा देखने में आता है कि जन्म के समय बालक सामान्य होता है किन्तु विकास के चलते उसका श्रवण यंत्र प्रभावित हो जाता है जिसके निम्न कारण हो सकते हैं।

(1) बीमारी – कुछ बीमारियाँ इस प्रकार की होती हैं जो कि कभी-कभी श्रवण दोष पैदा करती हैं। जैसे- (i) कनफड़ा (ii) खसरा, (iii) चेचक, (iv) मोतीझरा, (v) कुकर खांसी, (vi) कान में मवाद।

(2) दुर्घटना – कोई दुर्घटना भी मनुष्य के श्रवण यंत्र को नुकसान पहुँचा सकती है। जिससे कि श्रवण दोष हो सकता है। किसी लकड़ी अथवा पिन के कान का मेल निकालते समय भी बालक अन्जाने में कर्ण पटल को नुकसान पहुंचा देते हैं। जिससे कभी-कभी श्रवण दोष हो सकता है।

(3) उच्च ध्वनि – कभी-कभी जोर से धमाका कर्ण पटल को फाड़ देता है। इसी प्रकार लगातार उच्च ध्वनि को सुनते रहने से कान केवल उच्च ध्वनि को ही पकड़ पाते हैं। सामान्य ध्वनि धीमी गति से बोले गये शब्द वह अच्छी तरह से नहीं सुन पाते हैं। इस प्रकार उच्च ध्वनि भी श्रवण दोष उत्पन्न करती है।

(4) आयु – वृद्धावस्था में शारीरिक तंत्र कमजोर पड़ने लगते हैं। अतः सुनाई कम पड़ने लगता है। अतः आयु के साथ-साथ व्यक्ति का श्रवण यंत्र प्रभावित होता जाता है।

NOTES

शक्ति ऋणात्मक रूप से प्रभावित होती है। इसी वजह यह है कि बालक के श्रवण यंत्र के कोमल तंतुओं को जीवित रहने व विकास करने के लिए ऊर्जा नहीं मिलती है।

1.2. श्रवण बाधिता की पहचान (Identification of Hearing Impairment)

श्रवण बाधिता की पहचान सामान्यतः माता-पिता एवं परिवार के सदस्यों द्वारा ही हो जाती है। जिसका सत्यापन भले ही चिकित्सक (Doctors) द्वारा जाँच के बाद किया जाये।

बच्चे को देखकर

कुछ प्रकार के बहरेपन शारीरिक स्थितियां लक्षणों से जुड़े हो सकते हैं। इस तरह के लक्षणों को देखकर इसकी पहचान की जा सकती है, जैसे -

1. बाह्य कान का जन्म से न बना होना इसका 'एट्रीशिया' भी कहते हैं।
2. "वार्डन वर्ग सिन्ड्रोम" सिर पर बीच बालों का सफेद होना। इस प्रकार की स्थितियां एक प्रतिशत से भी कम बालकों के बहरेपन के लिए उत्तरदायी हो सकती है और आमतौर पर बहरेपन को देखकर पहचान करना मुश्किल हो जाता है।

व्यवहार देखकर –

बहरेपन से ग्रस्त लोगों में कुछ विशेष प्रकार के व्यवहार देखे जा सकते हैं। और इनकी मदद से एक बड़े प्रतिशत एक बहरेपन की पहचान भी की जा सकती है। इनमें निम्नलिखित प्रकार के व्यवहार शामिल हो सकते हैं –

1. कान के पीछे हाथ लगाकर सुनने की कोशिश करना।
2. बहुत जोर से बोलना।
3. बात सुनते हुए आंखों पर सामान्य से ज्यादा निर्भर होना।
4. वाचक के चेहरे और होठों पर अधिक ध्यान देना।
5. बोलने में कुछ विशेष उच्चारण दोष के कारण उच्च आवाजें, जैसे- अ. ई.ऊ., श, स,म,च आदि।
6. असंगत रूप से अपने आप में खोये रहना।

NOTES

7. चेहरे के हाव-भाव एवं मुद्रा द्वारा भी ध्वनि दोष को पहचाना जा सकता है।

8. पैरों से ध्वनि करते हुए चलने से भी इसकी पहचान की जा सकती है।

1.2.1. श्रवण बाधितों की पहचान के महत्वपूर्ण संकेत (Main symptoms of Hearing Impaired Children) – श्रवण बाधितों की पहचान के कुछ अन्य संकेत निम्नलिखित हैं –

1. गले में और कान में घाव रहता है।

2. इनमें वाणी दोष पाया जाता है।

3. सीमित शब्दावली पायी जाती है।

4. यह चिड़चिड़े होते हैं।

5. भाषा का सही विकास नहीं होता है।

श्रवण बाधित बालकों की पहचान जितना शीघ्र हो सके, कर लेना चाहिए। यदि जल्दी ही बच्चे की पहचान कर ली जाये, तो उनमें वाणी एवं भाषा का विकास किया जा सकता है और श्रवण दोष के प्रभाव को भी कम कर सकते हैं। सामान्यतः विशेषज्ञों का मानना है कि श्रवण-दोष की पहचान जन्म के समय ही कर लेनी चाहिए। जितनी जल्दी इसकी पहचान की जायेगी, उतनी ही शीघ्र इन्हें सामान्य समाजसे जोड़ा जा सकता है तथा इन बच्चों में होने वाली बहुत सी- मनोवैज्ञानिक परेशानियों को कम किया जा सकता है। आधुनिक विशेषज्ञों ने श्रवण बाधितों को निम्नलिखित चार वर्गों में विभाजित है, जो कि निम्नलिखित हैं –

(1) केन्द्रीय श्रवण दोष (Central Auditory Defects)

(2) मनोजैविक श्रवण बाधित (Psychologenic Hearing Loss)

(3) नाड़ी संस्थान श्रवण बाधित (Sensory Neural Hearing Loss)

(4) आचरण में श्रवण बाधिता (Conductive Hearing Loss)

केन्द्रीय श्रवण दोष (Central Auditory Defects) – यह वह बालक होते हैं, जो कि जटिल बाधिता से पीड़ित होते हैं। इस प्रकार के बालक ध्वनि के बारे में जानते तो हैं, परंतु इसका अर्थ नहीं समझ पाते तथा इसकी सम्प्रेक्षण परेशानी भी काफी गंभीर होती है। यह दोष दवाओं के सेवन से आ

सकते हैं, इसलिए इनके सुधार से ज्यादा समय लगता है।

(2) मनोजैविक श्रवण बाधित (Psychologenic Hearing Loss) – इस प्रकार की बाधिता का कारण मनोवैज्ञानिक होता है। यह बालक अपनी परेशानियों को बढ़ा-चढ़ा कर बताते हैं। इन बालकों में किसी रोग के कारण ही बाधिता आ जाती है। कई बार यह पहचानना कठिन होता है कि यह दोष मनोवैज्ञानिक है अथवा जैविक। इन बालकों के उपचार में बहुत सावधानी रखनी चाहिए।

(3) नाड़ी संस्थान श्रवण बाधित (Sensory Neural Hearing Loss) – बालकों में नाड़ी संस्थान के दोष के कारण यह दोष आता है। अतः इसका उपचार करना संभव नहीं हो पाता है। यह बालक श्रवण यंत्रों की मदद से सुनते हैं। इन्हें शिक्षा देने हेतु अलग-अलग प्रावधानों का प्रयोग किया जाता है। यह होठों की भाषा (Lip reading) के द्वारा ज्ञान प्राप्त करते हैं और इन्हें विशिष्ट विद्यालयों में प्रवेश दिया जाता है।

(4) आचरण में श्रवण बाधिता (Conductive Hearing Loss) – साधारण रूप में ऐसे बाधित बच्चे आचरण दोषी होते हैं। यह दोष काने के रोगों से संबंधित होते हैं। यदि चिकित्सक इनका उपाय करें तो ठीक हो सकते हैं, परंतु कई बार चिकित्सकों की गलती से यह और अधिक बाधित हो जाते हैं।

श्रवण बाधित बालकों की पहचान हेतु परीक्षण (Test for Identification of Hearing Impaired Children)

श्रवण बाधित बालकों की पहचान उनके बोलने से ही हो जाती है, किन्तु इन्हें पहचानने के लिए कई चिकित्सकीय परीक्षण करने पड़ते हैं, क्योंकि कक्षा में श्रवण बाधित बालक आसानी से शिक्षकों की दृष्टि में नहीं आते हैं, अतः इन्हें पहचानने हेतु अधिक प्रकार की अन्तः क्रियाएं करनी पड़ती हैं, तभी बड़ी कक्षा में ऐसा होना संभव नहीं हो पाता है, अतः बालकों के प्रवेश के समय ही उनका परीक्षण करवा लेना उचित रहता है। बालकों को विद्यालय में प्रवेश दिलाने समय उन्हें अध्यापक को बालकों की सुनने की क्षमता के बारे में बता देना चाहिए। अतः श्रवण बाधितों को निम्नलिखित आधार पर पहचाना जाता है–

1. चिकित्सीय परीक्षण (Medical Examination)
2. विकासात्मक मापनी (Development Scale)

NOTES

3. बालक का अध्ययन (Case study of the child)

4. मनो-नाड़ी परीक्षण (Neuro-phychological Test)

5. बालकीय व्यवहार का निरीक्षण (Systematic Observation of the Child Behaviour)

(1) चिकित्सीय परीक्षण (Medical Test) – चिकित्सीय परीक्षण की मापनी के द्वारा श्रवण बाधितों को पहचान आसान होता है। इसमें चिकित्सक की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होती है। श्रवण बाधिता बालकों के व्यक्तित्व को बहुत ज्यादा बाधित करती है।

(2) विकासात्मक मापनी (Development Scale) – इन बालकों की पहचान के लिए उनकी विकासात्मक अवस्थाओं को ध्यान में रखना बहुत आवश्यक होता है। बालकों की ज्ञानेन्द्रियों तथा विकास की अवस्थाओं में प्रत्यक्ष संबंध पाया जाता है। अत: विकासात्मक मापनी बहुत उत्तम मापनी है।

(3) बालक का अध्ययन (Case study of the child) – यह सबसे उत्तम विधि होती है। इसके अंतर्गत बालक के जन्म से लेकर वर्तमान स्थितियों तक की समस्त सूचनाओं को संकलित किया जाता है तथा इसी के आधार पर ही श्रवण बाधिता के कारणों का पता चल जाता है। इस विधि से ही समस्याओं का निदान भी निकाल लिया जाता है। इस विधि से बच्चों की बीमारियों का पूर्ण इतिहास पता लगाया जा सकता है।

(4) मनो-नाड़ी परीक्षण (Neuro-phychological Test) – यह एक अन्य प्रकार की मापनी है। जिसकी मदद से श्रवण बाधितों की नाड़ी की क्रियाओं का आंकलन किया जाता है। यह एक मानसिक दोष है। बहुत से श्रवण बाधितों में यह दोष पाया जाता है एवं एक योग्य चिकित्सकों के द्वारा ही इसका उपचार किया जा सकता है।

(5) बालकीय व्यवहार का निरीक्षण (Systematic Observation of the Child's Behavior)– यह निरीक्षण श्रवण बाधितों की पहचान हेतु उत्तम माना जाता है, इसके अंतर्गत बालकों के निम्न व्यवहारों को पहचाना जाता है –

(i) बच्चा यदि सिर एक तरफ मोड़कर सुने तो वह बाधितों की श्रेणी में आते हैं।

(ii) वह अनुदेशन अनुसरण नहीं कर पाते हैं।

(iii) इन बालकों की दृष्टि अक्सर बोलने वाले बालकों के अथवा शिक्षकों के मुंह की तरह होती है।

(iv) यह वाणी बाधित भी हो सकते हैं।

कक्षा कक्ष में CWHI के प्रबंधन हेतु युक्तियाँ एवं रणनीतियाँ

NOTES

बालक के श्रवण क्षतियुक्त होने के फलस्वयप कई कठिनाईयां उत्पन्न होती है। बालक में भाषा अथवा बोलने का विकास नहीं हो पाता है, जिसके कारण इन्हें सामान्य कक्षा में सामान्य बालकों के साथ पढ़ाना या शिक्षा दोनों में कठिनाई हो जाती है, अतः अनेक प्रविधियों की मदद से इन्हें शिक्षित किया जा सकता है यह विधियां/प्रविधियां निम्न हैं –

श्रवण क्षतियुक्त बालकों की शिक्षा

सम्प्रेषण तकनीकें	शिक्षक तकनीकें
चिन्ह भाषा	सहायता सामग्री द्वारा
ओष्ठ भाषा	कम्प्यूटर सहायता प्राप्त अनुदेशन
स्पर्श विधि	व्यक्तिगत तकनीकी अनुदेशन
प्रवर्धक प्रयोग	
विशेष शिक्षक की मदद	
संकेत भाषा	
गतिविधि	

(I) सम्प्रेषण तकनीकें –

(1) चिन्ह भाषा – अत्यधिक ऊंचा सुनने वाले एवं बधिर बालकों के लिए चिन्ह भाषाओं का प्रचलन है जैसे –

(i) चिन्हित अंग्रेजी

(ii) अमेरिकन चिन्ह भाषा

(iii) अंगुली वर्णमाला आदि यह चिन्ह भाषाएं एक-दूसरे से अलग होती हैं अब विशेषज्ञ चिन्ह भाषा को प्रमाणित कर रहे हैं ताकि उसे ज्यादातर स्कूलों में बोला जा सकता है।

NOTES

(2) ओष्ठ पठन – ओष्ठ पठन में बालकों को होठों के हितने और गति के आधार पर वर्णों एवं शब्दों को पढ़ने की शिक्षा दी जाती है। ओष्ठ पठन की अपनी कुछ कठिनाईयां हैं –

(i) एक बधिर बालक एक सामान्य गति से बोले गये वाक्य को सिर्फ 25% ही समझ सकता है।

(ii) कुछ ध्वनियों जैसे p,b,m, i ka, F को उच्चारण करते समय ओठ लगभग समान गति से हिलते हैं जिससे समझने में परेशानी होती है।

(iii) बालक का ध्यान विभाजित हो जाता है क्योंकि भाषा ध्यान ओठों की गतियों पर आधा ध्यान कही गयी बात पर केन्द्रित करता है, परिणामस्वरूप यह सम्पूर्ण बात को नहीं समझता है।

(3) संकेत भाषा – संकेत भाषा के ओठों को पढ़ने के साथ-साथ से मुंह के निकट ही संकेत दिये जाते हैं संकेत उसी भाषा के होते हैं जिसमें कि बोला जाता है इस भाषा के निम्न लाभ हैं–

(i) इसमें उसी व्याकरण का उपयोग है जो बोली जाती है।

(ii) इसमें बच्चे को आसानी से सुनने वाले भागों के साथ सम्प्रेषण कर सकता है।

संकेत भाषा के लिए छोटे-छोटे वाक्य, मुहावरे, धीरे-धीरे व साफ बोलना चाहिए जिससे बालक जल्दी ही बोली गयी बात समझना सीखेगा।

(4) गति विधि – इसमें बालकों को सम्प्रेषण हेतु शरीर की विभिन्न गतियां करवा कर मदद दी जाती है।

(5) स्पर्श विधि – इसमें बालकों को स्पर्श के द्वारा समझाने की कोशिश की जाती है।

(6) प्रवर्धक प्रयोग – सम्प्रेषण के लिए ध्वनि प्रवर्धक यंत्रों का प्रयोग किया जाता है। यह सिर्फ उन बालकों के लिए उपयुक्त है जो ऊँचा सुनते हैं जो बालक बधिर हैं उनके लिए यह उपयुक्त नहीं है सम्प्रेषण की इन विधियों अथवा प्रकारों का प्रयोग इस बात पर निर्भर करता है कि बालक का श्रवण दोष कितना है तथा किन परिस्थितियों में रह रहा है। इन बालकों की कक्षा में कुर्सी सामान्य बालकों से ऊँची होनी चाहिए। जिससे वह अध्यापक के होठों की गति पढ़ सके। कक्षा को गोलाकार भी बैठाया जा सकता है।

NOTES

(II) शिक्षण तकनीकें – श्रवण क्षतियुक्त बालक के लिए निम्नलिखित विधियों का प्रयोग उनके सिखाने हेतु किया जा सकता है।

(1) शिक्षा सहायक सामग्री द्वारा – विभिन्न सहायक सामग्री जैसे - चार्ट, मॉडल आवृत्तियां, चित्र, श्यामपट, संकेत, इशारे, प्रयोग आदि द्वारा विषय वस्तु को प्रभावकारी रूप में पढ़ाया जा सकता है। जिसके बधिर/ऊंचा सुनने वाले बालकों की सहायता हो सकती है।

(2) कम्प्यूटर सहायता प्राप्त अनुदेशक द्वारा – आजकल श्रवण क्षतियुक्त बालक के लिए कम्प्यूटर का प्रयोग किया जाता है इनका प्रयोग और पुर्नवास के लिये सफलतापूर्वक किया जा सकता है। इनका प्रयोग कम्प्यूटर प्राप्त अनुदेशक के लिए भी किया जाता है।

(3) तकनीकी प्रोग्राम्स द्वारा – श्रवण क्षतियुक्त बालकों की शिक्षा हेतु कुछ तकनीकी कार्यक्रम बनाये जाते हैं जो इनको सिखाने में सहायता करते हैं। रोचेस्टर तकनीकी विधान संस्था में स्थित बधिर राष्ट्रीय तकनीकी संस्था के इस प्रकार के प्रोग्राम उपलब्ध हैं। इन्हें भारतीय संदर्भ में परिवर्तित करके नये प्रोग्राम बनाये जा सकते हैं।

(4) विशेष शिक्षक की सहायता द्वारा – इन बालकों के लिये एक विशेष शिक्षक को नियुक्त किया जाना जरूरी है। यह विशेष शिक्षक श्रवण क्षतियुक्त बच्चों हेतु उनके शिक्षण हेतु प्रशिक्षित हो ऐसा जरूरी होना चाहिए। इनके लिए अन्य शिक्षकों व माता-पिता का सहयोग जरूरी है। शिक्षक यह सुनिश्चित करता है कि बालकों की अधिगम की कमियां प्रारंभिक स्तर पर ही सुधार कर लेता है तब बालक शब्द को ठीक तरीके लिखते अथवा बोलते हैं या नहीं। यदि शिक्षक प्रारंभिक स्तर पर ही सुधार कर लेता है तब बालक में सही समझ विकसित होती जाती है। शिक्षक द्वारा बार-बार में प्रश्न पूछना अनिवार्य है जिससे यह पता लगाया जा सकता है कि बालक को कितना समझ आया है।

इन बालकों को एक नोट लेने वाले व्यक्ति की मदद प्राप्त होनी चाहिए ताकि शिक्षक द्वारा कही बातों को वह नोट कर सके अन्यथा बालक के सहपाठी द्वारा नोट्स की कार्बन कॉपी की जा सकती है जिससे श्रवण क्षतिपयुक्त छात्र की सहायता हो सकती है।

NOTES

गतिविधि-1

श्रवण बाधितों के विशेष विद्यालय में सर्वे करे व उनकी समस्याओं का विश्लेषण करें।

2.0 दृष्टि बाधित बालक

2.1 अवधारणा

नेत्र मानव शरीर का एक प्रमुख ज्ञानेन्द्रिय हैं, जिसका काम किसी वस्तु को देखना है। यदि इनकी कार्यक्षमता अवरूद्ध हो जाये तो पूर्णरूप से निष्क्रिय हो जाये, तो मानव दृष्टि जैसी प्राकृतिक उपहार से वंचित हो जाता है। ऐसी परिस्थिति में व्यक्ति अपने जीवन को निरर्थक समझने लगता है तथा अपने भाग्य को कोसता है। आज के वैज्ञानिक युग में तीव्रगति से प्रगति करते हुए, मानव ने ऐसे साधन खोज निकाले हैं, जिनके द्वारा मनुष्य अपनी ज्ञानेन्द्रियों की गतिशीलता तथा कार्यक्षमता अर्थात् सुनने, सूँघने, स्वाद लेने और छूने की शक्ति को बढ़ाकर जीवन को व्यवस्थित कर सकता है।

नेत्र मनुष्य व समस्त जीवों के लिए प्रकृति की एक बहुमूल्य देन है। यह फोटो कैमरे की भांति काम करती है। नेत्र में वस्तुओं के वास्तविक प्रतिबिम्ब रेटिना पर बनते हैं। नेत्र का एक विशिष्ट प्रकार का प्रकाशिक यंत्र है। इसका लेंस प्रोटीन से बने पारदर्शी पदार्थ का बना होता है। नेत्र के निम्नलिखित भाग होते हैं –

1. **दृढ़ पटल (Sclerotic)** – मनुष्य का एक खोखले गोले के समान होता है। यह बाहर से एक दृढ़ एवं अपारदर्शी श्वेत परत से ढका रहता है। इस परत को दृढ़ पटल करते हैं। यह नेत्र के भीतरी भागों की सुरक्षा करता है।

2. **रक्तक पटल (Choroid)** – दृढ़ पटल के भीतरी पृष्ठ पर लगी काले रंग की झिल्ली को रक्तक पटल कहते हैं। रक्तक पटल आँख पर आवर्तित होने वाली प्रकाश का शोषण करता है, इसे कोरॉइड भी कहा जाता है।

3. **श्वेत मण्डल (Cornea)** – यह एक कठोर पारदर्शी गोलीय संरचना होती है, जो आंख में रोशनी का अपवर्तन करती है।

4. **परितारिका (Iris)** – कार्निया के पीछे के रंगीन तथा अपारदर्शी झिल्ली का पर्दा होता है, जिसे आइरिस कहते हैं।

5. **पुतली (Pupil)** – आइरिस के मध्य में एक छिद्र होता है, जिसे पुतली या नेत्र तारा कहते हैं। यह गोल तथा काली कहते होती है।

पूर्व काल से ही शारीरिक विकलांगता के क्षेत्र में सबसे अधिक रूप से दृष्टिहीनों को स्वीकारा जाता है, किन्तु उनका जीवन समाज में दया, सहानुभूति व भिक्षावृत्ति पर आश्रित रहा है। तथापि इतिहास ने हमें सूरदास जैसे प्रख्यात भक्ति कवि दिये, जो जन्मान्ध थे। लुई ब्रेल, जिन्होंने चक्षुहीनों को स्पर्श के द्वारा पढ़ने हेतु सफल विधि देकर अत्यंत ही बड़ा व सराहनीय कार्य किया। वे स्वयं भी चक्षुहीन थे। आज के समय में चक्षुहीन विभिन्न औद्योगिक प्रशिक्षण ग्रहण करने के अलावा क्रिकेट व पैराशूट द्वारा वायुयान के कूदने जैसे अद्‌भुत प्रदर्शन करने लगे हैं।

चक्षुहीनता एक सरलतापूर्वक पहचानी जाने वाली विकलांगता है, परंतु इसका अर्थ इसके संदर्भ के साथ परिवर्तन हो जाता है। चक्षुहीनता जीवन के प्रत्येक स्तर पर आंकी जा सकती है, जैसे- स्वार्थान्ध, मदान्ध, पदान्ध आदि।

परिभाषाएँ (Definition)

दृष्टिहीनता के समय-समय पर विभिन्न दृष्टिकोण से परिभाषित किया गया है। आयुर्विज्ञान में दृष्टिहीनता का तात्पर्य नेत्रों से कुछ भी न देखने की स्थिति है।

1. **शैक्षिक दृष्टि से** – "दृष्टिबाधिता एक ऐसा दृष्टि विकास है, जिसके फलस्वरूप दृश्य - सामग्री के प्रयोग से शिक्षण आशिंक रूप से भी संभव न हो सके।"

2. **चिकित्सीय दृष्टि से** – चिकित्सीय विधि से दृष्टिबाधिता की परिभाषा दृष्टि-तीक्ष्णता (Visual acuity) तथा देखने के क्षेत्र (Field of vision) पर आधारित है। जिसको अग्रलिखित दो प्रकार से परिभाषित किया जा सकता है -

    1. **दृष्टि-तीक्ष्णता के आधार पर** – सभी प्रकार के उपाय करने के पश्चात् व्यक्ति किसी वस्तु तो 20 फीट की दूरी पर नहीं देख पाता, जबकि सामान्य मानव उस वस्तु को 200 फीट की दूरी पर देखता है, तो उस मानव को दृष्टिहीन कहा जाता है। दृष्टि-तीक्ष्णता को

NOTES

20/200 के रूप में लिखा जाता है। यह प्रदर्शित करता है कि मानव वस्तु को किस-किस दूरी तक देख सकता है।

2. **देखने वे नेत्र के आधार पर** – दृष्टि विकृत व्यक्ति के देखने के क्षेत्र का व्यास 20° से ज्यादा नहीं होना चाहिए तथा उनकी दृष्टि-तीक्ष्णता 20/200 से अधिक अच्छा होना चाहिए।

विशेषताएँ (Characteristics)

मानव के जीवन में दृष्टि का सबसे महत्वपूर्ण स्थान है, क्योंकि जीवन में प्रत्येक अनुभव मानवों की दृष्टि से ही संबंधित होते हैं तथा दृष्टि बाधित व्यक्ति का जीवन भी बाधित हो जाता है पर जिस प्रकार से हम देखते हैं, कि एक विकलांग बालक जो कि अपने हाथ-पैरों से लाचार है, वह भी अपना काम करता ही है। ठीक उसी प्रकार से दृष्टि बाधित बच्चे भी किसी-न-किसी प्रकार से अपना खुद का कार्य कर ही लेते हैं, परंतु विकलांगों की तरह ही दृष्टि बाधित बालकों में भी अनेक विशेषताएँ पायी जाती हैं। यह निम्नलिखित हैं-

1. दृष्टि बाधितों की मानसिक योग्यता (Intellectual Abilities of Visually imparired)
2. दृष्टि बाधितों की भाषा का विकास (Language Development of Visually Impaired)
3. दृष्टि बाधितों के सामाजिक व समायोजन संबंधी कार्य (Social and work adjustment of Visually Impaired Children)

1. दृष्टि बाधितों की मानसिक योग्यता (Intellectual Abilities of Visually Imparired)–

दृष्टि बाधित बच्चे वह होते हैं, जो अपनी आंखों से ठीक प्रकार से नहीं देख पाते हैं। यह बाधित बालक मानसिक योग्यता की दृष्टि से सामान्य बच्चों से कम नहीं होते हैं। शोध तथा अनुसंधान कार्यों से यह पता चला है कि यदि इन्हें समुचित शिक्षा दी जाये या शिक्षा का अवसर मिल सके, तब इनकी बुद्धि-लब्धि अकस्मात् बढ़ जाती है।

यह बच्चे किसी वस्तु की दूरी को नहीं समझ सकते हैं, क्योंकि वे दूरी को देख नहीं सकते हैं। अतः इनकी दूरी पर प्रत्यय विकसित नहीं होता है।

दृष्टि बाधित बच्चों में एकाग्रता का विकास होता है। देखने से एकाग्रता प्रभावित होती है तथा सुनने का कौशल उत्तम होता है। प्रथम विश्लेषण स्पर्श अनुभव और द्वितीय संश्लेषण स्पर्श अहसास से होता है।

2. दृष्टि बाधितों की भाषा का विकास (Language Development of Visually Impaired)

दृष्टि बाधित बालक भाषा दोषी नहीं होते हैं। यह ठीक प्रकार से सुन सकते हैं। यह सुनना तथा बोलना भी भाषा के प्रमुख कौशल होते हैं। प्रमुख रूप से भाषा को ही सम्प्रेषण का माध्यम माना जाता है, परंतु अन्धे बालक देखकर सीखते हैं तथा दृष्टि बाधित बच्चे इस प्रकार के अनुभवों से वंचित रहते हैं। यह केवल शब्दों से ही अपने विचारों को व्यक्त कर पाते हैं न कि इन्द्रियों के द्वारा। दृष्टि बाधित बालक सुनकर ही शब्द का चयन करते हैं। क्योंकि इनकी दृष्टि इन्द्रिय क्रियाशील नहीं होती है। समस्त जानकारी व ज्ञान श्रवण इन्द्रियों पर भी आधारित होता है। किसी वस्तु का सही प्रत्यक्षीकरण इन्हें नहीं हो पाता है। तथ्यों की भाषा माध्यम से प्रकट किया जाता है। उसे रंगों का कोई भी बोध नहीं होता है। इनकी शाब्दिक अभिव्यक्ति आंतरिक नहीं होती है एवं उसके अनुभव भी पूर्ण नहीं होते हैं, उनका प्रत्यक्षीकरण, सुनने एवं स्पर्श तक ही सीमित रहता है।

3. दृष्टि बाधितों के सामाजिक व समायोजन संबंधी कार्य (Social and work adjustment of Visually Impaired Children) – दृष्टि बाधित बालकों के व्यक्तित्व की समस्याएं आंतरिक नहीं होता है। यदि इन बालकों में समायोजन क्षमता की कठिनाई सामाजिक कारणों से होती है। तो वह बालक अपने समायोजन को सुनिश्चित कर लेते हैं।

दृष्टिबाधित बालकों का वर्गीकरण (Classification of Visually Handicapped Children)

साधारणत: हम दृष्टि बाधितों को दो भागों में विभक्त करते हैं –

1. आंशिक दृष्टि बाधित बालक,
2. पूर्ण रूप से अन्धे बालक

इनको हम निम्न प्रकार व्यक्त करते हैं –

आंशिक दृष्टि बाधित बालक – आंशिक रूप से दृष्टि बाधित वह होते हैं, जो कि बड़े अक्षरों को मुद्रित भाषा को अथवा उत्तम दर्पण की सहायता से शब्द

NOTES

पढ़ सकते हैं। इनकी दृष्टि क्षमता 20 से 70 तक उत्तम आँख में होती है। यह 20 फीट की दूरी तक देख सकते हैं। इसके अंतर्गत सामान्य बालक 70 फीट की दूरी तक तो देख सकते हैं किन्तु बाधित बालकों की दृष्टि सामान्यत: किसी बीमारी आदि के कारण कम हो जाती है।

आंशिक रूप से दृष्टि बाधित बालकों को चार भागों में विभक्त किया जाता है –

1. वह बालक जिनकी दृष्टि एक्यूटी (Visual Acuity) 20/70 तथा 20/200 के बीच होती है।
2. यह बालक जो गंभीर एवं बढ़ने वाली दृष्टि संबंधी से पीड़ित हैं।
3. वह बालक जो नेत्र रोगों से पीड़ित हैं अथवा उन रोगों से पीड़ित है। गंभीर नेत्र रोग होते हैं।
4. वह बच्चे जो औसत मस्तिष्क वाले होते हैं तथा चिकित्सकों के अनुसार यह कम देखने वाले बालकों को दिये जाने वाले समान के आधार पर ही लाभान्वित हो जाते हैं।

अत: आंशिक रूप से बाधित बच्चों को मेडिकल परीक्षण के द्वारा पहचाना जा सकता है। इन बालकों की आँखों का भी परीक्षण किया जाना बहुत जरूरी होता है। विद्यालयों में भी स्वास्थ्य सेवा विभागों का यह कर्त्तव्य है कि वह भी विद्यालयों में परीक्षण व्यवस्था करायें तथा बालकों को इसी प्रकार के शिक्षा निर्देश दें, ताकि बच्चों का व्यापक स्वास्थ्य परीक्षण करायें।

गंभीर दृष्टि बाधित बालक – गंभीर रूप से दृष्टि बाधित बालकों को पहचानना बहुत सरल है। यह बालक ब्रेल लिपि के द्वारा पढ़ाये जाते हैं। इनकी दृष्टि क्षमता 2/20 होती है। तथा यह श्रव्य यंत्रों का भी प्रयोग करते हैं। यह बालक चलने में छड़ी का प्रयोग करते हैं।

यह बालक शैक्षिक कार्य हेतु नेत्रहीन तब समझे जाते हैं। जब उनकी दृष्टि एक्यूटी 20/200 होती है। इससे कम होने पर या इसी प्रकार की कोई अन्य असमर्थता है पर भी बालकों को अंधों की श्रेणी में डाला जाता है।

कई बाद ऐसे बालक जिनकी दृष्टि बहुत ज्यादा बाधित होती है। वह बालक किसी का भेद तक नहीं कर पाते हैं। डॉक्टर के द्वारा इन बालकों को पहचान कर इन्हें चश्मा लगाया जाता है। इन्हें समय-समय पर परीक्षण दिया जाता है, ताकि इनकी आंखों की स्थिति में जितना संभव हो सुधार हो जाये और यदि

NOTES

बालकों की आंखें ऑपरेशन द्वारा ठीक कराई जा रही हों तो बालकों के चश्में का भी ध्यान रखना चाहिए। चूंकि अंधे बालक अपनी दूसरी इंद्रियों पर निर्भर रहते हैं। अत: इनकी अन्य इन्द्रियों के स्वास्थ्य की परवाह करनी चाहिए।

दृष्टि बाधित बालकों का वर्गीकरण निम्न प्रकार से किया जाता है –

दृष्टिबाधित बालकों का वर्गीकरण (Classification of Visually Handicapped Children)

वर्ग स्तर	उत्तम आंखे	क्षतिपूर्ण आंख	बाधिता का प्रतिशत
स्तर – द	6/9 से 6/18	6/24 से 6/36	20 प्रतिशत
वर्ग – I	6/18 से 6/36	6/60 से शून्य	40 प्रतिशत
वर्ग – II	6/36 से 6/60	3/60 से शून्य	75 प्रतिशत
वर्ग – III	1 से शून्य	दृष्टि क्षेत्र 100	100 प्रतिशत

दृष्टि अक्षमता के कारण

नेत्र रोग विशेषज्ञों के अलग-अलग कारणों के उत्पन्न अक्षमता उपचारोपरांत दृष्टि अक्षमता के सामान्य कारण लापरवाही, उचित उपचार न करवाना एवं बीमारी सुनिश्चित सावधानियां न कर सकना आदि हैं। धूल, धूप एवं धुआं भी दृष्टि अक्षमता के सामान्य कारणों में से एक है जो आंशिक अन्धता रतौंधी तथा रंग अन्धता को जन्म देते हैं, दृष्टि अक्षमता के प्रमुख कारण निम्न हैं–

(1) **संक्रामक रोग** – प्राय: 60% से 70% तक बालक संक्रामक रोगों में असावधानी के कारण दृष्टि अक्षमता स्थिति को प्राप्त होते हैं। रक्त के प्रकार की अन्धता का कारण बन जाते हैं।

(2) **दुर्घटना एवं चोट** – सुरक्षा एवं निर्देशन की कमी में मारपीट या दुर्घटना के कारण नेत्र में लगी घातक चोट भी दृष्टि सक्षमता का कारण बन जाती है।

(3) **वंशागत** – कभी-कभी बच्चे में होने वाली दृष्टि से संबंधित समस्यायें आनुवंशिकता का परिणाम होती है।

(4) **साधारण रोग** – अलग-अलग नेत्र रोग अन्य शारीरिक बीमारियों का भी परिणाम हो सकते हैं।

(5) **विष का प्रभाव** – कभी-कभी विष के प्रभाव से भी नेत्रों से संबंधित समस्याएं पैदा हो जाती है।

NOTES

दृष्टि अक्षमता का व्यक्तित्व पर प्रभाव

दृष्टि अक्षमता अथवा कम दिखाई देना बाल विकास में एक स्पष्ट अवरोध है। शारीरिक व मानसिक विकास के साथ-साथ ज्ञानेन्द्रिय विकास में दृष्टि की भूमिका सबसे उत्तम है। यह बालक के व्यक्तित्व के कई क्षेत्रों को प्रभावित करती है जो कि निम्न है।

(1) गतिहीनता – प्रारम्भिक अवस्था में जब बालक विभिन्न सांसारिक वस्तुओं रीति रिवाज, रहन-सहन के तरीकों, खेलकूद आदि में परिचित होता है परंतु दुर्घटना के भय इन बालकों को इन सबसे पृथक रखा जाता है। जिसका परिणाम यह होता है कि यह बालक गतिहीन हो जाता है हालांकि यह बालक शारीरिक रूप से स्वस्थ हो सकता है। लेकिन कम दिखाई देने के कारण अथवा नहीं दिखाई देने से हमें गतिहीनता आ जाती है।

(2) निष्क्रियता – सामुदायिक व औपचारिक विकास में यह बच्चा पीछे रह जाते हैं जिसके कारण घर, विद्यालय या समाज की किसी भी क्रियाओं में भागीदारी करने में भी पीछे रह जाते हैं। जिससे निष्क्रियता उनके स्वभाव का भाग बन जाती है। यह निष्क्रियता उन्हें साथी बालकों में शामिल नहीं होने देती है।

(3) संवेदनशीलता – दृष्टि अक्षभ्य बालकों का विकास सामान्य बालकों की प्रकार से ही होता है। शारीरिक क्षमता या विकास वातावरण अथवा अभ्यास पर निर्भर करता है। इनमें वाणी विकास कुछ विलम्ब से होता है। लेकिन अन्य सामान्य बालकों की अपेक्षा श्रवण व स्पर्श ज्ञानेन्द्रियां अधित चेतन होती है। यह अपनी संवेदी-प्रतिबोध शक्ति के कारण सीखने की प्रक्रिया में गति से उन्नति करते हैं। वाचन क्षमता, कौशल कार्य ध्वनि-संगीत, गायन आदि में यह वर्ग संवेदनशील होता है।

(4) तीव्र स्मरण शक्ति– प्रायः इन बालकों की स्मरण शक्ति तेज होती है। इनमें एकाग्रचित्तता ज्यादा होती है। इसके कारण वह सुनी हुई बातों को आसानी से समझ लेते हैं। इसके साथ इन बातों को ग्रहण भी किये रहते हैं।

दृष्टि विकार

आंख व्यक्ति की सबसे महत्वपूर्ण ज्ञानेन्द्रियां होती हैं। अनेक बार अनेक विकारों के कारण बच्चे की आंखें कमजोर हो जाती हैं और उसे स्पष्ट रूप

से दिखाई नहीं देता है। दृष्टि दोष में बच्चे ठीक प्रकार से देखने में असमर्थ होते हैं। कुछ बालक जन्मजात अंधे होते हैं और अन्य बालकों में दुर्घटना अथवा किसी अन्य कारण से दृष्टि धुंधली हो जाती है। आंखों में प्रायः निम्नलिखित दोष होते हैं -

1. निकट दृष्टि दोष (Short Sightedness)
2. दूर दृष्टि दोष (Long Sightedness)
3. वर्णान्धता (Colour Blindness)
4. जरा दूरदर्शिता (Presbyopia)
5. अबिन्दुकता (Astigmatism) विषम दृष्टि दोष
6. दृष्टि हीनता (Blindness)

(1) निकट दृष्टि दोष (Short Sightedness) – नेत्र के इस विकास में बच्चे अपने आस-पास की वस्तुएँ तो स्पष्ट रूप से देख सकता है किन्तु एक निश्चित दूरी से आगे की वस्तुओं को देखने में परेशानी महसूस करते हैं। इस दोष में देखी जाने वाली दूर की वस्तु का प्रतिबिम्ब पुतली (Retina) से आगे पड़ता है। इस कारण दृष्टि पटल पर स्पष्ट प्रतिबिम्ब नहीं बन पाता है। यह दोष प्रायः 10 से 16 वर्ष की उम्र के मध्य होता है। इस दोष को दूर करने के लिए चिकित्सक की सलाह पर अवतल लेन्स के चश्में का प्रयोग करना चाहिए वस्तुओं का प्रतिबिम्ब रेटिना पर स्पष्ट बन सके।

(2) दूर दृष्टि दोष (Short Sightedness) – इस दोष में दूर की वस्तुएं तो स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं किन्तु आस-पास की वस्तुएं साफ नहीं दिखाई देती हैं। इस दोष में पास में रखी वस्तुओं का प्रतिबिम्ब दृष्टि पटल पर न बनकर उसके पीछे बनता है। नेत्र लेन्स के पृष्ठों की वक्रता कम हो जाने से उनकी फोकस दूरी बढ़ जाती है। जिसके परिणामस्वरूप यह विकास उत्पन्न हो जाता है। यह दोष लघु दृष्टि दोष का उल्टा है। इस विकार को दूर करने के लिए उपयुक्त फोकस के उत्तल लेन्स के चश्में प्रयोग में लिये जाते हैं।

(3) वर्णान्धता (Color Blindness) – इस दोष में बालक रंगों को पहचानने में असमर्थ होते हैं। इस दोष में रेटिना पर दो प्रकार की संवेदनशील तंत्रिकाएं जो क्रमशः छड़ एवं शंकु के आकार की होती है, प्रकाश की तीव्रता एवं रंग के प्रति संवेदनशील होने के कारण बच्चा में विभेद करने में अक्षम

NOTES

हो जाता है। इस दोष में कोई भी वस्तु उजली तथा काली दिखाई देती है।

(4) जरा दूर दर्शिता (Prebyopia) – एक दृष्टि विकास में बालक को निकट तथा दूर दृष्टि दोष के साथ होते हैं। इस समस्या के इलाज के लिए द्विफोकसी लेन्स के चश्मों का प्रयोग किया जाता है। इस चश्मे के ऊपर हिस्से में अवतल लेंस लगाया जाता है जो दूर की वस्तुओं को देखने में काम आता है। तथा नीचे के भाग में उत्तल लैंस का प्रयोग किया जाता है। जो पास की वस्तुओं को स्पष्ट देखने में सहायता करता है।

(5) अबिन्दुका या विषम दृष्टि दोष (Astigmatism) – यह विकार गोलीय विपथन की तरह होता है। इस दोष के कारण क्षैतिज दिशा में रखी हुई वस्तुएं अक्सद दिखाई देती है। यह दोष उन बालकों में अधिक होता है जो सीधे पढ़ने की अपेक्षा एक तथा करवट से लेटकर पढ़ने के आदी होते हैं। लगातार लेटकर पढ़ने से विषम दृष्टि दोष पैदा हो सकता है। यह दोष को दूर करने के लिए बेलनाकार लेन्स का उपयोग किया जाता है। इसमें शीशे के कोण उसी तरह कटे होते हैं जिस पर नेत्र का गोलक घूमता है।

(6) दृष्टिहीनता (Blindness) – दृष्टिहीनता पूर्ण रूप से अंधा होता है। यह विकास प्रायः जन्म से होता है। शैक्षिक दृष्टि से दृष्टिहीनता एक ऐसा विकार है जिसमें दृश्य सामग्री के प्रयोग से शिक्षण आंशिक रूप से भी संभव न हो सके। दृष्टिहीनता दोष में मनुष्य के नेत्र लाल रहते हैं और उनसे निरंतर पानी गिरता है। इसमें नेत्रों की गति असमान रहती है। जिससे बालक एक स्थान पर नजर रखने में असमर्थ होता है।

पहचान (Identification)

भारत सरकार के समाज कल्याण मंत्रालय ने 1987 में दृष्टि बाधितों की परिभाषा देते हुए कहा है कि यह वह बालक होते हैं, जो कि –

1. अपनी पूर्ण दृष्टि खत्म कर चुके हैं।
2. दृष्टि बाधिता 6/60 अथवा 20/200 से अधिक न हो तथा चश्मे का प्रयोग एक आंख हेतु उत्तम हो।
3. दृष्टि का क्षेत्र सीमित हो तथा 20° का कोण बने अथवा इससे कम का बनता हो।

अतः इस प्रकार कहा जा सकता है कि "दृष्टि बाधित बालक वह होते हैं, जिनकी दृष्टि खो चुकी होती है तथा वह बालक ब्रेल लिपि या अन्य श्रवण

शिक्षण सामग्रियों का लाभ उठा सकते हैं। इन्हें आंशिक रूप से बाधित बालक भी कहा जाता है, जो कि चश्में की मदद से मुद्रित पाठ्यवस्तु तथा दृश्य शैक्षिक साम्रगी का उपयोग कर लेते हैं।"

दृष्टि बाधित बालकों को पहचान ज्यादा कठिन काम नहीं है। इन्हें परीक्षण करना आवश्यक होता है। इन बालकों की पहचान करने के लिए स्नैलन चार्ट का प्रयोग किया जाता है। यह बहुत सरल निरीक्षण है। शिक्षकों द्वारा इस चार्ट का प्रयोग किया जा सकता है, किंतु यह अधिक व्यवहारिक नहीं होता है।

वह बालक जो कि जन्म से अंधे होते हैं, उनकी पहचान माता-पिता ही कर लेते हैं और वह बालक जो कि आंशिक रूप से बाधित हैं, उनकी पहचान करने के लिए प्राचीन प्राथमिक विद्यालय होते हैं, इसी में बालकों को पहचान लिया जाता है। यह बालक अनेक प्रशिक्षित अध्यापकों की भी मदद ली जाती है। कुछ बालक दिखने में तो सामान्य होते हैं, परंतु वह वास्तव में बाधित होते हैं, अत: एक प्रशिक्षित अध्यापक ही इनके बारे में पता लगा सकता है।

दृष्टि बाधित बालकों के लक्षण निम्नलिखित होते हैं –

1. यह बालक अक्सर सिरदर्द की शिकायत करते हैं।
2. यह बार-बार आँखे को मलते हैं।
3. आँखों में निरंतर पानी बहता रहता है।
4. जब यह वस्तुओं को दूर से देखते हैं तो इनके शरीर में खिचाव रहता है।
5. कभी-कभी इनकी आँखे लाल हो जाती हैं।
6. इनकी आंखों का आकार अन्य बालकों से अलग होता है।
7. प्रकाश के प्रति यह बालक बहुत संवेदनशील रहते हैं।
8. कभी-कभी इनकी आँखों में टेढ़ापन और भेंगापन भी हो सकता है।

अत: इन बालकों में यह सारे लक्षण होते हैं।

कक्षा कक्ष में के CWVVI के प्रबंधन में युक्तियाँ एवं रणनीतियाँ

आंशिक दृष्टि बाधित बालकों की शिक्षा

सामान्य तौर पर देखा जाये तो किसी भी विद्यालय में कम दिखाई देने वाले विद्यार्थी की संख्या अधिकाधित होती है। बालकों पहचान करते हुए उनकी संख्याओं का निर्धारण करते हुए अध्यापक इस बात का निर्णय कर सकता

NOTES

है कि उनके लिए विशेष कक्षा का आयोजन किया जाये या सामान्य कक्षा में विशेष सुविधाओं की मदद से उन्हें शिक्षक दिया जा सकता है।

सबसे पहले प्राथमिक श्रेणियों में विद्यार्थियों के लिए शिक्षा का आयोजन किया जाना चाहिए।

क्योंकि जितनी जल्दी कम देखने वाले बालकों को शैक्षिक सुविधाएँ प्रदान की जायेगी, उतनी ही ज्यादा सफलता की प्राप्ति होगी इन बालकों को निम्न शैक्षिक सुविधाएँ प्रदान की जा सकती हैं।

(1) शैक्षिक माध्यम – आंशिक रूप से देखने वाले विद्यार्थियों के लिए कोर्स की किताबें सामान्य बालकों से भिन्न प्रकार की होनी चाहिए जैसे –

(i) एक सामान्य बालक के लिए किताब 10 या 12 पॉइंट टाईप होती है आंशिक देखने वाले विद्यार्थियों के लिए 18 से 24 पॉइंट टाईप होना चाहिए।

(ii) प्रिंट साफ और विस्तृत होना चाहिए।

(iii) सफेद कागज पर काले से लिखा होना चाहिए।

(iv) दो शब्दों के मध्य जगह होनी चाहिए।

(v) हाशिया होना चाहिए।

(vi) मानचित्र एवं चित्र होना चाहिए।

(vii) आर्ट तथा क्राफ्ट के सामानों का प्रयोग होना चाहिए।

(2) प्रकाश की उचित व्यवस्था – आंशिक रूप से देखने वाले विद्यार्थियों के लिए प्राकृतिक व बनावटी दोनों प्रकार की रोशनी महत्व रखती है। ऐसे बालकों के लिए कमरा पूरी तरह से व हर स्थान से रोशनीयुक्त होना चाहिए। उसमें चमक नहीं होना चाहिए कक्षा की छतें सफेद तथा दीवारें हल्के रंग से रंगी होनी चाहिए।

(3) फर्नीचर – एक जगह से दूसरे जगह तक ले जाने वाला फर्नीचर कक्षा में उपयोग किया जाना चाहिए इन्हें बालक किसी भी स्थान पर ले जा कर उपयोग कर सकते हैं। फर्नीचर बढ़ते हुए बालकों के लिए भी उपयुक्त होना चाहिए।

(4) कक्षाएं – विशेष कक्षाएं अथवा अलग कक्षाएं आधुनिक शैक्षिक सिद्धांतों

NOTES

के अनुरूप नहीं है। अतः एक सहकारिता योजना का विकास किया जाना चाहिए जिसके द्वारा कम देखने वाले विद्यार्थियों हेतु एक विशेष सामान से युक्त कक्षा एवं योग्य शिक्षक की व्यवस्था की जाती है। अन्य कार्यों के लिए भी उपयुक्त होना चाहिए।

(5) **सहकारिता** – बालक के स्वास्थ्य तथा शिक्षा का उत्तरदायित्व अध ीक्षक, प्रधानाध्यापक, स्कूल, स्वस्थ सेवा अध्यापक एवं विशेष अध्यापक साथ ही बालक के माता-पिता पर है। इस सहयोग को प्रभावी बनाने के लिए जरूरी है कि प्रत्येक को शिक्षा के विशेष उद्देश्यों से परिचित होना चाहिए। इन सभी को अलग से व सहकारी रूप से समस्या समाधान में पूरा सहयोग देना चाहिए। आंशिक रूप से दिखने वाले बालकों का विशेष कक्षा में तथा सामान्य कक्षा में भली प्रकार स्वागत करना चाहिए जिससे वह अपनी परेशानियों को समझ कर सबके साथ सांमजस्य कर पायेगा।

(6) **पाठ्यक्रम** – औसत प्रकार के बालकों का व आंशिक दिखाई देने वाले बालकों का पाठ्यक्रम एक सा होता है। अध्यापकों को इस बात का ध्यान रखना आवश्यक है जिससे इन बालकों की आंखे पर जोर न पड़े।

(7) **मेडिकल परीक्षण** – समय-समय पर स्कूल द्वारा विद्यार्थियों का परीक्षण करवाते रहना चाहिए। डॉक्टर द्वारा आँख संबंधी निरीक्षण, सामान्य, स्वास्थ्य, आँख की बीमारियों का इलाज, शरीर की बीमारियों का इलाज, चश्मे की जाँच आदि कार्य इन बच्चों के लिए किया जाना जरूरी है। डॉक्टरों के माध्यम से बच्चे के स्वास्थ्य व आँखों से संबंधित बीमारियों का एक रिकॉर्ड बनाया जाना चाहिए। आंख की कसरत तथा इलाज के सुझाव दिया जाना चाहिए। बच्चे के माता-पिता को भी बालक से संबंधि त सुझाव देना चाहिए।

(8) **शैक्षिक निरीक्षण**– स्थानीय व राजकीय स्तर पर समय-समय पर शैक्षिक निरीक्षण किया जाना चाहिए। राजकीय निरीक्षक को विशेष शैक्षिक सुविधाओं को बढ़ाने की कोशिश करना चाहिए साथ ही इन बच्चों की शैक्षिक व सामाजिक कठिनाईयां दूर करने का प्रयत्न करना चाहिए।

(9) **विशेष अध्यापक** – आंशिक रूप से देखने वाले बालकों को दृष्टि बाधित समस्त विद्यार्थियों के लिए विशेष शिक्षक का अत्यंत महत्व है। इन अध्यापकों को आँख की बनावट सफाई, आँख की सामान्य बीमारियां

NOTES

व परेशानियों से परिचित होना चाहिए। इन बालकों के लिये दवाईयों, रोशनी, शारीरिक सामान, शैक्षिक सामान का प्रबंधन करना चाहिए। विशेष व प्रभावशाली विधियों का प्रयोग कर विद्यार्थियों को सीखने में सहायता करनी चाहिए। एक कुशल अध्यापक बालक में ऐसे गुणों का विकास कर सकता है जिससे बालक अच्छा सामाजिक, शैक्षिक व व्यावसायिक समायोजन कर सके।

(10) व्यावसायिक निर्देशन – एक सफल शैक्षिक निर्देशन के लिए यह जरूरी है कि बालक के व्यक्तित्व की प्रत्येक बात ध्यान रखनी चाहिए जैसे - शारीरिक एवं मानसिक योग्यताएं, अयोग्यताएं, संवेगात्मक विकास, सामाजिक गुण, इच्छाएं, रूचियां, अभिवृत्तियां आदि यह भी देखा जाना जरूरी है कि व्यक्ति की इच्छायें स्वयं की हैं अथवा किसी से प्रभावित हैं। व्यवसायिक निर्देशन हेतु विभिन्न व्यावसायिक रूचि परीक्षण किये जा सकते हैं। जिससे बच्चे की रूचि व अभियोग्यता भी जानी जा सके। सफल निर्देशन के लिए माता-पिता, अभिभावक, अध्यापक, डॉक्टर, मनोवैज्ञानिक, मनोचिकित्सक आदि का सहयोग होना जरूरी है।

दृष्टिगत बाधित बालकों की शिक्षा

एक सामान्य दृष्टि बाधित बालक उसी स्कूल में प्रवेश कर सकता है जिसमें एक सामान्य रूप से देखने वाला बच्चा प्रवेश करता है। इस अवस्था में बालक का इस योग्य होना आवश्यक है कि वह अपने जरूरी रोजमर्रा के कार्यों को कर सकें। जाने-पहचाने वातावरण में चल सकें। अपनी उम्र के बच्चों से बातचीत कर सके। इन बच्चों को विशेष विद्यालयों में भेजा जा सकता है, विशेष कक्षाओं में पढ़ाया जा सकता है। जिसे ब्रेल कक्षा कहा जाता है। ब्रेल कक्षाएँ ऐसी मदद देती हैं जिनसे बालक कक्षा की सामान्य पढ़ाई को समझ सके। शिक्षा का सबसे मुख्य उद्देश्य बालक का सामाजिक समायोजन है। इन बालकों हेतु विद्यालय में विभिन्न कार्यक्रम करवाये जाना चाहिए जैसे - (i) नाच, (ii) गाना, (iii) स्काउट गाइड, (iv) साहित्य गतिविधियां, (v) सांस्कृतिक नाटक आदि।

इन बालकों को सामान्य बालकों अन्य लोगों से अधिक से अधिक मेलजोल, बातचीत होना चाहिए जिससे वे अधिक से अधिक अपने पर्यावरण में समायोजित हो सकें। इसके लिए निम्न बातों का ध्यान रखा जाना जरूरी है।

(1) विशेष विधियाँ – जब भी दृष्टि बाधित बालक को पढ़ाया जाये तब यह ध्यान रखा जावे कि वह एक सामान्य बच्चा है अधिकतर उनका ज्ञान,

वृद्धि, संवेग उनकी इच्छा अन्य बालकों की तरह है। एक सामान्य बच्चा के मनोविज्ञान का ज्ञान दृष्टि बाधित बालक के मनोविज्ञान को समझने में मददगार हो सकता है। प्रत्येक बालक का दृष्टि दोष अलग-अलग हो सकता है। वास्तव में दृष्टि एक्यूटी सदा दृष्टि क्षमता नहीं बताती अनेक बार कम दृष्टि वाले बालक अपनी दृष्टि का अच्छा उपयोग करते हैं घर, वातावरण, सीखने की तत्परता, सीखने की क्षमता आदि का इस पर असर पड़ता है।

(2) विशेष सामान तथा माध्यम – दृष्टि बाधित बालकों की एक इन्द्रिय कार्य न करने पर वह अपनी अन्य इन्द्रियों पर निर्भर रहते हैं चूंकि हमारी शिक्षा पद्धति में पढ़ने व लिखने को विशिष्ट महत्व है। इसलिए आंखों का विशेष उपयोग है। इनके लिए ब्रेल लिप का उपयोग किया जाता है। इसमें कागज पर उभरे हुए बिन्दु बने होते हैं। जिन्हें स्पर्श कर पढ़ा जाता है। किताबें ब्रेल ग्रेड 1 तथा ब्रेल ग्रेड 2 प्रकार के ये प्रतिबन्धित की जाती है प्रथम व द्वितीय प्रकार की किताबें दोनों पढ़ी जाती है। ब्रेल में बालक पढ़ भी सकता है तथा लिख भी सकता है। निम्न प्रयोग द्वारा इन बालकों को शिक्षण कराया जा सकता है –

(i) बोलने वाली किताबें

(ii) लॉग, प्लेइंग पोनोग्राफ रिकॉर्ड

(iii) रेडियो एवं समाचार द्वारा

(iv) मानसिक संख्या कार्य (गणित हेतु)

(v) एम्बेस्ड चित्र (गणित हेतु)

(vi) मानचित्र व ग्लोब का प्रयोग

(vii) शैक्षिक यात्राएं

(viii) म्यूजियम के द्वारा

(3) आर्ट व रचनात्मक कार्यों द्वारा शिक्षण– अधिकतर दृष्टि बाधित बालक आर्ट एवं मॉडगि में रूचि दिखाते हैं नाटक का मंचन बालक में बोलने, खड़े होने, बातचीत करने की आदत डालने में सहयोगी होता है। इससे सामाजिक समायोजन तथा आत्मविश्वास बढ़ता है। संगीत का ज्ञान इन बच्चों को काफी प्रभावित करता है किसी तरह के संगीत के उपकरण बजाने में यह बच्चा माहिर हो सकते हैं। धीरे-धीरे संगीत को यह अपना व्यवसाय भी बना सकते हैं। इन बालकों को अनेक प्रकार के कार्य जैसे तैरना, नाव खेना, कुश्ती

NOTES

लड़ना आदि भी सिखाये जा सकते हैं। इनमें लड़कियों व लड़कों दोनों को घर के काम भी सिखाये जा सकते हैं। शिक्षा में रिकॉर्ड प्लेयर द्वारा इनमें शिक्षा का विकास किया जा सकता है।

(4) पढ़ाने के विशेष सिद्धांत – अध्याप को भिन्न-भिन्न शिक्षण विधियों के साथ शिक्षण से संबंधित सिद्धांतों का भी ध्यान रखना चाहिए यह सिद्धांत निम्न हैं –

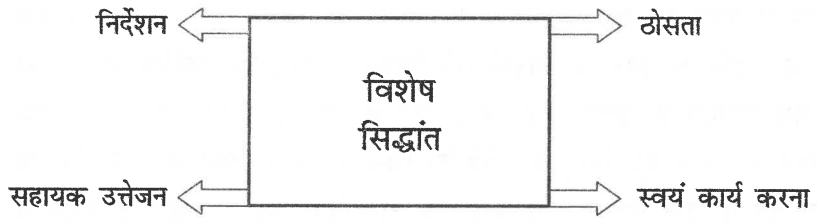

(1) ठोसता – दृष्टि बाधित बालक सिर्फ स्पर्श और कान द्वारा अपने वातावरण का ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। सुनना उनके लिए समाज के साथ सामंजस्य की एक विधि है। किन्तु किसी वस्तु का ज्ञान वह स्पर्श द्वारा ही प्राप्त करते हैं। पदार्थ छूने में छोटे-छोटे मुलायम एवं सख्त भी हो सकते हैं। इन पदार्थों के गुणों के आधार पर वे धीरे-धीरे समस्त चीजों को समझने लगते हैं। परंतु बालकों को इन वस्तुओं के रंग की पहचान नहीं होती है। निर्देशन में उन्हें ठोस अनुभव दिये जाने चाहिए। उन्हें पदार्थों को वस्तुओं को छूने देना चाहिए ताकि वे इनके विशेष गुणों से उन चीजों को समझ सकें। इनकी ठोसता बालकों को अधिगम में मदद करती है।

(2) निर्देशन– सामान्यत: यह देखा जाता है कि दृष्टिबाधित बालक पदार्थ को छू कर समस्तु गुणों से अवगत नहीं हो सकता वह पर्यावरण की अन्य सूचनाओं को भी एकत्रित करता है। स्पर्श के साथ वस्तुओं को सूंघकर, कभी-कभी चखकर वातावरण को समझने की कोशिश करता है। इन सबसे बावजूद भी उसे सही अनुभव प्राप्त नहीं होते हैं। अध्यापक को चाहिए कि वातावरण को यही समझ विकसित करने में बालकों की सहायता करें। ऐसा निर्देशन कार्य करें ताकि बालक पर्यावरण में भलीभांति समायोजन कर सकें।

(3) सहायक उत्तेजक – दृष्टि बाधित बालकों की दृष्टिगत अक्षमता के कारण उनकी योग्यता कम हो जाती है। साथ ही समझ विकसित करने में बालकों की मदद करें ऐसा निर्देशन को भिन्न-भिन्न विधियों का प्रयोग करते हुए उसके समक्ष उत्तेजना प्रस्तुत करनी चाहिए। दो मुख्य विधियों द्वारा

उत्तेजना प्रस्तुत की जा सकती है –

(i) बालक को अनुभवों के पास ले जाना जैसे शैक्षिक यात्रा करवाना, म्यूजियम ले जाकर वस्तुओं का वर्णन करना।

(ii) अनुभवों को बच्चों के निकट लाना जैसे लोगों को भाषण हेतु बुलाना, रेडियो टेपरिकॉर्डर सुनवाया आदि इनकी सफलता काम विधि पर निर्भर करती है।

(4) स्वयं कार्य करना – दृष्टि बाधित छात्रों का कार्य क्षेत्र सीमित हाता है। वह स्वयं कार्य हेतु आगे नहीं बढ़ पाता है उसे काम करने हेतु प्रेरित करना चाहिए। उसे इस प्रकार का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए कि वह स्वयं कार्य कर सके। स्वयं करके सीखने पर ही वह आत्मविश्वास प्राप्त कर सकता है। व उसे समायोजन में भी मदद करता है। उन्हें स्वयं कार्य करने की शिक्षा दी जानी चाहिए जिससे उन्हें सुस्त रहने दुखी रहने की आदत न पड़े।

(5) अध्यापक – दृष्टि बाधित अथवा कम दिखाई देने वाले विद्यार्थियों के शिक्षकों में निम्न बातें होना जरूरी है –

(अ) शिक्षक को इन बालकों को पढ़ाने हेतु तैयार हो जाना चाहिए। तैयार होने का अर्थ यह है कि बालकों की जरूरतों समस्याओं से अवगत होना तथा उन्हें पढ़ाने हेतु प्रेरित करना।

(ब) इन बच्चों के शिक्षण हेतु शिक्षक को प्रशिक्षित होना चाहिए। उसे बच्चे के मानसिक, सामाजिक, तथा शारीरिक संवेगात्मक विकास को जरूरी रूप से समझना चाहिए, उनके वंशानुक्रम व वातावरण का अध्ययन करना चाहिए। उनकी संभावनाएँ सहयोगी होना चाहिए। अध्यापक को निम्न बातों का विशेष रूप से ध्यान रखना चाहिए।

(i) बालक को जीवन की वास्तविकता का ज्ञान देना।

(ii) उनमें आत्मविश्वास जगाना।

(iii) उसमें यह भावना जागृत करना कि वह अन्य बालकों के समान ही है।

अत: इन बालकों को अच्छी शिक्षा एवं प्रशिक्षण देकर किसी कार्य, नौकरियों तथा व्यवसाय में लगाना चाहिए ताकि वह खुद पर निर्भर हो सकें। दृष्टिहीनता को बाधिता आंशिक या पूर्ण हो सकती है उसी के अनुसार उसका प्रबंधन किया जाता है। दृष्टिहीनता दोष का कारण नेत्र-तारे की कमजोरी तथा आँखों

NOTES

से संबंधित मांसपेशियों का ठीक प्रकार से कार्य करना होता है। दृष्टिदोष वाले बालकों की शिक्षा व्यवस्था उसको दिखाई देने वाली क्षमता पर निर्भर करती है। दृष्टिहीनता वाले बालकों की व्यवस्था के लिए निम्नलिखित बातें आवश्यक हैं।

1. दृष्टिहीनता वाले बालकों की कक्षा में पर्याप्त प्रकाश होना जरूरी है।
2. पूर्ण अंधे बालकों को विशेष विद्यालयों में ब्रेल लिपि से पूर्ण प्रशिक्षित अध्यापकों से शिक्षण करवाया जाना चाहिए।
3. इन बच्चों के लिए विद्यालय में उचित उपकरणों से सुसज्जित संशोधन कक्ष होना चाहिए।
4. दृष्टि से असमर्थ बच्चों को हस्तकला में निपुण किया जाना चाहिए।
5. दृष्टि बाधित वाले बच्चों को चिकित्सकीय सलाह के अनुसार उपयुक्त तथ्यों का प्रयोग करना चाहिए।
6. दृष्टि विकास वाले बालकों को कक्षा में आगे बैठाया जाना चाहिए और इनके लिए अध्यापक को श्यामपट्ट पर अक्षर साफ एवं स्पष्ट रूप से लिखना चाहिए।
7. इस समस्या से ग्रसित बालकों को पुस्तक एवं आँखों के बीच की दूरी का अनुपात सही बताकर उसके अनुसार ही अधिगम की आदत का निर्माण करना चाहिए।
8. इन बच्चों को मोटी टाइप से स्पष्ट रूप से लिखी पुस्तकों का प्रयोग करना चाहिए।
9. मूल्यांकन में दृष्टिहीन बालकों को ज्यादा समय देना चाहिए।

विस्तारित पाठ्यक्रम या जमा पाठ्यक्रम (Expanded Curriculum As plus Curriculum)

यह पाठ्यक्रम दृष्टि बाधित बच्चों के लिए जरूरी है। वह कौशल समूह है जो उन्हें अपने समन्वयक/समकक्ष दृष्टिवान बालकों के समान शैक्षिक अनुभव ग्रहण करने के योग्य बना सकता है। इसमें कुछ कौशल ऐसे हैं जिन्हें दृष्टिवान बालक अन्य मनुष्यों को देखकर आकस्मिक अधिगम के रूप में ग्रहण कर लेते हैं। जैसे- भली प्रकार भोजन ग्रहण करना, ब्रुश करना तथा कंघी करना आदि। दृष्टिबाधित बालकों के लिए अनुस्थित विज्ञान व

NOTES

गतिशीलता, अबेकस, तेलर फ्रेम, ब्रेलर इत्यादि विशिष्ट उपकरणों का प्रयोग एवं प्रत्यय निर्माण व विकास इत्यादि को भी जमा विस्तार पाठ्यक्रम के अन्तर्गत शामिल किया जाता है।

दृष्टिबाधित के प्रति सामाजिक अभिवृत्तियाँ

दृष्टि बाधा के प्रति समाज में कई भ्रमिक धारणाएँ व रूढ़िवादी अभिवृत्तियाँ हैं। इतिहास इस बात का साक्षी है कि प्राचीन काल में दृष्टि बाधित को दयनीय स्थिति में चित्रित किया गया है।

यद्यपि एकीकृत व समावेशी शिक्षा की कोशिशों द्वारा इस धारणाओं में कमी आयी है। आज दृष्टि बाधित बच्चे अपने पड़ोस के सामान्य विद्यालय में शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं। सर्व शिक्षा अभियान की कोशिशों में भी दृष्टिबाधिता के प्रति सकारात्मक अभिवृत्तियों के विकास में प्रयास जारी है।

मानवैक (1975) के अनुसार "अतीत से समाज में दृष्टिबाधित के प्रति निम्नलिखित 15 अभिवृत्तियाँ पायी जाती थीं" –

1. दया एवं सहानुभूति योग्य (Desiring of Pity and Sympathy)
2. दयनीय (Miserable)
3. अंधकारमय (In a world of Darkness)
4. असहायक (Helpless)
5. मुर्ख (Fools)
6. अनुपयोगी (Useless)
7. भिखारी (Beggars)
8. कार्य करने योग्य (Able to Function)
9. दृष्टि के अभाव की क्षतिपूर्ति (Compensated for their Lack of Sight)
10. पूर्व जन्मों के पाप का फल (Being punished for past)
11. भयभीत होना, उपेक्षा करना एवं नकारना (To be feared Avoided and Rejected)
12. असमायोजित (Maladjusted)

NOTES

13. अनैतिक तथा दृष्ट (Immoral and Evil)

14. दृष्टिवान से बेहतर (Better then Sighted People)

15. रहस्यमय (Mysterious)

प्रस्तुत तालिका से स्पष्ट है कि अतीत में दृष्टि बाधित व्यक्तियों को हेय दृष्टि से देखा जाता था। परोक्त 15 अभिवृत्तियों में से 12 पूर्ण नकारात्मक है, परंतु एक अभिवृत्ति सकारात्मक है।

सकारात्मक अभिवृत्तियों के निर्माण और विकास में अध्यापक की भूमिका

अध्यापक समाज व देश के निर्माता है। समाज एवं देश के भविष्य की नींव विद्यालय में ही रखी जाती है। जहाँ भावी नागरिकों का समाजीकरण होता है। अध्यापक ही कल के नागरिकों को उचित रूप से शिक्षण देकर उनकी अभिवृत्तियों को दिशा-निर्देश देता है। दृष्टिबाधित व्यक्ति क्षमताओं में दृष्टिवान मनुष्य से किसी भी तरह कम नहीं होंते, केवल उनके प्रशिक्षा में उसकी ज्ञानेन्द्रियों को विकसित किया जाना चाहिए। दृष्टिबाधित व्यक्ति की एक सशक्त मानव संसाधन है जिसे उचित पर्यावरण प्रदान किया जाना चाहिए, जिसमें सकारात्मक अभिवृत्तियों की प्रमुख भूमिका होती है। दृष्टि बाधितों के प्रति समाज में प्रचलित भ्रान्तियों, रूढ़िवादिता व नकारात्मक अभिवृत्तियाँ समाज के विकास में बाधक हैं क्योंकि इनसे दृष्टिबाधित व्यक्तियों का विकास होता है। फलस्वरूप दृष्टि बाधित व्यक्ति का पूर्ण विकास नहीं हो पाता तथा समाज पर बोझ हो जाता है। उचित सकारात्मक अभिवृत्ति युक्त वातावरण दृष्टि बाधित भूमिका अदा करता है। अध्यापक को नकारात्मक अभिवृत्तियों को सकारात्मक में परिवर्तित करने के लिए सशक्त भूमिका अदा करनी होगी। इसके लिए निम्नलिखित सुझाव दिये जा रहे हैं -

1. अध्यापकों के प्रशिक्षण कार्यक्रम में समावेशी शिक्षा पाठ्यक्रम को शामिल करना।
2. सेवाकालीन शिक्षण प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों में समावेशी शिक्षा का लघुकालीन पाठ्यक्रम आयोजित करना।
3. सर्व शिक्षा अभियान द्वारा गाँवों में जन संचार द्वारा भ्रान्ति को दूर करने हेतु कार्यशालाएँ आयोजित करना।

4. विद्यालयों में बच्चों हेतु जन संचार के माध्यम से कार्यशालाएँ चलचित्र (दृश्य-श्रव्य सामग्री) के कार्यक्रम आयोजित करना।

5. सामाजिक संस्थाओं द्वारा अध्यापकों के लिए ऐसी कार्यशालाएँ आयोजित करना, जिनमें अध्यापक सफल दृष्टि बाधित व्यक्तियों से मिल सकें अथवा उनकी जीवनियों से परिमित हो सकें।

6. माता-पिता एवं अध्यापक गोष्ठी (PTM) द्वारा माता-पिता व अध्यापकों के लिए दृष्टि बाधित तथ्यों की क्षमताओं का ज्ञान कराना तथा भ्रान्ति ध ारणाओं को तोड़ना।

7. अध्यापकों द्वारा ऐसे कार्यक्रमों का आयोजन किया जाना, जिनमें दृष्टिवान बच्चे अपने दृष्टि बाधित सहपाठियों की जीवन शैली पर चर्चा कर सकें।

8. प्रधानाचार्य एवं प्रशासनिक अधिकारियों के लिए आयोजित कार्यशालाओं में अध्यापकों द्वारा दृष्टिबाधित के प्रति अभिवृत्तियों की चर्चा करना।

9. जन समुदाय विशेष रूप से विद्यार्थियों को ब्रेल लिपि का महत्व बताना और उसकी प्रारम्भिक जानकारी देना।

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट हो जाता है कि दृष्टिबाधित मनुष्यों के लिए समानता और पूर्ण सहभागिता के अवसर वास्तविक रूप में तभी सुलभ हो सकते हैं जब उनके प्रति समाज की अभिवृत्तियाँ यथार्थवादी एवं सकारात्मक हों।

दृष्टिबाधितों की शिक्षा के लिए उपकरण

समावेशी शिक्षा के साथ-साथ हम समावेशी लेखन तथा पठन की ओर भी अग्रसर हो रहे हैं। सार्वभौमिक डिजाइन (Universal Design) की अवधारणा को संयुक्त राष्ट्र संघ के विकलांग मनुष्यों के अधिकारों के संरक्षण कन्वेनशल (UNCRPD) के मूल सिद्धांत के रूप में स्वीकार किया गया है। एक तरफ प्रमुख धाराओं वाले उपककरण जैसे कि कम्प्यूटर तथा मोबाईल फोन से दृष्टिबाधितों को पढ़ने तथा लिखने की सुविधा प्रदान की है तो दूसरी तरह डिजिटल प्रौद्योगिकी मानक यथा डेजी (DAISY) ई-पब (E-Pub), यूनिकोड मुख्यधारा से जुड़े प्रकाश को कम मूल्य वाली सूलभ पठन सामग्री बनाने में सहायता करते हैं। समाजीकरण के नये तरीके जैसे- फेसबुक (Facebook) वाट्स अप (Whatapp), ट्विटर (Twiter) आदि समय व्यतीत करने के तरीके के रूप में ही नहीं, परंतु समावेशी सामाजिक नेटवर्क

NOTES

बातचीत शिक्षा और जानकारी के बहुत प्रभावी तरीकों के रूप में भी उभर रहे हैं। प्रौद्योगिकी के ऐसे कई पक्ष हैं जिनकी मदद से दृष्टिबाधिताओं द्वारा खुद पढ़े जाने वाले पठन सामग्री बनाई जा सकती है। ऐसी पठन सामग्री को पढ़ने हेतु इस प्रकार के अनेक उपकरण भी उपलब्ध हैं।

दृष्टिबाधित बालकों की शिक्षा को सुगम बनाने के लिए कुछ उपकरणों या साधनों का प्रयोग किया जाता है। इन्हें मुख्यत: दो भागों में विभक्त कर सकते हैं।

(A) परम्परागत उपकरण

(B) आधुनिक उपकरण

(A) परम्परागत उपकरण – दृष्टिबाधित बालकों की शिक्षा के लिए पूर्व में अनेक प्रकार की विधियाँ अपनाई गई। इन समस्त विधियों में ब्रेल सबसे अधिक सुगम व प्रचलित रही है। ब्रेल लिखने के लिए कई प्रकार के उपकरणों का प्रयोग किया जाता है जो निम्न है :-

1. ब्रेल स्लेट – ब्रेल लेखन हेतु ब्रेल स्लेट का प्रयोग किया जाता है। इसमें ब्रेल लिखने के लिए खाँचे बने होते हैं जिनसे एक नुकीली पिन अर्थात् स्टाइल्स की मदद से दबाकर ब्रेल के बिन्दु उभारे जाते हैं। यह आरंभिक अवस्था में लिखने सिखाने का एक बहुत सशक्त माध्यम है। ब्रेल स्लेट या ब्रेल लेखन पार्टी दो प्रकार की होती है। पहली लकड़ी द्वारा निर्मित और दूसरी प्लास्टिक से निर्मित होती है।

2. स्टेन्सबी – ब्रेल लेखन हेतु एक विशेष प्रकार की मशीन प्रयोग में लाई जाती थी, जिसे स्टेन्सबी कहते थे। इस मशीन से ब्रेल का एक अक्षर लिखने के लिए एक साथ उस अक्षर के बिन्दुओं को दबाया जा सकता था। इस मशीन में ब्रेल के छः बिन्दुओं के लिए छः बटन बने होते थे।

3. ब्रेलर – ब्रेलर ब्रेल लिखने की एक ऐसी मशीन है जिसके द्वारा एक बार में ब्रेल के एक अक्षर के समस्त बिन्दु उभारे जा सकते हैं। इस मशीन में ब्रेल के छः बिन्दुओं के लिए छः बटन होते हैं, जिससे बटन अथवा बटनों को एक साथ दबाया जाता है। ब्रेलर से ब्रेल लिखते समय क्या लिखा गया है, उसे साथ ही साथ पढ़ा भी जा सकता है। ब्रेलर की मदद से बहुत तेजी से ब्रेल लिखी जा सकती है। हमारे देश में तीन प्रकार के बेलर-के-ब्रेलर पार्किंग्स ताज ब्रेलर तथा मार्बर्ग ब्रेलर प्रयोग में लाये जाते हैं।

NOTES

4. पॉकेट फ्रेम – ब्रेल स्लेट का आकार बड़ा होने के कारण उसे इधर से उधर ले जाना एक कठिन काम होता है। इसे ध्यान में रखते हुए पॉकेट फ्रेम का निर्माण किया गया। जैसा कि नाम से ही ज्ञात होता है, इस तंत्र को जेब में रखकर इधर से उधर ले जाया जा सकता है।

5. स्टाइल्स – ब्रेल स्लेट एवं पॉकेट पर ब्रेल लिखने के लिए स्टाइल्स का प्रयोग किया जाता है। इस यंत्र में धातु की नुकीली संरचना होती है तथा उसके ऊपर पकड़ने के लिए प्लास्टिक से बनी संरचना होती है। ब्रेल लिखते समय जिस बिन्दु को दबाना है, उस बिन्दु पर स्टाइल्स रखकर उसे दबाते हैं।

(ख) गणितीय उपकरण – दृष्टिबाधित बालकों के गणित शिक्षण के लिए अनेक प्रकार के उपकरण प्रयोग में लाये जाते हैं। उच्च कक्षाओं में गणित में कुछ सामग्री दृश्य माध्यम में होती है जिससे भिन्न-भिन्न उपकरणों का प्रयोग करके स्पर्श माध्यम में बदल दिया जाता है। इससे दृष्टिबाधित बालकों को गणित शिक्षण में आसानी होती है। दृष्टिबाधित बालकों को गणित पढ़ाने के लिए भिन्न उपकरण निम्न प्रकार हैं –

1. टेलर फ्रेम – एक ऐसा यंत्र है जिसकी मदद से अंकगणित तथा बीजगणित में प्रयुक्त वाले चिन्ह व संख्याओं को प्रकट करते हैं या लिखते हैं जैसा कि नाम से विदित है, इसमें एक लकड़ी का फ्रेम होता है, जिसके अन्दर एल्युमीनियम की एक मोटी चादर (Sheet) लगी होती है। इस चादर में अष्टकोणीय छेद बने होते हैं। इन छिद्रों में विशेष प्रकार से बने टाइप्स को अलग-अलग प्रकार से लगाकर संख्याएँ, विभिन्न चिन्ह व प्रतीकों को लिखा जाता है।

2. अबेकस – अबेकस एक ऐसा यंत्र है जिसकी सहायता से विभिन्न अंकगणितीय संक्रियायें की जाती हैं, जिनमें गिनती, गुणा, भाग, जोड़ना, घटाना आदि सम्मिलित है। अबेकस का सबसे पहले प्रयोग चीन में किया गया। अबेकस आयाताकार होता है। जिसमें लम्बवत् रूप से लोहे की 13 या 15 मोटी तारें होती हैं जिसमें मोती पिरोये हुए होते हैं तथा एक तार में पाँच मोती होते हैं।

3. ज्यामितीय किट – बिना किसी उपकरण की मदद से दृष्टिबाधित बालकों को रेखागणित पढ़ाना व विभिन्न रेखागणितीय प्रत्यय देना एक बहुत कठिन काम है, क्योंकि रेखागणित के अधिकतर प्रत्यय दृश्य आधारित होते

NOTES

हैं। इस को दूर करने हेतु एक ज्यामितीय किट राष्ट्रीय दृष्टिबाधित संस्थान देहरादून द्वारा विकसित की गयी, जिसमें दृष्टिबाधित बालकों को रेखागणित के विभिन्न प्रकार देने के लिए अनेक यंत्रों का समावेश किया गया।

4. स्पर्शीय ज्यामितीय बोर्ड – स्पर्शीय ज्यामितीय बोर्ड एक ऐसा बोर्ड है जिस पर रेखागणित के अलग-अलग प्रत्ययों को बनाकर आसानी से समझा जा सकता है। इस बोर्ड में लकड़ी के बोर्ड पर जाली लगी होती है जिस पर कोई भी कागज रखकर यदि नुकीली चीज से कोई आकृति बनाई जाए तो पेपर के दूसरी ओर उसी आकृति का प्रतिबिम्ब बन जाता है।

5. बनहम ज्यामितीय यन्त्र – पश्चिम के देशों में ज्यामिति के चित्र को बनाने के लिए बन हम यंत्र का प्रयोग किया जाता था। इस यंत्र में लकड़ी का एक आयताकार बोर्ड होता है, जिस पर छेद बने हुए होते हैं तथा कागज पर निशान बनाने के लिए एल्यूमीनियम की छोटी-छोटी कीलनुमा पिन होती है। इसका चलन भारत में संभव नहीं हो पाया।

(B) आधुनिक उपकरण –

1. कम्प्यूटर के लिए स्क्रीन रीडिंग सॉफ्टवेयर – कम्प्यूटर समस्त के लिए पढ़ने एवं लिखने का उत्कृष्ट साधन है। कम्प्यूटर में स्क्रीन रीडर उपलब्ध होता है, तब स्क्रीन रीडर सॉफ्टवेयर टेक्स्ट-टू-स्पीस सॉफ्टवेयर (TTS) की सहायता से प्रासंगिक सूचना को बोलकर बताता है। स्क्रीन रीडर की गुणवत्ता उसके टेक्स्ट टू स्पीच सॉफ्टवेयर पर निर्भर करती है। हम अपने स्क्रीन रीडर में भिन्न-भिन्न आवाजों को सुन सकते हैं। अगर हमारे कम्प्यूटर में टेक्स्ट टू स्पीच सॉफ्टवेयर उपलब्ध होते हैं।

उदाहरण– जावा, विंडो, सुपरनोवा (JAVA, Window Eyes, Supernova) आदि।

(2) स्क्रीन रीडर युक्त मोबाइल फोन – आधुनिक मोबाइल फोन के लिए भी स्क्रीन रीडर विकसित किये गये हैं। दृष्टिबाधितों की काम क्षमताओं को बढ़ाने वाली कुछ विशेषताएँ निम्नलिखित हैं :-

- ऐड्रेस बुक (Address Book) पढ़ने की सुविधा
- बहुभाषी शब्द कोष
- जी.पी.एस. (GPS) आधारित संचलन

NOTES

- ई-मेल (E-mail) लेखन एवं पठन
- कक्षा में व्याख्यान अथवा छोटे संदेश ध्वन्यक्ति करना
- अलार्म घड़ी आदि।

कम्प्यूटर और मोबाईल फोन के लिए स्क्रीन आवर्धन सॉफ्टवेयर – फॉन्ट आकार बढ़ाना, अग्रभूमि और पृष्टि भूमि रंग तथा स्पष्ट रूप से पहचान योग्य माउस प्वांइटर (Mouse Pointer) अल्प दृष्टि वाले एक व्यक्ति को कम्प्यूटर का उपयोग करने की सुविधा देते हैं। स्क्रीन आवर्धन सॉफ्टवेयर आँखों में तनाव को कम करने के लिए वाणी का उपयोग भी करते हैं।

दोहरी बाधिता

बहरापन – अन्धापन

बहरापन यानि अचानक या धीरे-धीरे सुनने की क्षमता घटना। बहरापन अलग अलग तरह का होता है :

- **चलित (कंडक्टिव) बहरापन :** आवाज अवरोधित होती है। यह कई बार कान में मैल जम जाने से होता है।
- **संवेदनतंत्रीय बहरापन :** संवेदनतंत्र की किसी समस्या के कारण ठीक से सुनाई नहीं देता। यह आमतौर पर उम्र बढ़ने पर होता है।
- मिश्रित बहरानपन ऐसा बहरापन जिसमें चालन और संवेदिक तंत्र दोनों पर असर होता है।

कारण

- उम्र बढ़ना
- ऊँची आवाजें सहना
- अवरोध
- कान में संक्रमण
- कुछ दवाइयाँ
- कान और सिर पर चोट
- कुछ बीमारियाँ

NOTES

- जन्म के साथ कान में समस्या
- परिवार के सदस्यों का बहरा होना

लक्षण

- आवाजें दबी हुई लगती हैं।
- ऊँचे स्वर, वाली आवाजें सुनने में मुश्किल होती है।
- जब पृष्ठभूमि में आवाजें हो रही हों, तब शब्दों को समझने मुश्किल होती है।
- आप दूसरों को कोई बात दोहराने को, या धीरे, स्पष्ट या ऊँचा बोलने को कहते हैं।
- आप दूसरे लोगों की अपेक्षा आवाज में बोलते हैं।
- आप बातचीत करना या सामाजिक कार्यक्रमों में जाना टालते हैं।
- आप टीवी या रेडियो की आवाज ऊँची करते हैं।
- आपको चक्कर आते हैं, और आपके कान में घण्टियों की या भिनभिनाने की आवाज सुनाई देती हैं।

आपकी देखभाल

आपके बहरेपन के कारण जानने के लिए और आप कितना सुन सकते हैं, यह जानने के लिए परीक्षण किए जायेंगे। आपको चिकित्सक आपके कान के बाहरी, मध्य और अंदर के भाग की जाँच करेगा।

आपके बहरेपन के कारणों के आधार पर आपके इलाज में ये शामिल हो सकते हैं :

- कान की मैल निकालना
- दवाइयाँ
- सुनने के उपकरण
- हेड फोन जैसे सुनने के साधन या दरवाजे की घण्टियों या फोन के लिए जगमगाने वाली बत्तियाँ या वाइब्रेटर्स
- शल्यचिकित्सा (सर्जरी)

- आपको वाणी और श्रवण में मदद करने के लिए थैरपी

बहरेपन की रोकथाम

- अपने कानों को ऊँची आवाजों से बचाइए। मशीनों के साथ या ऊँची आवाजों के आसपास काम करते समय इयरप्लग पहनें।
- संगीत, मोटर साइकिल या स्नो मोबाइल जैसी ऊँची आवाजों से बचें।
- अपनी श्रवण शक्ति की जाँच करवाइए।

यदि आपका कोई प्रश्न या चिंता हो, तो अपने चिकित्सक या नर्स से बात कीजिए।

अन्धता

अंधता या **अंधापन**, देख न सकने की दशा का नाम है। जो बालक अपनी पुस्तक के अक्षर नहीं देख सकता, वह इस दशा से ग्रस्त कहा जा सकता है। दृष्टिहीनता भी इसी का नाम है। प्रकाश का अनुभव कर सकने की अशक्यता से लेकर ऐसे कार्य करने तक की अशक्यता जो देख बिना नहीं किए जा सकते, अंधता कही जाती है।

कारण

इस दशा के निम्नलिखित विशेष कारण होते हैं :

(1) पलकों में रोहे या कुकरे (ट्रैकोमा),

(2) चेचक या माता,

(3) पोषणहीनता (न्यूट्रिशनल डेफीशिएंसी),

(4) रतिज रोग, जैसे प्रमेह (गोनोरिया) और उपदंश (सिफिलिस),

(5) समलबाई (ग्लॉकोमा),

(6) मोतियाबिंद और

(7) कुष्ठ रोग

भारत के उत्तरी भागों में, जहाँ धूल की अधिकता के कारण रोहे बहुत होते हैं, यह रोग अधिक पाया जाता है। देशवासियों की आर्थिक दशा भी, बहुत बड़ी, सीमा तक, इस रोग के लिए उत्तरदायी है। उपयुक्त और पर्याप्त भोजन न मिलने से नेत्रों में रोग हो जाते हैं जिनका परिणाम अंधता होती है।

NOTES

रोहे या कुकरे (ट्रैकोमा)

यह रोग अति प्राचीन काल से अंधता का विशेष कारण रहा है। हमारे देश के अस्पतालों के नेत्र विभागों में आने 33 प्रतिशत अंधता के रोगियों में अंध ता का यही कारण पाया जाता है। यह रोग उत्तर प्रदेश, पंजाब, बिहारी तथा बंगाल में अधिका होता है। विशेषकर गाँवों में स्कूल जाने वाले तथा उसे भी पूर्व की आयु के बच्चों में यह रोग बहुत रहता है। इसका प्रारंभ बचपन से भी हो जाता है। गरीब व्यक्तियों के रहने की अस्वास्थ्यकर गंदगीयुक्त परिस्थितियाँ रोग उत्पन्न करने में विशेष सहायक होती हैं। इस रोग के उपद्रव रूप में कार्निया (नेत्रगोलक के ऊपरी स्तर) में व्रण (घाव) हो जाता है जो उचित चिकित्सा न होने पर विदार (छेद, पर्फोरेशन) उत्पन्न कर देता है, जिससे आगे चलकर अंधता हो सकती है।

इस रोग का कारण एक वाइरस है जो रोहों से पृथक् किया जा चुका है।

लक्षण और चिह्न

रोहे पलकों के भीतरी पृष्ठों पर हो जाते हैं। प्रत्येक रोहा एक उभरे हुए दाने के समान, लाल, चमकता हुआ, किंतु जीर्ण हो जाने पर कुछ धूसर या श्वेत रंग का होता है। ये गोल या चपटे और छोटे बड़े कई प्रकार के होते हैं। इनका कोई क्रम नहीं होता। इनमें पैनस (अपारदर्शक तंतु) उत्पन्न होकर कार्निया के मध्य की ओर फैलते हैं। इसका कारण रोगोत्पाद वाइरस का प्रसार है। यह दशा प्रायः कार्निया के ऊपरी अर्धभाग में अधिक उत्पन्न होती हैं।

रोग के सामान्य लक्षण

पलकों के भीतर खुजली और दाह होना, नेत्रों से पानी निकलते रहना, प्रकाशासह्यता और पीड़ा इसके साधारण लक्षण है। संभव है, आरंभ में कोई भी लक्षण न हो, किंतु कुछ समय पश्चात् उपर्युक्त लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं। पलक मोटे पड़ जाते हैं। पलकों को उलटकर देखने से उन पर रोहे दिखाई देते हैं।

अवस्थाएँ

इस रोग की चार अवस्थाएँ होती हैं। पहली अवस्था में श्लेषिम कला (कंजंक्टाइवा) एक समान शोथयुक्त और लाल मखमल के समान दिखाई पड़ती है, दूसरी अवस्था में रोहे बने जाते हैं। तीसरी अवस्था में रोहों के अंकुर जाते रहते हैं और उनके स्थान में सौत्रिक धातु बनकर कला में सिकुड़न पड़

NOTES

जाती है। चौथी और अंतिम अवस्था में उपद्रव (कांप्लिकेशन) उत्पन्न हो जाते हैं, जिनका कारण कार्निया में वाइरस का प्रसार और पलकों की कला का सिकुड़ जाना होता है। अन्य रोगों के संक्रमण (सेकंडरी इनफेक्शन) का प्रवेश बहुत सरल है और प्राय: सदा ही हो जाता है।

इन रोगों के परिणामस्वरूप श्लेष्मकला (कंजंक्टाइवा), कार्निया तथा पलकों में निम्नलिखित दशाएँ उत्पन्न हो जाती हैं :

(1) परवाल (एंट्रोपियन, ट्रिकिएसिस)- इससे ऊपरी पलक का उपासिपट्ट (टार्सस) भीतर को मुड़ जाता है; इससे पलकों के बाल भीतर की ओर मुड़कर नेत्रगोलक तथा कार्निया को रगड़ने लगते हैं जिससे कार्निया पर वर्ण बन जाते हैं :

(2) एक्ट्रोपियन- इसमें पलक की छोर बाहर मुड़ जाती है। यह प्राय: नीचे की पलक में होता है;

(3) कार्निया के वर्णों के अच्छे होने में बने तंतु तथा पैनस के कारण कार्निया अपारदर्शी (ओपेक) हो जाती है :-

(5) स्टैफीलोमा हो जा सकती है, जिसमें कार्निया बाहर उभड़ जाती है; इससे आंशिक या पूर्ण अंधता उत्पन्न हो सकती है;

(6) जीरोसिस, जिसमें श्लेष्मकला संकुचित और शुष्क हो जाती है एवं उस पर शल्क से बनने लगते हैं:

(7) यक्ष्मपात (टोसिस), जिसें पेशोसूत्रों के आक्रांत होने से ऊपर की पलक नीचे झुक जाती है और ऊपर नहीं उठ पाती, जिससे नेत्र बंद सा दिखाई पड़ता है।

हेतुकी (ईटियोलॉजी)

रोहे का संक्रमण रोगग्रस्त बालक या व्यक्ति से अँगुली, अथवा तौलिया, रूमाल आदि वस्त्रों द्वारा स्वस्थ बालक में पहुँचकर उसको रोगग्रस्त कर देता है। अस्वच्छता, अस्वस्थ परिस्थितियाँ तथा बलवर्धक भोजन के अभाव से रोगोत्पत्ति में सहायता मिलती है। रोग फैलाने में धूल विशेष सहायक मानी जाती है। इस कारण गाँवों में यह रोग अधिक होता है। उपयुक्त चिकित्सा का अभाव रोग के भयंकर परिणामों का बहुत कुछ उत्तरदायी है।

NOTES

चिकित्सा

औषधियों और शस्त्रकर्म दोनों प्रकार से चिकित्सा की जाती है। औषधियों में ये मुख्य हैं :- (1) सल्फोनेमाइड की 6 से 8 टिकिया प्रति दिन खाने को। प्रतिजीवी (ऐंटिबायोटिक्स) औषधियों का नेत्र में प्रयोग, नेत्र में डालने के लिए बूँदों के रूप में तथा लगाने के लिए मरहम के रूप में जिसकी क्रिया अधिक समय तक होती रहती है।

पेनिसिलीन से इस रोग में कोई लाभ नहीं होता; हाँ, अन्य संक्रमण उससे अवश्य नष्ट हो जाते हैं। इस रोग के लिए ऑरोमायसीन, टेरा मायसीन, क्लोरमायसिटीन आदि का बहुत प्रयोग होता है। हमार अनुभव में सल्फासिटेमाइड और नियोमायसीन दोनों को मिलाकर प्रयोग करने से संतोषजनक परिणाम होते हैं। आईमाइड-मायसिटीन को, जो इन दोनों का योग है, दिन में चार बार, छह से आठ सप्ताह तक, लगाना चाहिए। साथ ही जल में बोरिक एसिड, जिंक और ऐड्रिनेलीन के घोल की बूँदें नेत्र में डालते रहना चाहिए। यदि कार्निया का व्रण भी हो तो इनके साथ ऐट्रोपीन की बूँदें भी दिन में दो बार डालना और बोरिक घोष से नेत्र को धोना तथा उष्म सेंक करना उचित है।

शस्त्रोपचार

शस्त्रोपचार केवल उस अवस्था में करना होता है जब उपर्युक्त चिकित्सा से लाभ नहीं होता।

श्लेष्मकला को ऐनीथेन से चेतनाहीन करके प्रत्येक रोहे की एक चिमटी (फॉरसेप्स) से दबाकर फोड़ा जाता है। इस विधि का बहुत समय से प्रयोग होता आ रहा है और यह उपयोगी भी है। श्लेष्मकला का छेदन केवल दीर्घकालीन रोग में कभी-कभी किया जाता है। एंट्रोपियन, एक्ट्रोपियन और कार्निया की श्वेतांकता की चिकित्सा भी शस्त्रकर्म द्वारा की जाती है। श्वेतांक जब मध्यस्थ या इतना विस्तृत होता है कि उसके कारण दृष्टि रूक जाती है तो कार्निया में एक ओर छेदन करके उसमें से आयरिस के भाग को बाहर खींचकर काट दिया जाता है, जिससे प्रकाश के भीतर जाने का मार्ग बन जाता है। इस कर्म को ऑप्टिकल आइरिडेक्टामी कहते हैं।

पैनस के लिए विटामिन-बी2 (राइबोफ्लेवीन) 10 मिलीग्राम, अंत:पेशीय मार्ग से छह या सात दिन तक नित्य प्रतिदिन देना चाहिए। नेत्र को प्रक्षालन द्वारा स्वच्छ रखना आवश्यक है।

गूंगे बहरे (Deaf and Dumb) बालक

विकलांग-बालकों से अभिप्राय दोष वाले बालकों से है। ऐसे बालकों में आत्महीनता पाई जाती है। लंगडना वाणी दोष श्रवण आदि विक-लांग होने के

लक्षण है। प्रत्येक विकलांग बालक में कुछ गुण तथा कुछ व्यावहारिक समस्याऐं होती है। गूंगे एवं बहरे बच्चे सामान्य बालकों की अपेक्षा शारीरिक रूप से असुरक्षित रहते हैं। उनकी अत्यन्त गंभीर समस्या शिक्षा तथा सामाजिक वातावरण की है। उनको वंछित सामाजिक स्तर नहीं मिल जाता है और वे अल्पसंख्यक रहते हैं। ऐसे बालकों को श्रवण उपकरण द्वारा ध्वनियों को सुनाने का अवसर प्रदान करके आत्मविश्वास उत्पन्न किया जा सकता है।

जो बच्चे गूंगे तथा बहरेपन से भंयकर रूप से पीड़ित है उनकी शिक्षा की व्यवस्था बधिर विद्यालयों (Deafs' school) में होनी चाहिए। वहाँ पर उनकी ओष्पाठन एवं संकेत-अभिव्यक्ति द्वारा भावभिव्यक्ति करना सिखाया जाता है। संकेतों को सीखे लेने के बाद ऐसे बालक सामान्य समाज में अपना कार्य चलाने लगते हैं। गूंगे बहरे बच्चों को जब ऐसे विशेष विद्यालयों में प्रवेश दिखाला जाय- तब इस बात का ध्यान रखा जाय कि उनका सम्पर्क परिवार से टूटे नहीं अन्यथा वे स्वयं को पूर्णत: उपेक्षित समझेंगे। इस बात का विशेष ध्यान रखा जाये कि विकलांग बालकों को उनकी विकलांगता को छोड़कर शेष सभी बातों में सामान्य समझा जाये। वे धीरे-धीरे सामान्य शिक्षा को बढ़ाते जाते हैं, उनमें आत्मविश्वास बढ़ता है।

1.5 Challenges arising due to congentital and acquired hearing loss

श्रवण ह्रास से ग्रसित बालक की समस्याएँ एवं आवश्यकताएँ

श्रवण ह्रास व्यक्ति के व्यवहार के कुछ पक्षों पर बहुत बुरा असर डालता है। यदि किसी मनुष्य को यह कहा जाय कि उसे श्रवण ह्रास और दृष्टि अक्षमता में किसी एक को चुनना है तो वह नि:संदेह श्रवण ह्रास को ही चुनेगा क्योंकि चलने फिरने में दृष्टि पर ज्यादा विश्वास किया जा सकता है तथा प्रकृति का सौन्दर्य भी दृश्य ही है। हेलेन किलर ने कहा है कि दृष्टिबाधिता व्यक्ति को वस्तुओं से अलग करती है जबकि श्रवण ह्रास व्यक्ति को व्यक्ति से अलग कर देता है। इस भाषा-आधारित समाज में श्रवण ह्रास से ग्रसित व्यक्ति को अधिक हानि पहुंचती है। बालक अथवा व्यक्ति कई प्रकार की परेशानी से जुझता है।

भाषा एवं वाणी विकास (Language and Speech Development) :

बालक में भाषा एवं वाणी का विकास अनुकरण के द्वारा होता है। बालक

NOTES

करता है तथा अनुकरण के द्वारा ही उसमें भाषा एवं वाणी का विकास होता है। श्रवण ह्रास से ग्रसित बालक को ध्वनि का कोई संप्रत्यय ही नहीं होता है जिससे बालक अपने समाज से अन्तःक्रिया करने में अक्षम हो जाता है। परिणामस्वरूप भाषा एवं वाणी का विकास बुरी तरह से प्रभावित हो जाता है।

बौद्धिक क्षमता (Intellectual Ability) :

वर्षों से श्रवण ह्रास से ग्रसित बालक की बौद्धिक क्षमता एक विवादित मुद्दा रही है। कुछ विद्वानों का मत था कि श्रवण ह्रास से बालक अथवा व्यक्ति की भाषा प्रभावित होती है तथा भाषा को बौद्धिक क्षमता का यह घटक माना जाता है, अर्थात् ह्रास से ग्रसित बालक की बौद्धिक क्षमता कम होती है। जबकि यह बिल्कुल नहीं कहा जा सकता है कि श्रवण ह्रास से ग्रसित बालक में किसी भाषा का विकास नहीं होता बल्कि बालक सांकेतिक भाषा के द्वारा अपने विचारों को व्यक्त करता है। कुछ हद तक बालक और श्रोता-समाज के मध्य सम्प्रेषण कम होने से कुछ सम्प्रत्यात्मक जटिलताएं या सम्प्रत्ययीकरण की समस्याएँ बालक में रह जाती हैं। सम्प्रत्ययीकरण की समस्या के अतिरिक्त बालक में बुद्धिलब्धि भी कम पाई जाती है। जबकि कुछ विशेषज्ञों का कहना है कि यदि बुद्धि परीक्षण अभाषिक हो तथा इसका प्रशासन भी सांकेतिक भाषा की सहायता से किया जाये तो इन बालकों की बुद्धिलब्धि भी सामान्य पायी जाएगी।

शैक्षिक उपलब्धि (Academic Achievement) :

श्रवण ह्रास से ग्रसित बालकों की शैक्षिक उपलब्धि कम होती है क्योंकि इन बालकों की पढ़ने की क्षमता सबसे अधिक प्रभावित होती है जो कि बालक की उपलब्धि का एक मुख्य घटक है। कुछ विद्वानों का मत है कि इन बालकों में यह अक्षमता जन्म से नहीं होती है बल्कि श्रवण ह्रास के कारण उत्पन्न होती है। बालक की उम्र जैसे-जैसे बढ़ती जाती है वैसे-वैसे बालक की शैक्षिक उपलब्धि कम होते जाती है।

सामाजिक समायोजन (Social Adjustment) :

सामाजिक एवं व्यक्तित्व विकास बालक और समाज के मध्य सम्प्रेषण पर निर्भर करता है। श्रवण ह्रास से ग्रसित बालक समाज से कट सा जाता है तथा बच्चा एक प्रकार से समाजीकरण की प्रक्रिया से वंचित रह जाता है। इन बालकों में सामान अक्षमता वाले बच्चों के साथ दोस्ती अच्छी होती है।

आवश्यकताएं (Needs)

श्रवण ह्रास वाले बालकों की सबसे बड़ी समस्या सम्प्रेषण स्थापित करने में अक्षमता है। सम्बन्धित शिक्षकों के लिए सम्प्रेषण स्थापित करना एक बड़ी

चुनौती होती है। सम्प्रेषण की समस्या को दूर करने हेतु इन बच्चों को कुछ विशेष प्रशिक्षण की जरूरत होती है। विशेषत: दो प्रकार के प्रशिक्षा श्रवण ह्रास व्यक्तियों की समस्याओं को हल कर पाते हैं- मौखिक प्राविधि तथा शारीरिक प्रविधि। इन दोनों प्रविधियों को लेकर विशेषज्ञों में विवाद रहा है। किन्तु अब सम्पूर्ण सम्प्रेषण उपागम को अधिक उपयोगी माना जा रहा है। यहाँ हम सबसे पहले मौखिक प्राविधि पर चर्चा करेंगे-

मौखिक प्राविधि (Oral Technique) : श्रवण प्रशिक्षण (Auditory Training) तथा वाणी पठन (Speech Reading)

श्रवण प्रशिक्षण (Auditory Training) श्रवण ह्रास से ग्रसित बालकी की शेष श्रवण क्षमता को अधिकतम प्रयोग कर अर्थपूर्ण सूचनायें प्राप्त करने की विधि सिखाने का प्रशिक्षण है। इस प्रशिक्षण से बहुत ही कम बालक लाभ हासिल कर पाते हैं। जबकि प्रौद्योगिकी विकास के कारण अब इससे ज्यादा लाभ लिया जा रहा है।

श्रवण प्रशिक्षण (Auditory Training) के निम्नलिखित तीन प्रमुख उद्देश्य हैं-

- ध्वनि जागरूकता का विकास
- वातावरणीय ध्वनियों के मध्य मोटा-मोटी अंतर करने की क्षमता का विकास
- भाषिक-ध्वनियों के बीच विभेद करने की क्षमता का विकास

वाणी पठन (Speech Reading) के लिए कभी-कभी ओष्ठ पठन (Lip Reading) समानार्थी शब्द के रूप में प्रयुक्त किया जाता है परंतु उचित नहीं है क्योंकि वाणी पठन (Speech Reading) काफी व्यापक पद है जो पूरे वातावरण को शामिल करते हैं जिससे अधिकाधिक सूचनायें प्राप्त की जा सकती हैं जबकि ओष्ठ पठन (Lip Reading) मात्र ओष्ठ तक सीमित करता है। वाणी पठन (Speech Reading) श्रवण ह्रास मनुष्यों को दृश्य सूचनाओं के आधार पर सम्प्रेषण स्थापित करने का प्रशिक्षण है।

वाणी पाठक (Speech Reader) मुख्यत: तीन प्रकार की दृश्य सूचनाओं से लाभ उठा सकते हैं जोकि निम्न हैं-

- वातावरणीय उद्दीपक
- सूचना से सम्बन्धित उद्दीपक जोकि वाणी का भाग नहीं हो

- वाणी से प्रत्यक्ष रूप से जुड़े उद्दीपक

परीक्षापयोगी प्रश्न

दीर्घउत्तरीय प्रश्न

1. श्रवण बाधिता से आप क्या समझते हैं? इसकी प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।
2. श्रवण बाधित बालकों के प्रकारों का वर्णन कीजिए।
3. श्रवण बाधित बालकों की पहचान स्पष्ट कीजिए।
4. श्रवण बाधित बच्चों की पहचान हेतु परीक्षण समझाइये।
5. कक्षा-कक्ष में CWHI के प्रबंधन हेतु युक्तियाँ एवं रणनीतियाँ स्पष्ट कीजिए।
6. दृष्टिबाधित बालक से आप क्या समझते हैं? इनका वर्गीकरण स्पष्ट कीजिए।
7. दृष्टि अक्षमता का व्यक्ति पर क्या प्रभाव पड़ता है ?
8. दृष्टिबाधित बालकों के प्रबंधन में युक्तियाँ एवं रणनीतियाँ समझाइये।
9. दृष्टिबाधित बालकों की शिक्षा सविस्तार समझाइये।
10. सकारात्मक अभिवृत्तियों के निर्माण में अध्यापक की भूमिका स्पष्ट कीजिए।
11. श्रवण ह्रास से ग्रसित बालक की समस्याएँ एवं आवश्यकताऐं समझाइये।

लघुउत्तरीय प्रश्न

1. श्रवण बाधित की अवधारणा स्पष्ट कीजिए।
2. श्रवण बाधित की प्रक्रिया समझाइये।
3. श्रवण क्षति युक्तता के कारण स्पष्ट कीजिए।
4. दृष्टि बाधित की अवधारणा स्पष्ट कीजिए।
5. दृष्टि विकार से आप क्या समझते हैं ?
6. दृष्टि विकार की पहचान स्पष्ट कीजिए।
7. दृष्टि बाधित हेतु विस्तृत पाठ्यक्रम समझाइये।
8. दृष्टि बाधित के प्रति सामाजिक अभिवृत्तियाँ स्पष्ट कीजिए।
9. दृष्टि बाधितों की शिक्षा के लिए उपकरण समझाइये।

2 श्रवण बाधिता के प्रभाव (Inequality in Scholling)

NOTES

अध्याय में सम्मिलित विषय-सामग्री :

- उद्देश्य
- प्राक्कथन
- श्रवण बाधिता का अर्थ।
  - कान की संरचना।
  - श्रवण प्रक्रिया।
  - बाधिता का अर्थ एवं परिभाषाएं।
- श्रवण बाधिता का वर्गीकरण।
  - समय के आधार पर।
  - कान के हिस्सों के प्रभावित होने के आधार पर।
  - प्रकृति के अधार पर।
  - डिग्री के आधार पर।
- श्रवण बाधिता बच्चों की विशेषताएं।
- परीक्षापयोगी प्रश्न

उद्देश्य--

इस अध्याय के अध्ययन के पश्चात् आप निम्न तथ्यों को समझ सकेंगे-

- श्रवण बाधिता का अर्थ।
  - कान की संरचना।
  - श्रवण प्रक्रिया।
  - बाधिता का अर्थ एवं परिभाषाएं।
- श्रवण बाधिता का वर्गीकरण।
  - समय के आधार पर।
  - कान के हिस्सों के प्रभावित होने के आधार पर।
  - प्रकृति के अधार पर।
  - डिग्री के आधार पर।
- श्रवण बाधिता बच्चों की विशेषताएं।

NOTES

प्राक्कथन

हम जानते हैं कि मनुष्य अपनी इन्द्रियों के द्वारा ही अपने वातावरण से जुड़ता है। पाँच प्रमुख इन्द्रियों में श्रवण एक महत्वपूर्ण इन्द्रिय है क्योंकि न की यह सिर्फ वातावरण में मौजूद ध्वनियों को सुनने में सहायता करती है बल्कि वाणी तथा भाषा के विकास के लिए पूर्वपेक्षित भी है। श्रवण एक दूरस्थ इन्द्रिय के रूप में हमें खतरों से बचाती है बोलने की क्षमता प्रदान करने के साथ ही मनोरंजन के लिए स्वाभाविक इन्द्रिय की तरह भी कार्य करती है। श्रवण प्रक्रिया के बाधित होने से मनुष्य का सामान्य जीवन तथा उसका अन्य क्रियाकलाप के सभी पहलु प्रभावित होते हैं। प्रस्तुत इकाई में विस्तार से श्रवण बाधिता का अर्थ, वर्गीकरण एवं विशेषताओं सम्बन्धित जानकारियाँ प्रस्तुत हैं।

श्रवण बाधिता का अर्थ

श्रवण बाधित का अर्थ जानने से पूर्व कण की सँरचना तथा श्रवण प्रक्रिया जानना आवश्यक है।

कान की संरचना

कान वातावरण में उत्पन्न होने वाली विभिन्न ध्वनि तरंगों को अपने तंत्र द्वारा ग्रहण कर मस्तिष्क तक भेजता है जिससे हमें वातावरण में ध्वनि का ज्ञान प्राप्त होता है। इसे ही 'सुनना' कहते हैं। संरचना की दृष्टि से कान को तीन भागों में विभाजित किया गया है–

1. बाह्य कर्ण 2. मध्य कर्ण 3. अन्तः कर्ण

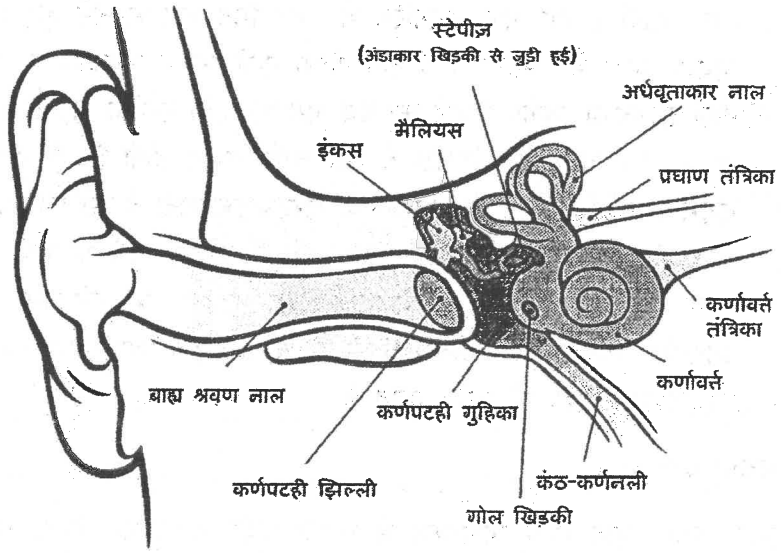

NOTES

1. **बाह्य कर्ण :** बाह्य कर्ण की आकृति कम जैसी होती है यह ध्वनि तरंगों को ग्रहण करती हैं और बाह्य ध्वनि कैनाल इन तरंगों को कर्ण पटल तक ले जाती है। बाह्य कर्ण दो भागों में बांटा गया है।

   (i) कर्ण शष्कुली : यह कान का बाहर दिखाई देने वाला भाग है। इसका कार्य वायुमण्डल में ध्वनि तरंगों को ग्रहण कर उसे कर्णपथ की ओर भेजता है।

   (ii) कर्णपथ : यह कर्ण शष्कुली के बीच के गहरे भाग से कर्णपटल तक चलने वाली एक नलिका है। यह एस के आकार की होती है। इस भाग में कर्णगूथ ग्रंथियां होती हैं जो सूखने से बचाती हैं।

2. **मध्य कर्ण :** मध्य कर्ण कान की हड्डी-शंखास्थि में स्थित चपटा भाग है। मध्य कर्ण के बाहर की ओर की भित्ति कर्ण पटल से बनती है। यह एक तश्तरी नुमा तनी हुई झिल्ली होती है और इस पर ध्वनि तरंग टकराने पर कंपन करती है। ये शरीर की तीन बहुत सूक्ष्म हड्डियों से जुड़ी होती हैं। इन्हें ओसिकल चैन कहते हैं ये ओसाइकल सूक्ष्म अस्थियाँ हैं मेलियस इन्कस तथा स्टेपिज। ये तीनों अस्थियां लीवर के सामन एक दूसरे से जुड़ी होती हैं और परदे की हलचल के साथ ही तीनों समकालिक स्पंटन करती हैं और अंदरूनी कान को ध्वनि तरंगी भेजती हैं। इन दोनों में से अंतिम अस्थि स्तैपिज अंतरू कर्ण से जुड़ी होती हैं।

3. **अंतः कर्ण :** यह भाग शंखास्थि में अनियमित रूप से बने हुए रास्ते अथवा कोटर हैं। अंतःकर्ण में तीन दोहरी नली की ललिकाकार संरचना होती हैं जिनमें विशेष प्रकार का द्रव भरा होता है। स्टैपिज की हलचल से यह द्रव आगे पीछे हिलता है और तरंगे उत्पन्न होती हैं। ये नलियाँ दोहरी इसलिए होती हैं तथा झिल्लियों द्वारा प्रथक होती हैं इसे लिब्रियान्थ कहते हैं। यह श्रवण का मुख्य भाग होती है। दोहरी नली के मध्य की रचना में विशिष्ट प्रकार के द्रव होते हैं। बाहरी भाग को पेरिलिम्प और आन्तरिक भाग को एण्डोलिम्प कहते हैं। ये दोनों द्रव ध्वनि तरंगें टकराने पर विपरीत दिशा में कंपन करते हैं।

श्रवण प्रक्रिया

सबसे पहले बाह्य कर्ण वातावरण में व्याप्त ध्वनि तरंगों को ग्रहण करके कर्णपटल तक पहुँचता हैं जिसमें कर्णपटल में कंपन उत्पन्न होता है। ये कंपन मध्यकर्ण में उपस्थित तीन छोटी हड्डियों मैलियस, इनकस तथा स्टेपीज के

द्वारा अंत:कर्ण तक पहुँचती है। मध्यकर्ण की अस्थियों का कंपन अंत:कर्ण के तरल में तरंगें उत्पन्न करता है। इसका परिणाम कॉकलिया के द्रवों में गतिमय होता है। कॉकलिया के अंदर संवेदनशील कोशिकाएं होती हैं जो कि इन गति को नोट कर लेती हैं तथा न्यूरल क्रियाओं की शुरूआत करती हैं जो कि आडिटरी नर्व के द्वारा दिमाग तक पहुँचायी जाती है। इस प्रकार हम सुनते हैं।

कुछ महत्वपूर्ण तथ्य-

(i) बोलना एक स्वाभाविक प्रक्रिया है।

(ii) वह संरचना जिनका उपयोग चूसने, काटने, चबाने एवं निगलने के लिए किया जाता है वही भाषा के उत्पादन में उपयोग में लायी जाती हैं।

(iii) गले में स्थिर स्वर यंत्र जो कि फेंफड़ों में किसी बाहरी वस्तु के जाने को रोकने के लिए बनायी गयी है उसका उपयोग आवाज निकालने में किया जाता है।

(iv) फेंफड़ों के बाहर निकाली गई वायु का उपयोग कंठ ध्वनि में कंपन पैदा करने के लिए जिसमें कि ध्वनि पैदा हो, किया जाता है।

(v) इस प्रकार संरचनाएं जो कि सॉस लेने व खाने के लिए किया जाता है। उसका प्रयोग ध्वनि उत्पन्न करने के लिए किया जाता है।

(vi) हालांकि दिमाग इन सबका प्रमुख नियंत्रक है। बोलना एक सॉस लेने की अभिव्यक्ति करने की एवं ध्वनि निकालने की नियंत्रित प्रक्रिया है।

श्रवण बाधिता का वर्गीकरण

बधिरता का वर्गीकरण निम्न प्रकार से किया जाता है-

1. समय के आधार पर

i. जन्मजात श्रवण दोष-जन्म के समय किसी भी वजह से होने वाला श्रवण दोष जन्मजात दोष कहलाता है। यह प्रसव के दौरान भी हो सकता है।

ii. वंशानुगत श्रवण दोष-जब श्रवण दोष गुणसूत्रों की अनियमितता के कारण होात है तो वह एक पीढी से दूसरी पीढ़ी तक प्रभावित करता है। इसे वंशानुगत श्रवण दोष कहते हैं।

iii. उपार्जित श्रवण दोष–जन्म के पश्चात् किसी प्रकार की चोट, संक्रमण अथवा गंभीर बीमारी के कारण होने वाला दोष उपार्जित श्रवण दोष कहलाता है।

iv. भाषा विकास पूर्ण श्रवण दोष–जब किसी बच्चे में वाणी एवं भाषा विकास की आयु से पूर्व श्रवण समस्या उत्पन्न होती है तो उसे भाषा विकास पूर्व श्रवण दोष कहते हैं।

v. पश्च भाषा विकास श्रवण–दोष वाणी एवं भाषा विकास के सयम के बाद होने वाला श्रवण दोष पश्च भाषा विकास श्रवण दोष कहलाता है।

2. कान के प्रभावित होने के आधार पर

i. चालकीय श्रवण दोष या व्रवाहमान श्रवण दोष–चालकीय श्रवण दोष का प्रभाव बाह्य कर्ण तथा मध्य कर्ण में होता है। ठीक तरह से ध्वनि आंतरिक कर्ण में नहीं पहुँच पाती। सभी सुनी हुई आवाजें दबकर रह जाती हैं। इस प्रकार के व्यक्ति वातावरण की आवाज का ध्यान रखे बिना बहुत मंद बोलते हैं।

ii. संवेदनिक श्रवण दोष संवेदनिक श्रवण दोष, आंतरिक कर्ण में कोई बीमारी होने अथवा खराब होने के कारण होता है। यह दोष कुछ बीमारियाँ जैसे- खसरा, गलगन्ड, दिमागी बुखार तथा क्षय रोग के कारण भी होता है।

iii. मिश्रित श्रवण दोष- मिश्रित श्रवण दोष चालकीय श्रवण दोष संवेदनिक श्रवण दोष का मिश्रण है। इस दोष का प्रमुख कारण है लंबे समय तक कान में बीमारी का होना जिसे क्रोनिक सपरेटिव ओटाइटिस मीडिया के नाम से जाना जाता है। इसके कारण कान से निरंतर पानी का गिरना, खून आना तथा पस का बहाव होता है।

iv. केन्द्रीय श्रवण दोष- यह केन्द्रीय तंत्रिका तंत्र में क्षति की वजह से होता है।

3. प्रकृति के आधार पर

i. सम्बन्धित श्रवण दोष–इस प्रकार का दोष किसी संक्रमण, वंशानुगत कमी या आयु के आधार पर होता है। चालकीय, संवेदनिक तथा मिश्रित श्रवण दोष प्रकृति में सम्बन्धित हो सकता है।

ii. आकस्मिक श्रवण दोष- जब किसी मनुष्य की श्रवण तंत्रिका चोट के कारण क्षतिग्रस्त हो जाती है तो इसे आकस्मिक श्रवण दोष कहते हैं। अचानक श्रवण दोष, संवेदनिक श्रवण दोष का ही एक रूप है।

4. डिग्री गम्भीरता के आधार पर

1. क्लार्क के अनुसार -

10 - 25 डी0बी0	- सामान्य
26 - 40 डी0 बी0	- अति अल्प
41 - 55 डी0 बी0	- अल्प
56 - 70 डी0 बी0	- अल्पतम
71 - 90 डी0 बी0	- गंभीर
91 डी0 बी0 या अधिक	- अति गंभीर

2. विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार-

0 - 25 डी0 बी0	- सामान्य
26 - 40 डी0 बी0	- अति अल्प
41 - 55 डी0 बी0	- अल्प
56 - 70 डी0 बी0	- अल्पतम
71 - 90 डी0 बी0	- गंभीर
91 डी0 बी0 या अधिक	- अति गंभीर

3. गुडमैन्स के वर्गीकरण के अनुसार :

10 DBHL - 15 DBHL	- सामान्य
16 DBHL - 25 DBHL	- निम्नतम
26 DBHL - 40 DBHL	- अति अल्प
41 DBHL - 55 DBHL	- अल्प
56 DBHL - 70 DBHL	- अल्पतम
71 DBHL - 90 DBHL	- गंभीर

91 DBHL या अधिक – अति गंभीर

4. बी0एस0ए0 एवं बैटार्ड (1988) जोसेफ में उद्धृत के अनुसार-

0 - 19डी0बी0 – सामान्य

20 - 40डी0बी0 – अति अल्प

41 - 70डी0बी0 – अल्प

71 - 95डीबी0 – गंभीर

95डी0बी0 या अधिक – अति गंभीर

NOTES

श्रवण दोष के कोटि का प्रभाव (Impact of degree of hearing loss)

श्रवण दोष के कोटि का प्रभाव विभिन्न श्रेणियों पर निम्न प्रकार से पड़ता है।

सामान्य (Normal)

इस श्रेणी के अन्तर्गत व्यक्ति की श्रवण शक्ति सामान्य होती है। उसे किसी प्रकार की आवाज सुनने में कोई कठिनाई नहीं होती है। छोटे बच्चे आसानी से वाणी तथा भाषा का विकास कर लेते हैं।

अति अल्प श्रवण दोष (Mild Hearing Loss)

बालक किसी भी आवाज को सामान्य की ही तरह सुन सकता है, लेकिन कभी-कभी धीमी व पतली आवाजों को सुनने में परेशानी होती है। सम्प्रेषण व भाषा सीखने में जन्म से ही अल्प प्रभाव पड़ता है। इसमें बालक स्वर ध्वनियों को स्पष्ट रूप स सुनता है, जबकि अघोष व्यंजनों को छोड़ देता है। इस प्रकार श्रवण क्षति बालक में प्रथम वर्ष के बाद श्रवण अधिगम में कठिनाई होती है। बच्चे केवल ऊँची घोष वाक् ध्वनियों को सुन पाते हैं। अति अल्प श्रवण दोष से ग्रसित बालक प्रत्यक्ष बोली गयी लगभग 25% वाणी को नहीं सुन सकता है।

अल्प श्रवण दोष (Moderate Hearing Loss)

ऐसे बालक साधारण वार्तालाप स्तर की सभी ध्वनियों को नहीं सुन पाते। वे श्रवण यंत्रों की सहायता से भाषा को समझ सकते हैं। क्षतियुक्त बालक में एकाग्रता की कमी, भाषा का क्षरण, वाणी समस्या तथा अधिगम समसया पायी जाती है। ऐसे बच्चों में शब्दों के अर्थ तथा भाषा के व्याकरणिक नियम को समझने में समस्या होती है। इस स्तर पर स्वर व्यंजनों की अपेक्षा स्पष्ट

NOTES

सुनायी देते हैं। इनमें सीमित शब्दकोश, एक शब्द के कई अर्थ द्वारा होने वाली विभिन्नता आदि का लोप दिखायी देता है। समग्र रूप से अल्प क्षतियुक्त बालक अपनी समझ एवं बोली गयी वाणी का लगभग 50% से 75% तक नहीं सुन पाता।

अल्पतम श्रवण दोष (Moderately Severe Hearing Loss)

श्रवण क्षति बालकों में वार्तालाप को निश्चित रूप से ऊँची आवाज में किया जाना चाहिये। इनमें देर से भाषा का विकास, दोषयुक्त वाक्य संरचना, सीमित शब्द-कोष, वाणी सुबोधता में कमी तथा वाणी की प्रभाविता गुणवत्ता इस प्रकार के बालकों में दिखायी देती है। बालकों में मौखिक अन्तःक्रियायें विद्यालयी वातावरण में कठिनाई युक्त होती हैं।

गम्भीर श्रवण दोष (Sever Hearing Low)

ऐसे बालकों में वाणी तथा भाषा विकास तत्काल नहीं हो पाता, लेकिन प्रारम्भिक विशिष्ट शिक्षा और श्रवण यंत्रों द्वारा वाणी संवर्द्धन से ऐसे बालकों की कार्यकुशलता बढ़ जाती है। संवर्द्धित यंत्र के बिना, क्षतियुक्त बालक साधारण वार्तालाप या ध्वनि को, नहीं सुन पाते। वे अपने स्वरों को, अति ध्वनि युक्त वातावरण को, और अति सघन ध्वनि को, जो निकट से बोली गयी हो, को सुन पाते हैं। वे विभिन्न श्रवण यंत्रों की सहायता से ध्वनियों की स्पष्ट पहचान, व्यंजनों के उच्चारण तरीकों में भेद को समझ सकते हैं। ऐसे अतिग्रस्त बालकों में सामान्य रूप से गम्भीर रूप से भाषा की समस्या, वाणी समस्या तथा अधिगम समस्या देखी गयी है।

अति गम्भीर श्रवण दोष (Profound Hearing Loss)

ऐसे बालकों में प्रारम्भिक चरणों से ही विशिष्ट शिक्षा के द्वारा, भाषा तथा वाणी का विकास किया जा सकता है। श्रवणयंत्र से ही बालक आवाज को सुन सकते हैं। इसके द्वारा वे लय, आदर्श वाणी के नमूने तथा उच्च पर्यावरणीय ध्वनियों को आसानी से सुन सकते हैं। भाषा विकास के पूर्व इस समस्या से ग्रसित होने पर, गम्भीर रूप से भाषा-क्षरण, वाणी समस्या एवं अधिगम की समस्या हो जाती है। ऐसे बच्चों में शोरगुल के समय वाणी समझने में कठिनाई, पीछे से बोली गयी आवाज एवं बोलने की प्रक्रिया में बाधा उत्पन्न हो जाती है।

1.4 श्रवण दोष के प्रकार (Types of Hearing Loss)

श्रवण क्षति को वर्गीकृत करते समय क्षति उत्पन्न होने की अवस्था,

आनुवांशिक गुण, क्षति की कोटि आदि को ध्यान में रखा जाता है। विभिन्न वर्गों एवं प्रकारों हेतु निम्न शब्दावलियों का प्रयोग किया जाता है।

NOTES

जन्मजात श्रवण दोष (Congenital Hearing Loss)

जन्मजात श्रवण दोष जन्म के समय से ही उपस्थित होता है। जन्मजात श्रवण दोष आनुवांशिक भी हो सकता है। यह दोष जन्म के पूर्व तथा जन्म के समय भी हो सकता है।

उपार्जित श्रवण दोष (Acquired Hearing Loss)

उपार्जित श्रवण दोष में पहले स्थिति सामान्य रहती है, लेकिन बाद में कुछ कारणों जैसे- गम्भीर बीमारी, दुर्घटना इत्यादि द्वारा श्रवण दोष उत्पन्न होता है।

श्रवणबाधित बच्चों की विशेषताएं

1. स्मृति : भाषा विकास में समस्या उत्पन्न होती है साथ ही चीजों को याद रखने में दिक्कत होती है। ऐसे बच्चों को प्लान बनाकर निर्देश दिया जाता है साथ ही चित्रों के द्वारा याद कराया जाता है। ऐसे बच्चों को सांकेतिक भाषा के माध्यम से या लिखकर मार्गदर्शित करना चाहिए।

2. **वार्तालाप में समस्या :** शिक्षकों की बात समझने या उनसे वार्तालाप में तथा सहपाठियों से वार्तालाप में समस्या उत्पन्न होती है। इसके लिए ऐसा वातावरण बनाना चाहिए जिससे ज्यादा से ज्यादा वार्तालाप हो। इन बच्चों को अधिक से अधिक सूचनायें एवं जानकारियाँ दृष्टि के द्वारा देनी चाहिए तथा लिखित जानकारी देनी चाहिए। सहपाठियों को ज्यादा से ज्यादा सहयोग देने के लिए प्रेरित करना चाहिए। शिक्षकों को ज्यादा से ज्यादा ऐसे साधनों का प्रयोग करना चाहिए जिससे श्रवण बाधित बोलने के लिए प्रेरित हो सके।

3. **भाषा विकास :** भाषा तथा वाणी विकास की योग्यता श्रवणबाधित बच्चों में सबसे अधिक प्रभावित होती है। सघन एवं विस्तृत प्रशिक्षण की अनउपलब्धता की स्थिति में इनका भाषा विकास नहीं किया जा सकता। भाषा का विकास इन बात पर निर्भर करता है कि उम्र में श्रवण बाधि ता आयी। वो बच्चें जो जन्म से ही पूरी तरह से श्रवण क्षति ग्रस्त होते हैं उनमें समस्या उत्पन्न होती है। शब्दकोष एवं भाषा संबंधी नियमों से देर से परिचित होते हैं। अपने विचारों और भावों को व्यक्त करने में समस्या उत्पन्न होती है। ऐसे में इस प्रकार के वातावरण को बनाना चाहिए जिससे ज्यादा से ज्यादा भाषा का सीखने का अवसर मिले,

शब्दकोष में बढ़ोतरी हो तथा विचारों को व्यक्त कर सके।

4. **शैक्षिक कमी :** श्रवणबाधिता से ग्रसित बच्चों का विकास देर से होता है। वे पढ़ने, लिखने तथा गणितीय कौशल से देर से परिचित होते हैं। गणितीय जोड़, घटाव में परेशानी होती है। समस्या प्रधान सवालों को हल करने में दिक्कत होती है। स्वयं से अपने विचार व्यक्त करने में या लिखने में परेशानी होती है। याद करने के विभिन्न तरीकों को अपनाना चाहिए। ज्यादा से ज्यादा दृश्य सामग्री का प्रयोग करना चाहिए। बच्चों को ज्यादा से ज्यादा समस्या प्रधान सवालों को हल करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए, इसके लिए बढ़िया रणनीति बनानी चाहिए। लिखने के लिए ज्यादा प्ररित करना चाहिए। बच्चों को स्वतंत्र रूप से पढ़ने के लिए बल देना चाहिए। बच्चों को समूह में लिखने और पढ़ने के लिए प्रेरित करें। अध्यापक को भी अधिक से अधिक वार्तालाप करना चाहिए।

5. **सामाजिक व्यवहारों का आदान प्रदान :** कक्षा में बच्चों के साथ जुड़ने में मेल मिलाप में समस्या आती है। सहपाठी भी उन्हें अपने जैसा न पाकर उनसे जुड़ नहीं पाते। श्रवण बाधित व्यक्ति अपने मनोभावों को भी सही प्रकार से दर्शा नहीं पाता। इस प्रकार के बच्चों को सामाजिक व्यवहार के लिए प्रेरित करना चाहिए। समूह में कार्य करने के लिए बल देना चाहिए। साथ ही सहपाठियों को भी इन बच्चों को सहयोग देने तथा ज्यादा से ज्यादा वार्तालाप करने के लिए प्रेरित करना चाहिए। स्वयं पर नियंत्रण रखने तथा स्वयं को व्यवस्थित रखने के तरीकों से परिचित कराना चाहिए।

6. **बौद्धिक योग्यता :** सामान्यतः यह माना जाता है कि इनकी बौद्धिक क्षमता सामान्य से कम होती है लेकिन ऐसा नहीं है। इनकी बौद्धिक क्षमता भी सामान्य बच्चों जैसे ही बौद्धिक परीक्षणों में प्राप्ताकों में लगभग समान वितरण का प्रर्दशन करते हैं। यह आवश्यक है कि श्रवणबाधित बच्चों की उपलब्धि मौखिक बौद्धिक परीक्षणों की अपेक्षा अमौखिक बौद्धिक परीक्षणों में बेहतर प्रदर्शन करते हैं क्योंकि इसमें उनकी उपलब्धि भाषा से प्रभावित नहीं होती है।

श्रवण बाधित बच्चों की देखरेख तथा प्रशिक्षण

कानों की देख-रेख के उपाय तथा श्रवण बाधिता की रोक थाम

1. कानों को धूल, पानी गंदगी से बचाना चाहिए तथा साफ रखना चाहिए।

NOTES

2. कानों को नुकीली वस्तुओं जैसे माचिस की तीली, बालों की पिन, पेंसिल आदि से खोदना नहीं चाहिए। कानों के क्षतिग्रस्त होने की सम्भावना बढ़ जाती है।

3. कान पर मारना नहीं चाहिए इससे कान संम्बन्धित परेशानी बढ़ सकती है।

4. बच्चों के ऊपर निगरानी रखनी चाहिए जिससे कि वो छोटी वस्तुएं जैसे मिट्टी, बीज इत्यादि को कान में न डाल लें। इससे कान के पर्दे खराब होने की सम्भावना बढ़ जाती है।

5. कान को हमेशा शुष्क रखना चाहिए इसमें तेल इत्यादि को नहीं डालना चाहिए। इसेस कानों में दर्द होने सूजन आने की सम्भावना रहती है।

6. गंदे पानी में कभी तैराकी नहीं करनी चाहिए इससे गंदा पानी कानों में चला जाता है। जिससे परेशानी होने की संभावना रहती है। तैरते समय हमेशा कानों में रूई लगा लेनी चाहिए।

7. सड़क पर बैठने वाले व्यक्तियों से कभी कान की सफाई नहीं करवानी चाहिए। वे हमेशा गंदे औजारों का काम करते हैं जिससे संक्रमण की संभावना बढ़ जाती है। साथ ही कानों को भी क्षति पहुंचती है। हमेशा रूई से कानों की सफाई करनी चाहिए।

श्रवणबाधिता की रोकथाम

1. पास की रिस्तेदारी में शादी नहीं करनी चाहिए।

2. टीकाकरण समय-समय पर करवाना चाहिये। यदि कोई महिला रूबैला जैसी बीमारियों से ग्रसित है तो पूर्ण चैकअप भी करवाना चाहिए। कुपोषण से ग्रसित महिलाओं व बच्चों में इसकी संभावना ज्यादा बढ़ जाती है।

3. गर्भवती महिला को अपने स्वास्थ्य का खास ध्यान रखना चाहिए।

4. गर्भवती महिलाओं को ऐसे व्यक्तियों के सम्पर्क से दूर रहना चाहिए जिन्हें संक्रमित बीमारी हो।

5. इस बात का खास ध्यान रखना चाहिए कि बच्चा पैदा होते वक्त डॉक्टर पूर्णरूप से प्रशिक्षित हो।

6. बच्चे का टीकाकरण समय-समय पर हो।

NOTES

7. बिना धुले तकिये के कवर, तौलिया अथवा दूसरे व्यक्ति के द्वारा प्रयुक्त तकिया, जिसका कान पहले से संक्रमित हो, को प्रयोग नहीं करना चाहिये।

8. बहुत अधिक शोर-गुल वाले माहौल में नहीं रहना चाहिये।

WHO ने 1980 में तीन तरह की रोकथाम के उपाय बतायें हैं-

1. **प्राथमिक रोकथाम :** इस प्रकार की विकलांगता को जड़ से पूर्ण रूप से खत्म करने के लिए टीकाकरण समय पर करवाना चाहिये। इसके लिए काउंसलिंग आवश्यक है।

2. **द्वितीयक रोकथाम :** यदि प्राथमिक स्तर पर रोकथाम नहीं हो पाती है तो इस विकलांगता को आगे बढ़ने से रोकने के लिए-

   - श्रवण सहायक यंत्रों का प्रयोग करना चाहिये।
   - कानों के बहने की बीमारी (ओटाइटिस मीडिया) का सही तरीके से इलाज करवाना चाहिये।

3. **तृतीयक रोकथाम :** यदि प्राथमिक तथा द्वितीयक स्तर पर रोकथाम नहीं हो पाती है मनुष्यों की विकलांगता किस स्तर की है इसकी जांच करने के पश्चात्-

   - पुनर्वास के माध्यम से व्यक्ति का सबसे अधिक विकास करना।
   - व्यावसाहियक प्रशिक्षण के द्वारा व्यक्ति की विकलांगता को दूर करने की कोशिश करना।

प्रारंभिक रोकथाम की रणनीति : यदि सही तरीके से रणनीति बनाई जाये तो इसकी रोकथाम शुरूआत में ही की जा सकती है।

1. **पैरेन्ट कन्फैक्ट प्रोग्राम :** इस प्रोग्राम का मुख्य उद्देश्य अभिभावकों को उन कौशलों के बारे में जानकारी करवाना है। जिससे वे अपने बच्चों की, जो इस विकलांगता से ग्रसित हैं, पूर्णरूप से देखभाल करने में सक्षम हो सकें।

2. **होम ट्रेनिंग प्रोग्राम/करेस्पॉन्डेन्स प्रोग्राम :** इस प्रकार के प्रोग्राम अभिभावकों को प्रिन्ट मीडिया के माध्यम से प्रोफेशनल मनुष्यों की सलाह उपलब्ध कराते हैं। चूंकि वे अभिभावक जो रोजाना इन व्यावसायिक

केन्द्रों पर नहीं जा सकते उनके लिए ये कार्यक्रम मदद सिद्ध हो सकते हैं।

3. **ग्रुप पैरेन्ट मीटिंग :** ये कार्यक्रम अभिभावकों को एक प्लेटफार्म प्रदान करते हैं जिससे वे अपने भावों को, अनुभवों को और समस्याओं को साझा कर सकें, साथ ही उन अभिभावकों से अपनी भावनाएं विभक्त कर सकें। जिनके बच्चे भी इसी विकलांगता से ग्रसित हैं।

4. **काउसलिंग एवं गाइडेंस :** काउंसलिंग की प्रक्रिया उसी समय से आरम्भ होनी चाहिये जिस समय श्रवणबाधित बच्चे की पहचान हो जाये। ये प्रक्रिया तब तक क्रियान्वित रहे जब तक बच्चे का पूर्ण पुनर्वास न हो जाये। अभिभावकों को इस तरह के सुझाव देने चाहिये बच्चों के कौशल को पहचान कर उसका पूरा विकास किया जा सके।

NOTES

श्रवण प्रशिक्षण

श्रवण प्रशिक्षण की विभिन्न लोगों ने कई परिभाषाऐं दी हैं। सभी परिभाषाऐं इस तरफ संकेत करती हैं बालक को इस प्रकार प्रशिक्षित किया जाये वह अपनी बची हुई श्रवण क्षमता का ज्यादा से ज्यादा उपभोग कर सके। कुछ परिभाषाऐं निम्नवत हैं-

1. "श्रवण प्रशिक्षण उन प्रक्रियाओं का समूह है जिसका प्रमुख लक्ष्य श्रवणबाधित बच्चों में कौशल का विकास करना है जिससे वे ध्वनि को सुन सकें, समझ सकें, एक आवाज से दूसरी ध्वनि में विभेद कर सकें, अधिक से अधिक आवाज को प्राप्त कर सकें।" (Kelly, 1953)।

2. "श्रवण प्रशिक्षण उन प्रक्रियाओं का समूह है जिनके द्वारा श्रवणबाधित बच्चे तथा श्रवणबाधित व्यक्ति को इस प्रकार शिक्षित किया जाये जिससे वह श्रवण से संबंधित चिन्हों का पूर्ण लाभ उठा सकें। (Carhast, 1960) ।

3. श्रवण प्रशिक्षण तीन प्रमुख बातों पर आधारित है (1) व्यक्ति का ध्वनि में विभेद (2) श्रवण से संबंधित यंत्र का अनुस्थिति ज्ञान (3) सहन क्षमता का विकास (Alpiner, 1978)

इन सभी परिभाषाओं से ये साबित होता है कि श्रवणबाधित बच्चे को इस प्रकार प्रशिक्षित या शिक्षित किया जाये जिससे वे अपनी बची हुई श्रवण क्षमता का अधिकाधिक उपयोग कर सकें।

श्रवण प्रशिक्षण का लक्ष्य:-

1. दूसरों के माध्यम से बोली गई भाषा की बेहतर समझ- सुनकर वाणी को बेहतर समझने की कला विकसित करना।

2. भाषा का प्रयोग करने में तेजी से विकास : भाषा का विकास बहुत तीव्र गति से होता है यह सामान्य दिशा की ओर प्रगति करता है।

3. वाणी में शुद्धता आती है: साधारण बच्चे, बड़ों के बोलने के तरीकों की नकल करते हैं, तथा खुद की वाणी को सही करते हैं, अपनी और बड़ों की वाणी की तुलना करके। इसी प्रकार श्रवणबाधित बच्चों को इस प्रकार का प्रशिक्षण देने का लक्ष्य है कि बालक अपने बड़ों के बोलने के तरीकों को सुनें और अपने बोलने की कला को विकसित करें।

4. उच्च शैक्षिक उपलब्धि: पूर्ण तीन लक्ष्य बच्चे को शैक्षिक उपलब्धि दिलाने में सहायता करेंगे।

5. श्रवणयुक्त संसार के द्वारा बेहतर सामाजिक व भावानात्मक ताल-मेल एक बच्चे का सर्वांगीण विकास, वह भी सभी स्तरों पर इस बात पर निर्भर करता है कि उसका सामंजस्य उस संसार से कितना बेहतर है जिस संसार में अधिकतर सुनने वाले लोग रहते हैं।

श्रवण प्रशिक्षण के चरण

नीचे दिये गये चरण 'परम्परागत उपगम' में अपनाये गये जिसे Hirsch (1966), Ling (1976) तथा Erber (1982) ने प्रोत्साहित किया Jalvi, Nardurkar, Bantwal (2006) में उद्धत पर आधरित है:-

1. आवाज को पहचानने की जागरूकता: सबसे प्रमुख प्रक्रिया है, यह जानना ध्वनि उपस्थित है या नहीं। इसके लिये ध्वनि का अनुपस्थिति ज्ञान होना आवश्यक है। इससे बच्चे सहायता मिलती है कि कौन सी वस्तु ध्वनि पैदा करती है कौन सी नहीं।

2. विभेद : इससे पता चलता है कि ध्वनि में भी विभिन्नता होती है समझ विकसित होती है कि भिन्न-भिन्न वस्तुएं भिन्न-भिन्न ध्वनि उत्पन्न करती हैं। एक ही स्रोत भिन्न-भिन्न आवाज उत्पन्न कर सकते हैं। समान और भिन्न में विभेद करना।

3. पहचान: जो सुना गया है उसे एक नाम देना। बच्चे में इतनी क्षमता विकसित करना जिसे वह सुनी गयी ध्वनि की तरफ इशारा कर सके,

चित्र की तरफ संकेत कर सके जो उस ध्वनि से सम्बन्धित है। लिखे हुए शब्द या वाक्य की तरफ संकेत कर सके जो सुना गया है। ये वार्तालाप का एक बहुत महत्वपूर्ण अंग है।

4. समझ : जो कुछ सुना गया है उसका एक अर्थ निकालना। ये भाषा के कौशल पर निर्भर करता है। इससे पता चलता है कि बच्चा जो कुछ भी सुनता है उससे नवीन जानकारी हासिल करता है। और उसी के अनुसार व्यवहार करता है।

श्रवण प्रशिक्षण को प्रभावित करने वाले घटक

1. **श्रवणीय हानि तथा श्रवणीय यंत्र से संबंधित तथ्य :** बच्चे की उम्र जिसमें पता चल जाये कि बच्चा श्रवणबाधित है वह उसके लिए उतना ही लाभकारी है। यदि शुरूआती स्थिति में बच्चे की श्रवणबाधिता का पता चल जाता है तो इससे उससे सम्बन्धित विकलांगता को दूर करने से संबंधित निर्णय लेने में आसानी रहती है। शोध यह प्रदर्शित करते हैं। कि जो बच्चे 6 माह की उम्र से पूर्व पहचान लिये जाते हैं कि वो श्रवणबाधित हैं वे श्रवण उपकरण के लिये सबसे अधिक उपयुक्त होते हैं बजाय इसके जिन बच्चों की पहचान 6 महीने पश्चात् होती है। बच्चों में बची हुई श्रवण क्षमता भी, श्रवणीय उपकरण तथा श्रवण प्रशिक्षण के लिए लाभकारी होती है।

2. **प्रेरणा :** एक श्रवणबाधित बच्चे में प्रेरणा विकसित करने के लिये सबसे अधिक उत्तरदायी अभिभावक, अध्यापक तथा खुद उस बच्चे के सहपाठी एवं भाई-बहन हैं। सर्वप्रथम अध्यापक को इतना दृढ़ विश्वास होना चाहिये कि बालक अपनी बची हुई श्रवणशक्ति का अधिकाधिक प्रयोग करे। अध्यापक, अभिभावक को प्रेरणा दे सकता है। कि बच्चे के श्रवण प्रशिक्षण में वे एक सक्रिय भूमिका अदा करें। बच्चा जब श्रवण प्रशिक्षण में भाग ले तो अभिभावक इस बात का खास ध्यान रखें कि सीखने की प्रक्रिया बच्चे के लिए रूचिकर हो और बच्चे के लिये चुनौतीपूर्ण हो ताकि बच्चा उस कार्य में अपनी रूचि बनाये रखे नाकि अपनी रूचि खो दो। बच्चा चिन्ता में ना आने पाये इसका भी ध्यान रखा जाये।

3. **अध्यापक तथा अभिभावक में सामंजस्य :** अध्यापक को अभिभावकों की काउंसलिंग करनी चाहिये जिससे वे प्रशिक्षण में सक्रिय भूमिका अदा कर सकें। जब भी क्लॉस में कोई नवीन कार्य सिखाया जाये, अभिभावक

NOTES

बच्चे के साथ उसका अभ्यास घर पर जरूर करें। इससे बच्चा जल्दी सीखेगा।

4. **कौशलों का अभ्यास तथा उपयोग के अवसर :** अध्यापक को अभिभावक को इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि जो भी नवीन कौशल बच्चों को सिखाया है उसका अभ्यास पहले से कर लिया जाय। इसके लिये अध्यापक और अभिभावक को इस तरह का माहौल तैयार करना चाहिये जिससे नयी सीखी गई विधा का विधिवत् अभ्यास कर लिया जाये। मान लीजिये अध्यापक को क्लास में सिखाना है कि "ध्वनि उपस्थित है" तथा "ध्वनि उपस्थित नहीं है" तो उसे इस प्रक्रिया का प्रतिदिन अभ्यास कराना पड़ेगा जब तक कि बालक सीख न जाये। साथ ही साथ अभिभावकों को घर पर इसका अभ्यास कराना पड़ेगा। जैसे–माता एक डिब्बे में सिक्के भरकर हिला सकती है और कहें "इसमें ध्वनि है।" इसके पश्चात् सिक्के निकालकर, हिलाकर कहें कि "इसमें ध्वनि नहीं है।"

5. **सही गलत का सामंजस्य :** बच्चे में इस आदत का विकास किया जाये कि ध्वनि के प्रति अपना पूरा ध्यान दे साथ ही सजग रहे। बच्चे को इतना तैयार होना चाहिये जिससे वह वातावरण में उपस्थित ध्वनि के प्रति तुरंत सतर्क हो। यह तभी संभव है जब उसे सही तरीके से प्रशिक्षण दिया गया हो। बच्चों को यह ध्यान देने की आदत डालनी चाहिये कि जो कुछ भी उसने सुना वह सही है या गलत।

6. **बच्चे में कार्य को समझने तथा प्रतिक्रिया करने की योग्यता :** अध्यापक को इस बात की समझ होनी चाहिये कि प्रशिक्षण बच्चे के स्तर का है अथवा नहीं। बच्चे को भी इस बात को समझना चाहिये कि वह प्रशिक्षण में सही तरीके से भाग ले पा रहा है अथवा नहीं। साथ ही अध्यापक उससे क्या आशा कर रहा है।

7. **अध्यापक द्वारा प्रयोग किये गये तरीके :** सही परिणाम प्राप्त हों इसके लिए यह आवश्यक है कि अध्यापक प्रशिक्षण के समय सही तरीकों का इस्तेमाल करें। यदि अध्यापक ऐसे तरीकों का इस्तेमाल करता है जो बच्चों के लिए उपयुक्त नहीं है, अथवा तो उसका स्तर बहुत ऊंचा है अथवा नीचे है, तो बच्चे का विकास संतोषजनक नहीं होगा। इस प्रकार के खेल क्रियायें की जायें जिसमें बच्चे की रूचि हो। अध्यापक को प्रत्येक क्रिया तथा प्राप्त परिणाम को नोट करना चाहिये। यदि विकास नहीं हो पा रहा हो तो अपने प्लान में अदलबदल कर देना चाहिये।

श्रवणबाधित बच्चों के शिषण-प्रशिक्षण के दौरान अध्यापक को ध्यान में रखने योग्य कुछ तथ्य

NOTES

इन बच्चों को सही समय पर उचित शिक्षण-प्रशिक्षण प्रदान कर बाधिरता के प्रभाव को न्यून किया जा सकता है। जिससे ये आत्मनिर्भर होकर समाज की मुख्यधारा में आसानी से जुड़ सकें। इन्हें शिक्षित-प्रशिक्षित करके समाज में समावेशित करने में वर्तमान के समावेशी तथा समेकित शिक्षा के अध्यापकों की भूमिका महत्वपूर्ण है। नीचे कुछ तथ्य दिये गये हैं जो इनके शिक्षण-प्रशिक्षण के समय महत्वपूर्ण हैं:-

i. इन बच्चों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखें।

ii. इन बच्चों की भाषा व सम्प्रेषण क्षमता अधिक प्रभावित होती है। इन दोनों कौशलों का विकास इनके शिक्षा के प्रमुख उद्देश्यों में एक है। अत: अध्यापक को इनके शिक्षा के आरम्भिक वर्षों में भाषा के विकास करने एवं सम्प्रेषण कौशल को बढ़ाने हेतु उचित अवसर का सृजन करना चाहिए।

iii. भाषा एवं सम्प्रेषण के साथ ही वाचन एवं लेखन के विकास की भी कोशिश की जानी चाहिए। जिससे कि वे शिक्षा का समुचित लाभ उठा सकें।

iv. वाक् प्रशिक्षण तथा अवशिष्ट श्रवण क्षमता के उपयोग के सम्यक् प्रशिक्षण की व्यवस्था की जानी चाहिए।

v. श्रवणबाधित बच्चों में प्राकृतिक भाषा का विकास किया जाना चाहिए।

vi. कक्षा में इन बच्चों को आगे सीट पर बैठने की व्यवस्था की जानी चाहिए जहां से शिक्षक का मुख ठीक से दिखाई दे।

vii. शिक्षण-प्रतिशक्षण के समय शिक्षक द्वारा बच्चे की श्रवण यन्त्र की जांच कर लेनी चाहिए।

viii. वातावरण को शान्त एवं शोरगुल से मुक्त रखने की कोशिश करनी चाहिए।

ix. बच्चे को दरवाजा या खिड़की के पास नहीं बैठाना चाहिए।

x. श्रवणबाधित बच्चों को पढ़ाते समय ज्यादा हाव-भाव का प्रयोग नहीं किया जाना चाहिए।

NOTES

xi. इन बच्चों को सामान्य बच्चों जैसे ही स्वीकार करें तथा अक्षमता वाला न मानकर सामान्य से अलग मानकर शिक्षित-प्रशिक्षित करना चाहिए।

स्मृति एवं बधिरता (Memory and Deafness)

स्मृति एक जटिल शारीरिक तथा मानसिक क्रिया है। बुड्सवर्थ के अनुसार, जो बात पहले सीखी जा चुकी है, उसे स्मरण रखना ही स्मृति है। चूँकि ऐसे बधिर बालकों में भाषा एवं वाणी का विकास ही अपेक्षित रूप से नहीं हो पाता, अतः उनकी स्मृति पर भी विपरीत प्रभाव पड़ता है। ओलेरान ने बल देकर कहा कि बधिर बच्चे छोटे कार्यों में भी पीछे रहते हैं, जो कि आवश्यकता को कम करते हैं, लेकिन बधिर बच्चों को कार्य देने वाले प्रमुख तथ्य का वे पूर्णतया निरीक्षण नहीं कर पाये। टेम्पलिन (1989) ने बधिर बच्चों के सूक्ष्म विवेक प्रक्रिया पर एक अध्ययन किया और कहा कि ये सामान्य बच्चे से सार्थकतापूर्ण रूप में पिछडे रहते हैं।

भाषा और वाणी का विकास (Language and Speech Development)

वाणी भाषा का एक रूप है, लेकिन यह बहुत प्रयागों में तथा विस्तृत रूप में प्रकट होती है। बच्चे के जन्म लेने के बाद ही रोने की प्रक्रिया से बच्चे की वाणी का विकास प्रारम्भ हो जाता है। यह क्रमबद्ध तरीके से भाषा का रूप ले लेता है। ब्राजेल्टन (1974) ने पूर्व बधिर नवजात बच्चों पर अध्ययन कर पाया, कि वे अपनी माँ को प्रत्यक्ष देखने की तुलना में उनकी आवाज को सरलता से समझ लेते हैं। मीडोज (1982) ने अति गम्भीर जन्मजात बधिरता के ऊपर एक अध्ययन किया व पाया कि ऐसे बच्चे भाषा से वंचित होते हैं, लेकिन ध्वनि से वंचित नहीं होते।

शैक्षिक उपलब्धि (Academic Achievement)

सामान्य तथा बधिर बच्चे की बौद्धिक क्षमता समान होती है, लेकिन बधिर बच्चे शैक्षणि प्रदर्शन में पिछड़ जाते हैं। लेवेन (1981) ऐसे बधिर बच्चों की कम शैक्षणिक उपलब्धियों के स्तर को स्वीकार करते हैं, जबकि उनका मानना है कि चौथी एवं पाँचवीं स्तर तक पढ़ने व अंकगणितीय प्रक्रियाओं में ऐसे बालक औसत मानसिक स्तर को प्रदर्शित करते हैं। गैलुआडेट कालेज के ट्राइबस बूचनन एवं डाइफरेन्सेसा (1973) डाइफरेन्सेसा एवं कैरी (1972) एवं अन्य ने 288 अलग-अलग कार्यक्रमों के 19000 श्रवण विकलांग छात्रों की स्टेन्फोर्ड उपलब्धि परीक्षा ली। निष्कर्ष यह निकला कि इन बच्चों की

वाचन उपलब्धि विद्यालय के प्रथम तीन वर्षों में अच्छी होती है। तीन वर्ष पश्चात् वर्तनी तथा अंकगणित, वाचन की अपेक्षा अच्छा होता है। वाचन तथा गणित का विकास 12 से 19 वर्ष तक धीमी गति से होता है।

सम्प्रेषण की समस्या (Communication Problem)

"श्रवण क्षति मुख्यतः सम्प्रेषण समस्या है (चैम्पी 1986)।" श्रवण क्षतिग्रस्तता सम्प्रेषण की क्षमता को अत्यधिक प्रभावित करती है। शब्दों के साथ बच्चों में वाणी प्रक्रिया का सम्बन्ध न होने के कारण, वाणी को ग्रहण तथा नियंत्रण करने में कठिनाई होती है। वाणी एवं सम्प्रेषण को कठिनाई के साथ समझने से बच्चा मातृभाषा को नहीं सीख पाता। अन्य भाषाओं को सीखने में बहुत सी परेशानियाँ होती हैं, क्योंकि ओष्ठ वाचन तथा वाक्ध्वनि के उत्पादन में अन्तर हो जाता है। उच्चारण, लय तथा वाणी के उतार-चढ़ाव से भी द्वितीय तथा तृतीय भाषा सीखने में परेशानी होती है। इससे बचने के लिए बच्चे बातचीत के तरीकों में, मौखिक, हस्तचालित तथा सांकेतिक भाषा का प्रयोग करने लगते हैं।

व्यावसायिक समस्या (Vocational Problem)

"कार्य का किसी व्यक्ति विशेष के मूल्यों तथा अभिप्रेरणाओं पर महत्वपूर्ण रूप से प्रभाव पड़ता है। व्यक्ति का कार्य निश्चित रूप से उसके चरित्र व व्यक्तित्व को निर्णायक रूप से प्रभावित करता है (क्लार्ग, 1982)।" मौखिक कौशल, सामान्य ज्ञान, शैक्षिक प्रशिक्षण तथा सामाजिक कौशल आदि की कमी से श्रवण विकलांग बच्चे के वयस्क होने तक रोजगार पाने की संभावनायें सीमित हो जाती हैं। वाणी एवं भाषा का विकास पर्याप्त न होने से शिक्षा का प्रसार सरलता से नहीं हो पाता। इन्हें व्यावसायिक प्रशिक्षण देने पर जोर दिया जाता है। विकलांगों के प्रति समाज की उचित प्रवृत्ति न होने से अच्छे व्यावसायिक कार्य होने पर भी, पर्याप्त अर्जन न होने से, अपेक्षाकृत सफलता नहीं मिल पाती। फलस्वरूप ये व्यावसायिक प्रशिक्षण में भी पिछड़ जाते हैं।

मौखिक प्राविधि (Oral Technique) : श्रवण प्रशिक्षण (Auditory Training) तथा वाणीपठन (Speech Reading)

श्रवण प्रशिक्षण (Auditory Training) श्रवण ह्रास से ग्रसित बालक की शेष श्रवण क्षमता को ज्यादातर प्रयोग कर अर्थपूर्ण सूचनायें प्राप्त करने की विधि सिखाने का प्रशिक्षण है। इस प्रशिक्षण से बहुत ही कम बालक लाभ

NOTES

प्राप्त कर पाते हैं। जबकि प्रौद्योगिकी विकास के कारण अब इससे ज्यादा लाभ लिया जा रहा है।

श्रवण प्रशिक्षण (Auditory Training) के निम्नलिखित तीन प्रमुख उद्देश्य हैं-

- ध्वनि जागरूकता का विकास
- वातावरणीय ध्वनियों के बीच मोटा-मोटी अंतर करने की क्षमता का विकास
- भाषिक-ध्वनियों के बीच विभेद करने की क्षमता का विकास।

वाणी पठन (Speech Reading) के लिए कभी-कभी ओष्ठ पठन (Lip Reading) समानार्थी शब्द के रूप में प्रयुक्त किया जाता है परंतु उचित नहीं है क्योंकि वाणी पठन (Speech Reading) काफी व्यापक पद है जो पूरे वातावरण को सम्मिलित करते हैं जिससे अधिकाधिक सूचनायें प्राप्त की जा सकती हैं जबकि ओष्ठ पठन (Lip Reading) मात्र ओष्ठ तक सिमित करता है। वाणी पठन (Speech Reading) श्रवण ह्रास व्यक्तियों को दृश्य सूचनाओं के आधार पर सम्प्रेषण स्थापित करने का प्रशिक्षण है।

वाणी पाठक (Speech Reader) मुख्यत: तीन प्रकार की दृश्य सूचनाओं से लाभ उठा सकते हैं जोकि निम्नलिखित हैं-

- वातावरणीय उद्दीपक
- सूचना से सम्बंधित उद्दीपक जोकि वाणी का भाग नहीं हो
- वाणी से प्रत्यक्ष रूप से जुड़े उद्दीपक।

सम्पूर्ण सम्प्रेषण (Total Communication)

1970 से मौखिक प्राविधि अनुदेशन से पूर्ण सम्प्रेषण अनुदेशन निम्नलिखित कारकों की वजह से प्रयोग में लाया जाने लगा है बहुत तर्कसंगत है।

- कुछ अध्ययनों में श्रोता माता7पिता के श्रवण बाधित बालकों की शैक्षिक उपलब्धि, लेखन, पठन, तथा सामाजिक परिपक्वता श्रवण बाधित माता-पिता के श्रवण बाधित बालकों से उत्तम पाई गई।
- मात्र-मौखिक विधि की प्रभाविता के प्रति असंतोष

सांकेतिक प्रणाली (Sign System) :

यह प्रणाली शारीरिक प्रविधि का एक प्रकार है जिसका प्रयोग सम्पूर्ण सम्प्रेषण उपागम में किया जाता है। इसके अंतर्गत ऊँगली-वर्तनी तथा शाब्दिक कूटों के सम्प्रेषण स्थापित किया जाता है। उँगली-वर्तनी विभिन्न भाषाओं में

विकसित कर ली गयी है तथा श्रवण ह्रास ग्रसित बालकों में सम्प्रेषण स्थापित करने का प्रमुख साधन है।

NOTES

प्रशासनिक व्यवस्था (Administrative Arrangements) :

श्रवण ह्रास से ग्रसित बालकों को उनकी अक्षमता की तीव्रता के अनुसार नियमित विद्यालयों से लेकर विशेष विद्यालयों की जरूरत होती है। ज्यादातर बालकों का सही आंकलन नहीं हो पाता जिससे बालकों को उपयुक्त शैक्षिक व्यवस्था में प्रवेश नहीं हो पाता। कुछ विशेषज्ञों का दृष्टिकोण एवं समझ भी ऐसे बालकों को उपयुक्त शैक्षिक व्यवस्था उपलब्ध करने में असफल रहा है। कुछ लोगों का यह विचार है कि बाधिर-सांस्कृति में ही बालक अधिक लाभ प्राप्त कर सकता है तथा मुख्य-धारा इनके लिए संभव नहीं है।

प्रौद्योगिकीय तरक्की (Technological Advances) :

प्रौद्योगिकी तरक्की से श्रवण ह्रास के क्षेत्र में भी अद्‌भुत परिवर्तन हुआ तथा श्रवण ह्रास बालकों का जीवन उत्कृष्ट हुआ है। मुख्यत: निम्नलिखित चार क्षेत्रों में यह उन्नति अवलोकित होती है–

- कम्प्यूटर आधारित अनुदेशन,
- दूरदर्शन,
- दूरभाष, और
- श्रवण-यंत्र

कम्प्यूटर आधारित अनुदेशन (Computer Assisted Instruction)

कम्प्यूटर की सहायता से शब्द तथा वाणी से युक्त सूचनाओं को ज्यादा से ज्यादा दृश्य सूचनाओं में परिवर्तित करके बालकों के सामने प्रस्तुत किया जाता है। कुछ ऐसे सॉफ्टवेयर विकसित हुए हैं जो वाणी को दृश्य रूप में या सांकेतिक रूप में प्रस्तुत कर देते हैं। श्रवण ह्रास से ग्रसित बालकों को इस प्रकार के तकनीकी के प्रशिक्षण की आवश्यकता है।

दूरदर्शन (Television) : दूरदर्शन शिक्षा तथा सूचना प्राप्त करने का एक सशक्त द्वार है। श्रवण ह्रास से ग्रसित बालक को भी इस माध्यम से पूर्ण लाभ मिले इसके लिए अब दूरदर्शन पर समाचार आदि को सांकेतिक भाषा में भी प्रसारित किया जा रहा है। अन्य कार्यक्रमों में भी लिखित पट्टियां ध्वनि की कमी को पूर्ण करती है। श्रवण ह्रास बालकों को भी ऐसे कार्यक्रमों से लाभ लेने के लिए प्रशिक्षण देने की आवश्यकता होती है।

SouthFrontBlackSpecial BEd-I P-V (Intr. to Sensory Disabilities) 1-23

दूरभाष (Telephone) : दूर-टंकण-यन्त्र (Teletypewriter i.e. TTY) का विकास श्रवण ह्रास बालकों/व्यक्तियों के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है, जोकि एक दूरभाष यन्त्र से जुड़ता है तथा एक श्रवण ह्रास व्यक्ति को दूसरे श्रवण ह्रास व्यक्ति से, जो की TTY रखा हो टंकण के द्वारा सम्प्रेषण स्थापित करने में सहयोग प्रदान करता है। इसकी सबसे बड़ी सीमा यह है कि यह सामान्य मनुष्य से सम्प्रेषण में उपयोगी नहीं है। आजकल स्मार्ट फोन आदि का भी प्रयोग किया जा रहा है।

श्रवण यन्त्र (Hearing Aids) : कई प्रकार के श्रवण यन्त्र श्रवण ह्रास से ग्रसित बालकों की जरूरतों के अनुसार उपलब्ध है। बालकों को उनकी जरूरतों के अनुसार श्रवण यन्त्र उपलब्ध करने की होती है ताकि वे शेष श्रवण क्षमता का प्रयोग कर सकें। व्यक्तिगत तथा सामूहिक दोनों प्रकार के श्रवण यन्त्र आवश्यकता के अनुसार उपयोग किए जाते हैं।

दृष्टिबाधित बालकों का समावेशन

आप इस बात से परिचित हैं कि समावेशन शब्द से संबंध भेद-भाव के बिना सभी बच्चों को समाहित कर एक साथ शिक्षा प्रदान करने से है। दृष्टिबाधित तथा अन्य विकलांग बालकों के शिक्षण प्रशिक्षण की आरम्भ पृथक व्यवस्था में विशिष्ट विद्यालयों में शुरू हुई। भारत में समावेशन प्रत्यय का आरम्भ एकीकृत शिक्षा के रूप में हुआ। 70 के दशक से इस बात पर ध्यान दिया जाने लगा कि जहाँ तक हो सके सभी विकलांग बालकों की शिक्षा सामान्य कक्षा व्यवस्था में ही सम्पन्न कराई जाए। एकीकृत शिक्षा के द्वारा दृष्टिबाधित बच्चों को सामान्य बच्चों के साथ, पास के सामान्य विद्यालय में ही शिक्षा देने की योजना के साथ हुई। एकीकृत शिक्षा के कई प्रारूप देखने को मिले हैं-

- **संसाधन कक्ष प्रारूप :** एक विद्यालय में संसाधन अध्यापक, संसाधन कक्ष में भिन्न-भिन्न समय में, अलग-अलग कक्षा के दृष्टिबाधित बालकों की आवश्यकता के अनुरूप उन्हें समुचित प्रशिक्षण देने का कार्य करता है।
- **परिभ्रामी अध्यापक प्रारूप :** एक विशिष्ट अध्यापक (परिभ्रामी शिक्ष) एक से अधिक विद्यालयों अलग-अलग समय में जाकर के दृष्टिबाधित बालकों की आवश्यकताओं की पूर्ति करता है।
- **संयुक्त प्रारूप :** इसमें एक विशेष अध्यापक संसाधन अध्यापक के साथ-साथ के साथ-साथ परिभ्रामी अध्यापक की भूमिका निभाता है।

- **गुच्छित अथवा समूह प्रारूप :** यह पहाड़ी एवं दुर्गम स्थानों के लिए उपयुक्त प्रारूप है, जिसमें संसाधन सेवाओं का विकेन्द्रीकरण किया जाता है।
- **सहयोगी प्रारूप :** विशेष विद्यालयों के छात्रों को एकीकृत शिक्षा के लिए सामान्य विद्यालयों में अनुदेशन की व्यवस्था की जाती है।
- **द्विशिक्षणद प्रारूप :** सामान्य विद्यालय के सामान्य शिक्षक को अल्पकालिक विशेष प्रशिक्षण देकर सामान्य बालकों के साथ-साथ दृष्टिबाधित बालकों की भी अत्यधिक जिम्मेदारी सौपी जाती हैं। इस प्रकार वह शिक्षक दोहरी भूमिका निभाता है।
- **बहुकौशल शिक्षण योजना प्रारूप :** इस प्रारूप में विशेष शिक्षक को दुष्टि बाधित बच्चों के साथ-साथ अन्य प्रकार के विकलांग बच्चों को सेवा प्रदान के लिए दक्ष बनाया जाता है।

समकालीन विशिष्ट शिक्षा के क्षेत्र में समावेशन एक मुख्य मुद्दा के रूप में उभर कर आया है। पूर्व में एकीकृत शिक्षा के अन्तर्गत दृष्टिबाधित बालकों के पठन-पाठन के प्रति विशेष अध्यापक को ही जिम्मेवार माना जाता था, इसीलिए समावेशित शिक्षा शब्द का प्रार्दुभाव इन्हीं प्रारूपों के विकसित रूप में हुआ। समावेशी शिक्षा विशेष शिक्षक को नहीं बल्कि विद्यालय की जबावदेही दृष्टिबाधित बालकों के प्रति सुनिश्चित करता है। चूँकि दृष्टिबाधित बालक तथा अन्य बालक एक ही समाज के सदस्य हैं, अतः समावेशी शिक्षा द्वारा दृष्टिबाधित बालकों का सामान्य बालकों के साथ समायोजन एक अच्छे भविष्य का संकेत भी देता है।

समावेशन को निर्धारित करने वाले कारक

समावेशन एक वृहद् प्रक्रिया है तथा इसे निम्नलिखित कारक प्रभावित करते हैं-

- **सामाजिक स्वीकृति की भावना :** एक स्वस्थ्य समावेशन की परिकल्पना तब तक नहीं की जा सकती है, जब तक कि समावेशी विचारधारा को सामाजिक स्वीकृति की प्राप्ति न हो।
- **बालक भिन्नता का सम्मान :** दृष्टिबाधित बालकों सहित समस्त बालकों के आवश्यकता एवं भिन्नता का सम्मान करना ही समावेशी शिक्षा का आधार है। अतः प्रभावकारी समावेश के लिए यह आवश्यक है कि विद्यालय तथा सम्बन्धित कर्मी इन भिन्नताओं का

NOTES

सम्मान करें।

- **पाठ्यक्रम अनुकूलन :** दृष्टिबाधित बालकों के आवश्यकतानुसार पाठ्यक्रम का अनुकूलन आवश्यक है। पाठ्यक्रम अनुकूलन के अन्तर्गत विषयवस्तु का प्रतिस्थापन, रूपान्तरण एवं द्विगुणन किया जाता है। आवश्यकता पड़ने पर विषयवस्तु को हटाया भी जाता है।
- **प्रभावकारी अनुदेशन :** समावेशित कक्षा में दृष्टिबाधित बालकों हेतु अनुदेशन को प्रभावकारी बनाने के लिए आवश्यक है कि दृश्य सम्बन्धित शिक्षण सामग्री को रूपान्तरित कर स्पर्शी तथा अन्य अनुकूलित सामग्री के रूप में प्रस्तुत किया जाए।
- **विशेषकर्मिकों की सहभागिता :** विद्यालय में सभी कर्मियों की व्यापक सहभागिता समावेशी शिक्षा को सबसे अधिक प्रभावित करती है। रिप्ले (1997) ने नियोजन से निस्पादन तक प्रत्येक स्तर पर सभी शिक्षकों तथा विशेष शिक्षक की पारस्परिक सहभागिता को समावेशन के सफलता के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण माना है।
- **कानून, योजनाएँ एवं नीतियाँ :** यह नितान्त आवश्यक है कि समावेशन के समुचित विकास के लिए राष्ट्रीय स्तर पर कानून तथा योजनाएँ बने। साथ ही साथ प्रत्येक स्तर पर क्रियान्वयन के लिए समुचित नीति एवं कार्ययोजना भी होनी चाहिए।
- **बाधामुक्त वातावरण :** समावेशी शिक्षा में दृष्टिबाधित बालकों द्वारा सभी सेवाओं तक पहुँच सुनिश्चित करने के लिए बाधाओं की पहचान तथा बाधामुक्त वातावरण का होना बहुत आवश्यक है।

भारत में किया गया प्रयास

दृष्टिबाधित बालकों के समावेशन का प्रथम प्रयास दादर स्कूल द्वारा 1940 में माना जाता है। इसके द्वारा तीव्र बुद्धि वाले दृष्टिबाधित बालकों को एक सामान्य विद्यालय में प्रवेश दिलाया गया। सरकार के सहयोग वर्ष 1960 में रॉयल कॉमन वेल्थ सोसाइटी फॉर द ब्लाइन्ड (अब साइटसेवर्स इन्टरनेशनल) ने बम्बई में भी समावेश के प्रयास किए (मित्तल, 2006)। पुनः 1963 में पालनपुर में भी दृष्टिबाधित बालकों को सामान्य कक्षा में शिक्षा प्रदान करने का प्रयास किया गया। परिभ्रामी शिक्षकों के द्वारा दृष्टिबाधित बालकों को सामान्य कक्षा में शिक्षा प्रदान करने का प्रयास किया गया। परिभ्रामी शिक्षकों के द्वारा दृष्टिबाधित बालकों को सामान्य विद्यालय में शिक्षित करने का प्रथम

NOTES

प्रयास भी 1981 में विश नगर (गुजरात) में माना जाता है। भारत सरकार द्वारा विशेष बालकों के लिए समेकित शिक्षा व्यवस्था योजना (आइ.ई.डी.सी. 1974 में आरम्भ की गयी। इसके अन्तर्गत चयनित स्कूलों में विशेष छात्र-छात्राओं को सामान्य बच्चों के शिक्षा प्रदान करने की बात कही गयी। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) तथा कार्ययोजना 1992 में विशेष आवश्यकता वाले बालकों की शिक्षा पर मुख्य रूप से ध्यान दिया गया। विशेष बच्चों को सामान्य समुदाय के साथ समन्वित करने की बात कही गयी, ताकि वे भी गरिमा तथा आत्मविश्वास के साथ जीवन जी सकें। केन्द्र सरकार ने प्राथमिक शिक्षा के सार्वजनीकरण के उद्देश्य से 1994 में जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम के रूप में एक योजना लागू की। इस योजना का उद्देश्य से 1994 में जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम के रूप में एक योजना लागू की। इस योजना के उद्देश्य सभी बालकों को स्कूल में बनाये रखना, शिक्षा के स्तर में सुधार करना एवं समाज के विभिन्न वर्गों में असमानता को कम करके सभी के लिए शिक्षा सुनिश्चित करना था। 1998 में इस योजना को 18 राज्यों में लागू कर दिया गया। बाद में यह कार्यक्रम सर्व शिक्षा अभियान के साथ मिला दिया गया।

विकलांगता के क्षेत्र में एक व्यापक कानून के रूप में वर्ष 1996 में नि:शक्त जन (समान अवसर, अधिकार संरक्षण, एवं पूर्ण भागीदारी) अधिनियम, 1995 (पी.डब्लू.डी. एक्ट, 1995) सरकार द्वारा अस्तित्व में ाया गया। इस अधिनियम का अध्याय पांच नि:शक्त बालकों की शिक्षा हेतु समुचित व्यवस्था का प्रावधान करता है। प्रत्येक नि:शक्त बालक को 18 वर्ष तक की आयु तक उचित वातावरण में नि:शुल्क शिक्षा की व्यवस्था उनमें से एक है। इस अधिनियम में इस बात पर विशेष जोर दिया गया है कि विशेष आवश्यकता वाले सभी बालकों को सामान्य स्कूलों में एकीकृत एवं समावेशी शिक्षा प्रदान की जाए। साथ ही साथ विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की शिक्षा के लिए बहुविधि दृष्टिकोणों, विकल्पों और कार्यनीतियों का समर्थन किया जाए। इसमें मुक्त शिक्षण पद्धति, गैर औपचारिक वैकल्पिक स्कूली शिक्षा, गृह आधारित शिक्षा, मॉडल उपचारात्मक शिक्षण, अंशकालीन कक्षाएँ तथा व्यावसायिक शिक्षा सम्मिलित हैं। जिन्हें विशेष शिक्षा की ही आवश्यकता वाले बच्चों की शिक्षा के लिए बहुविधि दृष्टिकोणों, विकल्पों और कार्यष्नीतियों का समर्थन किया जाए। इसमें मुक्त शिक्षण पद्धति, गैर औपचारिक वैकल्पिक स्कूली शिक्षा, गृह आधारित शिक्षा, मॉडल उपचारात्मक शिक्षण, अंशकालीन कक्षाएँ तथा व्यावसायिक शिक्षा सम्मिलित हैं। जिन्हें विशेष शिक्षा की ही आवश्यकता है. उनके लिए देश के प्रत्येक भाग में विशेष विद्यालयों की व्यवस्था के लिए

सरकार को निर्देशित किया गया है (भारत सरकार, 1996)। साथ ही नि:शक्त बालकों के लिए विशेष विद्यालयों में व्यावसायिक प्रशिक्षण सुविध ा मुहैया कराने के प्रयास का उपबन्ध है। सहायक शिक्षण सामग्रियों के निर्माण तथा विकास के लिए अनुसंधान और साथ ही पर्याप्त संख्या में शिक्षण प्रशिक्षण संस्थाएं स्थापित करने की बात भी कही गयी है। जिससे नेत्रहीन एवं अल्पदृष्टि वाले विद्यार्थियों के लिए समुचित संख्या में शिक्षकों की व्यवस्था की जा सके।

सबके लिए शिक्षा के लक्ष्य प्राप्ति हेतु वर्ष 2002 में सर्व शिक्षा अभियान (एस.एस.ए.) लाया गया। केन्द्र सरकार द्वारा प्रायोजित यह योजना राज्य सरकरों के साथ साझेदारी में पूरे देश में चलाया जा रहा है। स्त्री-पुरूष असमानता और सामाजिक विभेद को समाप्त करके शिक्षा को लोक आधारित बनाना ही इस कार्यक्रम का मिशन है। इसके अन्तर्गत 6-14 आयुवर्ग के सभी बच्चों को प्रारम्भिक शिक्षा मुक्त उपलब्ध कराने की व्यवस्था, सभी बस्तिओं को स्कूली सुविधा, शत-प्रतिशत नामांकन, ठहराव एवं संतोषप्रद उपलब्धि स्तर को सुनिश्चित करना है। इस कार्यक्रम में विशेष बच्चों को सामान्य स्कूली शिक्षा में सम्मिलित करने के लिए प्रति बालक की दर से सालाना 1200 रुपये तक की राशि खर्च किए जाने का प्रावधान है। साथ ही संसाधनों की भागीदारी तथा शिक्षक जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन करने का भी प्रावधान है।

माध्यमिक स्तर पर समावेशी शिक्षा योजना वर्ष 2009 में लाई गई, जिसका विशेष उद्देश्य दृष्टिबाधित बालकों सहित सभी विकलांग बालकों की पहचान कर माध्यमिक स्तर की शिक्षा उपलब्ध करना तथा उन्हें सहायता प्रदान करना है। यह योजना केन्द्र सरकार द्वारा प्रयोजित है, जिसमें राज्यों को शत-प्रतिशत सहायता देने का प्रावधान है। इस योजना के अन्तर्गत माध्यमिक स्तर दृष्टिबाधित बालकों की पहचान, उपयुक्त अनुदेशन, सहायक उपकरण आदि का प्रावधान है। वर्ष 2009 में ही राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान भी लागू किया गया। यह राष्ट्रीय अभियान सर्व शिक्षा अभियान के तर्ज पर माध्यमिक शिक्षा के लिए तैयार किया गया। इस अभियान का उद्देश्य समाज में आर्थिक, शैक्षिक रूप से पिछड़े एवं विकलांग बालकों तक माध्यमिक स्तर की शिक्षा की पहुँच सुनिश्चित करना है।

समावेशित शिक्षा में शिक्षक की भूमिका

किसी शिक्षण अधिगम व्यवस्था को प्रभावकारी बनाने के लिए शिक्षक की भूमिका सर्वोपरि होती है। समावेशी शिक्षा में भी शिक्षकों तथा अन्य विशेषज्ञों

की भूमिका महत्वपूर्ण मानी जाती है। चूंकि समावेशन की प्रक्रिया में सामान्य कक्षाध्यापक तथा विशेष आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए विशेष अध्यापक की व्यवस्था होती है। अतः हमलोग दोनों की भूमिका को बारी-बारी से जानेंगे-

कक्षाध्यापक की भूमिका

समावेशी शिक्षा को प्रभावकारी बनाने के लिए कक्षाध्यापक की दृष्टिबाधित बालकों के प्रति अभिवृत्ति गहरा प्रभाव डालती है। स्मिथ पॉवेल, पैटॉन तथा डॉवडी (2011) ने कक्षाध्यापक की समावेशी शिक्षा में निम्नलिखित क्षेत्रों में भूमिका बतायी है-

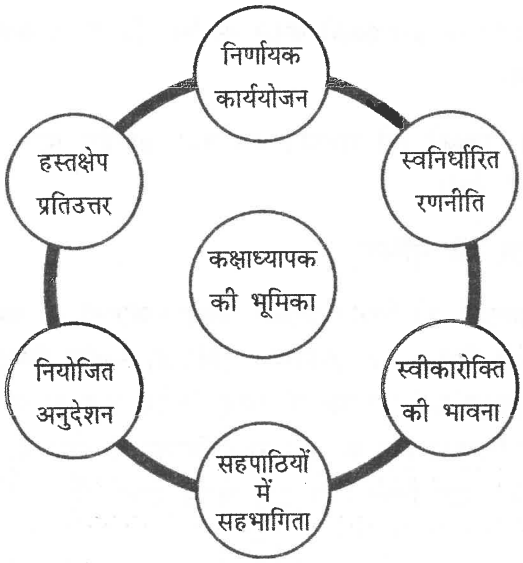

हॉव्स तथा वेशलिग (1998) (स्मिथ पॉवेल, पैटॉन तथा डॉवडी, 2011 द्वारा उल्लेखित) समावेशित शिक्षा को प्रभावकारी तथा सफल बनाने में कक्षाध्यापक की भूमिका को सर्वोपरि बताया है, चूंकि वे ही सामान्य कक्षा अनुदेशन के लिए उत्तरदायी होते हैं। समावेशित शिक्षा में कक्षाध्यापक की कुछ महत्वपूर्ण भूमिकाएँ निम्नलिखित हैं-

- कक्षा में दृष्टिबाधित बालकों को अन्य बालकों से समतुल्य स्वीकार करना।
- दृष्टिबाधित बालकों के लिए मूल्यांकन तथा वैयक्तिक शैक्षिक योजना निर्माण सम्बन्धी विशेष दल का हिस्सा बनना।
- दृष्टिबाधित बाधिक बालकों के अधिकारों की रक्षा के लिए तैयार रहना।

NOTES

- बालक के माता-पिता के समय-समय पर सम्पर्क स्थापित करना उनका मार्गदर्शन करना।
- व्यक्तिक बाधाओं को ध्यान में रखते हुए अनुदेशन में आवश्यक परिवर्तन करना।
- विकलांगता सम्बन्धी सरकारी योजनाओं, अधिनियमों की समझ रखना, तथा उनके लाभ को दृष्टिबाधित तक पहुँचाने में सहायता करना।
- कक्षा में सभी छात्रों को समान अवसर प्रदान करना।
- विशेष आवश्यकता होने पर विशेष शिक्षक की सेवा प्राप्त करना।
- अनुदेशन के प्रभावकारी बनाने के लिए विशेष उपकरणों का उपयोग करना।
- अन्य बालकों को सहयोग देने तथा सहयोग प्राप्त करने के लिए बढ़ावा देना।

विशेष शिक्षक की भूमिका

दृष्टिबाधित बालकों की विशेष शैक्षिक आवश्यकताओं के समुचित निष्पादन के लिए विशेष शिक्षक की व्यवस्था होती है। विशेष शिक्षक दृष्टिबाधित बालकों की शिक्षा एवं पुनर्वास के लिए विशेष रूप से प्रशिक्षित होते हैं। इनकी भूमिका विशिष्ट होने के साथ-साथ विस्तृत भी होती है। विशेष शिक्षकों की भूमिका को आप निम्न चित्र द्वारा समझ सकते हैं-

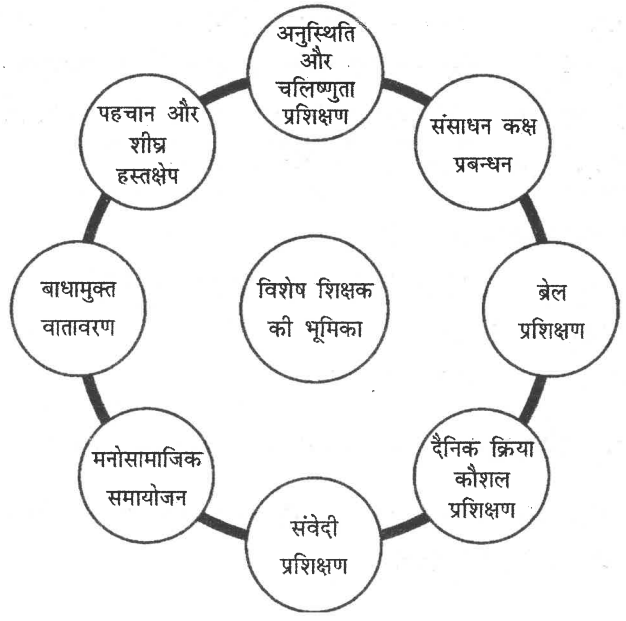

उपरोक्त चित्र में प्रदर्शित विशेष शिक्षक की भूमिका को समझने के लिए हम क्रमवार रूप से चर्चा करेंगे।

NOTES

ब्रेल प्रशिक्षण

बालकों के लिए ब्रेल शिक्षण की व्यवस्था करनी चाहिए। दृष्टिबाधित बालक पठन तथा लेखन का कार्य स्पर्श रूप में करता है। ब्रेल छः उभरी बिन्दुओं पर आधारित एक स्पर्शीय लिपि है। ब्रेल लेखन कार्य दाएँ से बाएँ ओर होता है जबकि पठन बाएँ से दाएँ ओर होता है। ब्रेल प्रशिक्षण के द्वारा दृष्टिबाधित बालकों को पढ़ने-लिखने में मदद मिलती है।

समावेशित परिवेश में विशेष शिक्षण की अपेक्षित भूमिकाएँ-

- दृष्टिबाधित बालकों के ब्रेल पठन तथा लेखन सिखाना
- ब्रेल प्रशिक्षण, ब्रेल-पूर्व तत्परता कार्यक्रम तय करना
- ब्रेल लेखन के लिए विभिन्न उपकरणों से अवगत कराना
- संकोच ब्रेल तथा नेमेथ कोड (गणित के लिए कोड) से अवगत कराना

पहचान और शीघ्र हस्तक्षेप

दृष्टिबाधित बालक की यथाशीघ्र पहचान अत्यन्त आवश्यक है। किसी भी दृष्टिबाधित बालक के लिए समुचित कार्यक्रम का निर्धारण तब तक नहीं किया जा सकता है जब तक दृष्टिबाधिता की पहचान एवं मूल्यांकन न कर ली जाय। पहचानोपरान्त नैदानिक मूल्यांकन तथा चिकित्सकीय परामर्श हेतु नेत्र विशेषज्ञ के पास भेजना चाहिए। यदि दृष्टि क्षति में चिकित्सकीय सुधार सम्भव नहीं है तो उनके लिए उपयुक्त हस्तक्षेप तैयार करना चाहिए। यदि कार्यकारी दृष्टि शेष है तो विशिष्ट शिक्षक की भूमिका कार्यकारी दृष्टि का मूल्यांकन तथा दृष्टि क्षमता विकास करना भी है।

यदि माता-पिता बच्चे से अरुचि रखते हैं अथवा निराश हैं, तो हस्तक्षेप कर उनमें उत्साह भरना चाहिए। उनका संतुष्ट करना चाहिए कि इस प्रकार की अक्षमता और इसके प्रभाव को कम किया जा सकता है। परिवार के दृष्टिकोण में भी परिवर्तन लाने का प्रयास करना चाहिए।

समावेशित पर्यावरण में विशेष शिक्षक की अपेक्षित भूमिकाएँ-

- कक्षा तथा अन्य स्थान पर दृष्टिबाधित बालको को विशिष्ट लक्षणों के आधार पर पहचान करना।

- लेखन-पठन के लिए उचित माध्यम (ब्रेल एवं प्रिंट) के उचित चुनाव में मदद करना।
- चिन्हित छात्रों के लिए शीघ्र आवश्यक शैक्षिक पुर्नवास कार्यक्रम की व्यवस्था करना।
- चिन्हित छात्रों के लिए विशेष विशेषज्ञों (चिकित्सक, मनोवैज्ञानिक तथा सामाजिक कार्यकर्ता) की सलाह लेना।
- माता-पिता को उचित परामर्श देना एवं उनकी उपयुक्त सहायता प्राप्त करना।

संवेदी प्रशिक्षण

मनुष्य की ज्ञानेन्द्रियाँ उसे अपने वातावरण को स्पष्ट रूप से जानने, समझने तथा अन्तः क्रिया में सहायक होती है। इन्हीं ज्ञानेन्द्रियों के द्वारा मनुष्य सम्पूर्ण सूचनाओं और अनुभवों को प्राप्त करता है, इसलिए इसे सूचना का द्वार भी कहते हैं। ज्ञानेन्द्रियों में नेत्र का तथा सम्वेदनाओं में दृष्टि का सबसे महत्वपूर्ण स्थान है। विभिन्न शोधों द्वारा इस तथ्य की पुष्टि हुई है कि मनुष्य की सूचनाओं और अनुभव का दो-तिहाई से ज्यादा भाग दृष्टि द्वारा अर्जित होती है। अतः शिक्षक की यह स्वतः भूमिका है कि वह दृष्टिबाधित बालकों में अनुभवों के इस अन्तर को कम करने के लिए सभी बची हुई संवेदनाओं (अवशिष्ट दृष्टि सहित) का महत्तम एवं एकीकृत उपयोग के लिए बालकों को मार्गदर्शित करें।

समावेशित परिवेश में विशेष शिक्षक की अपेक्षित भूमिकाएँ-

- स्पर्शी क्षमता को अधिकाधिक विकसित करना।
- किसी भी प्रकार की आवाज को स्पष्टता तथा तत्परता के साथ सुनने का प्रशिक्षण देना।
- गंध और स्वाद के द्वारा वस्तुओं के ज्ञान का प्रशिक्षण देना।
- बची हुई दृष्टि के उपयोग का प्रशिक्षण देना।
- स्पर्श के माध्यम से छोटा-बड़ा, सख्त मुलायम, ठंडा या गरम, लम्बा-चौड़ा आदि की संकल्पना का निर्माण करना।
- पेड़-पौधों, फूल, पत्ते, घास, सब्जी, फल आदि में अन्तर करने तथा समझने का प्रशिक्षण देना।

NOTES

अनुपस्थिति और चलिष्णुता

अनुस्थिति ज्ञान एवं चलिष्णुता से तात्पर्य उस कौशल से है जिससे दृष्टिबाधित व्यक्ति को अपने वातावरण को पहचानते हुए, स्वतंत्र रूप से तथा स्वेच्छापूर्वक, एक स्थान से दूसरे इच्छित स्थान तक निर्बाध रूप से आने-जाने में सक्षम हो सके। दृष्टि के अभाव में गामकता की क्षतिपूर्ति के लिए दृष्टिबाधित बालकों को अनुस्थिति तथा चलिष्णुता कौशल का सुव्यवस्थित प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। परिणाम स्वरूप वे चलने-फिरने में स्वतंत्रता का पर्याप्त अनुभव करते हुए निर्भयतापूर्वक एवं स्वयं को सुरक्षित रखते हुए इच्छित स्थान तक जा सकेंगे। यदि उपयुक्त प्रशिक्षण प्राप्त हो जाए तो दृष्टिबाधित बालक के उत्साह तथा आत्मविश्वास में भी अत्यन्त वृद्धि होती है। इसलिए शिक्षक के लिए यह आवश्यक है कि वह दृष्टिबाधित बालकों के लिए उचित प्रशिक्षण की व्यवस्था करें।

समावेशित वातावरण में विशेष शिक्षक की अपेक्षित भूमिकाएँ-

- मानसिक मानचित्र के लिए दृष्टिबाधित बालकों को प्रोत्साहित करना
- पहचान चिन्ह एवं संकेत का उपयोग करते हुए चलिष्णुता को प्रभावी बनाना
- दृष्टिवान साथी की सहायता से चलने-फिरने का प्रशिक्षण
- अन्य बालकों को दृष्टिवान साथी की भूमिका के लिए जागरूक एवं प्रशिक्षित करना
- छड़ी के प्रयोग से स्वतंत्रतापूर्वक चलने का प्रशिक्षण देना
- सुरक्षा सम्बन्धी कौशलों में निपुण बनाना
- वस्तुओं की खोज करने की विधि से अवगत कराना

दैनिक क्रिया कौशल प्रशिक्षण

दैनिक क्रियाओं में दृष्टि की अहम भूमिका होती है। दैनिक क्रिया कौशल प्रशिक्षण से दृष्टिबाधित बालक दूसरों की सहायता के बिना या कम से सहायता के साथ दिन-प्रतिदिन की गतिविधियों को करने में सक्षम होते हैं। जैसे- स्नान, शौच, भोजन करने, बाजार से वस्तुओं को खरीदने तथा रख-रखाव का प्रशिक्षण।

समावेशित वातावरण में विशेष शिक्षक अपेक्षित की भूमिकाएँ-

NOTES

- दैनिक क्रिया प्रशिक्षण के क्षेत्र का निर्धारण करना।
- न्यूनतम बाहरी सहायता देते हुए तथा सुरक्षापूर्वक अपनी दैनिक गतिविधियों को निष्पादित करने योग्य बनाने का प्रशिक्षण देना।

मनोसामाजिक समायोजन

अपने आस-पास के समाज में अपने को पूर्णत: व्यवस्थित कर लेना ही समायोजन है। दृष्टिबाधित बालक को लगता है कि उसे अन्य लोगो से भिन्न समझा जाता है, क्योंकि वह सभी क्रियाओं में समान रूप से भाग नहीं ले पाता है। कई बार अपने आप को वह अधूरा समझता है। शिक्षक की स्पष्ट भूमिका है कि वह समाज माता-पिता, बालकों तथा बच्चों के अन्दर एक सकारात्मक नजरिए का विकास करे ताकि एक पारस्परिक सहयोगी समाज का निर्माण हो सके।

समावेशित वातावरण में विशेष शिक्षक की अपेक्षित भूमिकाएँ-

- छात्रों एवं विद्यालय के कर्मचारियों में दृष्टिबाधा तथा अन्य विकलांगता के प्रति नकारात्मकता को कम करने पर बल देना।
- आस-पास के लोगों को दृष्टिाबाधा तथा इनके अनुप्रयोगों से परिचित करना।
- विद्यालय प्रबन्धन, छात्राविभावक एवं अन्य छात्रों को दृष्टिबाधा एवं इसके प्रति जागरूक करना तथा सहयोगी भावना का विकास करना।
- दृष्टिबाधित बालकों तथा अविभावकों के आस-पास की क्रियाओं में भाग लेने की प्रवृत्ति का विकास करना।
- दृष्टिबाधित बालकों के लिए अनुकूलित खेलों से बालकों से अवगत कराना तथा उन्हें एक साथ सम बिताने के लिए प्रोत्साहित करना।

बाधामुक्त वातावरण के निर्माण में सहायता

घर तथा विद्यालयी वातावरण का बाधामुक्त होना अत्यंत आवश्यक है ताकि दृष्टिबाधित बालक आस-पास के वातावरण का सुगमता से उपयोग कर सकें। बाधामुक्त वातावरण द्वारा ही दृष्टिबाधित बालक कक्षा तथा अन्य सेवाओं तक अपनी पहुँच सुनिश्चित कर उनका उपयोग कर सकेंगे।

समावेशित वातावरण में विशेष शिक्षक की अपेक्षित भूमिकाएँ-

- कक्षा, कार्यालय, शौचालय एवं अन्य विद्यालयी संरचनाओं में बाधा की पहचान करना।

- चिन्हित बाधाओं को दूर करने के उपायों से विद्यालय प्रबन्धन को अवगत कराना।
- कक्षा वातावरण को दृष्टिबाधित तथा अन्य बालकों के अनुरूप तैयार करने का प्रयास करना।

NOTES

संसाधन कक्ष प्रबन्धन

समावेशी शिक्षा में संसाधन कक्ष बहुत महत्वपूर्ण होता है। संसाधन कक्ष में शैक्षिक प्रशिक्षण के लिए उचित तथा आवश्यकता अनुसार शिक्षण-अधिगम सामग्री रखी होती हैं, जिसकी जिम्मेदारी विशेष शिक्षक पर ही होती है।

समावेशित वातावरण में विशेष शिक्षक की अपेक्षित भूमिकाएँ-

शिक्षण-अधिगम सामग्री तथा उपकरणों का अभिलेख तैयार करना,

दृष्टिबाधित बालकों को संसाधन कक्ष में सुगमतापूर्वक प्रशिक्षण उपलब्ध कराना,

उन्हें आवश्यकतानुसार उपकरणों का प्रशिक्षण देना,

अल्प दृष्टि बालकों के लिए भी उचित प्रकाशीय तथा अप्रकाशीय उपकरण की व्यवस्था एवं प्रशिक्षण प्रदान करना।

परीक्षापयोगी प्रश्न

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. श्रवण बाधिता से आपका क्या अभिप्राय है ? इसका वर्गीकरण कीजिए।
2. श्रवण बाधिता का अर्थ स्पष्ट कीजिए तथा परिभाषित कीजिए।
3. श्रवण बाधित बच्चों के प्रकार की विस्तार से विवेचना कीजिए।
4. श्रवण बाधित बच्चों में पाये जाने वाले लक्षणों की विवेचना कीजिए।
5. कान की संरचना का सचित्र वर्णन करते हुए श्रवण प्रक्रिया को बताइए।
6. दृष्टिबाधित बालकों का समावेशन को समझाते हुए इसके निर्धारक कारक को स्पष्ट कीजिए।
7. विशेष शिक्षक की भूमिका स्पष्ट कीजिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. श्रवणबाधित से आप क्या समझते हैं ?
2. श्रवणबाधित की प्रक्रया सममझाइए।
3. समय के आधार पर श्रवणबाधिता का वर्गीकरण स्पष्ट कीजिए।
4. श्रवण दोष के कोटि का प्रभाव स्पष्ट कीजिए।

NOTES

5. श्रवणबाधित बच्चों की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।
6. श्रवण प्रशिक्षण के चरणों का उल्लेख कीजिए।
7. श्रवण प्रशिक्षण से आप क्या समझते हैं ? इसके लक्ष्य बताइये।
8. श्रवण प्रशिक्षण को प्रभावित करने वाले कारकों की समीक्षा कीजिए।
9. भाषा एवं वाणी विकास को समझाइये।
10. शैक्षिक उपलब्धि से आप क्या समझते हैं ?
11. सम्प्रेषण की समीक्षा को स्पष्ट कीजिए।

NOTES

3 दृष्टिबाधिता : प्रकृति तथा आंकलन

अध्याय में सम्मिलित विषय-सामग्री :

- उद्देश्य
- प्राक्कथन
- दृष्टिबाधित का वर्गीकरण तथा परिभाषा
- आंशिक या अल्पदृष्टि दोष
- दृष्टिहीनता/पूर्णतः दृष्टि अभाव/अन्धता
- दृष्टिबाधिता के कारण व रोकथाम एवं देखभाल
- दृष्टिबाधिता बच्चों के लक्षण/विशेषताएँ
- दृष्टिबाधित बच्चों की पहचान तथा स्थापन
- दृष्टिबाधित बच्चों की पहचान
- दृष्टिबाधित बच्चों का शैक्षणिक स्थापन
- दृष्टिबाधित बच्चों की देखरेख एवं प्रशिक्षण
- दृष्टिबाधित बच्चों हेतु प्रशिक्षण के विविध घटक
- दृष्टिबाधित बच्चों की देखरेख एवं प्रशिक्षण में माता-पिता की भूमिका
- दृष्टिबाधित बच्चों की देखरेख एवं प्रशिक्षण में समावेशी विद्यालय की भूमिका
- परीक्षापयोगी प्रश्न

उद्देश्य–

इस अध्याय के अध्ययन के पश्चात् आप निम्न तथ्यों को समझ सकेंगे–

- दृष्टिबाधित का वर्गीकरण तथा परिभाषा
- आंशिक या अल्पदृष्टि दोष
- दृष्टिहीनता/पूर्णतः दृष्टि अभाव/अन्धता
- दृष्टिबाधिता के कारण व रोकथाम एवं देखभाल
- दृष्टिबाधिता बच्चों के लक्षण/विशेषताएँ
- दृष्टिबाधित बच्चों की पहचान तथा स्थापन

- दृष्टिबाधित बच्चों की पहचान
- दृष्टिबाधित बच्चों का शैक्षणिक स्थापन
- दृष्टिबाधित बच्चों की देखरेख एवं प्रशिक्षण
- दृष्टिबाधित बच्चों हेतु प्रशिक्षण के विविध घटक
- दृष्टिबाधित बच्चों की देखरेख एवं प्रशिक्षण में माता-पिता की भूमिका
- दृष्टिबाधित बच्चों की देखरेख एवं प्रशिक्षण में समावेशी विद्यालय की भूमिका

प्राक्कथन

हम जानते हैं कि हम अपने आस-पास के पर्यावरण के बारे में जानकारी अपनी ज्ञानेन्द्रियों के द्वारा उनके साथ सम्पर्क स्थापित कर करते हैं इसलिए ज्ञानेन्द्रियों को 'ज्ञान का द्वार' भी कहा जाता है मुख्यत: ज्ञानेन्द्रियां पांच प्रकार की होती हैं। ये पांच ज्ञानेन्द्रियां क्रमश: (i) आँख, (ii) कान, (iii) नाम, (iv) जिह्वा तथा (v) त्वचा है। इन पाँचों इन्द्रियों का अपना महत्व है लेकिन आंखों का महत्व जीवन में अतिविशेष है क्योंकि सबसे अधिक अनुभव हम आंखों से ही प्राप्त करते हैं। यह एक प्रमाणित तथ्य है कि मनुश्य वातावरण से प्राप्त सभी सूचनाओं का लगभग 80 प्रतिशत आंखों के द्वारा प्राप्त करता है इसी कारण आंख को मस्तिष्क का बाह्य विस्तार भी कहा जाता है। ऐसे में यदि आंखों की कार्यक्षमता में रूकावट उत्पन्न हो जाए या इसका शरीर में अभाव हो तो मानव दृष्टि जैसे प्राकृतिक उपहार से वंचित हो जाता है। प्रस्तुत इकाई में विस्तार से दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लक्षणों सम्बन्धित जानकारियाँ प्रस्तुत हैं।

दृष्टिबाधिता (Visual Impairment) का अर्थ

सामान्य शब्दों मे ठीक प्रकार से देख पाने में असमर्थता/दृष्टिबाधिता कहलाती है। दृष्टि की अपनी सामान्य क्रियात्मकता से विचलन की स्थिति दृष्टिबाधिता की श्रेणी में आता है। दृष्टिबाधिता आशय है कि दृष्टि में सभी उपचारात्मक प्रयासों एवं सुधारात्मक लेसों के प्रयोग के बावजूद दृष्टिक्षति का मौजूद होना। इस क्षति के कारण व्यक्ति को देखने में परेशानी होती है।

सभी दृष्टिहीन व्यक्तियों में दृष्टि का पूर्ण कमी नहीं होती। अधिकतर दृष्टिबाधित की श्रेणी में आने वाले व्यक्तियों में दृष्टि की कुछ न कुछ

अवशिष्ट या शेष दृष्टि होती है। जब व्यक्ति में अवशिष्ट दृष्टि एक स्तर से अधिक या ऊपर होती है। जब ऐसी स्थिति कमदृष्टि या अल्पदृष्टि कहलाती है, किन्तु अवशिष्ट दृष्टि का एक स्तर से कम होना या दृष्टि का पूर्णत: अभाव होना नेत्रहीनता या दृष्टिहीनता की श्रेणी में आता है। अधिकतर व्यक्ति पूर्ण रूप से नेत्रहीन/दृष्टिहीन न होकर अल्पदृष्टि से ग्रसित होते हैं। दृष्टिबाधिता की परिभाषा जानने से पूर्व निम्न सम्प्रत्ययों को जानना जरूरी है।

1. **दृष्टितीक्ष्णता (Visual Impairment) :** दृष्टि तीक्ष्णता का अर्थ है आँख की देखने की क्षमता। यह मनुष्य की निर्धारित दूरी से स्पष्ट देख पाने की योग्यता है। यह दूर व पास दोनों दूरियों के लिए मापी जाती है दृष्टि तीक्ष्णता को मापने के लिए सामान्यत: स्नेलेन आई चार्ट (Snellen Eye Chart) का प्रयोग किया जाता है। इस भिन्न के रूप में लिखा जाता है। जैसे 20/60 (फीट) दृष्टितीक्ष्णता का तात्पर्य है कि सामान्य दृष्टि से जिस वस्तु को 60 फीट की दूरी से देखा जा सकता है एक प्रभावित या क्षतिग्रस्त दृष्टि उस वस्तु को 20 फीट की दूरी से देख सकती है अर्थात यदि कोई वस्तु को 60 फीट की दूरी पर रखी है तो 20/60 दृष्टि तीक्ष्णता वाले मनुष्य को भली प्रकार से देखने के लिए उस वस्तु को 20 फीट की दूरी पर लाना होगा।

2. **दृष्टि क्षेत्र (Field of Vision) :** दृष्टि क्षेत्र से तात्पर्य है कि व्यक्ति द्वारा सीधे देखने पर उसके द्वारा प्रत्यक्षित कुल क्षेत्र। व्यक्ति ठीक सामने की वस्तु को देख सकने के साथ ही एक निश्चित परिधि में आने वाले समस्त वस्तुओं को देख सकता है। दृष्टि को बिल्कुल सीध में रखने पर एक सामान्य दृष्टिवाला व्यक्ति लगभग 1800 डिग्री तक की परिधि में आने वाली समस्त वस्तुओं के देख पाने में सक्षम होता है।

दृष्टिबाधित का वर्गीकरण एवं परिभाषा

दृष्टिबाधिता दो प्रकार की होती है-

1. आंशिक/अल्पदृष्टि दोष अर्थात कम दिखायी पड़ना,
2. पूर्णत: दृष्टि अभाव/दृष्टिहीन

व्यक्ति दृष्टिहीन है या अल्पदृष्टिहीन वाला यह व्यक्ति की अवशिष्ट या शेष दृष्टि पर निर्भर करता है। जब मनुष्य में अवशिष्ट दृष्टि एक स्तर से ज्यादा होती है तो वह अल्पदृष्टि की श्रेणी में आता है। एक निर्धारित स्तर से कम अवशिष्ट होने पर अथवा दृष्टि का पर्णत: अभाव होने पर व्यक्ति दृष्टिहीनता

की श्रेणी में आता है।

1. आंशिक या अल्प दृष्टि दोष :

कानूनी परिभाषा के अनुसार सुधारात्मक उपायोग के बाद भी अल्प दृष्टि व्यक्ति की दृष्टितीक्ष्णता 20/70 (फिट) से कम या दृष्टि से 20 डिग्री से कम होता है अर्थात् सामान्य दृष्टि वाला जिस वस्तु को 70 फीट की दूरी से देख सकता है उसे अल्पदृष्टि दोष वाला व्यक्ति 20 फीट की दूरी से देख पायेगा तथा दृष्टि के बिल्कुल सामने रखने पर व्यक्ति मात्र 20 डिग्री या कम की परिधि में आने वाली वस्तुओं को देख सकने में सक्षम होगा।

नि:शक्त व्यक्ति (समान अवसर, अधिकारों का संरक्षण तथा पूर्ण भागीदारी) अधिनियम 1995 के अनुसार अल्पदृष्टि वाले व्यक्ति से अभिप्राय उन व्यक्तियों से है जिनकी दृष्टि क्रियाशीलता (Visual Functioning) में, उपचार या सवोत्तम सुधार के पश्चात् भी दोष होता है किन्तु वे उपयुक्त सहायक उपकरणों के साथ कार्यों को करने अथवा उसकी योजना बनाने के लिए दृष्टि का प्रयोग करते हों या इसकी सम्भावना हो कि वे दृष्टि का प्रयोग कर सकेंगे।

इस अधिनियम में दी गयी परिभाषा में दृष्टि तीख्णता पर जोर ना देकर सहायक उपकरणों की मदद से दृष्टि के उपयोग की क्षमता को आधार बनाया गया है।

शैक्षणिक परिभाषा के अनुसार अल्पदृष्टि वाले वे व्यक्ति हैं, जो कि छपे हुए अक्षर पढ़ तो सकते हैं किन्तु उनके लिए मोटी छपाई वाली पुस्तकों या लिखे हुए अक्षरों को बड़ा करके दिखाने वाले उपकरणों की जरूरत होती है। शैक्षिणि परिभाषा शिक्षकों को बच्चे से सम्बन्धित शैक्षणिक निर्णय लेने में मदद करती है।

इस प्रकार हमने देखा कि अल्प दृष्टि की श्रेणी में वे बच्चे अथवा व्यक्ति आते हैं जिनमें अवशिष्ट की मात्रा सामान्य दृष्टि वाले तथा पूर्ण अन्धत्व के बीच की होती है। इनको पढ़ने-लिखने, चलने-फिरने अथवा सामान्य काम-काज करने में समस्या का सामना करना पड़ता है। ऐसे व्यक्तियों के दृष्टिमूलक कार्य प्रभावित हो सकते हैं तथा दृष्टिमूलक काम का सम्पादन करने के लिए इन्हें सहायक उपकरणों की मदद लेनी पड़ती है।

2. दृष्टिहीनता/पूर्णतः दृष्टिअभाव/अन्धता :

वैधानिक रूप से दृष्टिहीनता वह स्थिति है जब किसी व्यक्ति की दृष्टितीक्ष्णता, स्वस्थ/अच्छे नेत्र में, चश्मे अथव कॉन्टेक्ट लेंस के साथ सवोत्तम सम्भव सुधार करने के पश्चात् 20/200 या उससे कम हो अथवा वे व्यक्ति जिनका दृष्टिक्षेत्र 20 डिग्री से कम होता है।

निःशक्त व्यक्ति (सामान्य अवसर, अधिकारों का संरक्षण तथा पूर्ण भागीदारी) अधिनियम 1995 के अनुसार दृष्टिहीनता अथवा पूरी तरह दृष्टि अभाव उस स्थिति को कहते हैं जब व्यक्ति निम्नलिखित में से किसी भी एक स्थिति से ग्रस्त होता है।

- दृष्टि का पूर्ण अभाव या
- अच्छी आँख में, चश्में या कॉन्टेक्ट लेंस से सर्वोत्तम सुधार के पश्चात् भी दृष्टि तीक्ष्णता 6/60 (मीटर) या 20/200 (फीट) (स्नेलेन) से ज्यादा न होना या
- 20 डिग्री से अधिक का दृष्टिक्षेत्र न होना।

शैक्षणिक परिभाषा के अनुसार दृष्टिहीन व्यक्ति वे व्यक्ति हैं जिनकी आँखें इतनी गम्भीर रूप से प्रभावित हैं कि उनको शैक्षिक उद्देश्यों के लिए ब्रेल लिपि या श्रवण प्रणाली (श्रव्यटेप और रिकॉर्ड) का प्रयोग करना पड़ता है।

दृष्टिहीनता के शैक्षणिक परिभाषा जो कि शिक्षकों को यह निर्णय लेने में मदद करती है कि बच्चे को किस प्रकार से शिक्षित किया जाए।

दृष्टि-बाधिता व्यक्ति विशेष की ऐसी अक्षमता है जो उस व्यक्ति की दृष्टि में बाधा पैदा करती है। दृष्टि अक्षमता की दो परिभाषाएँ प्रचलन में हैं-

(a) विधिक (Legal)

(b) शैक्षिक (Educational)

(a) विधिक परिभाषा (Legal Definition) : निःशक्त व्यक्ति अधि नियम, 1995 (PWD Act, 1995) के अनुसार ऐसे व्यक्ति को दृष्टि अक्षम बच्चों की श्रेणी में रखा गया है जो निम्नलिखित अवस्था में से किसी से ग्रसित हों-

(i) दृष्टि का पूर्ण अभाव; या

(ii) सुधारक लेंसों के साथ बेहतर नेत्र में दृष्टि की तीक्ष्णता (Visual Acuity) जो 6/60 अथवा 20/200 (स्नेलेन) से ज्यादा न हो; या

(iii) दृष्टि क्षेत्र (Field of Vision) की सीमा जो 20 डिग्री कोण वाली या उससे बेहतर हो।

यहाँ दृष्टि तीक्ष्णता 20/200 का मतलब है कि सामान्य दृष्टि वाला व्यक्ति 200 फीट तक की वस्तु को स्पष्ट से देख सकता है। जबकि व्यक्ति की दृष्टि उस हद तक अक्षम हो कि उसी वस्तु को देखने के लिए उस 20 फीट की दूरी सीमा के अधीन आना पड़े।

आंशिक दृष्टि दोष (Partially Sighted) : विधिक परिभाषा के अनुसार आंशिक दृष्टि दोष ग्रस्त व्यक्ति वह है जिसमें सुधारक लेंसों के साथ बेहतर नेत्र में दृष्टि तीक्ष्णता 20/70 और 20/200 के मध्य हो। वहीं निःशक्त व्यक्ति अधिनियम (1995) के अनुसार, "अल्प दृष्टि व्यक्ति (Low Vision Person)" से ऐसा कोई व्यक्ति अभिप्रेत है जिसकी उपचार या मानक अपवर्तनीय संशोधन के बाद भी दृष्टि क्षमता का ह्रास हो गया है परंतु जो समुचित सहायक युक्त से किसी कार्य की योजना अथवा निष्पादन के लिए दृष्टि का उपयोग करता है या उपयोग में संभाव्य रूप से समर्थ है।

(b) शैक्षिक परिभाषा (Educational Definition) : शैक्षिक परिभाषा–अनुदेशन पर आधारित है। शैक्षिक परिभाषा के अनुसार "उन व्यक्तियों को दृष्टिहीन मनुष्य कहा जाता है जिनकी दृष्टि इतना ज्यादा अक्षमताग्रस्त हो कि ब्रेल लिपि के वगैर वे पढ़ना सीख नहीं सकते।

दृष्टिबाधिता के कारण व रोकथाम एवं देखभाल

दृष्टिबाधिता के कारण–दृष्टिबाधिता के कारणों को अनेक प्रकार से वर्गीकृत किया जा सकता है, जैसे जन्म के आधार पर, आनुवंशिक या अर्जित, नेत्र में प्रभावित स्थान आदि अनेकों ऐसे आधार है जिस पर कारणों का वर्गीकरण किया जाता है। कुछ आधार का विवरण निम्नलिखित है–

जन्म के आधार पर

- जन्म से पूर्व के कारण (Prenatal Causes)
- जन्म के दौरान के कारण (Perinatal Causes)
- जन्म के बाद के कारण (Postnatal Causes)

1. जन्म से पूर्व के कारण (Prenatal Causes) :

i. परिवार में दृष्टिदोष के इतिहास का होना

ii. नजदीकी/खून के रिश्तें में शादी

iii. गर्भवती माता का कुपोषित या स्वास्थ्य खराब होना

iv. रक्त समूह की जटिलताएं या आर.एच. असंगति

v. डॉक्टर की सलाह के बिना गर्भवती महिला का एंटीबायटिक या कोई अन्य दवा लेना

vi. गर्भावस्था के दौरान, विशेष रूप से प्रथम महीनों में किसी संक्रामण रोग या बीमारियों (जैसे सिफलिस) या जर्मन खसरा (रूबैला) का होना

vii. गभावस्था के दौरान एक्स-रे करवाना।

2. जन्म के दौरान के कारण (Perinatal Causes) :

i. जन्म के समय शिशु के वजन का कम होना

ii. समयपूर्व प्रसव

iii. प्रसव के दौरान शिशु को मिलने वाले ऑक्सीजन में कमी

iv. प्रसव में प्रयुक्त उपकरणों के गलत प्रयोग के कारण

3. जन्म के बाद के कारण (Postnatal Causes) :

i. बाल्यावस्था में संक्रामण रोग का होना

ii. आँख में हुए संक्रमण के प्रति लापरवाही

iii. नेत्र या मस्तिष्क पर चोट लगना

iv. विटामिन A की कमी

NOTES

v. नेत्र में ट्यूमर का होना।

दृष्टिवाधिता के कारणों की निम्न प्रकार से भी वर्गीकृत कर सकते हैं–

दृष्टि दोष के कारण

परावर्तनीय त्रुटियाँ (Refractive Effors)	संरचनात्मक/ढाँचागत त्रुटियाँ (Structural Impairments)	कोर्टिकल दृष्टिदो (Cortical Visual Impairment)

1. **परावर्तित त्रुटियाँ (Repractive Errors) :** सामान्य आँख में प्रकाश किरणें सीधे रेटिना पर पड़कर स्पष्ट प्रतिविम्ब का निर्माण करती हैं आँख की इस सामान्य अवस्था को इम्मिट्रोपिया (Emmetropia) कहा जाता है। इस स्थिति से विचलन की स्थिति एमेट्रोपिया कहलाती है। इसमें प्रकाश की समानान्तर किरणें रेटिना पर केन्द्रित नहीं होती परिणामतः रेटिना पर बनने वाली प्रतिविम्ब धुंधली प्रतीत होती हैं। इसमें दूरदृष्टिदोष, निकटदृष्टिदोष एवं बिन्दुकता तथा जरा दूर दर्शिता की अवस्थाएँ शामिल हैं।

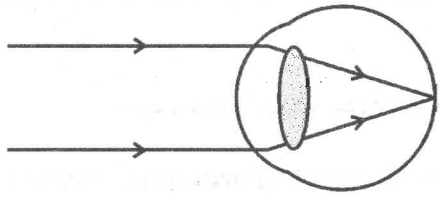

चित्र : इम्मिट्रोपिया

i. **दूरदृष्टि दोष (Hyperopia or Hypermetropia/ Farsigthtedness) :** इस दोष में दूर की वस्तुएँ स्पष्ट दिखाई देती हैं, लेकिन पास की वस्तुएँ देखने में कठिनाई होती है ऐसा प्रतिविम्ब का सीधे रेटिना पर ना बनकर उसके पीछे बनने के कारण होता है नेत्र की इस त्रुटि को उत्तल लेन्स की सहायता से सुधारा जा सकता है।

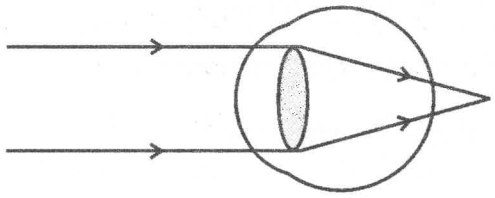

NOTES

हैं लेकिन दूर की वस्तुएं देखने में कठिनाई होती है ऐसा प्रतिबिम्ब का सीधे रेटिना पर ना बनकर उसके आगे बनने के कारण होता है। इस त्रुटि को अवतल लेन्स की सहायता से सुधारा जा सकता है।

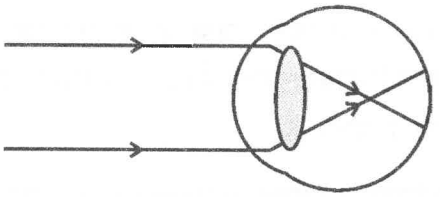

चित्र : निकट दृष्टि दोष

iii. **अबिन्दुता (Astigmatism) :** इस स्थिति में लेंस अथवा कार्निया के अनियमित होने के कारण स्पष्ट प्रतिबिम्ब का निर्माण नहीं हो पाता। इसे बेलनाकार (Cylinderical) लेंस की सहायता से सुधारा जा सकता है।

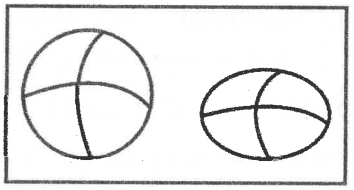

चित्र :

iv. **जरा दूरदर्शिता :** यह उम्र के साथ आँखों के स्वरूप तथा स्वास्थ में प्राकृतिक रूप से गिरावट से सम्बन्धित है। उम्र बढ़ने के साथ लेंस का लचीलापन कम हो जाता है जिससे स्पष्ट के साथ देखने में कठिनाई होती है। इस स्थिति में व्यक्ति को निकट दृष्टिदोष एवं दूरदृष्टिदोष दोनों का साथ होता है। इस समस्या से ग्रस्त व्यक्ति द्विफोकसी लेंस का प्रयोग करते हैं जिसका ऊपरी भाग अवतल लेंस व नीचे का भाग उत्तल लेंस की भांति कार्य करता है।

2. **रचनात्मक या ढाँचाग्रस्त त्रुटियाँ/क्षति (Structural Impairment) :** इस श्रेणी के अन्तर्गत नेत्र की ऑप्टिकल या माँसपेशीय संरचना के एक या एक से अधिक हिस्सों में क्षति आती है। ये क्षतियाँ/गड़बडियाँ विकासात्मक तथा क्रियात्मक दोनों स्तरों पर हो सकती हैं। नेत्रों की निम्न स्थितियों को रचनात्मक क्षति के अन्तर्गत रखा जा सकता है।

i. **मोतिया बिन्द (Cataract) :** नेत्र के लेंस में आपरदर्शिता आने की स्थिति मोतियाबिन्दु कहलाती है। यह एक नेत्र में या दोनों नेत्रों में हो सकती है। इसमें लेंस की अपारदर्शिता प्रकाश को लेंस से गुजरने से रोकती है जिससे वस्तु स्पष्ट रूप से दिखाई नहीं देती। मोतियाबिन्द जन्म जात (जन्म के समय) भी हो सकता है इसे जन्मजात मोतियाबिन्द कहते हैं। इसे ऑपरेशन द्वारा सुधारा जाना ही एक मात्रा विकल्प है।

ii. **कालामोतिया/ग्लूकोमा (Glaucoma) :** यह नेत्रों में आंतरिक दबाव बढ़ने के कारण होता है। नेत्रों में आंतरिक दबाव के कारण आप्टिक नर्व (वह तंत्रिका जो नेत्र को मस्तिष्क से जोड़ती है) को क्षति पहुंचती है। इसमें बिना दर्द के धीरे-धीरे परिधीय दृष्टि के नष्ट होने के साथ लगातार बढ़ता जाता है एवं अंत में व्यक्ति मात्र वस्तुओं का केन्द्रीय भाग ही स्पष्ट ही स्पष्ट रूप से देख पाने में समर्थ होता है।

iii. **वर्ण हीनता (Albinism) :** वर्ण हीनता एक ऐसी स्थिति है जिसमें शरीर के सभी या कुछ भागों में मैलानिन (शरीर व बालों को उनका रंग प्रदान करने वाले पिगमेंट/पदार्थ) नहीं होता। इसमें कार्निया में प्रकाश असहनीयता या दूसरे शब्दों में प्रकाश के प्रति संवेदनशीलता आ जाती है तथा व्यक्ति की दृष्टि क्षमता कम हो जाती है।

iv. **डायबेटिक रेटिनोपैथी (Diabetic Retinopathy) :** यदि कोई व्यक्ति लम्बे समय तक मधुमेह से पीड़ित रह जाता है जब उसका दुष्प्रभाव उसकी रेटिना पर पड़ सकता है जिससे उसके आँखों की स्पष्ट देख पाने की क्षमता प्रभावित होती है। आँखों की ऐसी स्थिति डायबेटिक रेटिनोपैथी कहलाती है।

v. **एनीरिडिया (Aniridia) :** इस स्थिति में आइरिस (आँख की पुतली) पूर्णतः विकसित नहीं होती है।

vi. **रोहे (Trachoma) :** इस स्थिति में नेत्र बैक्टीरिया द्वारा गम्भीर रूप से संक्रमित हो जाती है। यह संसार में दृष्टिहीनता का प्रमुख कारण है जिसकी रोकथाम की जा सकती है।

vii. **रेटिनोब्लास्टोमा (Retinoblastoma) :** रेटिना में ट्यूमर के विकसित होने की स्थिति रेटिनाब्लास्टोमा कहलाती है।

viii. **रेटिनाइटिस पिग्मेन्टोसा (Retinitis-Pigmentosa) :** यह एक आनुवांशिक बीमारी है जो कि प्रारम्भिक बाल्यावस्था या प्रारम्भिक वयस्क जीवन में प्रकट होना प्रारम्भ हो जाती है एवं धीरे-धीरे बढ़ती जाती है। यह रेटिना की कोशिकाओं का धीरे-धीरे ह्रास होने से होता है तथा जैसे-जैसे बीमारी बढ़ती जाती है व्यक्ति का दृष्टिक्षेत्र संकुचित होता जाता है तथा धीरे-धीरे केवल केन्द्रीय दृष्टिक्षेत्र शेष रह जाता है तथा व्यक्ति को सुरंग से देखने जैसा प्रतीत होता है। जिससे कि व्यक्ति केवल उन्हीं वस्तुओं को देख पाता है जो उसकी दृष्टि के ठीक सामने होती हैं। अंततः व्यक्ति दृष्टिहीन हो जाता है।

ix. **रेटिनल डिटैचमेंट (Retinal-Detachment) :** यह आँख की एक ऐसी विकृति है जिसमें रेटिना जिस परत के ऊपर लगा हुआ होता है वहाँ से उतर जाता है। अर्थात् रेटिना अपने नीचे के सहायक परत से भिन्न हो जाता है।

x. **जीरोफ्थेलमिया (Xerophthalmia) :** यह विटामिन ए की कमी से बाल्यावस्था में होने वाली दृष्टिहीनता का सबसे सामान्य कारण है। इस स्थिति में कंजक्टिवा तथा कॉर्निया में शुष्कता आने लगती है।

xi. **सट्राविसमस (Strabismus) (भंगापन/विर्यक दृष्टि) :** यह माँसपेशीय असंतुलन से सम्बन्धित ऐसा विकास है जिसमें आँखें एक सीधी रेखा में नहीं होती हैं। एक आँख सीधे देखती है तो दूसरी ऊपर, नीचे, आगे एवं पीछे की ओर घुमी हुई होती है।

xii. **एमब्लियोपिया या सुस्त आँखें (Amblyopia or lazy eye) :** इसमें आँखें सुस्त हो जाती हैं। इसका तात्पर्य है कि आँख की दृष्टितीक्ष्णता उतनी अच्छी नहीं रह जाती जितनी दूसरे आँख की जो कि हमेशा प्रयोग में रहती है। यह भी आँखों की मांसपेशीय असंतुलन के कारण होता है।

xiii. **निस्टागमस (Nystagmus) :** यह आँखों की अनइच्छित गति की स्थिति है जिसके फलस्वरूप दृष्टि क्षमता कम हो जाती है।

3. **कोर्टिकल दृष्टिदोष :** यह एक ऐसा दृष्टिदोष है जिसमें नेत्रों मे कोई समस्या नहीं होती है। आँखे पूर्णतः सामान्य होती हैं लेकिन (Optic Nerve) ऑप्टिकल तन्त्रिका जो आँखों से सूचनाओं को मस्तिष्क तक पहुँचाती है। क्षतिग्रस्त हो जाती है या मस्तिष्क का वह भाग प्रभावित हो जाता है जो देखी गयी सूचनाओं को प्रत्यक्षीकरण (Perception) एवं व्याख्या (Interpret) करने का कार्य करता है।

दृष्टि अक्षमता की रोकथाम एवं आँखों की देखभाल सही

जानकारी तथा थोड़ी सावधानी से अधिकतर बच्चों में दृष्टि अक्षमता की रोकथाम की जा सकती है दृष्टिअक्षमता रोकने तथा नेत्रों के उचित देखभाल के लिए निम्नलिखित उपाय किये जा सकते हैं-

i. बच्चों को सुरक्षित, स्वच्छ, स्वस्थ रखना तथा पौष्टिक आहार देना दृष्टिदोष की रोकथाम का सर्वोत्तम उपाय है। गर्भवती माताओं एवं बच्चों को आहार विटामिन ए से परिपूरित होना चाहिए।

ii. गर्भावस्था के दौरान जर्मन मीज़ल्स (खसरा) या किसी अन्य संक्रामक रोग से संक्रमित व्यक्ति के संपर्क में नहीं आना चाहिए।

iii. शिशुओं को संक्रामक बीमारियों से बचने के लिए टीकाकृत किया जाना चाहिए।

iv. जब तक संभव हो बच्चे को माँ का दूध मिलना चाहिए।

v. गर्भावस्था के समय महिलाओं को डॉक्टर के परामर्श के बिना कोई दवा नहीं लेनी चाहिए।

vi. खसरे से पीड़ित बच्चे को बिटामिन 'ए' से परिपूरित खाद्य पदार्थ देना चाहिए क्योंकि खसरे के साथ 'शुष्क नेत्र' होने का खतरा बढ़ जाता है।

vii. नजदीकी रिश्तेदारों में विवाह संबंध न करना बच्चे में दृष्टिबाधिता के रोकथाम का पूर्वोपाय है।

viii. आँखों की समस्याओं एवं देखन में कठिनाइयों के प्रारम्भिक लक्षणों के लिए जांच कराया जाना चाहिए।

ix. गंदे पानी में तैरने या स्नान करने से बच कर नेत्रों के संक्रमण को रोका जा सकता है।

x. सिर की चोट से बचाव नेत्र की क्षति के खतरे को कम करता है।

xi. घर एवं बच्चे को साफ-सुथरा रखा जाना चाहिए।

xii. रोहे (ट्रायकोमा) वाले व्यक्ति के लक्षण पता चलते ही सीघ्र उपचार किया जाना चाहिए।

xiii. नोकदार, तीर, गोलियों, ज्वलनशील पदार्थ, पटाखों, अम्ल आदि को बच्चों की पहुँच से दूर रखा जाना चाहिए।

xiv. आँख की चोटें प्राय: बच्चों में दृष्टिहीनता का कारण बन जाती है इसलिए बच्चों को चोटों से बचाकर रखना चाहिए।

दृष्टिबाधित बच्चों के लक्षण/विशेषताएँ

अभी तक आपने यह जाना कि दृष्टिबाधिता किसे कहते हैं तथा इसका कारण तथा रोकथाम क्या है। दृष्टिबाधित बच्चों की विशेषताएँ जानने से पहले यह जानना आवश्यक है कि दृष्टिबाधित बच्चों की सामान्य बच्चों से समानता उनके साथ विस्मान्यता से अधिक होती है। यह बच्चे/व्यक्ति सामान्य बच्चे जैसे ही होते हैं वस इनकी दृष्टि क्षमता सामान्य से अलग होती है। वह एक बच्चा या व्यक्ति पहले है। दृष्टिबाधिता उसके साथ की एक स्थिति है।

जैसे सामान्य बच्चों में वैयक्ति विभिन्नता पायी जाती है वैसे ही दृष्टिबाधित बच्चों में भी होती है। दृष्टिबाधिता समूह में भी काफी विभिन्न पायी जाती हैं दृष्टिबाधिता बच्चों अथवा व्यक्तियों के लक्षण अथवा विशेषताएं बहुत सारे कारकों से प्रभावित होती है जैसे दृष्टिबाधिता का प्रकार एवं उसकी गंभीरता, किस उम्र में दृष्टिबाधिता आयी जन्म से या जन्म के बाद किस अवस्था में, अवशिष्ट दृष्टि की मात्रा कितनी है एवं कितनी कुशलता से उसका प्रयोग किया जा रहा है, संसाधनों तथा उपकरणों की उपलब्धता, उनकी परिवार के सदस्यों द्वारा स्वीकृति सामंजस्य, दृष्टिबाधिता के साथ किसी अन्य विकलांगता की मौजूदगी, दृष्टिबाधिता के प्रति सांस्कृतिक तथा सामाजिक अभिवृत्ति/दृष्टिकोण आदि तथा सबसे महत्वपूर्ण उनके लिए उपलब्ध हस्तक्षेपण तकनीकियों की प्रकृति तथा उनका प्रयोग इन सभी कारकों के बावजूद दृष्टिबाधिता समूह में आने वाले बच्चों एवं व्यक्तियों में कुछ सामान्य विशेषताएं/लक्षण पाये जाते हैं जो कि निम्नवत् हैं–

i. **संज्ञानात्मक विकास तथा सम्प्रत्यय सम्बन्धित विशेषताएँ :** सामान्यत: दृष्टिहीन तथा अल्पदृष्टिदोष वाले बच्चे संज्ञानात्मक विकास तथा प्रत्यय

निर्माण में दृष्टिवान बच्चों से पीछे रहते हैं परन्तु पर्याप्त प्रशिक्षण, शीघ्र हस्तक्षेप एवं पर्याप्त वास्तविक अनुभव देकर उनको प्रत्यय निर्माण एवं संज्ञानात्मक विकास में सहायता की जा सकती है। दृष्टिबाधित बच्चे बौद्धिक परीक्षणों में प्रप्तांकों में लगभग दृष्टिवान बच्चों जैसे ही समान वितरण का प्रदर्शन करते हैं। यहाँ यह बात ध्यान देने योग्य है कि सभी दृष्टिबाधित बच्चों में सम्प्रत्यय विकास विलम्ब से नहीं होता है खास कर उन बच्चों में जिसमें दृष्टिक्षय अल्पमात्रा (Mild) में हो या फिर वे बच्चें जिनमें दृष्टिबाधिता से जीवनकाल में पश्चात् में ग्रसित हुए हों दृष्टिबाधिता बच्चों में सम्प्रत्यय विकास में अवशिष्ट दृष्टि बहुत ही सहायक होती है।

ii. **भाषा विकास सम्बन्धित विशेषताएँ :** बच्चे का भाषा विकास जन्म के कुछ माह के बाद ही बच्चे द्वारा बस्तुओं व क्रियाओं के पहचानने तथा खोज की योग्यता तथा अवसर पर निर्भर करती है। यह दृष्टिबाधित बच्चों के लिए कठिन हो जाती है। ये बच्चे स्पर्श या श्रवण पर निर्भर करते हैं जो कि उनके सीखने के अनुभवों को कम करता है। वस्तुओं तथा क्रियाओं के वास्तविक अनुभवों की अनुपलब्धता की वजह से दृष्टिबाधित व्यक्ति बहुत सारे ऐसे शब्दों का प्रयोग करते हैं जिनका वे सही-सही, सार्थक तथा सटीक अर्थ नहीं जानते हैं। शब्दों का सार्थक एवं सटीक अर्थ जाने बिना प्रयोग करना मौखिकता कहलाती है। मौखिकता को कम करने के लिए दृष्टिबाधित बच्चों को प्रारम्भ से ही अनुभवों को मूर्त रूप में किया जाना चाहिए। इन बच्चों में भाषा के साथ-साथ संवेगों के उतार-चढ़ाव, मुख मुद्राओं के प्रदर्शन आदि का अभाव होता है।

iii. **सामाजिक विकास सम्बन्धित विशेषताएँ :** दृष्टिबाधिता के कारण इन बच्चों को मिलने वाले सामाजिक अनुभव तथा प्रायः अन्तः क्रिया में सहभागिता में कमी की वजह से उचित सामाजिक कौशलों को सीखने में कठिनाई महसूस करते हैं जिससे इन्हें अन्तः व्यक्तिगत रिश्तों को बनाने में पेरशानी होती है। सामाजिक व्यवहारों का अनुभव दृष्य अनुकरण पर अधिक निर्भर करती है। बच्चे बहुत सारे सामाजिक व्यवहार व कौशलों के सम्बन्ध में दूसरों को देखकर सीख जाते हैं दृष्टिबाधित बच्चों को सांकेतिक भाषाओं शारीरिक भाषाओं, एवं भावभंगिमाओं को समझने में समस्या आती है जिसे दृष्टिवान बच्चे सामान्य आसानी

से दूसरों का अनुकरण करके सीख जाते हैं। अत: बहुत सारे दृष्टिबाधित बच्चे अपने हम उम्र बच्चों से सामाजिक अपरिपक्वता एवं अकेलापन का प्रदर्शन करते हैं। टटल तथा टटल (Tuttle & Tuttle 1996) ने अपने शोध में पाया कि दृष्टिहीन बच्चों के लिए स्व-सम्मान को प्राप्त करना कठिन होता है क्योंकि विद्यालय के सामाजिक पृष्ठभूमि के अन्तर्गत स्व-जानकारी (Self awareness) प्राय: सामाजिक अकेलापन, कम अपेक्षाएं तथा अति सुरक्षा से प्रभवित होती है।

दृष्टिबाधित बच्चों का सामाजिक विकास उनके हम उम्र बच्चों से ध ीमे होता हे। इनका सामाजिक विकास इनके माता-पिता एवं अन्य लोगों की इनसे अपेक्षाओं से भी गम्भीरता से प्रभावित होती है इनसे की गयी अपेक्षाएं उचित तथा प्राप्त होने योग्य होनी चाहिए। यह बच्चे के स्व-छवि (Self Image) तथा आत्म सम्मान (Self esteem) के साथ ही उसकी स्वयं की सामाजिक योग्यता की ओर सकारात्मक दृष्टि को बढ़ायेगा जोकि बच्चे के सामाजिक कौशलों के कुशलता को समृद्ध करेगा। ऐसे बच्चों की सामाजिक उत्सवों में दृष्टिवान बच्चों जैसी ही सहभागिता सुनिश्चित की जानी चाहिए।

iv. **शैक्षणिक उपलब्धि सम्बन्धित विशेषताएँ :** बहुत से शोधों द्वारा यह पाया गया है कि दृष्टिबाधित बच्चे की बौद्धिक क्षमता दृष्टिवान बच्चों जैसे ही होती है लेकिन दृष्टिदोष वाले बच्चों की शैक्षणिक अथवा विद्यालयी उपलब्धि कम होती है। (Pierangelo & Giuliani 2007) के अनुसार "दृष्टि में क्षतिग्रस्तता, सुधार के साथ भी बच्चे को शैक्षणिक प्रदर्शन को विपरीत तरीके (Adversely) से प्रभावित करती है।" इनकी शैक्षणिक उपलब्धि विशेष कर पढ़ना लिखना एवं भाषा प्रमुख क्षेत्र है जिनमें इन्हें कठिनाई का सामना करना पड़ता है Swensen (1996) ने अपने शोध में पाया कि ये बहुत सी सूचनाएं जैसे पाठ्यभाग (Text) लिखित/लेखा चित्रीय (Graphics) चेहरे की भावभंगिमा तथा सांकेतिक सूचनाओं (Gestural Cuses) को प्राप्त करने, कुशलतापूर्वक प्रयोग करने (Manipulating) तथा प्रदर्शित करने में चुनौती का सामना करते हैं। वैकल्पिक माध्यम (ब्रेल, प्रिन्ट की आकार इनके दृष्टिक्षमता के अनुसार, श्रव्य सामग्रियों का प्रयोग) तथा सहायक तकनीकियों को उपलब्ध करने इनकी शैक्षणिक उपलब्धि सामान्य दृष्टिवाले बच्चों जैसी की जा सकती है।

v. **गामक तथा चलन (Movement) सम्बन्धित विशेषताएँ :** दृष्टिबाधित बच्चे चलिष्णुता, कौशल तथा शामक कौशलों में सामान्य मानक से पीछे रहते हैं इसका कारण दृष्टि उद्दीपनों में कमी दृष्य अनुकरणों द्वारा न सीख पाना तथा वातावरणीय कारकों (जैसे माता-पिता द्वारा अतिसुरक्षा प्राप्त होना, गामक गतिविधियों में अवसरों की कमी समाज का नकारात्मक दृष्टिकोण इत्यादि) का होना। इससे इन्हें गामक समन्वय में समस्या आती है।

इनमें दिशाबोध, स्थान विभेद की क्षमता एवं सूक्ष्म शामक कौशलों का विकास विलम्ब से होता है। इनको यह पता लगाना कठिन होता है कि ये कहाँ है तथा वातावरण के सन्दर्भ में इनकी शारीरिक स्थिति सम्बन्धी जानकारी भी कम होती है।

vi. **दृष्टिक्रियात्मकता सम्बन्धित विशेषताएँ :** अल्पदृष्टि वाले बच्चों के लिए-

a. वस्तुओं को आँख के बहुत नजदीक लाकर देखते हैं।

b. इन्हें अपने शरीर के सापेक्ष वस्तुओं की दूरियों के सम्बन्ध में निर्णय लेने में कठिनाई महसूस होती है।

c. अपने आप को प्रकाश स्त्रोत के पास रखने का प्रयास करते हैं जैसे लैम्प, खिड़की, इत्यादि या कुछ बच्चे प्रकाश से घबराते हैं एवं प्रकाश के प्रति अति संवेदनशील होते हैं।

d. श्यामपट्ट से लिखते समय साथियों की कापी देखकर लिखवाते हैं।

e. दूर की वस्तु को देखने के लिए असामान्य रूप से सिर के आगे-पीछे करते हैं।

vii. **अन्य इन्द्रियों के प्रयोग सम्बन्धित विशेषताएँ :** दृष्टिहीन बच्चे के अतिरिक्त अन्य ज्ञानेन्द्रियों का अधिक उपयोग करते हैं दृष्टिहीन बालक अन्य ज्ञानेन्द्रियों तथा आंख के अतिरिक्त कान, नाक, त्वचा तथा जिह्वा का प्रयोग सामान्य दृष्टिवाले से अधिक सजग होकर करते हैं, क्योंकि वे सूचनाओं तथा वातावरण से सम्पर्क के लिए वे आँख के अतिरिक्त अन्य इन्द्रियों पर निर्भर होते हैं।

दृष्टिबाधित बच्चों की पहचान तथा स्थापन

दृष्टिबाधित बच्चों की पहचान

जन्म से दृष्टिहीनता की स्थिति सामान्यत: एक वर्ष की आयु के अन्दर ही पहचाना जा सकता है। यह माता-पिता एवं अन्य परिवार के सदस्यों के लिए स्वाभाविक होता है क्योंकि इस स्थिति में नवजात शिशु उनकी तरफ देखता नहीं है या हिलती हुई वस्तुओं या अन्य वस्तुएं जो बच्चों को आकर्षित करती हैं उनके लिए वो किसी प्रकार की किसी प्रतिक्रिया का प्रदर्शन नहीं करता। बच्चे में अल्पदृष्टि एवं आंशिक दृष्टि की पहचान से पूर्णत: दृष्टि अभाव से कठिन होता है। प्राय: इन बच्चों की पहचान तब तक नहीं हो पाती जब तक कि ये विद्यालय जाना शुरू नहीं करते। कई बार इन बच्चों की दृष्टि सम्बन्धी समस्या की पहचान जब तक ये कक्षा 3 या कक्षा 4 में नहीं जाते, जब छापा के अक्षर तथा चित्र छोटे हो जाते हैं तब तक नहीं हो पाता।

दृष्टिबाधिता के औपचारिक पहचान के लिए नेत्र विशेषज्ञ (Ophthalmologist) की आवश्यकता होती है जो कि विविध परीक्षणों के द्वारा पहचान करता है। जैसे स्नेलेन चार्ट डेनेवर आई परिक्षण इत्यादि प्रयोग में लाये जाते हैं। जोकि दृष्टितीक्ष्णता का मापन करते हैं। छोटे बच्चों तथा अनपढ़ लोगों के लिए (Snellen Illiterate) का प्रयोग होता है यह लगभग 2 वर्ष की अवस्था से प्रयोग होना प्रारम्भ होता है। (Denver Eye Screen Test) उपकरण तथा अधिक छोटे बच्चों (6 माह तक की उम्र वाले) के नेत्र परीक्षण के लिए उपयोग में लाया जाता है। छोटे बच्चों की नेत्र क्षमता के आंकलन में प्रमुख समस्या यह आती है कि दृष्टिबाधित बच्चों को यह पता नहीं होता कि देखने का तात्पर्य क्या है? दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि वास्तव में वे नहीं जानते कि जो वह देख रहे हैं वे ठीक हैं या नहीं है तथा जो दूसरे सामान्य आँख वाले देख रहे हैं उससे भिन्न है या वैसा ही है। माता-पिता तथा प्रारम्भिक विद्यालयी जीवन के अध्यापक की भूमिका इनके शीघ्र पहचान में अत्यन्त महत्वपूर्ण होती है।

माता-पिता तथा अध्यापक द्वारा अल्पदृष्टि वाले बच्चों या अवशिष्ट दृष्टि वाले बच्चों की पहचान इनके आँखों की बाह्य आकृति, आँखों के प्रयोग के साथ संलग्न शिकायतें एवं उनके देखने सम्बन्धी व्यवहारों के अवलोकन के द्वारा किया जा सकता है। मात्र व्यवहार के आधार पर इनके पहचान सम्बन्धी निर्णय नहीं लिया जा सकता। व्यवहार के साथ आँखों की वाह्य आकृति तथा उनकी दृष्टि सम्बन्धी शिकायतों को भी ध्यान में रखा जाना चाहिए। अवशिष्ट अथवा शेष दृष्टि के साथ विद्यालय जाने वाले बच्चों के पहचान के लिए Jangira, N.K., Ahuja, A., Sharma, I. (1992) ने एक चेकलिस्ट (Chicklist)

NOTES

तैया किया है जो कि निम्नलिखित है–

अवशिष्ट दृष्टि के साथ विद्यालय जाने वाले बच्चों के पहचान के लिए जाँच आख्या (Check List for Identifying School going Children with Remaining Sight)

आँखों की बाह्य आकृति (Appearance of the Eyes)

1. आँखों का सीधा नहीं दिखना विशेषकर जब बच्चा थका हुआ हो हाँ/नहीं
2. आँखों या आँखों की पुतलियों का लाल होना हाँ/नहीं
3. आँखों में पानी आना हाँ/नहीं
4. बार-बार बिलनी/गुहेरियों (Sties) का होना हाँ/नहीं
5. आँखों का स्थिर गति में होना हाँ/नहीं
6. बार-बार आँखों को रगड़ना हाँ/नहीं

आँखों के प्रयोग के साथ जुड़ी शिकायतें (Complaints Associated with the use of Eyes)

1. उल्टी महसूस होना या आने की शिकायत हाँ/नहीं
2. आँखों में जलन या खुजली हाँ/नहीं
3. किसी भी सकय धुंधला दिखाई देना हाँ/नहीं
4. शब्दों या पत्तियों का एक साथ चलना या एक साथ जुड़ना प्रतीत होना। हाँ/नहीं
5. नजदीक के कार्य के बाद आँखों में दर्द होना हाँ/नहीं

दिखाई पड़ने वाला आचरण (Seeing Behaviour)

1. क्या पढ़ते समय बच्चे का शरीर ..... है। हाँ/नहीं
2. क्या बच्चा किताब या मेज के नजदीक सिर रखता है।
   i. (अ) लिखते समय हाँ/नहीं
   ii. (ब) पढ़ते समय

3. क्या बच्चा भौंहें चढ़ाता (Frown) है।

   i. (अ) लिखते समय

   ii. (ब) पढ़ते समय

4. क्या बच्चा अत्यधिक पलकें झपकाता है।

   i. (अ) लिखते समय हाँ/नहीं

   ii. (ब) पढ़ते समय हाँ/नहीं

5. क्या बच्चे का बार-बार मन नहीं लगता (Inattentive) ध्यान हट जाता है।

   i. (अ) लिखते समय हाँ/नहीं

   ii. (ब) पढ़ते समय हाँ/नहीं

6. क्या बच्चा अपने स्थान से भटक जाता है या लाइन खो जाती है।

   i. (अ) लिखते समय हाँ/नहीं

   ii. (ब) पढ़ते समय हाँ/नहीं

7. क्या बच्चा पढ़ने के दौरान आँखों के बजाय सिर या किताब को घुमाना है।

8. क्या बच्चा थक जाता है।

   i. (अ) लिखने के दौरान हाँ/नहीं

   ii. (ब) पढ़ने के दौरान हाँ/नहीं

9. क्या बच्चा पढ़ते समय अपनी ऊँगली का प्रयोग लाइन के ऊपर आँखों के निर्देश के लिए करता है। हाँ/नहीं

10. क्या बच्चा पढ़ते समय एक आँख बंद करता है या ढककर देखता है। हाँ/नहीं

11. क्या बच्चे को पुस्तक में समान वस्तुओं या आकृतियों को पहचानने में समस्या होती है। हाँ/नहीं

12. क्या बच्चे को पुस्तक में पाठ का शीर्षक या मोटी छपाई वाली पंक्तियों को पहचानने में कठिनाई होता है। हाँ/नहीं

13. क्या बच्चा श्यामपट् से सूचनाएँ लेने में असमर्थ है यदि अध्यापक लिखते समय बिना बोले लिखते हैं। हाँ/नहीं

14. क्या बच्चा श्यामपट् को स्पष्टता से देखने के लिए अध्यापक से अपने स्थान परिवर्तन के लिए निवेदन करता है। हाँ/नहीं

15. बच्चे का नाम अध्यापक या सहपाठियों द्वारा बुलाये जाने पर, उस दिशा की ओर देखता है। हाँ/नहीं

16. क्या बच्चा कक्षा में खिड़की के पास बैठने से बचना चाहता है। हाँ/नहीं

17. क्या बच्चे को खेलने के दौरान अपने दोस्तों के स्थान पहचानने में समस्या का सामना करना पड़ता है। हाँ/नहीं

18. क्या बच्चा चमकीले प्रकाश में घूमने में संकोच करता है। हाँ/नहीं

निर्देश : यदि आप बाह्य आकृति तथा आँखों के प्रयोग के साथ जुड़ी हुई शिकायतों तथा चिन्ह लगे हुई ग्यारह व्यवहारों में किसी पाँच को एक साथ 'हाँ' में पाते हैं तो बच्चे को नेत्र विशेषज्ञ द्वारा उसके/उसकी दृष्टि के क्रियात्मक की औपचारिक आँकलन की आवश्यकता है।

(राष्ट्रीय दृष्टिहीनता निवारण समाज द्वारा शंकर (2009) में उद्धृत) (National Society of the Prevention of Blindness) न चक्षुदोष से पीड़ित लोगों की व्यवहारिक पहचान के लिए एक सूची तैयार की है जो निम्नलिखित है-

i. ये बच्चे धुंधलेपन को दूर करने की कोशिश करते हैं और आँखों को बहुत अधिक रगड़ते हैं। इनकी भौंहें चढ़ी रहती हैं।

ii. ऐसे बच्चों को पढ़ाते समय कठिनाई होती है तथा ऐसे कार्य करते समय इन्हें भी कठिनाई की अनुभूमि होती है। इन्हें अच्छी तरह देखने की आवश्यकता होती है।

iii. ऐसे बच्चे एक आँख को ढक लेते हैं या बन्द कर लेते हैं, तथा नजदीक व दूर की वस्तुओं या पदार्थों को देखते समय या तो वे अपने सिर को झुका लेते हैं या आगे की ओर बढ़ा लेते हैं।

iv. ये बच्चे आँखों को मुलमुलाते रहते हैं। ये प्रायः चिल्लाते हैं और चिड़चिडापन भी रखते हैं, जब भी इन्हें कोई ऐसा कार्य भी करना पड़ता है, जिसमें अच्छी तरह देखने की आवश्यकता पड़ती है।

v. ये बच्चे अक्सर छोटी वस्तुओं या पदार्थों से ठोकर खाकर लड़खड़ा जाते हैं।

vi. दृष्टिदोष से पीड़ित बच्चे किताब या छोटे पदार्थों को आँख के बहुत नजदीक लाकर पकड़ते हैं तथा देखने का प्रयास करते हैं।

vii. ऐसे बच्चे खेल–खेलने या उसमें भाग लेने में असमर्थ रहते हैं, जिन्हें कुछ दूर तक देखने की आवश्यकता होती है।

viii. दृष्टिदोष से पीड़ित बच्चे तीव्र प्रकाश से घबराते हैं तथा प्रकाश के प्रति तीव्र संवेदशील रहते हैं।

ix. ऐसे बच्चों की पलकें (Eye-Lides) लाल, उभरी हुई मोटी या फूली हुई होती हैं। इनकी आँखों से अक्सर पानी गिरता रहता है।

x. ऐसे बच्चे–प्राय: यह शिकायत करते रहते हैं कि उन्हें ठीक से देखने में कठिनाई होती है। ये सिर दर्द या चक्कर का भी अनुभव करते हैं। ऐसे बच्चों के नजदीक, जब कोई कार्य करना पड़ता है, तो उन्हें किसी वस्तु के दो चित्र दिखाई देते हैं।

दृष्टिबाधित बच्चों का शैक्षणिक स्थापन

दृष्टिबाधिता की पहचान के पश्चात् उन्हें उनकी क्षमता, स्तर, अभिरूचि तथा सामंजस्य क्षमता के अनुसार उनके लिए उपलब्ध शैक्षिणक व्यवस्था में स्थापन किया जाना चाहिए। वर्तमान मे उनके लिए निम्न प्रकार शैक्षिक व्यवस्था उपलब्ध है।

1. **विशेष विद्यालय :** इन विद्यालयों में सभी विद्यार्थी दृष्टिबाधिता की श्रेणी वाले होते हैं। साधारणतया ये विद्यालय आवासीय होते हैं। सामान्य शिक्षा व्यवस्था से अलग यह एक ऐसी शिक्षा व्यवस्था है, जो विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों की आवश्यकता की पूर्ति कर सकें। विशेष विद्यालयों में किसी एक विशेष वर्ग की आवश्यकतानुरूप संसाधन उपलब्ध होते हैं जिसका उद्देश्य बच्चे की समस्त विशिष्ट शैक्षिक उद्देश्यों की पूर्ति सुनिश्चित करना है। इन विद्यालयों में दृष्टिबाधिता के क्षेत्र में प्रशिक्षित अध्यापक तथा इनके अनुरूप सामग्रियाँ उपलब्ध होती हैं। ये विद्यालय दृष्टिबाधित बच्चों को उनके परिवार, समुदाय तथा समाज से दूर रखकर पूरी तरह से देखभाल, शिक्षित तथा प्रशिक्षित तो करती हैं परन्तु इनका सामाजीकरण समाज के मुख्य धारा से अलग रहकर मात्र

दृष्टिबाधित बच्चों के साथ होता है तथा इनका अपने उम्र के सामान्य बच्चों से मेल-जोल न होने कारण इनका उचित विकास बाधित होता है। जबकि शिक्षा सामाजीकरण की प्रक्रिया है तथा इसका उद्देश्य बच्चे को समाज का अभिन्न अंग बनाना है अतः वर्तमान में विशेष विद्यालयों के प्राचीन शिक्षा के व्यवस्था साथ ही विशेष शिक्षा का अंतिम स्तर माना जाता है। परन्तु भारत के संदर्भ में आज भी ये विद्यालय प्रासंगिक हैं क्योंकि तमाम प्रयासों के बावजूद अभी विशेष शिक्षा के क्षेत्र में अपेक्षित विकास नहीं हो पाया। विशेष कर दृष्टिबाधिता से गंभीर रूप से प्रभावित बच्चों को प्रारम्भिक प्रशिक्षण इन विद्यालयों में दिया जा सकता है तथा ये संसाधित विद्यालय के रूप में भी अपना कार्य कर विशेष शिक्षा को अपने देश और अधिक सुदृढ़ कर सकते हैं।

2. **एकीकृत विद्यालय (Integrated School) :** इस व्यवस्था में दृष्टिबाधित विद्यार्थियों को सामान्य विद्यालय में, सामान्य विद्यार्थियों के साथ शिक्षा का अवसर प्रदान किया जाता है एकीकृत का अर्थ है पृथक लोगों को पुनः इकट्ठा करना। विशेष विद्यालय की सबसे बड़ी कमी है कि ये विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को समाज से अलग करती है एकीकृत विद्यालय ने दूर करने का प्रयास किया जिसमें अलग किये गये विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों उनके हम उम्र के सामान्य लोगों के निकट लाकर पूर्ण किया गया। एकीकृत शिक्षा व्यवस्था के अनेक प्रारूप विकसित किये गये जिसके माध्यम से दृष्टिबाधित बच्चे शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। इस व्यवस्था के अन्तर्गत विशेष शिक्षा के विद्यार्थी के रूप में माना गया और इनका प्रतिदिन कुछ समय या बहुत सारे प्रशिक्षण विशेष शिक्षक की देख-रेख में संसाधन कक्ष में बीतता है व शेष समय सामान्य कक्षाओं में। इस व्यवस्था विशेष विद्यार्थियों को अपने यहां स्वीकार तो करती हैं पर विद्यार्थियों में पायी जाने वाली विविधताओं के अनुरूप विद्यालय के वातावरणीय विशेषताओं का अनुकूलन नहीं करती तथा विद्यालय तथा विद्यालय की गुणवत्ता पर ध्यान दिये बिना विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को विद्यालय में प्रवेश देती है। यदि विशेष विद्यार्थी अपने आप को सामानय शिक्षक तथा विशेष शिक्षक दोनों की सहायता से सामान्य कक्षा में सीखने योग्य हो जाता है, तो सीख सकता है। यह व्यवस्था विद्यार्थी स्वयं को विद्यालय तथा समाज के अनुरूप बनाये तथा ढाले इस बात पर अधिक जोर देती है तथा इस बात पर कम की विद्यालय तथा समाज भी अपने में इन विद्यार्थियों के अनुरूप

अनुकूलन लाये। यह विशेष विद्यार्थियों को स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं और उनके उपचार के परिप्रेक्ष्य में देखती है। विशेश बल विद्यार्थियों की उपस्थिति पर होता है। विद्यालय का वातावरण लचीला नहीं होता जिसके कारण बहुत कम विशेष आवश्यकता वाले बच्चे ऐसी गैर-लचीली व्यवस्था की माँगों की पूर्ति कर पाते हैं।

- **समावेशी विद्यालय (Inclusive Shcool) :** यह एक ऐसी शिक्षा व्यवस्था है जो शारीरिक, बौद्धिक, सामाजिक, सांवेगिक, भाषायी, लिगात्मक या अन्य किसी प्रकार के भेदभाव के बिना सभी बच्चों का स्वागत करती है तथा उनहें समाज की मुख्यधारा में समाहित करने का प्रयास करती है समावेशी शिक्षा में, सभी प्रकार के बच्चे एक सामान्य विद्यालय की सामान्य कक्षा में सम्मिलित होते हैं। विशेष आवश्यकता वाले बच्चे किसी भी स्थानीय विद्यालय में प्रवेश ले सकते हैं यह उस विद्यालय की जिम्मेदारी है कि उन्हें प्रभावी तथा गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध करायें तथा विद्यालय के सभी, घटकों, शैक्षिक ढांचों, प्रणालियों, पाठ्यचर्या तथा पद्धतियों को सभी प्रकार के बच्चों की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु तैयार करती है इस स्वीकृति के साथ की सभी बच्चे सीख सकते हैं। यदि कोई बच्चा नहीं सीख पा रहा है तो कमी उस बच्चे में नहीं, शिक्षा व्यवस्था के किसी न किसी घटक में है। यह व्यवस्था सभी बच्चों को एक साथ सीखने के बावजूद। रायनडक एवं अल्पर (Ryndak and Alper) (1996) के अनुसार, समावेशी शिक्षा में हिस लेने से विकलांग छात्र जीवनपर्यन्त विविध एकीकृत कार्यक्रमों का हिस बने रहेंगे इस बात की सम्भावना बहुत बढ़ जाती है यह वैयक्तिक भिन्नताओं तथा विविध बौद्धिक क्षमताओं के सम्प्रत्यय पर आधारित है। समावेशी शिक्षा विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के प्रभावी अधिगम पर जो देती है। तथा आज के शिक्षकों के सामने समावेशी शिक्षा व्यवस्था में सफलतापूर्वक कार्य करने (अर्थात् सभी विद्यार्थियों की आवश्यकता की पूर्ति चाहे वो सकलांग हो या विकलांग) के लिए तैयार करने की चुनौति खड़ी करती है। झा (Jha) (2002) के अनुसार, "समावेशी शिक्षा विद्यालय को इस बात के लिए सही प्रकार से तैयार करती है ताकि वह निकट के बच्चों की शैक्षिक आवश्यकताओं पर समुचित ध्यान दे सकें। यह स्कूल को समाज के अधिक निकट जाती है।

3. **मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा व्यवस्था :** दृष्टिबाधित या किसी भी विशेष आवश्यकता वाले बच्चे को औपचारिक विद्यालय में शिक्षा न ग्रहण कर पाने के कारणों में (1) विलम्ब से विकलांगता चिन्हित होने कारण विलम्ब से विद्यालयी शिक्षा ग्रहण करना। (2) औपचारिक विद्यालय की पाठ्यक्रम तथा व्यवस्था का लचीला न होना। (3) चिकित्सकीय उपचार या शल्य चिकित्सा के परिणामस्वरूप प्रायः विद्यालय में नियमित रूप से उपस्थित नहीं हो पाना। (4) उपयुक्त वातावरण के अभाव के कारण विद्यालयी परिवेश में सामंजस्य न कर पाना इत्यादि प्रमुख हैं। ऐसी स्थिति में मुक्त एवं दुरस्थ शिक्षा व्यवस्था विशेष विद्यार्थियों के लिए बहुत ही लाभकर है। इस व्यवस्था के अन्तर्गत विद्यार्थी अपने घर रह कर पत्राचार या अन्य सम्प्रेषण साधनों जैसे रेडियो, टी.वी., कम्प्यूटर आदि की मदद से अध्ययन करते हैं। यह एक ऐसी लचीली व्यवस्था है जिसका उद्देश्य आवश्यकतानुसार पाठ्यक्रमों का विकास कर उन्हें उन लोगों तक पहुँचाना है जो किन्हीं कारणों से सामान्य विद्यार्थियों की विशेष शैक्षणिक जरूरतों को ध्यान में रखकर इन विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए पाठ्यक्रमों के आयोजन के साथ विकलांग बच्चों के अभिभावकों या देखभाल करने वाले व्यक्तियों के लिए प्रमाणपत्र कार्यक्रमों का भी आयोजन करता है। विद्यालयी स्तर पर राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय संस्थान (National Institute of Open Schooling) की भूमिका प्रमुख है यह दृष्टिबाधित विद्यार्थियों को ब्रेल में अध्ययन सामग्री उपलब्ध कराता है तथा इन विद्यार्थियों को ऐसे अध्ययन केन्द्रों से जोड़ती है जहाँ इनके लिए समस्त सुविधाएँ उपलब्ध हों।

पहचान और शीघ्र हस्तक्षेप

दृष्टिबाधित बालक की जल्दी ही पहचान अत्यन्त है। किसी भी दृष्टिबाधि त बालक हेतु समुचित कार्यक्रम का निर्धारण तब-तक नहीं किया जा सकता है जब तक दृष्टिबाधिता की पहचान व मूल्यांकन न कर ली जाय। पहचानोपरान्त नैदानिक मूल्यांकन तथा चिकित्सकीय परामर्श हेतु नेत्र विशेषज्ञ के पास भेजना चाहिए। यदि दृष्टि क्षति में चिकित्सकीय सुधार सम्भव नहीं है तो उनके लिए उपयुक्त हस्तक्षेप तैयार करना चाहिए। यदि कार्यकारी दृष्टि शेष है तो विशिष्ट शिक्षक की भूमिका कार्यकारी दृष्टि का मूल्यांकन तथा दृष्टि क्षमता विकास करना भी है।

यदि माता-पिता बच्चे से अरूचि रखते हैं या निराश हैं, तो हस्तक्षेप कर उनमें

उत्साह भरना चाहिए उनको संतुष्ट करना चाहिए कि इस प्रकार की अक्षमता तथा इसके प्रभाव को कम किया जा सकता है। परिवर के दृष्टिकोण में भी परिवर्तन लाने की कोशिश करनी चाहिए।

दृष्टिबाधित बच्चों की देख-रेख एवं प्रशिक्षण

दृष्टिबाधित बच्चों के प्रशिक्षण के विविध घटक

दृष्टिबाधित बच्चों को सामान्य बच्चों को दयि जाने वाले प्रशिक्षण के साथ कुछ अन्य प्रशिक्षण भी दिया जाता है। ये प्रशिक्षण उन्हें समाज में समायोजित करने तथा विद्यालय की सामान्य पाठ्यचर्या तक पहुँच सुनिश्चित करने में सहायक होते हैं। प्रशिक्षण के इन घटकों को 'जमा पाठ्यचर्या' भी कहते हैं। जमा पाठ्यचर्या अतिरक्ति नहीं बल्कि क्षतिपूर्ति करने वाले होते हैं। दृष्टि अभाव के कारण उत्पन्न विशेष आवश्यकताओं की पूर्ति जमा पाठ्यचर्या के माध्यम से होता हे इसके निम्नलिखित घटक हैं-

- ब्रेल
- अनुस्थितिविज्ञान एवं चलिष्णुता
- दैनिक क्रिया-कौशल
- ज्ञानेन्द्रिय/संवेदन प्रशिक्षण
- सामाजिक कौशल
- विशेष उपकरणों का प्रयोग जैसे बेलर अबेकस इत्यादि।

i. **ब्रेल :** दृष्टिबाधित व्यक्ति जिस लिपि का प्रयोग करते हैं उसे ब्रेल लिपि कहते हैं ब्रेल एक स्पर्श से पढ़ी जाने वाली लिपि है जिसे छः बिन्दुओं को अलग-अलग प्रकार से व्यवस्थित कर विश्व की किसी भी भाषा की लिपि का रूपान्तरण किया जा सकता है। इस लिपि के आविष्कारक लुई ब्रेल थे। इस लिपि पर दक्षता हासिल करने के पश्चात् दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के सामान्य कक्षाओं में आसानों से शिक्षा दी जा सकती है। अतः इन्हें इस लिपि में प्रशिक्षण आवश्यक है।

ii. **अनुस्थितिविज्ञान एवं चलिष्णुता :** वातावरण में स्वयं की स्थिति की जानकारी तथा वातावरण के साथ अर्थपूर्ण सम्पर्क स्थापित करने एवं नियंत्रण की योग्यता अनुस्थिति ज्ञान कहलाती हैं एवं वातावरण में एक स्थान से दसरे स्थान स्वतंत्रतापर्वक तथा सफलतापर्वक आवागमन करने

की योग्यता चलिष्णुता कहलाती है। दृष्टिअभाव के कारण वातावरण को समझने, नियंत्रण करने तथा आने-जाने का क्षेत्र कम हो जाता है तथा उसकी यह अक्षमता अन्य कौशलों पर दक्षता को प्रभावित करती है। चलिष्णुता तथा अनुपस्थिति ज्ञान प्रशिक्षण में इसी से सम्बन्धित प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है इसमें दृष्टिवान मार्गदर्शक कौशल, सुरक्षात्मक कौशल, लम्बी छड़ी प्रयोग कौशल, डॉगगाइड कौशल एवं अनुस्थित एवं चलिष्णुता सम्बन्धित आधुनिक इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों के प्रयोग का प्रशिक्षण दिया जाता है। इस प्रकरा के प्रशिक्षण दृष्टिबाधित बच्चों एवं व्यक्तियों के आत्म विश्वास एवं मनोबल को बढ़ाते हैं एवं उनको आस-पास के वातावरण को समझने एवं नियंत्रण के लिए तैयार करता है। अनुपस्थिति ज्ञान एवं चलिष्णुता प्रशिक्षण इस क्षेत्र में प्रशिक्षित व्यावसायिक द्वारा प्रदान किया जाना चाहिए।

iii. **ज्ञानेन्द्रिय/संवेदीय प्रशिक्षण :** दृष्टि क्षति होने से नेत्र जैसी महत्वपूर्ण इन्द्रिय प्रभावित हो जाती हैं, इस स्थिति में शेक्ष इन्द्रियों तथा अवशिष्ट दृष्टि के प्रयोग द्वारा ही वातावरण से सम्पर्क सम्भव है। ज्ञानेन्द्रियों का सही एवं अधिकाधिक प्रयोग सम्बन्धित प्रशिक्षण ज्ञानेन्द्रिय या संवेदीय प्रशिक्षण कहलाता है इस प्रशिक्षण में उसकी शेष इन्द्रियों तथा अवशिष्ट दृष्टि का सर्वाधित तथा सर्वोत्तम प्रयोग करना सिखाया जाता है जिससे की वह आस-पास के वातावरण की उचित जानकारी तथा अनुभव प्राप्त कर सके। दृष्टिहीन बच्चे को ज्ञानेन्द्रिय प्रशिक्षण में- 1. श्रवण, 2. स्पर्स, 3. घ्राण, 4. स्वाद, 5. बची हुई या अवशिष्ट दृष्टि का अधिकतम, उचित एवं सम्यक् उपयोग के कौशल का प्रशिक्षण दिया जाता है।

iv. **दैनिक क्रिया :** कौशल सम्बन्धित प्रशिक्षण दैनिक क्रिया कौशल के अन्तर्गत वे कौशल आते हैं जो विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को रोजमर्रा की जिन्दगी की क्रियाओं को बिना किसी सहायता या न्यूनतम सहायता से करने की योग्यता प्रदान करती है यह बच्चे के समाज में स्वतंत्र एवं बेहतर सामाजिक जीवन व्यतीत करने में सहायता करती है। दृष्टि क्षय दैनिक क्रिया कौशलों को प्रभावित करती है दृष्टिवान बच्चे बहुत सारी इन क्रियाओं को अनुकरण के माध्यम से सीख लेते हैं। परन्तु दृष्टिबाधित बच्चों को इन कौशलों को सुव्यवस्थित ढंग से प्रशिक्षित करने की आवश्यकता होती है इस प्रशिक्षण के खाना खाने कपड़े पहनने, शारीरिक स्वच्छता, खरीदारी करना, व्यक्तिगत वस्तुओं एवं दस्तावेजों को

व्यवस्थित रखना, दैनिक क्रिया, जैसे की पहचान व प्रबन्धन इत्यादि कौशलों का प्रशिक्षण दिया जाता है।

v. **सामाजिक कौशल :** एक दृष्टिवान बच्चा बहुत सारे सामाजिक कौशलों के आसानी से दूसरों का अनुकरण करके सीख जाते हैं जबकि वे दृष्टिबाधित बच्चे इन अवसरों से वंचित रह जाते हैं। अतः इन बच्चों को सामाजिक कौशलों में दक्षता हेतु प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। उचित सामाजिक कौशलों से इनकी अपने उम्र के सामाजिक समूहों में स्वीकृति बढ़ेगी एवं समाज की मुख्य धारा में ये सरलातापूर्वक सम्मिलित हो सकेंगे। इनकी विद्यालय के सभी प्रकार की गतिविधियों तथा सामाजिक उत्सवों में सहभागिता सुनिश्चित की जानी चाहिए, जिससे इनके में सामाजिक कौशलों को स्वाभाविक विकास हो सके।

vi. **विशेष उपकरणों के तथा तकनीकियों प्रयोग में प्रशिक्षण :** उपकरणों तथा तकनीकियों का प्रयोग दृष्टिबाधित बच्चों की कार्य कुशलता को बढ़ाती है। विज्ञान ने विविध प्रकार की तकनीकियों एवं उपकरणों का विकास किया है जो इन बच्चों की विविध प्रकार से सहायता करती है दृष्य माध्यम की सूचना को दृष्टिबाधिता व्यक्ति तक पहुँचाने के लिए उसे श्रव्य या स्पर्श माध्यम में परिवर्तित करना पड़ता है। दृष्टिबाधित व्यक्तियों का दूसरे दृष्टिवान व्यक्तियों पर निर्भरता को कम रकने के लिए तमाम उपकरण तथा तकनीकियों विकसित है इन उपकरणों को मुख्यतः दो भागों में बांट सकते हैं- 1. परम्परागत उपकरण, 2. आधुनिक उपकरण। इन उपकरणों को उपयोग कर अपने जीवन को यथा सम्भव सामान्य बना सकें, इसके लिए इन्हें इनके लिए उपलब्ध विशेष उपकरणों तथा तकनीकियों में प्रशिक्षण की व्यवस्था की जानी चाहिए।

दृष्टिबाधित बच्चों को प्रशिक्षण देते समय ध्यान रखने योग्य बातें–

i. दृष्टिबाधित बच्चों की क्षमता प्रति सोच सकारात्मक होनी चाहिए।

ii. प्रशिक्षण बच्चे की शारीरिक क्षमता तथा उसकी आवश्यकता, पृष्ठभूमि इत्यादि के अनुरूप होनी चाहिए अर्थात बच्चे की वैयक्ति विभिन्नता को ध्यान में रखकर प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।

iii. प्रशिक्षण में आवश्यक सभी विशेषज्ञों को शामिल किया जाना चाहिए।

iv. प्रशिक्षण के पूर्व सभी आवश्यक सामग्रियों तथा उपकरणों को एकत्रित कर लेना चाहिए।

v. प्रशिक्षण के दौरान कौशल को छोटे-छोटे भागों में विभक्त करके सीखना चाहिए।

vi. कार्य को सरल प्रक्रिया से सिखाया जाना चाहिए।

vii. कौशल का बार-बार अभ्यास कराया जाना चाहिए।

viii. प्रशिक्षण देते समय विद्यार्थियों की सुरक्षा को भी ध्यान में रखना चाहिए।

ix. प्रशिक्षण के दौरान तथा उपरान्त सतत मूल्यांकन का प्रावधान होना चाहिए।

x. विद्यार्थियों के सही प्रयास पर पुनर्बलन की भी व्यवस्था होनी चाहिए।

xi. बच्च के लिए प्रशिक्षण सुखद, सहज व स्वाभाविक होनी चाहिए जो कि निरन्तरता एवं पूर्णता पर आधारित हो इससे अधिगम सरल व स्वाभाविक होगा।

दृष्टिबाधित बच्चों के देख-रेख एवं प्रशिक्षण में माता-पिता की भूमिका

किसी भी बच्चे के जीवन में सामान्य बच्चे जैसे ही होती है। दृष्टिबाधित बच्चे के देख-रेख एवं प्रशिक्षण में उसका परिवार विशेषकर माता-पिता सबसे स्थायी तथा प्रभावी निकाय है दृष्टिबाधित बच्चे के देख-रेख व प्रशिक्षण में उनकी भूमिका निम्नलिखित है-

1. माता-पिता द्वारा सबसे अपेक्षित एवं महत्वपूर्ण व्यवहार उनके द्वारा बच्चे की स्वीकार करना है। उनके द्वारा दृष्टिबाधित बच्चे का स्वीकार किया जाना संसार में समानता के अवसर प्राप्त करने का पहला कदम है। कोई भी अधिनियम प्रावधान तथा योजना इनका पुनर्वास नहीं कर सकती यदि विशेष आवश्यकता वाले व्यक्ति को अपने घर में समान अवसर नहीं प्राप्त हो। अत: माता-पिता द्वारा बच्चे का स्वीकार किया जाना तथा बच्चे एवं स्वयं के मन: स्थिति को सकारात्मकता प्रदान करना उनका प्रथम तथा सबसे महत्वपूर्ण कार्य है।

2. घर के वातावरण को दृष्टिबाधित बच्चे के अनुकूल अर्थात् बाध ारहित बनाना जिससे कि चलिष्णुता का अवसर उन्हें अपने घर से ही मिलना प्रारम्भ हो जाए।

3. इन बच्चों के अनुरूप खिलौनों तथा उपकरणों को इनके लिए उपलब्ध कराना। परिवार के सदस्य दैनिक क्रिया कौशल में प्रशिक्षण देने के लिए सर्वश्रेष्ठ शिक्षक हैं।

4. माता-पिता की बच्चे के शिक्षण-प्रशिक्षण में विद्यालय तथा अध्यापकों का सहयोग करना चाहिए।

5. माता-पिता को दृष्टिबाधित तथा दृष्टवान दोनों बच्चों के साथ एक समान व्यवहार करना चाहिए। दृष्टिबाधित बच्चों को अतिसंरक्षण न दें यह बच्चों को आत्मनिर्भर बनने में कठिनाई उत्पन्न करेगा तथा उसके दृष्टवान भाई-बहन भी उसे असहाय व अनुपयोगी मानने लगेंगे।

6. दृष्बिाधित बच्चे को प्रारम्भ से ही वास्तविक अनुभव देने का प्रयास करें तथा उन्हें सार्वजनिक स्थानों जैसे संग्रहालय, डाकघर, उद्यान, दुकान इत्यादि ले जाना चाहिए इससे उनमें सही प्रत्यय के साथ भाषा के विकास में भी सहायता मिलेगी।

7. दृष्टिबाधित बच्चों को सरकार द्वारा प्रदत्त सभी रियायतों, प्रावधानों तथा अधिकारों की जानकारी रखें, उनके प्रति सजग रहें परन्तु सारी जिम्मेदारी सरकार की है तथा सब कुछ निःशुल्क हो इसकी अपेक्षा न करें।

8. बच्चे के अन्दर सकारात्मक आत्मप्रत्यय और सामाजिक प्रत्यय कर-कर उसे स्वयं वो जैसे हैं वैसा स्वीकार करने के लिए उत्साहित करें।

9. बच्चे से माता-पिता की अपेक्षाएं एवं उम्मीदें वास्तविक होनी चाहिए। ना ही उनकी क्षमता से अधिक की अपेक्षा रखें ना तो कम की।

10. वर्तमान में दृष्टिबाधित बच्चों की देखरेख एवं प्रशिक्षण हेतु बहुत सारे केन्द्रों तथा विश्वविद्यालयों द्वारा अभिभावकों तथा देख-रेख करने वालों के लिए प्रशिक्षण पाठ्यक्रम कार्यक्रम का आयोजन होता

NOTES

है। इस प्रकार के पूरे पाठ्यक्रमों को करने के पश्चात् अधिक दक्षता तथा व्यवस्थित ढंग से उनकी देख-रेख की जा सकती है।

11. अभिभावक-शिक्षक संघ में सक्रिय सहयोग प्रदान करना चाहिए।

12. दृष्टिबाधित बच्चों के देख-रेख एवं प्रशिक्षण में समावेशी विद्यालय की भूमिका।

वर्तमान में समावेशी विद्यालय को सभी को गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा प्रदान करने में सक्षम व्यवस्था के रूप में देख जा रहा है शिक्षा से वंचित वर्ग को भी शिक्षा व्यवस्था में शामिल करने का एक मात्र उपाय समावेशी शिक्षा है। इस व्यवस्था को विद्यालय स्तर पर सफल बनाने में विद्यालय की प्रमुख भूमिका है। दृष्टिबाधित के प्रति व्याप नकारात्मक अभिवृत्तियों के कारण प्रधानाचार्य को इन विद्यार्थियों को विद्यालयों में प्रवेश देने से मना नहीं करना चाहिए। इनकी क्षमताओं से परिचित होकर या आंकलन कर इन बच्चों की विशेष आवश्यकताओं के आधार पर विद्यालय में अनुकूलन कर परिवर्तन लाते हुए शैक्षिक अवसर उपलब्ध कराना चाहिए। विद्यालय प्रशासन का सहयोग इनके अधिगम को सुचारू बनाएगा। समावेशित शिक्षा को विद्यालय में लागू करने हेतु निम्न बिन्दुओं को ध्यान में रखना चाहिए।

i. **विद्यालयी परिवेश में अनूकूलन :** परिवेश में इन विद्यार्थियों के अनुरूप अनुकूलन में भौतिक मनोसामाजिक के साथ सांगवेगिम परिवेश के अनुकूलन को भी उचित स्थान मिलना चाहिए जिसका विवरण निम्नवत्।

भौतिक परिवेश का अनुकूलन–

- वातावरण में एक स्थान से दूसरे स्थान को जोड़ने के लिए रस्सी या रेलिंग का प्रयोग करें जिससे की इनके आवागमन को आसान किया जा सके, तथा शारीरिक शिक्षा या सृजनात्मक गतिविधियों हेतु अन्य वातावरणीय अनुकूलन जैसे खेल के मैदान की भी व्यवस्था की जानी चाहिए। अल्पदृष्टि वाले बच्चों की सुविधा के लिए सीढ़ियों तथा रेलिंग के आरम्भ व अन्त में रेग विभेद किया जा सकता है।
- कक्षा-कक्ष तथा विद्यालय के अन्य स्थानों पर सूचनाओं को ब्रेल में या बोलते हुए उपकरणों द्वारा प्रदान किया जाना चाहिए।

- विद्यालय परिसर में स्थान भेद के लिए विविध प्रकार के फर्श/टाइल्स का प्रयोग किया जाना चाहिए।
- विद्यालय का वातावरण बाधा रहित तथा सम्भावित दुर्घटनाओं की रोकथाम के लिए निरन्तर सचेत रहना चाहिए।

मनो सामाजिक एवं सांवेगिक परिवेश का अनुकूलन–

- सभी योजनाओं में दृष्टिबाधित बच्चों को शामिल किया जाना चाहिए।
- जहाँ तक सम्भव हो दृष्टिबाधित बच्चों को स्वतन्त्रतापूर्वक कार्य करने के लिए उत्साहित किया जाना चाहिए।
- बच्चों को उनकी क्षमता को पहचानने में सहायता की जानी चाहिए तथा सकारात्मक पक्ष के साथ ही सीमाओं को भी स्वीकार करना सीखाया जाना चाहिए।
- बच्चे तनाव मुक्त रहें इसके लिए विविध क्रियाओं जैसे व्यायाम, योग, ध्यान, संगीत इत्यादि की पूरी व्यवस्था होनी चाहिए।
- सर्वप्रथम दृष्टिबाधित बच्चे को एक सामान्य विद्यार्थी के रूप में स्वीकार करें जिसमें क्षमताएं तथा अक्षमताएं दोनों हैं। सामान्य विद्यार्थियों के लिए उन बच्चों को स्वीकार कने में प्रतिमान होगा।
- विद्यार्थी में उनकी अभिरूचियों को पहचाने तथा उसे विकसित करने में सहायता की जानी चाहिए।
- विद्यार्थी के प्रयासों के लिए उककी सराहना की जानी चाहिए।
- स्वस्थ स्व–प्रत्यय विकास में विद्यार्थी की सहायता की जानी चाहिए।
- सामाजिक कौशलों के विकास की उचित व्यवस्था की जानी चाहिए।
- विद्यार्थियों को स्वतन्त्र शिक्षार्थी बनने के लिए उत्साहित किया जाना चाहिए।
- दृष्टिबाधित विद्यार्थियों का परिचय किसी अन्य विद्यार्थी जैसे ही कराएं?
- भी विद्यार्थियों के लिए एक जैसी अनुशासन व्यवस्था होनी चाहिए।
- दृष्टिक्षम से सम्बन्धित विषयों पर दृष्टिबाधित विद्यार्थियों एवं सामान्य विद्यार्थियों के बीच चर्चा करने तथा सीखने की आज्ञा दी जानी चाहिए।

ii. दृष्टिबाधित बच्चों हेतु कक्षा व्यवस्थापन अनुकूलन : कुछ कक्षा Accommodations दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के लिए कार्यक्रमों की गुणवत्ता को बढ़ाया जाना चाहिए। जैसे–

- कक्षा की भौतिक (Layout) तथा दूसरी Distinguishing Features इन विद्यार्थियों को समावेशित शैक्षिक अवसर प्रदान करने हेतु आवश्यक है।
- कक्षा में उनके बैठने का स्थान ऐसी जगह हो जहाँ से वह अपनी अवशिष्ट दृष्टि तथा श्रचण क्षमता का पूरा प्रयोग कर सके प्रायः इन्हें कक्षा केन्द्र में आगे की सीट के बैठाना इनके लिए लाभकारी होता है।
- पर्याप्त प्रकाश की उपलब्धता को सुनिश्चित किया जाना चाहिए।
- भली–भांति सुनने में विक्षोभों को कम करने का प्रयास किया जाना चाहिए।
- कुर्सी मेजों (Furniture) उपकरणों तथा अनुदेशनात्मक सामग्रियों के निर्धारित रखने का स्थान सुनिश्चित करने सभी खतरनाक तथा चोट पहुँचाने वाली वस्तुओं को बच्चों के सम्पर्क से दूर रखना चाहिए।
- अपरिचित मेजों, कुर्सियों तथा दूसरे फर्नीचर के इस्तेमाल करते समय सहायता की जानी चाहिए।
- कक्षा में दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के लिए अतिरिक्त स्थान की व्यवस्था करें जिससे उनके द्वारा प्रयोगित उपकरणों जैसे– ब्रेलर, कम्प्यूटर, टेप रिकार्डर, बड़े छापे के अक्षर की पुस्तकें इत्यादि रखी जानी चाहिए।
- विद्यार्थियों को इन्हें ऐसे स्थान पर बैठाये जिससे प्रकाश का स्रोत सीधे इनकी आँखों पर ना पड़े या परावर्तित प्रकाश की चमक से उन्हें कोई असुविधा ना हो।
- कक्षा–कक्ष का रंग सफेद अथवा बहुत हल्के रंग का होना चाहिए। अलमारी दरवाजे या खिडकियों इत्यादि से प्रकाश टकराकर चमक उत्पन्न न करे इसके लिए इन पर रंगीन कागज लगाया जाना चाहिए।

NOTES

iii. अनुदेशात्मक तथा पाठ्यचर्यात्मक अनुकूलन :

- विद्यार्थियों के प्रति सकारात्मक रवैया रखना चाहिए।
- विद्यार्थियों को उनके पास से बुलाया जाना चाहिए।
- श्यामपट्ट पर जो भी लिखते हैं शिक्षक को उसे पढ़कर बताना चाहिए।
- पाठ्यचर्या तथा शिक्षण विधियों में अपेक्षित अनुकूलन करना चाहिए।
- नियमित अन्तराल पर विश्राम (Breaks) लें दृष्टिबाधित बच्चे चूंकि नोट लेने में या अवशिष्ट दृष्टि के प्रयोग में अधिक थकते हैं।
- वर्णात्मक मौखिक अनुदेशनों का प्रयोग किया जाना चाहिए।
- मूल्यांकन प्रक्रिया का उचित अनुकूलन होना चाहिए। प्रश्नों के उत्र देने हेतु बहु-विधि व्यवस्था, जैसे टेपरिकार्डर, टाइपराटर, ब्रेलर/बेलस्लेट, श्रुतिलेखक इत्यादि विकल्पों की व्यवस्था होनी चाहिए, जिससे दृष्टिबाधित विद्यार्थी अपने लिए उपयुक्त तरीके का चुनावकर सकें। नियमानुसार अतिरिक्त समय प्रदान किया जाना चाहिए। अल्पदृष्टि वाले विद्यार्थियों के लिए मोटे/बड़े छापे के अक्षरों वाले प्रश्नपत्र की व्यवस्था होनी चाहिए।
- व्याख्यात्मक शब्द जैसे आगे, पीछे, सीधे इत्यादि का प्रयोग इन बच्चों के शरीर के परिप्रेक्ष्य में होना चाहिए।
- अधिगम कराते समय विभिन्न अनुदेशों को मौखिक तथा स्पर्शीय माध्यम में परिवर्तित करना चाहिए एवं दृष्टि की अवशेष मात्रा को भी दृष्टिगत रखना चाहिए।
- दृष्टिवान बच्चों को उत्साहित किया जाना चाहिए कि वे बच्चों की विभिन्न क्रियाकलापों में सहायता करें।
- अधिगम कराते समय शुरूआत सरल से करें और धीरे-धीरे जटिलता की ओर जाना चाहिए।
- दृष्टिबाधित बच्चे के लिए अनुकूलित शारीरिक शिक्षा व खेल प्रशिक्षण की व्यवस्था अवश्य होनी चाहिए।
- स्पर्शीय अधिगम के लिए विविध असवसरों का सृजन किया जाना चाहिए।

- देखों (See, Look and Watch) जैसे शबदें का प्रयोग स्वाभाविक रूप से किया जा सकता है।
- कक्षा में प्रवेश करते तथा छोड़ते समय या दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के पास जाते समय हमेशा सूचित करना/बताना चाहिए।
- कक्षा में होने वाली सभी गतिविधियों में बच्चों को शामिल करना चाहिए।
- शिक्षण में वैयक्तिकरण, स्थूलता एवं अनुभवों की एकरूपता के सिद्धान्तों का प्रयोग किया जाना चाहिए।

परीक्षापयोगी प्रश्न

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. दृष्टिबाधित विद्यार्थियों की पहचान कैसे करेंगे। सविस्तार चर्चा करें।
2. दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के स्थापन हेतु शैक्षिक विकल्पों का विवरण दें।
3. "विविध विशेष घटकों में प्रशिक्षण देकर दृष्टिबाधित व्यक्तियों का जीवन सामान्य बनाया जा सकता है।" को सिद्ध करें।
4. दृष्टिबाधित विद्यार्थियों की शिक्षा एवं प्रशिक्षण में माता-पिता तथा विद्यालय की भूमिका का वर्णन करें।
5. दृष्टिबाधिता से क्या तात्पर्य है? यह कितने प्रकार की होती है? सविस्तार वर्णन कीजिए।
6. दृष्टिबाधित के क्या कारण हैं? इसकी रोकथाम एवं देखभाल पर प्रकाश डालिए।
7. दृष्टिबाधित बच्चों के लक्षणों का उल्लेख कीजिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. दृष्टिबाधित के वर्गीकरण तथा परिभाषा को समझाइए।
2. विधिक परिभाषा से आप क्या समझते हैं?
3. शामक तथा चलन सम्बन्धित विशेषताएँ लिखिए।
4. एकीकृत विद्यालय से आप क्या समझते हैं?

4 दृष्टिबाधितों के शैक्षिक निहितार्थ

NOTES

अध्याय में सम्मिलित विषय-सामग्री :

- उद्देश्य
- प्राक्कथन
- अंधेपन के प्रभाव: प्राथमिक तथा माध्यमिक स्तर पर
- चुनिदां शैक्षिक व्यवसाय
- शिक्षण सिद्धान्त
- विस्तारित कोर पाठ्यक्रम : अवधारणा तथा क्षेत्र
- दृष्टिबाधितों के लिए सामान्य तौर पर उपयोग किये जाने वाले कम लागत तथा उन्नत सहायक उपकरण।
- परीक्षापयोगी प्रश्न

उद्देश्य–

इस अध्याय अध्ययन के पश्चात् आप निम्न तथ्यों को समझ सकेंगे-

- अंधेपन के प्रभाव: प्राथमिक तथा माध्यमिक स्तर पर
- चुनिदां शैक्षिक व्यवसाय
- शिक्षण सिद्धान्त
- विस्तारित कोर पाठ्यक्रम : अवधारणा तथा क्षेत्र
- दृष्टिबाधितों के लिए सामान्य तौर पर उपयोग किये जाने वाले कम
  लागत तथा उन्नत सहायक उपकरण।

NOTES

प्राक्कथन

न्यूरो-विकास संबंधी विकारों के क्षेत्र में ग्राउंड ब्रेकिंग प्रगति ने हमें अंधापन और दृश्य विकार (छठी) में कहीं अधिक अंतर्दृष्टि की अनुमति प्रदान की है। संज्ञानात्मक तंत्रिका विज्ञान का क्षेत्र अब है। साहित्य में दृढ़ता से स्थापित, संज्ञानात्मक मनोविज्ञान द्वारा ज्ञान, मस्तिष्क क्षति और तंत्रिका विज्ञान से संबंधित नैदानिक अध्ययन समझने में महत्वपूर्ण प्रगति के मार्ग को खोलने के लिए। हाल के वर्षों में वयस्क अध्ययनों से प्रेरित आशावाद ने विकास अध्ययन और विशेष रूप से विकासात्मक तंत्रिका विज्ञान (जॉनसन, 2005: टेगर-फ्लुसबर्ग, 1999) हेतु प्रोत्साहन प्रदान करने में एक बड़ा हिस्सा निभाया है। यह इस विकासात्मक तंत्रिका विज्ञान परिप्रेक्ष्य से है कि हम अंधापन और दृश्य विकार से संबंधित संज्ञानात्मक और व्यवहारिक अभिव्यक्तियों को समझना शुरू कर सकते हैं; हालांकि प्रावधान के साथ कि आम तौर पर विकासशील बच्चों की अपेक्षा VI के साथ बच्चे विशेष रूप से विषम विकास पैटर्न प्रस्तुत करते हैं (Fraiberg, 1971) अंधापन और दृश्य विकार के प्रभावों पर विचार करने में यह अध्याय सामाजिक समझ, भाषा, ज्ञान और मोटर विकास पर केंद्रित होगा। जबकि यह महामारी विज्ञान के कार्यात्मक और संरचनात्मक संगठन पर महामारी विज्ञान और अंधापन के प्रभाव के साथ संक्षिप्त परिचय के साथ शुरू होता है, जिसे उम्मीद है कि एक उपयोगी संदर्भ प्रदान किया जाएगा जिसके अन्तर्गत बच्चों को विकसित नहीं किया जा सकता है।

आज दुनिया में अंधे लोगों की संख्या 45 मिलियन है, भले ही 75% तक अंधापन उपचार या रोकथाम से बचा जा सके। 1990 से 2020 तक टिकाऊ अंधापन वाले लोगों की संख्या दोगुनी हो जाएगी जब तक कि तीव्र और प्रभावी हस्तक्षेप न हो, और आंध्र की कुल संख्या 2020 तक 76 मिलियन होने का अनुमान है। इस परिदृश्य को रोकने के लिए, विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) और आईएपीबी इंटरनेशनल

अंधेरे की रोकथाम एजेंसी (आईएपीबी) द्वारा संयुक्त रूप से विजन 2020 की शुरूआत की है, एक परियोजना जिसका लक्ष्य वर्ष 2020 तक टिकाऊ अंधापन के मुख्य कारणों को खत्म करना है, जिसमें दुनिया के अंतिम दीर्घकालिक लक्ष्य के साथ सभी टालने योग्य अंधापन समाप्त हो गया है और जो अपरिहार्य दृष्टि हानि वाले सभी को अपनी पूर्ण क्षमता तक पहुंच जाता है।

विजन 2020 की सर्वोच्च प्राथमिकता बचपन की अंधापन की रोकथाम है। वर्तमान में 15 वर्ष से कम उम्र के 1.4 मिलियन बच्चे अंधे हैं। प्रत्येक वर्ष 500,000 बच्चे अंधे हो जाते हैं, उनमें से 75% विकासशील देशों में चौकाने वाला, इनमें से 60% तक उनकी दृष्टि खोने के एक वर्ष के भीतर मर जाते हैं। शेष लोगों के पास संघर्ष करने के लिए केवल अंधापन का जीवनकाल नहीं होगा बल्कि उनके भावनात्मक, सामाजिक और मनोविज्ञान विकास के संदर्भ में भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। बच्चों में अंधापन कठिन है, समुदाय, शैक्षिक और चिकित्सा सेवाओं से बहु अनुशासनात्मक सहयोग की आवश्यकता है। दृष्टि बहाली और अंधापन रोकथाम कार्यक्रम स्वास्थ्य देखभाल में अत्यधिक लागत प्रभावी हस्तक्षेपों में से हैं और बचपन में अंधापन के कुछ कारणों में से 40% रोकथाम या इलाज योग्य है।

बाल चिकित्सा अंधापन की महामारी विज्ञान स्पष्ट रूप से सामाजिक-आर्थिक विकास को दर्शाती है। समृद्ध समाजों में 3/10ए000 से लेकर कम से कम समृद्ध में 15/10,000 तक का प्रसार होता है। विकासशील देश में बचपन में अंधापन का मुख्य कारण खसरा, विटामिन ए की कमी और पारंपरिक आंखों की दवाओं के उपयोग के कारण कॉर्नियल ओपेसिफिकेशन है, जबकि संयुक्त राज्य अमेरिका में मुख्य कारण कॉर्टिकल दृश्य विकार, प्रीटेरियलिटी के रेटिनोपैथी और ऑप्टिक तंत्रिका हाइपोप्लासिया हैं। वृद्धावस्था में स्पेक्ट्रम के दूसरे छोर पर आमतौर पर आँख की समस्याओं के कारणों मोतियाबिंद, ग्लूकोमा, सामान्य बीमारियों और मधुमेह हैं।

जन्मजात विकृति के निश्चित रूप के कारण देर से अंधापन के अलग-अलग परिणाम होते हैं और चिकित्सकों के लिए पेरिफेरल विकारों (डेल एण्ड सोनक्सन, 2002) से सेरेब्रल को अलग करना महत्वपूर्ण है। दृश्य प्रणाली के सेरेब्रल जन्मजात विकार अधिक सामान्य हैं और सीखने की कठिनाइयों और सेरेब्रल पाल्सी सहित अतिरिक्त विकलांगताओं से जुड़े हुए हैं। परिधीय दृश्य प्रणाली (सीडीपीवीएस) के जन्मजात विकारों को आगे दो समूहों में विभाजित किया जा सकता है। पहले समूह को 'संभावित रूप से जटिल' सीडीपीवीएस के रूप में जाना जाता है, जिसमें उन बच्चों को सम्मिलित किया जाता है जिनमें परिधीय आंख विकार केंद्रीय तंत्रिका तंत्र को अंतर्निहित क्षति सहित निदान बाल रोग विकार का एक हिस्सा है। 'संभावित रूप से जटिल' सीडीपीवीएस के परिणाम डाउन सिंड्रोम में मोतियाबिंद हैं और पेरोक्साइसोमल विकारों में रेटिना डिस्ट्रॉफी (यानी, जन्मजात बीमारियों का एक समूह शरीर

की कोशिकाओं में सामान्य पेरोक्साइज्म की अनुपस्थिति की विशेषता है, जैसे जौबर्ट सिंड्रोम)। दूसरे समूह को 'संभावित रूप से जटिल' सीडीपीवीएस के रूप में जाना जाता है और इसमें उन बच्चों को सम्मिलित किया जाता है जिनमें दृश्य विकार निदान में केंद्रीय तंत्रिका तंत्र की कोई ज्ञात साझेदारी नहीं है। 'संभावित रूप से जटिल' सीडीपीवीएस में अतिरिक्त विकलांगताओं की घटनाएं 'संभावित रूप से जटिल' की अपेक्षा में अधिक हैं, जहाँ वैश्विक शिक्षा कठिनाइयों की केवल 17% रिपोर्ट की गई है (सोनक्सन एंड डेल, 2002), जो सामान्य छठी आबादी के लिए अपेक्षाकृत कम है। सीखने की समस्याओं और मोटर के कम अपेक्षित उलझन चर के कारण हानि, 'संभावित रूप से जटिल' सीडीपीवीएस समूह एक लक्षित आबादी है जो विशेष रूप से दृष्टि-हानि की मनोवैज्ञानिक जांच के लिए उपयोगी है। 'संभावित रूप से जटिल' सीडीपीवीएस वर्गीकरण के अन्तर्गत गिरने वाले उदाहरण निदान हैं :

ग्लूकोमा, माइक्रोपथल्मिया,

अनिरिडिया, कोलोबोमा, पर्सिस्टेंट हाइपरप्लास्टिक प्राथमिक विट्रीस, पारिवारिक एक्स्यूडेटिव, विट्रेरेटीनोपैथी (नॉरी सिंड्रोम), मोतियाबिंद, लेबर का जन्मजात अमोरोसिस, कॉन डिस्ट्रॉफी, ऑप्टिक तंत्रिका एप्लासिया और ऑप्टिक तंत्रिका हाइपोप्लासिया।

अंधपन के प्रभाव : प्राथमिक तथा माध्यमिक स्तर पर

1.2 न्यूमेरोलॉजिकल असामान्यताएं

इमेजिंग

विजन एक शक्तिशाली संवेदी पद्धति है जो अन्य इंद्रियों द्वारा प्रदान की गई जानकारी को एकीकृत समन्वित करती है, जिससे बाहरी दुनिया की सुविधाओं को एक एकीकृत अनुभव (रॉक, 1985) के रूप में समेकित किया जा सकता है। जन्मजात अंधापन ने दार्शनिकों और वैज्ञानिकों को समान रूप से इस बात का अनुमान लगाने का मौका दिया है कि मनुष्यों ने बिना किसी दृष्टि के जवाब दिया। विकास की संवादात्मक प्रकृति द्वारा पता चलता है कि यह पूछना आसान नहीं है कि दृष्टि वाला कोई व्यक्ति किसी ऐसे व्यक्ति से अलग होता है जो जन्म के समय, जल्दी या बाद में बचपन में अंधेरा हो जाता है। फिर भी हम कह सकते हैं।

पूछें : मस्तिष्क के उन क्षेत्रों को कैसे सामान्य रूप से दृष्टि से जोड़ा जाता है यदि दृष्टि स्वयं खो जाती है? न्यूरोइमेगरी में तकनीकी प्रगति के आधार पर हालिया शोध ने समझने के एक नए युग के रास्ते को खोला है और अब, घाव, संरचनात्मक और कार्यात्मक इमेजिंग द्वारा, हम पाते हैं कि दृष्टि से वंचित होने के जवाब में तंत्रिका मार्ग आश्चर्यजनक रूप से 'प्लास्टिक' हैं। तंत्रिका सर्किटरी अत्यधिक अनुकूलनीय है और यदि अनुभव बदलता है, जैसे दृष्टि-हानि के साथ मस्तिष्क अन्य संवेदी चैनलों के साथ अन्य अनुभवों का जवाब देता है। उन लोगों के लिए दृश्य इनपुट से वंचित अनुकूली क्षतिपूर्ति कॉर्टिकल पुनर्गठन का सबूत है। कार्यात्मक चुंबकीय अनुनाद इमेजिंग (एफएमआरआई) और इलेक्ट्रो-एनसेफोग्राफी (ईईजी) तकनीकों ने दिखाया है कि, प्रारंभिक अंधापन वाले लोगों के लिए, क्रॉस-मॉडल संवेदी पुनर्गठन ऐसा होता है कि सामरिक संवेदी इनपुट और सामरिक इमेजरी सक्रिय रूप से दृश्य प्रसंस्करण से संबंधित कॉर्टिकल क्षेत्रों को सक्रिय करती है। उदाहरण के लिए प्राथमिक अवधि के दौरान और श्रवण और स्पर्श के समय प्राथमिक और माध्यमिक दृश्य प्रांतों दोनों में ओसीपिटल सेरेब्रल रक्त प्रवाह और चयापचय दृष्टि से नियंत्रण (सदाटो, पास्कुअल-लियोन, ग्राफमैन, एट अल। 1996) की अपेक्षा में जन्मजात अंधापन वाले प्रतिभागियों में भेदभाव कार्यों में वृद्धि हुई है। इसके अलावा, स्पर्श इमेजरी कार्यों (दोनों संवेदी और संज्ञानात्मक घटकों को शामिल करते हुए) दृश्य कॉर्टेक्स और पैरिटल एसोसिएशन कॉर्टेक्स (उहल, क्रेत्शेमर, लिंडिंगर, एट अल। 1994) दोनों भर्ती करते हैं।

इसके अलावा, विभिन्न श्रचण कार्यों का प्रयोग करके अध्ययनों ने अंधे लोगों (उदा. रोडर, रोस्लर और नेविल, 2000) के उन लोगों के महासागर मस्तिष्क क्षेत्रों में उच्च सक्रियण स्तर की सूचना दी है। शोध से यह पता चलता है कि कुछ श्रवण कार्यों में जो लोग अंधे हैं वे उन लोगों से बेहतर प्रदर्शन करते हैं जो देखे जाते हैं। जैसे उनके पास बेहतर श्रवण स्थानीयकरण है (परिधीय श्रवण स्थान और श्रवण भेदभाव में ध्वनि में भाग लेना (अक्सर मानक के बीच एक दुर्लभ लक्ष्य स्वर का पता लगाना।

दृष्टि नियंत्रण से टन क्षमताओं। ब्रेल पढ़ने के संबंध में शोध का एक लंबा इतिहास इसीलिए हमेशा सुसंगत नहीं रहे हैं। दृश्य विकार वाले व्यक्तियों द्वारा पढ़ा जाने वाला ब्रेल पढ़ने से अवरक्त पैरिटल लोबुल, बेहतर ओसीपिटल गेरी, प्राथमिक दृश्य प्रांतस्था, फ्यूसिफॉर्म गेरी, वेंट्रल प्रीमोटर क्षेत्र, बेहतर

पेरिएटल लॉबुल, सेरिबैलम और प्राथमिक सेंसरोरोटोर क्षेत्र (द्विपक्षीय रूप से सक्रिय होता है)

साथ ही सही पृष्ठीय प्रीपोटर प्रांतस्था, दाएं मध्य ओसीपिटल जीरस और दाएं प्रीफ्रंटल क्षेत्र के रूप में। इस प्रकार के प्रतिभागियों में स्पर्श करने वाले लेकिन गैर-ब्रेल भेदभाव कार्यों के दौरान, वेंट्रल ओसीपिटल क्षेत्रों, प्राथमिक दृश्य प्रांतस्था एवं फ्यूसिफॉर्म ग्यारी सहित द्विपक्षीय क्षेत्रों को सक्रिय किया गया था जबकि द्वितीय सोमैटोसेंसरी क्षेत्र निष्क्रिय किया गया था। रिवर्स पैटर्न दृष्टि वाले विषयों में पाया गया था जहाँ द्वितीयक सोमैटोसेंसरी क्षेत्र सक्रिय किया गया था जबकि वेंट्रल ओसीपिटल क्षेत्रों को दबा दिया गया था। इस प्रकार, स्पर्श प्रक्रिया प्रसंस्करण मार्ग आमतौर पर माध्यमिक में सम्मिलित होते हैं।

somatosensory क्षेत्र अंधेरी विषयों में मूल रूप से दृश्य आकार भेदभाव (सदाटो, पास्कुअल-लियोन, ग्रैफमैन एट अल। 1996) के लिए आरक्षित वेंट्रल ओसीपिटल कॉर्टिकल क्षेत्रों में पुनः शुरू किया जाता है। सुझाव दिया गया है कि ब्रेल में कार्य कठिनाई के साथ-साथ इसके सीखने के घटक, सरल सामरिक भेदभाव की तुलना में पाए गए इसके अंतरकारी प्रभावों को समझा सकते हैं जो प्राथमिक प्रांतस्था में सक्रिय सक्रियण दिखाते हैं। अंधापन की उम्र के मामले में, वहाँ रहा है कुछ अनिश्चितता यह है कि क्या मस्तिष्क के विकास का महत्वपूर्ण समय जिसके बाद न्यूरो-प्लास्टिसिटी को सीमित रूप से बाधित किया जाता है। कुछ सबूत बताते हैं कि शुरूआती सालों (16 वर्ष की उम्र तक) में विकास प्रगति पर प्रतिबंध बाद में संभावित परिवर्तनों की सीमा को सीमित करता है। परन्तु यह साक्ष्य ब्रेल पाठकों के अध्ययन पर काफी हद तक निर्भर है और पूरी तरह से हाल ही में सहमत नहीं है जाँच - परिणाम। यद्यपि हाल ही में स्थानीय स्थानीयकरण द्वारा संबंधित कुछ दिलचस्प सबूतों ने स्पर्श से संबंधित एक प्रभावशाली प्रभाव डाला है, जहाँ प्रारंभिक दृष्टि बाह्य और शारीरिक संदर्भ प्रणाली पर आजीवन प्रभाव डालती है (स्थानिक प्रतिनिधित्व पर अनुभाग देखें)। हालांकि अन्य अध्ययन भी देख रहे हैं तंत्रिका संचरण के विभिन्न पैटर्न, जो दिखाते हैं कि अलग-अलग दृश्य प्रांतस्था में संकेतों को परिवर्तन से दृष्टि हानि की थोड़ी अवधि के बाद भी 'अस्थायी परिवर्तन' प्रभावित हो सकते हैं।

केवल हाल में ही यह स्पष्ट हो गया है कि मस्तिष्क संरचना में परिवर्तन

(उदाहरण के लिए नोप्पेनी एट अल, 2005) साथ ही साथ मस्तिष्क कार्य (जैसे मेरबेट एट अल, 2005; मैकुलुसो एंड ड्रायवर, 2005; रॉडर एट अल, 1999, 2002; सदाटो एट अल, 1996, 2002) दृष्टि में परिवर्तन द्वारा मध्यस्थता में हैं बाद मं जीवन में पहले से संभव माना गया था और इसके अलावा, यह एक अस्थायी और स्थायी आधार पर भी हो सकता है।

अंधापन के संबंध में तंत्रिका सर्किटरी की क्षतिपूर्ति भर्ती होती है और संवेदी पद्धतियों को संसाधित और एकीकृत ढंग से प्रभावित करने के तरीके को प्रभावित करता है। जैसे श्रवण संबंधी प्रगति के लिए पैरिटलल और फिर ओसीपिटल कॉर्टेक्स की प्रगतिशील भर्ती अंधे में क्रॉसमोडाल संवेदी पुनर्गठन के सबूत प्रदान करती है, हालांकि कुछ हालिया सुझाव दिए गए हैं कि ओसीपिटल प्रांतस्था में सक्रिय क्षेत्र 'कार्य विशिष्ट' में काम कर रहे हैं, भावना विशिष्ट 'रास्ता (रॉडर, टेडर-सेलजारवी, और स्टीर एट अल, 1999; सदाटो एट अल, 2002)। इस तरह स्थानित प्रसंस्करण या एक सुपरमॉडल फंक्शन पारंपरिक 'विजुअल कॉर्टेक्स' (मैकलुसो, फ्रिश और ड्राइवर, 2002) के नियमित कामकाज में सम्मिलित हो सकता है। इसके अलावा, होने वाले परिवर्तन न केवल बीमारी या दुर्घटना के परिणामस्वयप होते हैं बल्कि ट्रांसक्रैनियल चुंबकीय उत्तेजना (टीएमएस) का उपयोग करके जाँच अध्ययनों का उपयोग करते हैं। यह एक noninvasive विधि है जिसके द्वारा न्यूरोसाइजिस्ट मस्तिष्क गतिविधि में परिवर्तन कर सकते हैं, 'अस्थायी' घावों का उत्पादन और इस मामले में, दृष्टि हानि। यह पद्धति अंधापन के प्रभावों की हमारी समझ में एक नया चरण शुरू करेगी।

न्यूरोप्सिओलॉजिकल प्रोफाइल : संज्ञानात्मक प्रोफाइल

इंटेलिजेंस

बुद्धिमत्ता के कई अध्ययनों की समीक्षा में कोलकाता (1977) ने निष्कर्ष निकाला कि 'आम तौर पर, दृष्टि वाले बच्चों की अपेक्षा अंधे बच्चों के लिए औसत आईक्यू स्कोर महत्वपूर्ण नहीं होते हैं।' Gerhradt (1982) ने बताया कि फॉर्म और समारोहों के प्रारंभिक वर्गीकृत वर्गीकरण के मामले में, मुफ्त खेल में उम्मीद की जा सकती है, 14, 16 और 18 महीने के दृष्टिहीन विकलांग शिशुओं ने अनुमानित विकास पथ का अनुसरण किया जैसा कि देखा गया शिशुओं के लिए भविष्यवाणी की जाएगी। शुरुआती अध्ययनों में जबकि टिलमैन (1967) और ज्वेबेलसन और बार्ग (1967) अंधे बच्चों के

शुरूआती बचपन में अमूर्त शर्तों की समझ की लागत पर एक और ठोस अवधारणा पूर्वाग्रह का उल्लेख करते हैं।

हालांकि कुछ सुझाव प्रस्तुत किए गए हैं कि अलग-अलग दृश्य हानि निदान विशिष्ट संज्ञानात्मक शक्तियों और कमजोरियों से जुड़े होते हैं। हालांकि इस संबंध में कोई निश्चित सबूत प्रकाशित नहीं हुआ है, एक चल रही जांच से पता चलता है कि रेटिनोब्लास्टोमा (टोबिन, व्यक्तिगत संचार आने वाले) के निदान वाले लोगों द्वारा प्रदर्शित एक अच्छा खुफिया में अपवाद मौजूद हो सकता है।

भाषा और मौखिक संज्ञान

भाषा को आमतौर पर गंभीर रूप से विकलांग दृष्टि (लैंडौ एंड ग्लीटमैन, 1985; वॉरेन एंड हैटर, 2003) उत्पन्न हुए बच्चों के विकास में एक शक्तिशाली भूमिका निभाते हुए देखा गया है। पेरेज़-परेरा (1994) और सहयोगियों ने पिछले कुछ वर्षों में बनाए रखा है कि भाषा VI के साथ बच्चों के लिए एक विशेषाधिकार प्राप्त उपकरण प्रदान करती है, जो इस पर विश्वास करते हैं और उन बच्चों की तुलना में अधिक हद तक इसका लाभ उठाते हैं। वर्बल तर्क और बुद्धि बच्चों को विकसित करने में मदद करती है ए के नुकसान से निपटने के लिए रणनीतियों संवेदी चैनल। इसलिए भाषाई क्षमता न केवल ज्ञान अधिग्रहण के संदर्भ में एक महत्वपूर्ण कारक है जहाँ यह अस्पष्ट रूप से एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है बल्कि यह भी कि गंभीर रूप से विकलांग दृष्टि वाले बच्चों में सामाजिक परिणामों में मध्यस्थता में मदद करता है। बच्चों के लिए जो दृष्टिहीन रूप से अक्षम भाषा आधारित उपायों का उपयोग सामान्य रूप से उनके सामान्य बौद्धिक स्तर का आकलन करने के लिए किया जाता है, जिससे बच्चे की सामान्य संज्ञानात्मक क्षमता के बावजूद भाषा के योगदान को अलग करना मुश्किल हो जाता है। जन्म से दृष्टिहीन रूप से विकलांग बच्चों की "नियमित भाषा" कौशल के संबंध में, शोध आम तौर पर स्पष्ट होता है कि ये सापेक्ष आसानी से विकसित किए गए हैं। कई अध्ययन हैं

शुरुआती शब्दावली अधिग्रहण और उत्पादन, सिंथैक्टिक ज्ञान और VI (एंडर्सन, ड्यूनिया, और केकेलिस, 1984, ड्यूनिया, 1989) के बच्चों में अर्थपूर्ण अवधारणाओं के अधिग्रहण में कुछ विशिष्ट देरी और अनियमितताओं का प्रदर्शन किया, लेकिन आमतौर पर "नियमित भाषा" के विकास और

उपयोग को बोलते हुए अत्यधिक दृष्टि से बच्चों के साथ है (उदाहरण के लिए लैंडौ एंड ग्लीटमैन, 1985)। एक दिलचस्प उदाहरण रंग शर्तों के उपयोग से संबंधित है। स्कूली बच्चों के साथ अध्ययनों से पता चला है कि अंधेरे बच्चे समझते हैं कि दृष्टि रंग की जानकारी को समाप्त करती है और यह जानकारी वस्तुओं और दृश्यों से संबंधित है।

उन्होंने तब सीखा है कि केले सामान्यतः 'पीले' होते हैं और आकाश 'नीला' होता है और मौखिक गद्य में ऐसे रंग शर्तों के उपयोग की समान उम्मीदों या भविष्यवाणियों को दिखाता है, जिसमें रंगीन शब्द जुड़े हुए सूक्ष्मता को समझते हैं। "नियमित भाषा" भाषण की अभिव्यक्ति, व्याकरण, शब्दावली स्तर और प्रश्न में शब्दावली की वैचारिक समझ जैसे कौशल, व्यक्ति को स्पष्ट रूप से बातचीत करने में सक्षम बनाता है, वे किसी अन्य व्यक्ति के साथ एक सफल सामाजिक-संवादात्मक बातचीत को प्राप्त करने हेतु पर्याप्त नहीं हैं। इसके लिए, किसी को व्यावहारिक भाषा कौशल भी मास्टर करना चाहिए, यानी किसी दिए गए संदर्भ में भाषा का उचित उपयोग करना चाहिए। विजन सामान्य रूप से भाषा विकास में फंस गया है, क्योंकि प्रारंभिक बचपन में दृष्टि से संचालित संयुक्त ध्यान अनुभवों को एक संरचना प्रदान करने के रूप में देखा जाता है जिसमें भाषा सीखना होता है (ऑमसेलो और फरार, 1986)। इस कारण से व्यावहारिक भाषा तस्वीर VI के साथ बच्चों में सामाजिक और व्यावहारिक उद्देश्य के लिए संकेतों के गरीब उपयोग दिखाते हैं और कभी-कभी अनुपयुक्त रूप से और आमतौर पर विकतिस बच्चों की तुलना में अधिक हद तक उपयोग करते हैं। यह सुझाव भाषा विकार, (पीएलआई) (मिल्स, 1993)। यद्यपि यह तर्क प्रस्तुत किया गया है कि VI के साथ बच्चों के व्यावहारिक भाषा उपयोग की ऐसी विशेषताओं में सूचना एकत्र करने, भाषण का विश्लेषण करने, स्मृति भार को कम करने और अलगाव से बचने के लिए अनुकूली रणनीति प्रदान करके उनकी पहचान और सामाजिक बातचीत को बढ़ावा देने में एक महत्वपूर्ण कार्य हो सकता है। स्पष्ट है कि 15 बच्चों के समूह की भाषा प्रस्तुति में कुछ अनियमितताएं हैं जिन्हें हमने जन्जमात छठी आयु सीमा 6-12 साल (टैडिक, प्रिंग एंड डेल, 2008 ए) के साथ अध्ययन किया था। हमारे निष्कर्ष एक संरचित भाषा मूल्यांकन (भाषा बुनियादी सिद्धांतों का नैदानिक मूल्यांकन - 3 : सीईएलएफ-3; सेमल, वाईग, और सिकॉर्ड, 2000) पर आधारित थे। हमने चिल्ड्रन कम्युनिकेशन चेकलिस्ट (बिशप, 2003) का उपयोग करके भाषा एवं संवादात्मक व्यवहार की अभिभावकीय रेटिंग का भी उपयोग किया। चेकलिस्ट रोजमर्रा के संदर्भ

NOTES

में देखने योग्य संरचनात्मक और व्यावहारिक भाषा व्यवहार दोनों को लक्षित करता है, परन्तु रोजमर्रा की भाषा के उपयोग से स्पष्ट सामाजिक बातचीत कौशल भी स्पष्ट करता है। इस अध्ययन के बच्चों को आम तौर पर उसी उम्र, लिंग और मौखिक आईक्यू स्कोर वाले बच्चों के साथ मेल खाना था। निष्कर्ष

सुझाव दिया कि VI के साथ बच्चों में भाषा क्षमता की प्रस्तुति में एक विसंगति है; यह है कि, अच्छे और संभावित रूप से बेहतर नियमित संरचनात्मक भाषा कौशल के औसत, लेकिन बातचीत और सामाजिक उद्देश्य हेतु भाषा का कमजोर उपयोग। छठी समूह में व्यावहारिक भाषा कठिनाइयों को बच्चों के एक बड़े अनुपात में देखा गया था, ये एक साथ सामाजिक बातचीत पर चेकलिस्ट स्कोर और प्रतिबंधित और दोहराए गए कार्यों के साथ मिलकर सुझाव प्रस्तुत करते हैं कि कई नैदानिक चिंता के थे और ऑटिस्टिक स्पेक्ट्रक विकार के साथ संगत (नीचे चर्चा की गई)।

मेमोरी

स्मृति प्रदर्शन में कुछ प्रारंभिक अध्ययनों में पाया गया है कि बच्चों और वयस्कों जो अंधे थे, उनके अनुभव समकक्षों के समान तरीके से अपने अनुभवों को नहीं भूलते थे। उन्होंने संवेदी या कथा अनुभव के वितरण को बरकरार रखा। (उदाहरण के लिए प्रिंग, 1995)। इसके विपरीत दृष्टि से लोगों में सीखने की प्रक्रिया सटीक सामग्री, सीखने के एपिसोड को भूलने की प्रवृत्ति को प्रकट करती है, परन्तु इसके बजाय भौतिक या भौतिक अर्थ का समग्र अर्थ याद रखें। कई अध्ययनों ने अल्पकालिक स्मृति (एसटीएम) के लिए महत्वपूर्ण फायदे की सूचना दी है। दृष्टिहीना सहकर्मियों की अपेक्षा में गंभीर रूप से विकलांग दृष्टि से उत्पन्न हुए बच्चों में (उदाहरण के लिए हल एंड मेसन, 1995; स्मिट्स एंड मॉमर्स, 1976)। एसटीएम में वास्तव में फायदे विभिन्न प्रकार के डोमेन में नोट किए गए हैं –

पिच मेमोरी, वाक्य याद, श्रवण याद और ब्रेल एवं स्पर्श के लिए स्मृति से चित्र (देखें प्रिंग, 2008)। इस प्रकार, श्रवण/मौखिक सामग्री और संघों पर निर्भरता और ध्यान को 'सक्रिय स्टोर' में लंबे समय तक जानकारी बनाए रखने के साथ जोड़ा जा सकता है, जैसे जानकारी के साथ वितरा करने से पहले एक ध्वन्यात्मक अल्पकालिक स्मृति, जैसा कि यह देखा जा सकता है व्यक्तियों। यह इस सुझाव से संबंधित हो सकता है कि दृष्टिहीन व्यक्तियों

की आमतौर पर आबादी में मिलने की अपेक्षा में पूर्ण पिच क्षमता की उच्च घटना होती है।

स्थानिक प्रतिनिधित्व और अवधारणाएं

NOTES

अंतरिक्ष, स्थानिक संबंधों, आंतरिक स्थानिक प्रतिनिधित्व और स्थानिक इमेजरी को समझने में दृष्टि सहायक है – लेकिन अध्ययनों द्वारा पता चला है कि यह आम तौर पर आवश्यक नहीं है। उदाहरण के लिए 'मार्ग' (यानी चलने के लिए उपयोग किया जाने वाला पथ) के मामले में अन्य लोग यूक्लिडियन अंतरिक्ष के लिए कोड करने में सक्षम होते हैं। जबकि सामान्य नहीं है, पॉइंटिंग का उपयोग युवा अंधे द्वारा किया जाता है बच्चों और जब ऊपर के बेडरूम को इंगित करने के लिए कहा जाता है तो जन्मजात अंध ापन वाला एक बच्चा कमरे में उचित रूप से इंगित कर सकता है।

बच्चे के स्थान के ऊपर और पीछे (लुईस एट अल, 2000 ए, लुईस, 2002 में) जबकि अन्य लोगों को सामान्यत: उस मार्ग पर इंगित करने की सूचना दी गई थी, वे उस कमरे (बिगेलो, 1996) में चले जाएंगे। अंतरिक्ष में आंदोलनों का भौतिक कोडिंग; यानी किनेस्थेटिक प्रतिनिधित्व, दृष्टिहीन बच्चों (मिलर और इटिटेरा, 1991) में अंधेरे में कुशलता से विकसित होने लगता है। अंध ेरे और दृष्टि वाले लोगों में शारीरिक और बाहरी रूप से इंगित किए गए संदर्भ प्रणालियों की भूमिका वर्तमान में रॉडर, फॉकर, होटिंग वाले लोगों में शारीरिक और बाहरी रूप से इंकित किए गए संदर्भ प्रणालियों की भूमिका वर्तमान में रॉडर, फॉमकर, होटिंग और स्पेंस (2008) द्वारा जांच की जा रही है। स्पर्श उत्तेजना का स्थानिक स्थानीयकरण दृश्य क्षेत्र के संबंध में उनके 'परिचित' स्थान से प्रभावित होता है, इस प्रकार, जब हाथों को एक अपरिचित मुद्रा में रखा जाता है (मिडलाइन पर पार किया जाता है) गलतियों को स्पर्श करने वाली उत्तेजना को स्थानीयकृत करने में किया जाता है (विसंगति के कारण स्पर्श और दृश्य परिचित सह-स्थान के बीच)। रॉडर, रॉस्लर एंड स्पेंस (2004) ने इस सबूत को खुलास किया है कि प्रारंभिक दृश्य अनुभव स्पर्श अंतरिक्ष पर संदर्भ के दृश्य स्थानिक फ्रेम के इस प्रभाव को स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। वे पाया गया कि जबकि दृष्टि वाले विषों ने पार हाथों के साथ स्पर्श उत्तेजना का पता लगाने में गरीब शुद्धता दिखाई, जबकि जन्मजात अंधे विषयों ने ऐसे कोई हानि नहीं दिखायी। इसके अतिरिक्त, देर से अंधेरे विषयों (जिनमें से एक 40 साल के लिए अंधेरा था) ने दृष्टिहीन विषयों को समान पार-हाथों में हानि दिखायी, यह बताते हुए कि प्रारंभिक दृश्य अनुभव सामरिक अंतरिक

छठी के साथ बच्चों की इमेजरी क्षमताओं को कम किया जा सकता है। मानसिक रूप से वस्तुओं (लैंडो, 1991) को मानसिक रूप से घूमने में सक्षम होने में शायद विकासशील देरी हो रही है परन्तु निश्चित रूप से वयस्कता से यह क्षमता एक विस्तृत और रचनात्मक तरीके से देखी जा सकती है जो दृष्टि से नियंत्रित नियंत्रण (ईर्डली और प्रिंग, 2007) के बराबर है। अंधेरे बच्चे स्पर्श चित्रों (प्रिंग एंड रस्टेड, 1980) को समझ सकते हैं और उठाए गए रेखाचित्र सामग्री के साथ आकर्षित कर सकते हैं। जॉन केनेडी के शोध ने गहराई, परिष्कार और रूपरेखात्मक कलाकृति का संकेत दिया है जो पाया जा सकता है कि यदि वयस्कों और छठी वाले बच्चों को न केवल मूर्तिकला के साथ बल्कि दो-आयामी उठाए गए रेखाचित्रों (जैसे केनेडी, 2007) में अभिव्यक्त करने के लिए उपकरण प्रदान किये जाते हैं। शोध से पता चला है कि कई स्थानिक परिस्थितियों में मानसिक स्थानिक इमेजरी शामिल है जैसे कि चित्रों या मानचित्रों से निपटने पर एक वैश्विक विश्लेषण के समग्र ग्लोबल इंप्रेशन (उदाहरण के लिए अनगर एट अल, 1995, 1969) पर खर्च किया जाता है। बच्चों को सीखने के लिए उठाए गए रूपरेखा नक्शे दिए गए बच्चों ने विभिन्न स्थलों के मध्य स्थानिक संबंधों का उपयोग करने का प्रयास किया था।

और मार्गों के पुनरुत्पादन हेतु नक्शे के किनारों पर उनके संबंध। जबकि अंधेरे बच्चे भी प्रदर्शन नहीं करते थे, उन्होंने मार्गो का पता लगाने और स्थलों का नामकरण करने पर अपना ध्यान केन्द्रित किया था। सुविधा रणनीति सदैव कम कुशल होती है, लेकिन शोध से पता चला है कि जब आवश्यक बच्चे और वयस्क जो अंधे हैं, ऐसे तरीकों का उपयोग करने में सक्षम हैं। दरअसल, वेची और सहकर्मियों (उदाहरण 2006) के हालिया शोध से ज्ञात होता है कि अंधापन वाले व्यक्ति बहुत जटिल स्थानिक मानसिक छवियों को एकीकृत कर सकते हैं जो अनुक्रमिक रूप से एक एकीकृत मानसिक प्रतिनिधित्व में प्रस्तुत किए जाते हैं। यह काम दृष्टिहीन लोगों में मस्तिष्क संगठन हेतु परिवर्तन के संबंध में ऊपर वर्णित रोडर और सहयोगियों के निष्कर्षों के साथ अत्यधिक जानकारी देता है।

मोटर विकास

विजन को संतुलन, मुद्रा, सकल और बढ़िया मोटर कार्यों में सम्मिलित किया गया है और हालांकि बड़ी व्यक्तिगत भिन्नता महत्वपूर्ण मोटर देरी की सूचना

मिली है। हैटर एट अल। (1997) ने दृश्य विकारों की एक शृंखला के साथ 12 से 73 महीने के बीच के 113 बच्चों में मोटर देरी देखी परन्तु कोई अतिरिक्त विकलांगता नहीं थी। बैटल विकास संबंधी सूची के मोटर पैमाने पर यह स्पष्ट था कि गंभीर और गहन दृश्य विकार वाले बच्चों को विकास में बहुत देरी हुई थी, 30 महीने की आयु में उनका स्कोर 18 महीने के बराबर था, जैसे- हालांकि, दृष्टि ने महत्वपूर्ण बना दिया 22 महीने के स्तर पर समान क्रोनोलॉजिकल युग में कुछ रूप धारणा वाले बच्चों के प्रभाव से और यह प्रवृत्ति अधिक दृष्टि की उपलब्धता के साथ प्रस्तुत की जा रही।

सामान्यतः सुझाव यह है कि जिन उपलब्धियों को आत्म-आरंभ की गतिशीलता की आवश्यकता होती है उनमें सबसे अधिक देरी होती है जैसे कि प्रवण स्थिति में हथियारों को ऊपर उठाना, बैठे स्थान पर चढ़ना, स्टैंड पर खीचंना और अकेले चलना। विजन व्यवहार में परिवर्तन और विशेष रूप से पहुँचाने और पकड़ने के लिए उत्साह का प्रतीत होता है। अंधेरे बच्चे के लिए पकड़े जाने वाले ऑब्जेक्ट्स में रुचि पर ध्यान स्थातिप करने में ध्वनि-शुरू की गई रूचि और ध्वनि निर्माण की वस्तुओं की भूमिका महत्वपूर्ण है। जबकि शोध जार है कि सकल और बढ़िया विकास दोनों में कुछ देरी है। गंभीर दृश्य विकार वाले 40 बच्चों के अध्ययन में, Levtzion-Korach et al (2000) ने पाया कि मोटर विकास के सभी 10 पहलुओं में अध्ययन किए गए बच्चों ने देखा नियंत्रिण और बेली डेवलपमेंट स्केल (1993) द्वारा अनुमानित माप से धीमे थे। जैसे उन्होंने पाया कि बच्चों को समर्थन के साथ अकेले खड़े होने में देरी हुई थी (8.1 महीनों में औसत बच्चों की तुलना में 14.4 महीने)। आश्चर्यजनक रूप से सहयोग के साथ सीढ़ियों पर चढ़ाई नहीं (28.8 और 16.1 महीने) और एक पैर (52.4 और 22.7 महीने। पर खड़े होने की सबसे बड़ी विसंगतियों में से एक थे। मानसिक रूप से मोटर चालनों या आंदोलनों की अनुपस्थिति के अर्थ में अंतर्दृष्टि प्राप्त करना एक चुनौती है। युवा अंधे शिशु और बच्चे में। जैसे विकलांगता पर उनकी पुस्तक में लुईस (2002) बताते हैं कि बच्चे ध्वनि का पता लगाने के लिए अपना सिर बदल सकता है, लेकिन उस समय को बराबर करने के लिए जब ध्वनि उसके दोनों कान तक पहुँच जाती है। एक और उदाहरण 'ठंड' आंदोलन होगा जो छठी में एक बहुत ही आम व्यवहार है और शोर या कुछ रोचक उत्तेजना के जवाब में प्रारंभ हुआ है, जिसमें VI के साथ बच्चे द्वारा ध्वनि आधारित जानकारी पर ध्यान केंद्रित किया गया है (भले ही वहाँ हो सकता है कोई सिर आंदोलन नहीं हो)।

NOTES

रूढ़िवादी

एसवीआई और पीवीआई वाले बच्चों में पाए जाने वाले सर्वाधिक उल्लेखनीय संबंधी असामान्यताओं में से एक है "रूढ़िवादी" - ये संरक्षक या अनुष्ठान आंदोलन या मुद्राएं हैं (ब्रैम्बब्रिंग एंड ट्रॉस्टर एंड ट्रॉस्टर, 1992; हॉब्सन, ली, एंड ब्राउन, 1999; विल्स, 1968। अभिभावकीय रिपोर्ट के मुताबिक, सबसे प्रचलित रूढ़िवादी आँखों के पोकिंग, शरीर रॉकिंग, हाथ और उंगली की गति और वस्तुओं के बदलाव हैं। इस तरह के दोहराव और स्टीरियोटिकल व्यवहार भी ऑटिज़्म की एक हड़ताली विशेषता है और उस संदर्भ में समझौता मानसिक लचीलापन (उदाहरण के लिए, लोपेज़, लिंकन, ओज़ोनॉफ, और लाई, 2005) से जुड़ा हुआ है। दृश्य विकार वाले बच्चों में स्कूल के वर्षों में इस प्रकार के दोहराव वाले व्यवहार और रूढ़िवादी तरीके के स्तर उठाए गए कुछ निश्चित रूप से संबंधित हैं -

प्री-स्कूली व्यवहार के ध्यान पहलुओं जैसे कि वयस्क (टैडिक, प्रिंग एंड डेल, 2008 बी) द्वारा निर्देशित होने पर बच्चे को ध्यान में बदलने की क्षमता। उन्हें मानसिक मंदला में देखा जाने वाले समान व्यवहारों से पृथक किया जाना चाहिए (बुर्क एट अल, 2000, पी 265)।

अकादमिक उपलब्धियाँ

प्राथमिक विद्यालय में शुरूआती देरी के बाद कक्षाएं जिनके पास छठी कक्षाएँ हमेशा माध्यमिक स्कूली शिक्षा स्तर में उल्लेखनीय रूप से भली-भांति प्रदर्शन करती हैं। ऐसी देरी का एक कारण ब्रेल को महारत हासिल करने में कठिनाई है। उठाए गए बिंदुओं के 2×3 मैट्रिक्स के संपर्क में ब्रेल पढ़ना सामरिक acuity की मांगों के कारण कठिन है। प्रत्येक ब्रेल सेल (ब्राइल में चरित्र) एक पत्र का प्रतिनिधित्व करता है और पढ़ने की गति 'संकुचन द्वारा बढ़ाया जाता है; प्रमुख ब्रेल शब्दों के उदाहरण के लिए, 'और' शब्द एवं अक्षरों के समूह का प्रतिनिधित्व करने के लिए अलग-अलग वर्ण हैं। ब्रेल शिक्षण और धारणा मुख्य रूप से 'ध्वनि-आधारित' होती है और आरंभ में ब्रेल पाठक विकासशील डिस्लेक्सिया में दिखाई देने वाले लोगों के समान 'दर्पण छवि' उलटा त्रुटियों और वैश्विक आकार के अन्य समान भ्रम बनाते हैं। छठी और डिस्लेक्सिया वाले बच्चों का शायद ही कभी अध्ययन किया गया है (हालांकि देखें आर्टर, 1998)। ब्रेल पढ़ने में मुख्य जानकारी लाइन (स्कैनिंग और प्रिंट के विपरीत) स्कैन करते समय लिया जाता है, इसलिए हाथों की

तैनाती और उंगलियों के कम समय को छोटे विवरणों के साथ-साथ बड़ी मात्रा में टेक्स्ट पर दखेना महत्वपूर्ण है सुसान मिलार ने किया है (मिलर, 1997)। छठी वाले बच्चे इस हिसाब से भिन्न हो सकते हैं कि वे मुख्य रूप से बाएं या दाएं हाथ का उपयोग करते हैं; वे अक्सर दोनों हाथों का एक साथ उपयोग करते हैं - दाएं हाथ पहले, उनके बाएं हाथ द्वारा बेल लाइन के साथ पीछा किया गया जिसमें एक स्थान-चिह्न और पुष्टित्मक भूमिका है। शब्दावली के संबंध में, स्पर्श पत्र पहचान और अंगूठे का नियम पढ़ने की मौखिक रूप से प्रेरित भूमिका यह संभवत: कहने के लिए सही है कि वयस्कों में दाए हाथ से बाएं गोलार्द्ध का लाभ है (उदाहरण के लिए, सदाटो एट अल, 1995), जबकि चूंकि मिलर (ibid) बताते हैं,

ब्रेल पढ़ने में हाथ प्राथमिकताओं में भाग लेने के लिए मूर्खतापूर्ण है। जब पत्र नामकरण हेतु बाएं हाथ का लाभ पाया गया है, जहाँ कार्य के स्थानिक और पैटर्न पहचान पहलुओं पर जोर दिया जाता है (हेर्मेलिन और ओ। कॉनर 1971; रुडेल एट अल, 1977) तथा नहीं हाथों का लाभ कई अन्य पढ़ने के कार्यों (मिलार, 1984) के लिए पाया गया है।

चुनिंदा शैक्षिक व्यवसाय –

दुनिया भर में आम सहमति है कि रोजगार सबसे आवश्यक है परन्तु पुनर्वास का सबसे कठिन पहलू है। दृष्टिहीन लोगों का रोजगार भारत में एक और अधिक शक्तिशाली समस्या है-

दृश्य विकार की उच्च घटनाएं;

सामाजिक सुरक्षा लाभों के अस्तित्व के समीप

कार्य आयु वर्ग में दृश्य हानि का उच्च प्रसार;

सीमित शिक्षा और प्रशिक्षण सुविधाएं;

उनमें से अधिकांश अशिक्षित हैं, जो उनके घरों तक ही सीमित हैं,

Un बेरोजगारी और प्रचलित बेरोजगारी की उच्च दर।

अधिकांश दृष्टिकोण लोगों और उनके परिवार समाज के सबसे गरीब क्षेत्र से आते हैं। वास्तव में, अध्ययनों ने गरीबी और विकलांगता के बीच बहुत अधिक सहसंबंध का खुलासा किया है। परिवार में ऐसे व्यक्तियों को बनाए रखने

NOTES

की लागत वित्तीय बोझ को सम्मिलित करती है। इस प्रकार उनका आर्थिक पुनर्वास एक व्यक्तिगत आवश्यकता नहीं रहता है; कई बार यह परिवार के अस्तित्व का सवाल बन जाता है।

रोजगार प्रक्रिया

यह देखा गया है कि निम्नलिखित घटकों का एक दुष्चक्र रोजगार प्रक्रिया में समस्या है :

Ident पहचान सेवाओं की अनुपस्थिति

नौकरी उन्मुख प्रशिक्षण सुविधाओं की कमी

अप्रासंगिक प्रशिक्षण

रोजगार अधिकारियों के प्रशिक्षण की कमी

Implement एक कार्यान्वयन मशीनरी की कमी एवं सेवाओं के वितरण की प्रणाली की अनुपस्थिति

Employ नियोक्ताओं की अज्ञानता

Employ नियोक्ताओं और सरकारी अधिकारियों की उदासीनता। रोजगार प्रक्रिया में तीव्रता लाने के लिए, यह आवश्यक है:

Some कुछ चरणों में दुष्चक्र को तोड़ने के सभी प्रयासों को निर्देशित करें;

Appropriate उचित नौकरी उन्मुख प्रशिक्षण और करियर परामर्श सुविधाओं का विस्तार; उपयुक्त रोजगार के लिए एक व्यक्ति तैयार करें;

नियोक्ता को रोजगार बढ़ाने के लिए मनाएं;

इस संबंध में family वकील परिवार के सदस्य और समुदाय; तथा

प्रक्रिया में सक्रिय रूप से सरकारी मशीनरी सम्मिलित है।

"रोजगार" शब्द का स्पष्टीकरण 'रोजगार' शब्द को समाप्त करना आवश्यक है जिसमें विभिन्न लोगों के लिए अलग-अलग अर्थ हैं। रोजगार प्रति से केवल औपचारिक, सुरक्षित या नियमित रोजगार का मतलब नहीं है। इसका भी अर्थ है :

कोई व्यापार, आर्थिक गतिविधि या पेशे;

संगठित और असंगठित क्षेत्र में;

कोई व्यापार जो कुछ मौद्रिक पारिश्रमिक प्रदान करेगा।

पुनर्वास योजनाकारों द्वारा प्रयोग किए जाने वाले रोजगार का कार्य आमतौर पर एक महत्वपूर्ण पहलू को अनदेखा करता है कि समुदाय स्वयं अवसरों का विस्तृत स्पेक्ट्रम प्रदान करता है, जहाँ दृष्टिहीन लोगों को लाभकारी व्यवसायों में अवशोषित किया जा सकता है। जैसे- भारत में एक सुदूर गांव में 50 वर्षीय महिला का पुनर्वास करने का मतलब है कि वह उसे अपनी घरेलू गतिविधियों की देखभाल करने में मदद करती है क्योंकि वह अपनी दृश्य हानि से पूर्व प्रदर्शन करती थी या अधिक महत्वपूर्ण रूप से प्रदर्शन करने वाली महिलाओं को करने के लिए काम करती थी। ग्रामीण क्षेत्रों में अधिकांश महिलाओं को निम्नलिखित गतिविधियों को करने की उम्मीद है:

परिवार के लिए खाना बनाना

Household घरेलू गतिविधियों का प्रदर्शन करें

बच्चों और बुजुर्गों का ख्याल रखना

पानी प्राप्त करें

Rural ग्रामीण व्यवसायों या पारिवारिक व्यापार को सम्मिलित करें। इस प्रकार वे अन्य परिवार के सदस्यों को आय उत्पन्न करने की गतिविधियाँ को करने में सक्षम होते हैं और इस प्रक्रिया में वे पारिवारिक कमाई के लिए परोक्ष रूप से योगदान करते हैं। लाभकारी व्यवसाय और इस प्रकार आर्थिक पुनर्वास द्वारा इसका अभिप्राय है।

प्रत्येक व्यक्ति के लिए, केवल धन और आर्थिक आजादी के लिए ही काम आवश्यक नहीं है, बल्कि यह भी क्योंकि यह आत्म सम्मान और आत्म गरिमा में योगदान देता है जिससे जीवन के लिए एक स्थायी आनंद मिलता है। विकलांग व्यक्तियों के लिए, यह अभी भी अधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे उत्पन्न आत्म सम्मान और वित्तीय लाभ समाज के असंतोषजनक दृष्टिकोण के नकारात्मक प्रभाव द्वारा काफी हद तक ऑफसेट हो जाएंगे। (पांडे और आडवाणी, 1995)

NOTES

आधुनिक प्लेसमेंट तकनीकें

दृष्टिहीन लोगों की आर्थिक आजादी और सामाजिक एकीकरण को आमतौर पर अपने प्रतिस्पर्धी और खुले रोजगार के द्वारा हासिल किया जाना चाहिए। यह निश्चित रूप से उपयुक्त प्रशिक्षण और रोजगार के सभी मार्गों की खोज के माध्यम से उचित रोजगार के लिए उन्हें तैयार करने की आवश्यकता है। प्रशासनिक उपायों और विधायी, संवैधानिक और संस्थागत समर्थन के अतिरिक्त इसे अपनाने की आवश्यकता है।

उपयुक्त, परिणाम उन्मुख और प्रासंगिक आधुनिक प्लेसमेंट तकनीकों का पालन करें :

व्यावसायिक आकलन और कार्य तैयारी व्यावसायिक पुनर्वास, कार्य परीक्षण, योग्यता परीक्षण, मनोवैज्ञानिक परीक्षण, व्यापक और लंबे समय तक व्यावसायिक मार्गदर्शन, पुनर्संरचना या व्यावसायिक प्रशिक्षण के बिना हासिल किया जा सकता है।

सेवाएं : संगठित क्षेत्र में व्यावसायिक पुनर्वास के प्रचार को निम्नलिखित सेवाओं के प्रावधान की आवश्यकता होगी।

आकलन : किसी व्यक्ति की शेष शारीरिक, मानसिक और व्यावसायिक क्षमताओं एवं संभावनाओं की स्पष्ट तस्वीर प्राप्त करना।

मूल्यांकन : कौशल योग्यता, कार्यात्मक और व्यावसायिक क्षमताओं के स्तर का मूल्यांकन करना।

मार्गदर्शन : व्यावसायिक प्रशिक्षण और रोजगार की संभावनाओं के रूप में तद्नुसार व्यक्ति को सलाह देना।

प्रशिक्षण : किसी भी आवश्यक पुनर्निर्माण, toning-up या औपचारिक व्यावसायिक प्रशिक्षण या काम की तैयारी प्रदान करना।

सहायक उपकरण : गतिशीलता, कार्य करने की क्षमता और व्यक्ति की क्षमताओं को बढ़ाने के लिए उचित व्यावसायिक सहायक उपकरणों का आयोजन करना।

प्लेसमेंट : खुले या आश्रय वाले वातावरण में उचित और उपयुक्त काम या सेवा के अवसर तलाशने के लिए व्यक्ति की सहायता करना।

पूर्ण पुनर्वास प्राप्त होने तक पालन करें। परिणाम: इस प्रकृति का व्यावसायिक मूल्यांकन यह कर सकता है:

Work वास्तविक कार्य परिस्थितियों के अन्तर्गत कार्य प्रदर्शन का मूल्यांकन;

Work कार्य सहिष्णुता की डिग्री इंगित करता है, एक व्यक्ति थकान के बिना काम कर सकता है, शोर खड़े होने की क्षमता और अन्य पर्यावरणीय तनाव, समस्याओं आदि;

His अपने आत्मविश्वास, आत्मनिर्भरता और व्यक्तिगत पर्याप्तता को विकसित करने में सहायता;

व्यक्ति को अपनी क्षमता और सीमाओं को समझने एवं स्वीकार करने में सहायता करें;

Voc व्यावसायिक अभिविन्यास में सहायता करें।

लक्ष्य : व्यावसायिक मूल्यांकन, कार्य तैयारी और नियुक्ति हेतु अनुवर्ती प्रक्रिया निम्नलिखित उद्देश्यों को प्राप्त करेगी:

काम की आदत हासिल करने या पुनर्प्राप्त करने के लिए किसी व्यक्ति की सहायता प्रदान करना।

प्रक्रिया में उभरने वाली किसी भी सामाजिक समस्या पर सलाह देना।

शारीरिक पुनर्निर्माण प्रदान करने हेतु

कार्य क्षमता के चिकित्सा, शारीरिक, मनोवैज्ञानिक और व्यावसायिक मूल्यांकन प्रदान करना।

Person व्यक्ति के मनोबल को बनाने के लिए, उसे अपनी क्षमताओं को पहचानने और अपने भविष्य के बारे में सकारात्मक सोचने में मदद करें।

रोजगार हेतु प्रस्ताव के रूप में व्यक्ति को रोजगार में या व्यावसायिक प्रशिक्षण के उपयुक्त पाठ्यक्रम में रखने के लिए।

आवश्यकताएँ : संगठित क्षेत्र में रोजगार को बढ़ावा देने की प्रक्रिया द्वारा लाभ उठाने के लिए, एक व्यक्ति को यह करना चाहिए :

A. कामकाजी उम्र का होना, या उसके पास आना, परन्तु पाठ्यक्रम के अंत में उपयुक्त प्लेसमेंट सुरक्षित करने के लिए बहुत पुराना नहीं है;

प्रक्रिया के अंत में, या काम करने के लिए शारीरिक और मानसिक क्षमता के पास होने की संभावना है :

पाठ्यक्रम के अंत में नौकरी प्राप्त करने की उचित संभावनाएं हैं –

व्यावसायिक मूल्यांकन और कार्य तैयार करने के लाभ तब तक खो जाएंगे जब तक कि संबंधित व्यक्ति को उचित व्यावसायिक प्रशिक्षण के साथ या उसके बिना समाप्त होने पर उपयुक्त नियुक्ति प्राप्त न हो जाए।

ए. परिचय : चुनिंदा प्लेसमेंट में सम्मिलित हैं :

सभी सामान्य सेवाओं और प्रावधानों का उपयोग करना; तथा

उन्हें अपने ज्ञात और सावधानी से मूल्यांकन की जरूरतों के अनुसार आवश्यक समायोजित करना।

मूल्यांकन, व्यावसायिक मार्गदर्शन, व्यावसायिक प्रशिक्षण या नौकरी प्रशिक्षण के बाद यह अगला कदम है और इसमें तीन अलग-अलग प्रक्रियाएं सम्मिलित हैं :

(i) व्यक्ति को जानना

(ii) नौकरी जानना

(iii) नौकरी के साथ व्यक्ति के निम्नलिखित गुणों का मिलना करना :

शैक्षणिक पृष्ठभूमि, कार्य अनुभव और आयु

पारिवारिक पृष्ठभूमि, आर्थिक, सामाजिक स्थिति और व्यवसाय

Orientation अभिविन्यास और गतिशीलता और दैनिक जीवन की गतिविधियों में प्रशिक्षण का स्तर।

बुनियादी सिद्धांत

नौकरी की शारीरिक आवश्यकताओं को पूरा करना

Av प्रशिक्षण और उपलब्ध नौकरी के मध्य संगतता

- व्यक्ति और नौकरी की आवश्यकता की संभावनाओं के बीच मिलान करना
- नियुक्ति के कारण किसी भी व्यावसायिक खतरे या दृष्टिहीन विकलांग या साथी श्रमिकों के लिए जोखिम नहीं होता है
- उन्नत सामाजिक एकीकरण
- अनुकूल काम करने की स्थितियों और पर्यावरण

Job नौकरी हेतु उपयुक्तता के आधार पर नियुक्ति, करुणा, दान या सहानुभूति नहीं।

नौकरी क्लब

परिचय : दैनिक गतिविधियों के 'पाठ योजना' कार्यक्रम का उपयोग करके परामर्शदाता द्वारा पर्यवेक्षित एक संरचित बैठक में दृष्टिहीन लोगों का एक समूह लगातार मिलता है। नौकरी लीड और कार्यालय में साक्षात्कार प्राप्त करने में आधा दिन बिताया जाता है; दूसरा साक्षा इन साक्षात्कारों में जाने में बिताया जाता है। काउंसलर बारीकी से देखता है और पर्यवेक्षण करता है क्योंकि ग्राहक लीड प्राप्त करने, नियोक्ताओं को कॉल करने एवं पत्र लिखने में व्यस्त है।

जरूरी विशेषताएँ

Counsel पर्याप्त परामर्श प्रदान करने के लिए परामर्शदाता को प्रशिक्षित करें।

Job नौकरी लीड के निर्माण पर जोर दें।

एक व्यक्ति को नौकरी बनाए रखने के लिए प्रोत्साहित करें।

Job नौकरी पाने की रैपिटी इस पर निर्भर है :

- सत्र में भाग लेने की संगति
- नई नौकरी लीड की संख्या बनाई गई
- साक्षात्कार की संख्या में सम्मिलित किया
- परामर्शदाता का ब्याज

NOTES

Other अन्य रोजगार एजेंसियों, संबंधित सरकारी विभागों, स्वैच्छिक विकास संगठनों और नियोक्ता संघों को सक्रिय रूप से शामिल करें।

कार्य स्टेशनों

परिचय : कार्य स्टेशन खुले प्लेसमेंट और प्रशिक्षण या आश्रय वाले रोजगार के मध्य एक कदम है। उम्मीदवार वास्तविक रोजगार की शर्तों के अन्तर्गत रखा गया है लेकिन औपचारिक रोजगार के बिना। उन्हें उम्मीद है कि:

वास्तविक काम करते हैं;

अन्य नियमों के लिए लागू सभी नियमों का पालन करें:

समय

वदी

काम प्रदर्शन

रोजगार की अन्य स्थितियां

जबकि नियोक्ता के पास कोई दायित्व नहीं है :

W मजदूरी का भुगतान

उपस्थिति कार्ड का रखरखाव

अचानक

H खतरों के लिए मुआवजे

Coverage बीमा कवरेज

स्थानीय कार्यान्वयन एजेंसी या सरकारी विभाग द्वारा छात्रवृत्ति, स्थानीय परिवहन, आकस्मिन व्यय और बीमा कवरेज के मामले में भुगतान प्रदान किया जा सकता है। प्रशिक्षण के अंत में, यह देखा गया है कि नियोक्ता सामान्यत: अपनी फर्म या इकाई में व्यक्ति को अवशोषित करता है।

योग्यता : यह एक उत्कृष्ट व्यवस्था के रूप में कार्य करता है जिसमें एक व्यक्ति संभावित नियोक्ता के प्रत्यक्ष अवलोकन में होता है, जो नौकरी हेतु अपनी क्षमता, प्रतिभा और अनुकूलन का अध्ययन करने का अवसर प्राप्त

करता है। दृष्टिकोण में निम्न योग्यताएँ हैं :

- दृष्टिहीन लोगों की उत्पादन क्षमता का प्रदर्शन करता है।
- अपने उत्पादन कौशल के संबंध में सहकर्मियों को आश्वासन देता है।
- रोजगार अधिकारियों को यह सक्षम करता है :

* कार्य विश्लेषण प्रदर्शन करते हैं –

* व्यक्तिगत योजना बनाओ

* नौकरी में समायोजित करने के लिए वीआईपी की सहायता करें

O प्रशिक्षण के अन्य तरीकों की अपेक्षा आर्थिक और लागत प्रभावी

O ऐसे व्यक्ति के लिए आदर्श जिसके पास कोई औपचारिक प्रशिक्षण नहीं था

O नौकरी प्रशिक्षण या क्षणिक रोजगार और खुली नियुक्ति के मध्य अंतर को कम करता है।

Tra प्रशिक्षु और संभावित नियोक्ता के बीच प्रत्यक्ष संपर्क स्थापित करता है और खुले रोजगार की संभावनाओं में सुधार करता है।

सफलता को प्रभावित करने वाले कारक : कार्य केंद्र दृष्टिकोण व्यावहारिक, परिणामी और लागत प्रभावी प्रतीत होता है, इसकी सफलता निम्नलिखित पहलुओं पर आधारित है :

- नौकरी के उचित चयन के आधार पर

  * क्षमता

  * कौशल

  * क्षमताएं और

  * ब्याज

Employ नियोक्ता एवं नियुक्ति अधिकारी द्वारा उचित पर्यवेक्षण

पूरा करने पर खुले रोजगार का विस्तार करने हेतु नियोक्ता की इच्छा

NOTES

Officials संबंधित अधिकारियों की भागीदारी

St अनुपालन, परिवहन और घटनाओं पर व्यय करने के लिए कार्यान्वयन एजेंसी की इच्छा

सबसे महत्वपूर्ण, इस दृष्टिकोण को मान लेना :

* रोजगार एक्सचेंज
* व्यावसायिक पुनर्वास केंद्र
* जिला पुनर्वास केंद्र
* स्वैच्छिक प्लेसमेंट संगठन

सामाजिक सुदृढ़ीकरण

परिभाषा : सामाजिक सुदृढ़ीकरण दृष्टिकोण रोजगार प्रक्रिया को एक अनौपचारिक नौकरी की जानकारी के रूप में प्रस्तुत करता है जिसमें नौकरी खोलने के प्रारंभिक ज्ञान वाले व्यक्ति को इस जानकारी को बेरोजगार व्यक्तियों को चुना जाता है, जो नौकरी के सूचनार्थियों को सामाजिक ढंग से पुरस्कृत करने की संभावना रखते हैं।

गुण :

Un असंगठित क्षेत्र में रोजगार हेतु प्रचलित, छोटी इकाइयां जहां भर्ती प्रक्रिया को सुव्यवस्थित नहीं किया गया है

प्रभावी जहाँ रोजगार प्रति से बहुत गंभीर समस्या उत्पन्न नहीं होती है।

रोजगार को प्रोत्साहित करने के लिए पूरक उपकरण के रूप में अपनाया जा सकता है।

उम्मीदवारों को कानूनी प्रावधानों के अन्तर्गत रोजगार की तलाश करने में सक्षम कर सकते हैं जिसके लिए वे अन्यथा पात्र हैं

नौकरी शिविर

परिभाषा : इसमें भावी नियोक्ता और बेरोजगार विकलांग व्यक्तियों को बड़े स्तर पर आमंत्रित करना और रोजगार प्रक्रिया में तीव्रता लाने के लिए पारस्परिक बातचीत के लिए उपयुक्त शर्तें प्रदान करना शामिल है। इसे विशेष

रोजगार एक्सचेंजों और विकलांग व्यक्तियों के लिए अक्षम कल्याण स्वैच्छिक संगठन द्वारा अपनाया गया है।

गुण :

नियोक्ता को बड़ी संख्या में विकलांग व्यक्तियों से मिलना, जांचना और साक्षात्कार करना एवं सबसे उपयुक्त लोगों का चयन करना पड़ता है।

विकलांग व्यक्ति उसी दिन साक्षात्कार की बड़ी संख्या का सामना करता है।

Developing विकासशील देशों के लिए उपयुक्त जहां बेरोजगारी और लंबी चयन प्रक्रियाएं पायी जाती हैं।

सीमाएं :

एक मजबूत 'नियोक्ता-पुल' आवश्यक है

By अपने आप से सम्पूर्ण प्रक्रिया नहीं है।

Employment रोजगार प्रक्रिया का केवल एक पहलू

प्रोत्साहन, प्रेरणा और अनुवर्ती आवश्यक हैं

संस्थागत प्लेसमेंट सेवाएं

प्रक्रिया

Employ भावी नियोक्ता के मध्य निम्नलिखित विवरण देने वाले व्यक्ति का एक विस्तृत पुनः प्रारंभ करें :

* शैक्षणिक योग्यता

* पिछले अनुभव

* विशेषज्ञता का क्षेत्र

* आयु तथा ब्याज के क्षेत्रों

नियोक्ताओं से प्राप्त प्रस्ताव प्रदर्शित करें

व्यक्तियों को नौकरी के लिए आवेदन करने हेतु प्रोत्साहित करें।

साक्षात्कार के लिए सविधाएं और बनियादी ढाँचा प्रदान करें।

NOTES

प्रारंभिक साक्षात्कार की व्यवस्था करें।

यह दृष्टिकोण विभिन्न पेशेवरों की नियुक्ति के लिए अत्यन्त प्रभावशाली साबित हुआ है, खासकर अच्छी तरह से स्थापित और प्रतिष्ठित संस्थानों और विश्वविद्यालयों के पेशेवर पाठ्यक्रमों की पेशकश के मामले में निम्नलिखित संस्थानों में रोजगार में तीव्रता लाने के लिए विकास संस्थान और नियुक्ति एजेंसियां इस तकनीक को अपना सकती हैं :

रोजगार में तीव्रता लाने के लिए विकास संस्थान और नियुक्ति एजेंसियां इस तकनीक को अपना सकती हैं :

- फिजियोथेरेपी, मालिश
- स्टेनोग्राफी, टच टाइपिंग
- टेलीफोन ऑपरेटिंग
- कम्प्यूटर प्रोग्रामिंग, डेटा प्रविष्टि
- सामाजिक कार्य, कार्यालय प्रबंधन, विपणन

विधान उपाय

वंचित समूहों के लिए रोजगार के अवसर प्रदान करने के साधनों में से एक के रूप में उपयुक्त कानून के अधिनियमन के माध्यम से है :

- नौकरी आरक्षण

Specific विशिष्ट प्रकार की नौकरियों का पदनाम

Employment रोजगार में प्राथमिकताओं या प्राथमिकताओं का आवंटन कानून बनाने के लिए स्वामित्व और आवश्यकता पर विभिन्न प्लेटफॉर्मों पर सदैव बहस की गई है; कानून के पक्ष में तर्क हैं :

- लक्ष्य समूह के लिए नौकरियां बनाता है।
- रोजगार के लिए सरकारी समर्थन का प्रदर्शन करता है।
- कानून लागू करने वाली एजेंसी बनाता है जो नियोक्ता को इस संबंध में मजबूर कर सकती है।

- संभावित समूह को पहचानता है और लक्षित समूह को उचित स्थिति प्रदान करता है।
- रोजगार में तीव्रता लाने की अन्य तकनीकों का समर्थन करता है। ऐसे कानूनों के खिलाफ तर्क हैं :
- विधान बाध्यता सिद्धांत में गलत है।
- रोजगार की स्वतंत्रता के संवैधानिक अधिकार के प्रति
- ऐसे व्यक्तियों को लगता है कि वे पीड़ितों पर नियोजित हैं, योग्यता पर नहीं
- उन्हें उन नौकरियों के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं जिनके लिए वे उपयुक्त नहीं हैं

प्रतिस्पर्धी खुले रोजगार को प्रोत्साहित करने के लिए अन्य उपायों को पूर्ववत कर सकते हैं।

कानून, स्वयं ही, रोजगार के कारण नहीं हो सकता है। इसे एक मजबूत कानून लागू करने वाली एजेंसी द्वारा समर्थित होना जरूरी है जो सार्वजनिक खजाने पर काफी खर्च कर सकता है। विधायी उपायों की सीमाएँ जो भी हो सकती हैं; उनके अस्तित्व और कार्यान्वयन सदैव अन्य उपायों का समर्थन करते हैं।

विकलांग व्यक्तियों (समान अवसर, अधिकारों का संरक्षण और पूर्ण भागीदारी) अधिनियम, 1995 भारत की संसद ने इस अधिनियम को 22 दिसंबर, 1995 को एशिया और प्रशांत क्षेत्र में विकलांग लोगों की पूर्ण भागीदारी और समानता पर उद्घोषणा पर प्रभाव डालने के लिए अधिनियमित किया। भारत के राष्ट्रपति ने 1 जनवरी, 1996 को इस अधिनियम को अपनी अनुमति प्रदान की और यह 7 फरवरी, 1996 से लागू हुआ। यह अधिनियम बहुत व्यापक है और निगरानी और कार्यान्वयन मशीनरी, अक्षमता की रोकथाम, शिक्षा, रोजगार से संबंधित प्रावधान सम्मिलित है। सकारात्मक कार्यवाई, nondiscrimination, अनुसंधान और जनशक्ति विकास और विकलांग व्यक्तियों के लिए संस्थानों की मान्यता।

रोजगार पर अध्याय VI निम्नलिखित प्रावधानों पर विचार करता है :

Establish प्रतिष्ठानों में पदों की पहचान जिन्हें व्यक्तियों के लिए आरक्षित किया जा सकता है।

NOTES

विकलांगता (एस-32)।

प्रत्येक विकलांगता (एस-33) हेतु पहचाने गए पदों में प्रत्येक प्रतिष्ठान में रिक्तियों के 3 प्रतिशत की सीमा तक नौकरी आरक्षण।

Such ऐसी खाली जगहों (एस-34) में विकलांग व्यक्तियों की नियुक्तियों से संबंधित प्रत्येक प्रतिष्ठान से जानकारी मांगना। Reservation ऐसे आरक्षण (एस-35) के संबंध में प्रतिष्ठानों के अधिकार में किसी भी प्रासंगिक रिकॉर्ड या दस्तावेजों तक पहुँच के लिए विशेष रोजगार एक्सचेंजों को सशक्त बनाना।

Vac रिक्तियों के लिए प्रावधान आगे नहीं किया जाना चाहिए (एस-36)।

Identified नियोजित पदों (एस-37) भरने के संबंध में नियोक्ताओं द्वारा अभिलेखों का रखरखाव।

विकलांग व्यक्तियों के रोजगार सुनिश्चित करने हेतु स्थानयी प्राधिकरणों और उपयुक्त सरकारों द्वारा विशेष योजनाओं का निर्माण (एस-38)।

From सरकार से अनुदान प्राप्त करने वाले सभी शैक्षिक संस्थानों में 3 प्रतिशत सीटों का आरक्षण (एस-39)।

Poverty ऐसे गरीबी उन्मूलन योजनाओं में 3 प्रतिशत का आरक्षण ऐसे व्यक्तियों के लिए लाभ (एस-40)

Employ नियोक्ता को सार्वजनिक और निजी दोनों क्षेत्रों में प्रोत्साहन यह सुनिश्चित करने के लिए कि कम से कम पांच प्रतिशत कार्यदल ऐसे व्यक्तियों (एस-41) से बना है।

विकलांग व्यक्तियों के लिए प्रतिस्पर्धा रोजगार को बढ़ावा देने के लिए विकलांग व्यक्तियों ने अत्यधिक बोल्ड प्रावधान किए हैं। हालांकि, इन प्रावधानों का नतीजा इसके प्रभावी कार्यान्वयन पर निर्भर करेगा। इसी प्रकार कई राज्य सरकारों ने नौकरी आरक्षण पर कानून बनाया है। गुजरात में, 250 से अधिक श्रमिकों को रोजगार देने वाले प्रतिष्ठानों और उपक्रमों में एक प्रतिशत नौकरियों के आरक्षण के परिणामस्वरूप बड़ी संख्या में विकलांग व्यक्तियों को रोजगार हुआ है। रोजगार को बढ़ावा देने पर ये सभी तकनीक पारस्परिक रूप से अनन्य नहीं हैं। रोजगार को बढ़ाने में विभिन्न दृष्टिकोणों का एक संयोजन बहुत प्रभावी हो सकता है। जो भी दृष्टिकोण चुना जाता है, ध्यान

NOTES

हमेशा व्यक्ति होना चाहिए। ग्राहक केंद्रित दृष्टिकोण आवश्यक है। आर्थिक पुनर्वास निश्चित रूप से किसी भी पुनर्वास कार्यक्रम का अंतिम उद्देश्य होना चाहिए।

शिक्षण सिद्धान्त

सभी छात्रों को स्वीकार करने, दोस्तों को रखने, सफला का अनुभव करने, मस्ती करने और सुरक्षित महसूस करने की आवश्यकता है। दृष्टि विकार वाले छात्रों को इन तमाम जरूरतों का सामना करना पड़ता है। जबकि इन जरूरतों को पूरा करने के लिए उन्हें कुछ अतिरिक्त समर्थन की आवश्यकता हो सकती है। स्कूल समुदाय के सभी सदस्य। कर्मचारी, परिवार तथा छात्र। सकारात्मक और सहायक स्कूल वातावरण प्रदान करने में भूमिका निभाएं। शिक्षक सहयोगी जो दृष्टि विकार में प्रशिक्षित शिक्षकों के साथ काम करते हैं, सीखने के अनुभवों और स्कूल गतिविधियों की पूरी श्रृंखला में भाग लेने के लिए दृष्टि विकार वाले छात्रों की सहायता करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यदि छात्रों को यह अनुभव करना है कि वे एक समावेशी वातवरण के सदस्य हैं, तो स्कूल समुदाय के सभी सदस्यों के लिए यह आवश्यक है :

- एक सकारात्मक रवैया
- विशिष्ट ज्ञान और कौशल
- एक लचील दृष्टिकोण

इन सामग्रियों का प्रमुख उद्देश्य एक शिक्षक सहयोगी के रूप में अपने प्रासंगिक जानकारी प्रदान करना है ताकि आप प्रीस्कूल, प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालयों में दृष्टि विकार वाले छात्रों के साथ काम करने के लिए बेहतर तरीके से तैयार हो सकें। चूंकि ये छात्र सभी व्यक्ति हैं और विभिन्न प्रकारों और समर्थन के स्तर की आवश्यकता है, इसलिए व्यक्तिगत छात्र के लिए विशिष्ट जनकारी प्रदान करना संभव है। सामान्य सिद्धांतों और रणनीतियों पर चर्चा की जाएगी, और सुझाव प्रस्तुत किये गए हैं कि आप अतिरिक्त ज्ञान और कौशल हासिल करने के लिए कहाँ जा सकते हैं और जिन छात्रों के साथ आप काम कर रहे हैं, उनके बारे में सवालों के जवाब ढूंढ़ने के लिए अनुभाग है। आँख या दृश्य प्रणाली के किसी भी निकाय योग्य स्थिति को इंगित करने के लिए इस प्रकाशन में उपयोग की जाने वाली दृष्टि विकृति शब्द का

NOTES

परिणाम है जिसके कारण सीखने के लिए दृश्य कार्य कम हो गया है। दृष्टि हानि के कारण रोग, क्षति या चोट दृश्य प्रणाली के किसी भी हिस्से में हो सकती है, यानी आँख, मस्तिष्क के दृश्य मार्ग या मस्तिष्क के दृश्य केंद्र। दृष्टि विकार कर सकते हैं :

- जन्म पर उपस्थित रहें
- बीमारी या दुर्घटना द्वारा किसी भी समय होता है।
- एक चिकित्सा स्थिति या सिंड्रोम का हिस्सा बनें।

बच्चों में अत्यधिक दृश्य स्थितियां स्थिर हैं और दृष्टि अपेक्षाकृत अपरिवर्तित बनी हुई है। हालांकि, कुछ स्थितियां प्रगतिशील हैं, जिसके परिणामस्वरूप अलग-अलग समय में कम दृष्टि आती है। दृष्टि की जगह कुछ भी नहीं ले सकती है। एक साथ सभी अन्य इंद्रियां एक नजर में दृष्टि की जानकारी की गहराई या विस्तार प्रदान नहीं कर सकती है। विजन अस्तित्व के लिए एक सहायता है; सीखने में उपयोग की जाने वाली एक प्रमुख भावना, सामाजिक बातचीत में और दुनिया की कई संस्कृतियों के विभिन्न कलात्मक अभिव्यक्तियों की सराहना करते हुए। क्वींसलैंड में, करीब 1200 छात्र (कुल स्कूल आबादी का 4%) रहे हैं।

दृष्टि विकार होने के रूप में पहचाना गया। इस समूह में 55 ब्रेल उपयोगकर्ता सम्मिलित हैं। इन छात्रों को दृष्टि विकार में प्रशिक्षित शिक्षकों से विशेषज्ञ सहायता प्राप्त होती है। यह समझना महत्वपूर्ण है कि छात्रों को सबसे उचित समर्थन प्रदान करने हेतु दृष्टि हानि वाले छात्र कैसे देखते हैं और सीखते हैं। इस खंड में फोकस समझने पर है कि आंख कैसे काम करती है और सीखने की प्रक्रिया में दृष्टि का कार्य कैसे करती है। समर्थन शिक्षक : दृष्टि विकार (एसटी: छठी) शिक्षक की सहयोगियों की भूमिका में मदद करने के लिए प्रत्येक छात्र की आंख की स्थिति को समझाएगा।

विशिष्ट कौशल शिक्षण

दृष्टि विकार वाले अधिकांश छात्र प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालयों में हैं। वे वैकल्पिक रणनीतियों और संशोधनों के साथ प्रमुख शिक्षण क्षेत्रों में उनके देखे गए सहकर्मियों के रूप में एक ही पाठ्यक्रम करेंगे। जैसे- जापानी जैसे कुछ माध्यमिक विषयों जटिल प्रतीकों की पहचान और लेखन के साथ समस्याएं पेश कर सकते हैं। स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा आंदोलन और

भागीदारी में कुछ प्रतिबंध प्रस्तुत कर सकती है; विज्ञान और मैनुअल कला विषयों को सुरक्षित भागीदारी की अनुमति देने के लिए उपकरण और उपकरणों में संशोधन की आवश्यकता होगी। स्कूल कार्यक्रमों में पहुँच और भागीदारी सुनिश्चित करने हेतु, दृष्टि विकार वाले छात्रों को अतिरिक्त या वैकल्पिक सामग्री और सहायता की आवश्यकता हो सकती है।

उदाहरणों का पालन करें।

- संचार : ब्रेल साक्षरता और संख्यात्मकता, अन्य ब्रेल कोड, सुनने के कौशल, की-बोर्ड कौशल, हस्तलेखन, गैर मौखिक संचार।
- अभिविन्यास और गतिशीलता : शरीर और पर्यावरण जागरूकता, स्थानिक ज्ञान और समझ, स्वतंत्र यात्रा।
- सामाजिक कौशल : सामाजिक रूप से स्वीकार्य व्यवहार, आत्म सम्मान, आत्म वकालत, भाषा का उचित प्रयोग।
- अवधारणा विकास : एक में सुविधाओं के बेहतर ज्ञान का विकास। वातावरण।
- मोटर कौशल : ठीक एवं सकल मोटर क्षमताओं।
- प्रौद्योगिकी का उपयोग : उच्च और निम्न तकनीकी उपकरणों, अनुकूली तकनीक का प्रयोग।
- दृष्टि दक्षता प्रशिक्षण : कार्यात्मक दृष्टि का सबसे अच्छा उपयोग।
- मनोरंजन कौशल : अवकाश गतिविधियों के अन्तर्गत भाग लेने की क्षमता।
- दैनिक जीवन हेतु गतिविधियां : आत्म देखभाल, संगठन कौशल, समय प्रबंधन।
- व्यावसायिक और रोजगार के अवसर : समय प्रबंधन, पारस्परिक कौशल, कार्य कौशल।

दृष्टि विकार में विशेषज्ञता के साथ शिक्षकों से विशेष समर्थन।

- अन्य सहयोगी पेशेवर।

NOTES

- शिक्षक सहयोगी समर्थन।
- विशेषज्ञ क्षेत्रों में स्कूल कर्मचारियों द्वारा उचित अनुवर्ती।
- विशेष उपकरण एवं अनुकूली तकनीक।
- वैकल्पिक शिक्षण रणनीतियों।
- ब्रेल, स्पर्श, ऑडियो और प्रिंट में उपयुक्त प्रारूप सामग्री।
- अतिरिक्त पाठ्यचर्या क्षेत्रों जो दृष्टि विकार हेतु विशिष्ट हैं।
- मूल्यांकन के लिए विशेष विचार, उदा। परीक्षा के लिए अतिरिक्त समय।
- शब्द दृष्टि छात्रों के दो समूहों में हानि पहुंचाता है।
- कम दृष्टि लोग जो प्रिंट का प्रयोग करते हैं।

और छोटे या कोई दृष्टि वाले लोग जो ब्रेल का उपयोग करते हैं।

- दृष्टि विकार वाले छात्रों में आंख की स्थितियों की एक विस्तृत श्रृंखला होती है जो सीखने के माहौल में उनके कामकाज को प्रभावित करती है।
- प्रत्येक छात्र पर जानकारी इकट्ठा करने के लिए दृष्टि के माप की एक श्रृंखला का उपयोग किया जाता है।
- अधिकांश विद्यालयों के समय अपने छात्रों के वर्षों में कम दृष्टि वाले एड्स और विशेष तकनीक का उपयोग किया जाता है।
- सीखने के माहौल में प्रत्येक छात्र कैसे काम करता है। इससे सबंधित जानकारी कार्यक्रम विकसित करने और सहायता करने के लिए रणनीतियों को तैयार करने में मदद करती है।
- अंधापन और कम दृष्टि के बारे में गलतफहमी समझाई गई है।
- दृष्टि विकार वाले छात्र योजना, प्रशिक्षण, अतिरिक्त सीखने के अवसरों हेतु प्रावधान, उचित सामग्री और उपकरणों की तैयार के साथ अधिकांश पाठ्यक्रमों में पहुंच और भाग ले सकते हैं।

जीवन कौशल

जीवन कौशल वे कौशल हैं जो लोगों को समाज में स्वतंत्र यप से रहने की अनुमति देते हैं। उनमें शामिल हैं :

- दैनिक जीवन की गतिविधिया (एडीएल)
- व्यावसायिक और करियर कौशल
- अवकाश तथा मनोरंजन कौशल।

ये कौशल समुदाय में स्वतंत्र यप से और सुरक्षित रूप से रहने के लिए दृष्टि विकार वाले छात्रों की सहायता करते हैं।

दैनिक जीवन की गतिविधियां (एडीएल)

एडीएल कौशल में सम्मिलित हैं :

- खाने, शौचायल, ड्रेसिंग, सौंदर्य, कपड़े देखभाल, फोन उपयोग, समय बताने, और दवा प्रबंधन का व्यक्तिगत प्रबंधन।
- डालने, काटने, छीलने, मापने, फैलाने, स्टोव उपयोग, नुस्खा प्रबंधन, अवयवों का भंडारण और खाद्य पदार्थों सहित खाद्य तैयारी।
- धन की मान्यता, धन संभालने एवं खरीद, बजट और बैकिंग सहित मनी प्रबंधन।
- बिस्तर प्रबंधन, सफाई, धोने, सुखाने, इस्त्री, सिलाई, संगठन और सरल मरम्मत कार्य सहित गृह प्रबंधन।

व्यावसायिक और करियर कौशल

प्रौद्योगिकी ने सभी लोगों के लिए करियर विकल्प बढ़ाए हैं, परन्तु विकल्पों की सीमा अभी भी विकलांग लोगों के लिए सीमित है। छात्रों को संभावित व्यवसायों के बारे में मार्गदर्शन की आवश्यकता होगी। कुछ छात्रों को और पराशर्म की आवश्यकता हो सकती है, सामान्यतः उन लोगों को जो बिगड़ती आँखों की स्थिति या दुर्घटना या बीमारी के माध्यम से अपनी दृष्टि खो चुके हैं।

इस सलाह में जानकारी सम्मिलित हो सकती है :

- यथार्थवादी करियर लक्ष्यों
- नौकरी की अवश्यकताएं
- उपलब्ध सहायता।

कार्यस्थल के लिए आवश्यक कौशल समस्त स्कूली शिक्षा वर्षों में विकसित किए जाते हैं। इनमें समयबद्धता, निर्देशों का पालन, उपकरण और व्यक्तिगत संगठन की देखभाल शामिल हो सकती है। दृष्टि विकार वाले छात्रों को अपने साथियों के समान मानकों को बनाए रखने के लिए आवश्यक होना चाहिए, लेकिन इन कौशल को विकसित करने हेतु कुछ अन्य सहायता की आवश्यकता हो सकती है।

अवकाश और मनोरंजन कौशल

दृष्टि के हानि वाले छात्रों के लिए कुछ गतिविधियों तक पहुंच सीमित हो सकती है। अवसरों को विस्तृत करने के लिए, कुछ संशोधन और स्किलिंग आवश्यक हो सकती है।

- शिल्प और शौक को संशोधित करने की आवश्यकता हो सकती है, जहां असेंबली विवरण केवल प्रिंट में उपलब्ध हैं।
- कुछ बोर्ड और कार्ड गेम बड़े प्रिंट या ब्रेल में उपलब्ध हैं। छात्र को देखे जाने वाले साथी के साथ खेलना प्रारंभ करने से पहले खेलों के संचालन को सिखाया जाना चाहिए।
- खेल सहित शारीरिक गतिविधियों।

व्यक्तिगत गतिविधियों में कम से कम संशोधन की आवश्यकता होती है (उदा। बुशवॉकिंग, तैरीकी, शिविर, एथलेटिक्स)। टीम गेम को दृष्टिहीनता वाले छात्र के लिए संशोधन की आवश्यकता होती है। छात्र को फास्ट बॉल गेम जैसी गतिविधियों के साथ समस्याएं हो सकती हैं।

कुछ खेलों में विकलांगों के लिए अंतर्राष्ट्रीय नियम लागू होते हैं। कुछ गेम विशेष रूप से दृष्टि विकार के लिए विकसित किए गए हैं, और देखे गए बच्चे भी खेल सकते हैं (स्वाश, अंधा क्रिकेट, गोलबॉल)। विभिन्न प्रकार के मनोरंजन एवं अवकाश गतिविधियों के लिए एक्सपोजर छात्रों को सूचित विकल्प बनाने की अनुमति प्रदान करता है।

सामाजिक कौशल

समाजीकरण प्रारंभिक इंटरैक्शन के साथ शुरू होता है। प्रारंभिक अनुलग्नक आगे सामाजिक विकास और सकारात्मक आत्म अवधारणा के लिए आधार

बनाता है। अनुभव की चौड़ाई होने से बच्चे को आत्मविश्वास, आत्मविश्वास और मूल्यवान महसूस करने में सहायता मिलती है। जबकि कई सामाजिक कौशल आमतौर पर दृष्टि से छात्रों द्वारा आकस्मिक रूप से सीखे जाते हैं, लेकिन दृष्टिहीनता वाले लोगों को इन कौशल को विकसित करने के अवसरों की आवश्यकता हो सकती है।

दृष्टि की हानि समुदाय से संबंधित जागरूकता और ज्ञान को सीमित कर सकती है –

जिम्मेदारियां, और व्यक्तियों के बीच संबंध। दृष्टि विकार वाले छात्र दूसरों के मध्य बातचीत को देखने में सक्षम नहीं हो सकते हैं और इससे ज्ञान और समझ को प्रभावित किया जा सकता है:

- विभिन्न अर्थ जो चुप्पी व्यक्त कर सकते हैं।
- व्यक्तिगत स्थाने के बारे में सामाजिक सम्मेलन।
- वार्तालाप प्रारंभ करने और जारी रखने के लिए सम्मेलन।

अन्य छात्रों की तरह, सामाजिक परिस्थितियों की एक श्रृंखला को संभालने के लिए क्षमताओं को विकसित करने के लिए दृष्टि विकार वाले छात्रों के लिए आवश्यक है (उदा। नकारात्मक प्रतिक्रियाएं, विशिष्ट समूहों में भाग लेने के व्यवहार को अपनाना)।

कुछ छात्र ऐसे व्यवहार प्रदर्शित कर सकते हैं जो सामाजिक रूप से स्वीकार्य नहीं हैं। शिक्षक सहयोगी छात्र को उचित व्यवहार विकसित करने में शिक्षक की सहायता करता है। एक दृष्टि विकार के शैक्षिक प्रभाव प्रत्येक छात्र के रूप में व्यक्तिगत हैं।

- अनुभवों और अवसरों की एक विस्तृत श्रृंखला तक पहुंच के साथ छात्रों को अधिकांश स्कूल गतिविधियों में भाग ले सकते हैं, बशर्ते उचित सामग्री उपलब्ध हो।
- दृष्टि सामान्य संवेदी विकास, विशेष रूप से आंदोलन में एक प्रमुख भूमिका निभाती है, गंभीर कम दृष्टि वाले बच्चे या अंधे को कौन सुरक्षित रूप से घूमने के लिए सीखना चाहता है। अभिविन्यास और गतिशीलता प्रशिक्षण कार्यक्रम विशेषज्ञ शिक्षकों द्वारा प्रदान किए जाते हैं। शिक्षपक सहयोगी भी सम्मिलित हो सकते हैं।

- अधिकांश बच्चों की शिक्षा पर्यावरण के साथ अवलोकन और बातचीत द्वारा होती है। यह आकस्मिक शिक्षा एक दृष्टि विकार वाले छात्रों के लिए आसानी से सुलभ नहीं है। अवधारणाओं के विकास में सहायता के लिए सीखने के अवसर आयोजित किए जाते हैं।

- Vision दृष्टि विकार वाले छात्र अपने दैनिक जीवन, खेल और अवकाश और करियर में सहायता करने के लिए कौशल सीखते हैं। जिससे वे समुदाय में यथासंभव स्वतंत्र यप से भाग ले सकें।

- सामाजिक कौशल का विकास दैनिक जीवन का एक महत्वपूर्ण तत्व है। विजन विकार के परिणामस्वरूप साजिक मुठभेड़ों में उचित व्यवहार के बारे में जागरूकता की कमी हो सकती है। इस क्षेत्र में कुछ प्रशिक्षण बच्चे को सामाजिक परिस्थितियों की एक विस्तृत श्रृंखला में भाग लेने में सहायता कर सकते हैं।

शैक्षणिक कार्यक्रम

पता लगाने की प्रक्रिया का उपयोग विकलांग छात्रों की विशेषज्ञ शैक्षणिक सहायता आवश्यकताओं की पहचाने के लिए किया जाता है। इस प्रक्रिया में और प्रासंगिक शैक्षणिक कार्यक्रमों की सिफारिश करने में कई पेशेवर सम्मिलित हैं।

व्यक्तिगत शिक्षा योजना

छात्र की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए एक व्यक्तिगत शिक्षा योजना (आईईपी) विकसित की गई है।

आईईपी द्वारा वितरित किया जाता है :

- कक्षा या विषय क्षेत्र शिखक या शिक्षक

- दृष्टि विकार में प्रशिक्षित शिक्षक

[सहायता शिक्षक: एक इकाई या क्लस्टर स्कूल या सलाहकार जाने वाले शिक्षक में दृष्टि विकार: दृष्टि विकार]

- आवश्यकतानुसार अन्य पेशेवर।

अन्य पेशेवरों में शामिल हो सकते हैं :

- विशेषज्ञ शिक्षक (जैसे शारीरिक शिक्षा, संगीत)
- मार्गदर्शन अधिकारी
- चिकित्सक (फिजियोथेरेपिस्ट, व्यावसायिक चिकित्सक, भाषण। भाषा रोगविज्ञान)
- अभिविन्यास और गतिशीलता विशेषज्ञ, सीखने का समर्थन शिक्षक, एकीकरण शिक्षक
- अन्य विषयों से पेशेवर, जैसे नेत्र विशेषज्ञ, ऑप्टोमेट्रिस्ट।

अन्य वयक्ति जो भी सम्मिलित हो सकते हैं शिक्षक की दिशा में काम करेंगे। इनमें शामिल हो सकते हैं :

- शिक्षक सहायक
- स्वयंसेवकों
- साथियों।

छात्रों के साथ काम करते समय टीमवर्क महत्वपूर्ण है। एक सफल शिक्षा कार्यक्रम सुनिश्चित करने के लिए सभी पारस्परिक संबंधों तथा सभी सदस्यों के बीच सम्मान आवश्यक है। सभी छात्रों की शैक्षणिक जरूरतों में भिन्नता है। दृष्टि विकार वाले छात्रों की जरूरतें कई कारकों पर निर्भर करती हैं जैसे दृष्टि की डिग्री, आंख की स्थिति की शुरूआत की उम्र, छात्र की क्षमता और प्रेरणा एवं आयु।

पाठ्यक्रम तक पहुँच प्राप्त करने के लिए, दृष्टिहीनता वाले छात्रों को अतिरिक्त कौशल सिखाया जाना चाहिए। इस तरह के कौशल में ब्रेल, की-बोर्डिंग, और अभिविन्यास और गतिशीलता शामिल है। अध्यापन सुनिश्चित करने के लिए शिक्षण रणनीतियों तथा विधियों को संशोधित करने और विशेष संसाधनों और उपकरणों को व्यवस्थित करने की आवश्यकता हो सकती है।

शिक्षक सहयोगी को अवगत होना चाहिए :

- छात्र की दृश्य स्थिति/और किसी भी अन्य चिकित्सीय स्थितियों
- छात्र दृष्टि का उपयोग कैसे करता है।

NOTES

- कम दृष्टि सहायक उपकरण इस्तेमाल किया।
- उपयुक्त उपकरण, संसाधन और प्रौद्योगिकी की उपलब्धता, पहुंच और उपयोग।
- अन्य स्रोतों से समर्थन।
- सीखने के माहौल में आवश्यक संशोधन।

आपकी भूमिका के साथ-साथ पता लगाने की प्रक्रिया तथा आईईपी कार्यान्वयन में शामिल होने के नाते, शिक्षक सहयोगी शिक्षक और छात्र को दृष्टि दृष्टि में सहायता करता है :

छात्र को सीधा समर्थन -

2 सीखने/शिक्षण पर्यावरण की तैयारी

विशेषज्ञ उपकरण और संसाधनों के अधिग्रहण और भंडारण

4 विशेषज्ञ उपकरण के रखरखाव का आयोजन

5 अनुकूलन तथा विकास संसाधन।

सीखने/शिक्षण पर्यावरण की तैयारी

शिक्षक सहयोगी सीखने/शिक्षण पर्यावरण तैयार करते हैं। इसमें विभिन्न प्रकार के कार्य सम्मिलित हो सकते हैं जैसे कि कोलाज के लिए स्पर्श सामग्री एकत्र करना या परीक्षा प्रश्न पत्र तैयार करना। एक शिक्षक सहयोगी द्वारा किए गए कर्तव्यों के कुछ उदाहरण हैं :

- कक्षा में वस्तुओं के लिए ब्रेल लेबल तैयार करना।
- कमरे में उपकरण स्थापित करना।
- विशेष संसाधनों को इकट्ठा करना या स्थापित करना (जैसे विज्ञान या शारीरिक शिक्षा में)
- ब्रेल एवं बड़ी प्रिंट सामग्री सुनिश्चित करना उपलब्ध है।
- एक सतत और सुरक्षित वातावरण की तैयारी।

विशेषज्ञ उपकरण का रखरखाव

आपके स्कूल द्वारा उधार ली गई उपकरण को नियमित रखरखाव की आवश्यकता हो सकती है। सर्विसिंग प्रमुख ब्रेकडाउन से बचाता है। विजन इम्पेरमेंट सर्विसेज कुछ स्कूलों के रखरखाव में आपके स्कूल की सहायता के लिए एक तकनीशियन को रोजगार देती है। मरम्मत के लिए कुछ उपकरणों को सप्लायर में लौटना पड़ सकता है। आपको यह आवश्यक हो सकता है :

- स्कूल में उपकरण का स्थान रिकॉर्ड करें।
- क्षतिग्रस्त उपकरणों की मरम्मत की व्यवस्था करें।
- उपकरण की सेवा के रजिस्टर को बनाए रखें।
- उधार वस्तुओं को नुकसान की रिपोर्ट करें।
- अस्थायी प्रतिस्थापन आदेश।

विस्तरित कोर पाठ्यक्रम : अवधारणा का क्षेत्र

प्रत्येक विकलांगता के लिए आवश्यक है कि अक्षमता–विशिष्ट कौशल तथा क्षमताओं का एक व्यापक सेट संबोधित किया जाए। दृश्य विकार वाले छात्रों के लिए, विकलांगता कौशल नौ डोमेन के भीतर हैं और सामूहिक रूप से "विस्तारित कोर पाठ्यक्रम" (ईसीसी) के रूप में जाना जाता है। जब ईसीसी में डोमेन व्यवस्थित एवं जानबूझकर निर्देशक टीम के सभी सदस्यों द्वारा संबोधित किए जाते हैं, तो स्कूल की पर्यावरण के लिए छात्र की स्वतंत्रता और तत्परता नाटकीय रूप से सुधार की जाती है। एक दृश्य विकार कक्षा के बाहर अच्छी तरह से काम करने के सभी क्षेत्रों को प्रभावित कर सकता है। ईसीसी पढ़ने, लिखने और गणना से परे फैली हुई है। इसमें कोर पाठ्यक्रम में निर्देश से लाभ उठाने और कार्यात्मक आजादी हासिल करने के लिए आवश्यक कौशल सम्मिलित हैं। विस्तारित कोर पाठ्यक्रम अंधे और दृष्टिहीन लोगों के लिए समानता के अवसर प्रदान करता है; यह सिखाने के लिए यह मूल मानव अधिकार से इनकार करना है। (फिल हैटलेन, 2005, देखें/सुनें: एक अद्भुत आंदोलन।) ईसीसी मूल्यांकन के लिए निम्नलिखित आईडीईए आवश्यकताओं से उत्पन्न होता है : उन बच्चों के लिए जो दृष्टिहीन हैं, उनके विकास के लिए अकादमिक और कार्यात्मक प्रदर्शन के

NOTES

वर्तमान स्तर को दस्तावेज करने के मूल्यांकन विकलांग शिक्षा शिक्षा अधि नियम (आईडीईए) संघीय व्यक्तियों द्वारा व्यक्तिगत शिक्षा कार्यक्रम (आईईपी) की आवश्यकता होती है और विशेष रूप से डिज़ाइन किया गया निर्देश: विशेष रूप से डिजाइन किए गए निर्देश का अर्थ है बच्चे के विकलांगता के परिणामस्वरूप बच्चे की अनूठी जरूरतों को पूरा करने के लिए इस भाग के तहत योग्य बच्चे की आवश्यकताओं के लिए उपयुक्त, सामग्री, पद्धति या निर्देश की डिलीवरी।

कोर पाठ्यक्रम क्या है ?

शिक्षक उच्च विद्यालय स्नातक द्वारा छात्र द्वारा सीखने के लिए अपेक्षित ज्ञान तथा कौशल के रूप में "कोर पाठ्यक्रम" को परिभाषित करते हैं। आमतौर पर, कोर पाठ्यक्रम में अकादमिक विषयों से संबंधित ज्ञान और कौशल शामिल होते हैं। कोर पाठ्यक्रम की निपुणता वह है जो माता-पिता तथा शिक्षक दोनों स्कूल में अकादमिक सफलता के लिए आवश्यक है, और बाद में जीवन में। ज्यादातर राज्यों में, छात्रों के लिए मामलों में अन्य मानदंडों को पूरा करने के अवसर प्रदान किए जाते हैं जब वे छात्र कोर पाठ्यक्रम की अकादमिक मांगों को पूरा नहीं कर सकते हैं। कोर के संस्करण हो सकते हैं। हमारे देश में, प्रत्येक राज्य हाईस्कूल स्नातक स्तर के लिए न्यूनतम मानकों की जिम्मेदारी लेता है। यह कोर पाठ्यक्रम लगभग सभी सीखने के लिए नींव बन गया है, किंडर गार्टन से हाई स्कूल के माध्यम से अंधे और दृष्टिहीन विकलांग छात्रों के संबंध में, मौजूदा कोर पाठ्यक्रम, जो कि सिघेड छात्रों के लिए विकसित है, पूरी तरह से उपयुक्त एवं आम तौर पर उपलब्ध है। चूंकि दृष्टिहीन लोगों के शिक्षकों ने पाठ्यचर्या अनुकूलन में विशेषज्ञता विकसित की है, इसलिए यह संभव होना चाहिए।

विकसित किया गया कोई भी पाठ्यक्रम ले लो और दृष्टिहीन विकलांग शिक्षार्थियों के लिए इसे आसानी से उपलब्ध कराएं। यदि दृश्य हानि केवल सीखने की सामग्रियों तक पहुंच की समस्या प्रस्तुत करती है, तो दृष्टिहीन शिक्षक यह मानते हैं कि यह सच है कि बच्चा नियमित कक्षा जिसमें सभी पाठ्यचर्या सामग्री तक पहुंच है, उतनी ही तैयार है जितनी उसके देखे गए सहपाठियों के रूप में सीाने के लिए। लेकिन अधिकांश पेशेवरों की एक मजबूत स्थिति है कि दृष्टिहीन लोगों के लिए एक विस्तारित कोर पाठ्यक्रम है जिसके लिए सीखने के अतिरिक्त क्षेत्रों की आवश्यकता है। ऐसे अनुभव तथा अवधारणाएं हैं, जो आकस्मिक और आकस्मिक रूप से देखे गए छात्रों

द्वारा सीखी जाती हैं जिन्हें व्यवस्थित रूप से और अनुक्रमिक रूप से दृष्हीन व्यक्ति को सिखाया जाना चाहिए। दृष्टिहीन लोगों के लिए मुख्य पाठ्यक्रम दृष्टिहीन छात्रों के समान नहीं है। वास्तव में, यह बहुत बड़ा और अधिक कठिन है। दृष्टिहीन विकलांग शिक्षार्थियों के लिए एक कोर पाठ्यक्रम की अवधारणा पर कई वर्षों से पेशेवरों और माता-पिता ने चर्चा की है। इस कई चीजें कहा जाता है। इसे विशेष पाठ्यक्रम, या विशेष जरूरतों, अद्वितीय पाठ्यक्रम, या अनूठी जरूरतों, गैर-शैक्षिक पाठ्यक्रम, दोहरी पाठ्यक्रम, और हाल ही में अक्षमता-विशिष्ट पाठ्यक्रम के रूप में जाना जाता है।

ये अन्य शर्तें कभी-कभी महत्वपूर्ण मुद्दे पर व्याकुलता होती हैं। शब्द पाठ्यक्रम का उपयोग कई वर्षों से दृष्टिहीन छात्रों की बुनियादी शैक्षिक-आवश्यकताओं को परिभाषित करने के लिए किया गया है। यह प्रस्तावित किया जाता है कि दृष्टिहीन छात्रों के लिए कोर पाठ्यक्रम शब्द इस आबादी के लिए बुनियादी शैक्षिक आवश्यकताओं को परिभाषित करने के लिए उपयोग किया जाता है। यह मूल कोर पाठ्यक्रम के रूप में एक संदेश बताता है। विशिष्ट, अद्वितीय एवं अक्षमता-विशिष्ट जैसे शब्द की आवश्यकता नहीं है, और वास्तव में, बुनियादी शैक्षिक आवश्यकताओं के लिए गलत अर्थ दे सकते हैं। शब्द दृष्टिहीन लोगों के लिए शैक्षिक आवश्यकताओं की दो भिन्न-भिन्न सूचियाँ का अर्थ। एक सूची में ए के तत्व सम्मिलित हैं।

पारंपरिक कोर पाठ्यक्रम। दूसरा "अक्षमता-विशिष्ट" आवश्यकताओं की एक सूची है। दो सूचियां शिक्षकों को विकल्पों के साथ प्रदान करती हैं, जैसे एक सूची की आवश्यकता होती है और अन्य में ऐच्छिक शामिल होते हैं। केवल एक सूची होनी चाहिए तथा इसमें दृष्टिहीन लोगों के लिए आवश्यक कोर पाठ्यक्रम होना चाहिए। विशेष जरूरतों का अस्तित्व, या अंधे और दृष्टिहीन लोगों के लिए एक अद्वितीय कोर पाठ्यक्रम, वर्षों से जाना जाता है। सौंदर्य कौशल के विषय के संदर्भ अब तक की तारीख है-

सामाजिक बातचीत कौशल की आवश्यकता साहित्य में 1929 में और फिर 1948 में दिखाई देती है। 1953 और 1975 के बीच, दैनिक जीवन कौशल और दृष्टिहीन लोगों के सम्बन्ध में लिखी किताबों और लेखों के दो दर्जन से अधिक संदर्भ हैं। अभिविन्यास और गतिशीलता और कैरियर शिक्षा के बारे में कई और लेख और दस्तावेज लिखे गए हैं। विस्तारित कोर पाठ्यक्रम अब प्रचालित किया जा रहा है - इसकी आवश्यकता दशकों से ज्ञात नहीं हैं। हालांकि राज्य कोर पाठ्यक्रम की सामग्री को अलग-अलग निर्धारित करते हैं,

NOTES

अधिकांश राज्यों ने मांग की कि बुनियादी विषयों में दक्षताओं को महारत प्राप्त की जाए। निम्नलिखित उदाहरण इन बुनियादी विषयों को शामिल करता है और दृष्टिहीन लोगों के लिए विस्तारित कोर पाठ्यक्रम जोड़ता है।

विस्तारित कोर पाठ्यक्रम (ईसीसी) में क्या शामिल है?

ईसीसी में नौ डोमेन क्षेत्र शामिल हैं। ये हैं : 'मेरे जीवन के हर दिन मैं जो दो चीजें उपयोग करता हूँ वह सामाजिक कौशल और अभिविन्यास तथा गतिशीलता कौशल है।

जब मैं स्कूल में था तब मेरे शिक्षकों के लिए सबसे कम प्राथमिकताएं थीं। (के। कार्ले, दृश्य विकार वाले लोगों की शिक्षा के लिए अंतर्राष्ट्रीय परिषद के भाषण में दृश्य विकार वाले वयस्क।)

1. सामान्य पाठ्यक्रम तक पहुँचने के लिए आवश्कय मुआवजा या कार्यात्म कौशल।

   साक्षरता से संबंधित क्षेत्रों, जैसे ब्रेल, हस्तलेख कौशल, कम दृष्टि वाले उपकरणों और सामरिक या वस्तु प्रतीक।

   संचार, वैकल्पिक संचार प्रणालियों, जैसे स्पर्श या सहित

   ऑब्जेक्ट उन्मुख सिस्टम।

   विशेष निर्देश, जैसे स्थानिक का प्रतिनिधित्व करने के लिए कई विधियां,

   पर्यावरण, तथा अस्थायी और/या शरीर अवधारणाओं, जिनमें बहुत छोटे, बड़े, या सीधे अनुभवी होने के लिए खतरनाक।

2. संवेदी दक्षता। छात्रों को सामान्य पाठ्यक्रम और विस्तारित कोर पाठ्यक्रम के अन्य क्षेत्रों से लाभ उठाने के लिए सामरिक एवं श्रवण कौशल में संरचित और व्यवस्थित निर्देश की आवश्यकता होती है।

3. अभिविन्यास और गतिशीलता। पूरे पर्यावरण में सुरक्षित और कुशल यात्रा। यात्रा कौशल बचपन में शुरू होते हैं और केवल उन लोगों तक ही सीमित नहीं हैं जो मोबाइल, अंधे हैं, या अतिरिक्त विकलांगता के बिना हैं।

4. सामाजिक बातचीत कौशल। दृश्य विकास सामाजिक रूप से एक छात्र को अलग कर सकते हैं और असंख्य गैर-मौखिक सामाजिक संकेतों से लाभ उठाने की अपनी क्षमता को प्रभावित कर सकते हैं। इसका छात्र के व्यक्तिगत जीवन तथा भविष्य के रोजगार पर असर पड़ सकता है।

5. सहायक प्रौद्योगिकी। "वास्तविक समय" में जानकारी तक पहुंच दृश्य विकार वाले छात्रों के लिए एक महत्वपूर्ण मुद्दा है। छात्रों के लिए सामान्य पाठ्यक्रम तक पहुँचने और संचार बढ़ाने के लिए उच्च और निम्न तकनीक रणनीतियां महत्वपूर्ण हो सकती हैं।

6. स्वतंत्र जीवन कौशलः जीवन के साथ सहायता करने वाले कौशल के असंख्य मुख्य रूप से दृष्टि से सीखे जाते हैं। दृश्य विकार वाले छात्रों को व्यक्तिगत, वित्तीय तथा/या घर प्रबंधन कौशल से संरचित निर्देश की आवश्यकता होती है। परिवार के सदस्य इन कौशल सीखने में मदद कर सकते हैं।

7. मनोरंजन और अवकाश कौशल। छात्रों को मनोरंजन और अवकाश गतिविधियों के संपर्क में आने की आवश्यकता है, क्योंकि एक्सपोजर आकस्मिक रूप से नहीं हो सकता है। छात्रों को एक गतिविधि सुलभ बनाने के लिए आवश्यक संशोधनों के सम्बन्ध में अवगत कराया जाना चाहिए।

8. करियर शिक्षा। अवलोकन के द्वारा रोजगार विकल्पों के बारे में जानने की सीमित क्षमता के साथ, छात्रों को विभिन्न प्रकार के करियर विकल्पों और व्यक्तिगत लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए आवश्यक कौशल के बारे में सिखाया जाना चाहिए।

9. आत्मनिर्भरता। आत्मनिर्णय में निर्णय लेने, आत्म-वकालत, और व्यक्तिगत जिम्मेदारी शामिल हैं। "कौशल" के विपरीत, ये कौशल क्षमता के लिए नेतृत्व करते हैं। असहायता, "और सभी उम्र के लिए सभी उम्र तथा क्षमताओं के लिए उपयुक्त हैं।

प्रत्येक माता-पिता चाहता है कि उनके बच्चे को सार्थक सामाजिक संबंध हों। माता-पिता के लिए, यह एक "वैकल्पिक" गतिविधि नहीं है। नौकरी में एक संतोषजनक जीवन और सफलता के लिए यह महत्वपूर्ण है। ईसीसी माता-पिता की चिंताओं को संबोधित करता है।

विस्तारित कोर पाठ्यक्रम (ईसीसी) के बारे में आईडीईए क्या कहता है?

आईडीईऐ विकलांगता-विशिष्ट कौशल की आवश्यकता को कई तरीकों से संबोधित करता है। मूल्यांकन के संबंध में आईडीईए से: उन बच्चों के लिए जो दृष्टिहीन हैं, मूल्यांकन

विकलांग शिक्षा कार्यक्रम (आईईपी) के संघीय व्यक्तियों द्वारा व्यक्तिगत शिक्षा कार्यक्रम (आईईपी) के विकास के लिए अकादमिक तथा कार्यत्मक प्रदर्शन के वर्तमान स्तर को दस्तावेज करने के लिए आवश्यक है। (34 सीएफआर 300.320)

विशेष रूप से डिजाइन किए गए निर्देशों के संबंध में आईडीईए से: विशेष रूप से डिजाइन किए गए निर्देश का अर्थ है बच्चे के विकलांगता के परिणामस्वरूप बच्चे की अनूठी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए इस भाग के तहत योग्य बच्चे की आवश्यकताओं के लिए उपयुक्त, सामग्री, पद्धति या निर्देश की डिलीवरी। (34 सीएफआर 300.3 9 (बी) (3) (i)) आईडीईए के अनुसार: विशेष रूप से डिजाइन किए गए निर्देश का अर्थ है अनुकूलन, जो कि किसी की ज़रूरतों के अनुरूप है बच्चे के विकलांगता के फलस्वरूप बच्चे की अनूठी जरूरतों को पूरा करने के लिए इस भाग के तहत योग्य बच्चा, सामग्री, पद्धत या निर्देश की डिलीवरी। (34 सीएफआर 300.39 (बी) (3) (i)) (जोर जोड़ा गया) दृश्य विकार वाले छात्रों के लिए "विशेष रूप से डिजाइन किया गया निर्देश", और मूल्यांकन के आधार पर, विशेष रूप से डिजाइन किया गया है निर्देश विस्तारित कोर पाठ्यक्रम (ईसीसी) है। "विस्तारित कोर पाठ्यक्रम" उन ज्ञानों, अवधारणाओं तथा कौशल को संदर्भित करता है जो आमतौर पर दृष्टि से छात्रों द्वारा आकस्मिक रूप से सीखे जाते हैं, जिन्हें अनुक्रमिक रूप से उस छात्र को प्रस्तुत किया जाना चाहिए जो अंधेरा है या कम दृष्टि है। विस्तारित कोर पाठ्यक्रम क्षेत्रों में शामिल हैं :

1. छात्र को "शिक्षा में शामिल होने और सामान्य शिक्षा पाठ्यक्रम में प्रगति करने में सक्षम बनाने के लिए दृश्य विकार से परिणाम की आवश्यकता होती है।

2. आईडीईए द्वारा आवश्यक अनुसार अन्य शैक्षिक आवश्यकताओं को बच्चे की अक्षमता के परिणामस्वरूप"।

NOTES

दृश्य विकार की उपस्थिति के लिए आवश्यक है कि इन कौशलों का विशेष मूल्यांकन वाले शिक्षकों द्वारा इन छात्रों को पूरी तरह से मूल्यांकन किया जाए तथा व्यवस्थित रूप से सिखाया जाए। विशेष निर्देश के बिना, दृष्टि हानि वाले बच्चे अपने साथियों की गतिविधियों से अवगत नहीं हो सकते हैं या अपने आसपास के सम्बन्ध के अन्य महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त नहीं कर सकते हैं।

4.14 विस्तारित कोर पाठ्यक्रम में जानकारी के लिए चयनित स्रोत शामिल संसाधन विस्तारित कोर पाठ्यक्रम सामग्री क्षेत्र संसाधन मानचित्रण ईसीसी डोमेन के अनुसार क्रमबद्ध संसाधनों की एक सूची। प्रत्येक डोमेन के भीतर शामिल एक छोटा है।

आकलन, पाठ्यक्रम, और संसाधनों की सूची। आपके जिल में छठी पेशेवर सूचीबद्ध जानकारी खोजने में सहायक होना चाहिए।

विस्तारित कोर पाठ्यक्रम (ईसीसी) कार्य योजना

एक सारणी जो संबोधित करने के लिए क्षेत्रों, सेवाओं तथा व्यक्तियों को जिम्मेदार क्षेत्रों का एक सिंहावलोकन प्रदान करती है। कार्यात्मक कौशल स्क्रीनिंग सूची से स्कोरिंग मानदंड ये मानदंड छात्र की क्षमताओं की एक सामान्य समझ प्रदान कर सकते हैं। यह उम्मीद नहीं की जाती है कि एक छात्र को एक कौशल प्राप्त करने के लिए सभी "4" प्राप्त करना होगा। हालांकि, 50% रेंज में स्कोर बढ़ते निर्देश की आवश्यकता को इंगित करते हैं। मूल पैमाने ने 17-बिंदु पैमाने प्रदान किया। दक्षता के लिए, 9-पॉइंट स्केल भी पेश किया जाता है। संक्षिप्त पैमाने में, तिमाही बिंदु विकल्प हटा दिए गए हैं। यह टूलबॉक्स के भीतर लिंक करने के लिए एक अलग दस्तावेज है।

निम्नलिखित दस्तावेज इंटरनेट के माध्यम से उपलब्ध हैं अंधेरे तथा दृश्यमान छात्रों के लिए विस्तारित कोर पाठ्यक्रम क्या है?

4.16 विस्तारित कोर पाठ्यक्रम (आरईसीसी) के लिए संसाधन विस्तारित कोर पाठ्यक्रम (आरईसीसी) के लिए संसाधन टीएसबीवीआई वेबसाइट पर हैं। यह डेटाबेस लगभग 1,000 संसाधनों की एक एनोटेटेड सूची है तथा डोमेन के अनुसार क्रमबद्ध है (उदा।)

आत्मनिर्भरता, सामाजिक बातचीत, स्वतंत्र जीवन) और मीडिया प्रकार (उदा।, वेबसाइट, मोबाइल/टैबलेट के लिए ऐप्स, लेख)। मानक ईसीसी डोमेन के अलावा, विभिन्न छात्र विशेषताओं (जैसे, प्रारंभिक बचपन, डेफब्लिंड) और

NOTES

मानक कोर पाठ्यक्रम (उदाहरण के लिए, गणित, कला, शारीरिक शिक्षा) के उन डोमेन के संबंध में अन्य डोमेन, क्योंकि वे कम से कम छात्र के लिए आवेदन करते हैं या कोई दृष्टि प्रदान नहीं की जाती है, साथ ही साथ माता-पिता और शैक्षिक पेशेवरों के लिए डोमेन भी उपलब्ध कराए जाते हैं।

आरईसीसी में अन्य वेबसाइटों, माता-पिता द्वारा विकसित जानकारी और लिंक सम्मिलित हैं-

पेशेवर, संसाधन जो निःशुल्क हैं, तथा संसाधन जिन्हें खरीदा जा सकता है।

आयोवा विस्तारित कोर पाठ्यक्रम (ईसीसी) प्रक्रिया मैनुअल यह मैनुअल सेवा प्रदाताओं और प्रशासकों के लिए जानकारी प्रदान करता है। इसमें निम्नलिखित क्षेत्रों में जानकारी शामिल है:

योग्यता

सभी ईसीसी सामग्री क्षेत्रों में कार्यक्रम योजना

पाठ योजना सहित निर्देश

प्रदर्शन निगरानी सहित मूल्यांकन

प्रत्येक अध्याय "त्वरित देखो प्रक्रिया गाइड" से आरम्भ होता है जो उस अध्याय की सामग्री को सारांशित करने वाली तालिका है। इस गाइड की उपयोगी विशेषताओं की सीमित सूची में शामिल हैं :

- एक ईसीसी को मूल्यांकन और प्रोटोकॉल की आवश्यकता होती है,

  कॉर्टिकल दृश्य विकार वाले छात्रों के लिए एक्सेस मॉडल,

- कठोरता तथा प्रासंगिता ढांचे,

- यात्रा करने वाला सेवा वितरण मॉडल,

- ईसीसी पाठ योजना ढांचा, और

उच्च गुणवत्ता वाले आईईपी दस्तावेजों के विकास और दस्तावेज़ीकरण पर मार्गदर्शन

आयोवा विस्तारित कोर पाठ्यक्रम (ईसीसी) संसाधन गाइड

दस्तावेज़ आयोवा विस्तारित कोर पाठ्यक्रम (ईसीसी) प्रक्रिया मैनुअल की तुलना में अधिक विस्तृत संसाधन मार्गदर्शिका में निम्नलिखित बुनियादी क्षेत्रों में जानकारी शामिल है :

- योग्यता
- सभी ईसीसी सामग्री क्षेत्रों में कार्यक्रम योजना
- ईसीसी सामग्री क्षेत्रों

निर्देशों के लिए फॉर्म

- परिशिष्ट

ईसीसी सामग्री क्षेत्र अनुभाग में कार्यक्रम योजना में शामिल हैं :

सामग्री क्षेत्रों और उम्र और/या ग्रेड क्लस्टर द्वारा आयोजित कौशल के चेकलिस्ट के सम्बन्ध में जानकारी; और जरूरतों के आकलन, मूल्यांकन प्रोटोकॉल, कार्य योजनाओं, सहयोग और परामर्श रिकॉर्ड, और सेवा रिकॉर्ड के लिए फॉर्म।

संसाधन खरीद के लिए उपलब्ध हैं

यह एक बहुत ही छोटी सूची है तथा उन संसाधनों तक ही सीमित है जो सभी ईसीसी डोमेन पर जानकारी प्रदान करते हैं। ये प्रकाशन ईसीसी में शामिल सभी डोमेनों का एक अवलोकन और / या पता प्रदान करेंगे। विशिष्ट डोमेन पर ध्यान केंद्रित करने वाले अनगिनत प्रकाशन भी उपलब्ध हैं। विस्तारित कोर पाठ्यक्रम (आरईसीसी) के संसाधनों में डोमेन द्वारा सूचीबद्ध संसाधनों की एक पूर्ण और एनोटेटेड सूची है, इवल: विजुअल इम्पायर छात्रों का मूल्यांकन मूल्यांकन दृश्य विकार वाले छात्र एकत्रित करने की एक कठिन, बहुआयामी प्रक्रिया है।

उपयुक्त उपकरण तथा तकनीकों का उपयोग कर जानकारी। अनौपचारिक मूल्यांकन औपचारिक उपायों और प्रकाशित उपकरणों के उपयोग के लिए एक आवश्यक पूरक माना जाना चाहिए। छात्रों के लिए पाठ्यचर्या फोकस और योजना प्रभावी निर्देशक प्रोग्रामिंग निर्धारित करने के लिए, कर्मचारियों को अकादमिक और गैर-शैक्षणिक आवश्यकता के सभी क्षेत्रों में कार्य करने के

NOTES

छात्र के स्तर को अवश्य जानना चाहिए। ईवल्स पांच-भाग सेट है जिसमें निम्न शामिल हैं :

CC ईसीसी क्षेत्रों के लिए मूल्यांकन की दो किताबें

प्रैक्टिकल अकादमिक और बेसिक स्किल्स के छात्रों के लिए अकादमिक विषय क्षेत्रों के मूल्यांकन के लिए एक पुस्तक :

- स्वतंत्र लिविंग कौशल आकलन एवं निरंतर मूल्यांकन
- टीएपीएस व्यापक आकलन और निरंतर मूल्यांकन

दृष्टिबाधितों के लिए सामान्य तौर पर उपयोग किये जाने वाले कम लागत तथा उन्नत सहायक उपकरण –

समावेशी शिक्षा के साथ-साथ हम समावेशी लेखन तथा पठन की ओर भी अग्रसर हो रहे हैं। सार्वभौमिक डिजाइन की अवधारणा को संयुक्त राष्ट्र संघ के विकलांग व्यक्तियों के अधिकारों के संरक्षण कन्वैनशन (UNCRPD) के मूल सिद्धान्त के रूप में स्वीकार किया गया है। एक तरफ मुख्य धाराओं वाले उपकरण जैसे कि कम्प्यूटर और मोबाइल फोन ने दृष्टिबाधितों को पढ़ने एवं लिखने की सुविधा प्रदान की है तो दूसरी तरफ डिजिटल प्रौद्योगिकी मानक, यथा डेजी (DAISY), ई-पब (E-Pub), यूनिकोड मुख्यधारा से जुड़े प्रकाश को कम मूल्या वाली सुलभ पठन सामग्री बनाने में सहायता करते हैं। सामाजीकरण के नये तरीके, जैसे-फेसबुक (Facebook), वाट्स-अप (Whatsapp), ट्विटर (Twitter) आदि समय व्यतीत करने के तरीके के रूप में ही नहीं, बल्कि समावेशी सामाजिक नेटवर्क बातचीत, शिक्षा तथा जानकारी के बहुत प्रभावी तरीकों के रूप से भी उभर रहे हैं। प्रौद्योगिकी के ऐसे कई पक्ष हैं जिनकी सहायता से दृष्टिबाधितों द्वारा स्वयं पढ़े जाने वाले पठन सामग्री बनाई जा सकती है। ऐसी पठन सामग्री को पढ़ने हेतु इस प्रकार के कई उपकरण भी उपलब्ध हैं।

दृष्टिबाधित बालकों की शिक्षा को सुगम बनाने के लिए कुछ उपकरणों या साधनों का प्रयोग किया जाता है। इन्हें मुख्यतः दो भागों में विभाजित कर सकते हैं –

(A) परम्परागत उपकरण

(B) आधुनिक उपकरण

(A) परम्परागत उपकरण – परम्परागत उपकरण वे उपकरण हैं जिनका प्रयोग दृष्टिबाधित बालकों को शिक्षा देने के लिए बहुत पहले से ही किया जा रहा है। इनमें से कुछ आज भी प्रयोग किये जाते हैं एवं कुछ उपकरणों का प्रयोग बन्द या कम हो गया है। इसका कारण उन उपकरणों की कुछ कमियाँ हैं।

परम्परागत को निम्नलिखित चार प्रमुख भागों में विभाजित किया जा सकता है-

(क) लेखन उपकरण

(ख) गणितीय उपकरण

(ग) अनुपस्थिति व चलिस्णुता उपकरण

(घ) ब्रेल उत्पादन उपकरण

(क) लेखन उपकरण– दृष्टिबाधित बालकों की शिक्षा के लिए पूर्व में कई प्रकार की विधियाँ अपनाई गईं। इन सभी विधियों में ब्रेल सबसे अधिक सुगम एवं प्रचलित रही है। ब्रल लिखने के लिए कई प्रकार के उपकरणों का प्रयोग किया जाता है, जो निम्नलिखित हैं-

1. **ब्रेल स्लेट**– ब्रेल लेखन हेतु ब्रेल स्लेट का प्रयोग किया जाता है। इसमें ब्रेल लिखने के लिए खाँचे बने होते हैं जिनसे एक नुकीली पिन अर्थात् स्टाइलस की सहायता से दबाकर ब्रेल के बिन्दु उभारे जाते हैं। यह आरम्भिक अवस्था में लिखने-सिखाने का एक बहुत सशक्त साधन है। ब्रेल स्लेट या ब्रेल लेखन पार्टी दो प्रकार की होती है। पहली लकड़ी द्वारा निर्मित तथा दूसरी प्लास्टिक से बनी होती हैं।

2. **स्टेन्सबी** – ब्रेल लेखन हेतु एक विशेष प्रकार की मशीन प्रयोग में लाई जाती थी, जिसे स्टेन्सबी कहते थे। इस मशीन से ब्रेल का एक अक्षर लिखने के लिए एक साथ उस अक्षर के बिन्दुओं को दबाया जा सकता था। इस मशीन में ब्रेल के छः बिन्दुओं के लिए छः बटन बने होते थे।

3. **ब्रेलर** – ब्रेलर ब्रेल लिखने की एक ऐसी मशीन है जिसके द्वारा एक बार में ब्रेल के एक अक्षर के सभी बिन्दु उभारे जा सकते हैं।

NOTES

इस मशीन में ब्रेल के छः बिन्दुओं के लिए छः बटन होते हैं, जिससे बटनों को एक साथ दबाया जाता है। ब्रेलर से ब्रेल लिखते समय क्या लिखा गया है, उसे साथ-ही-साथ पढ़ा भी जा सकता है। ब्रेलर की सहायता से बहुत तेजी से ब्रेल लिखी जा सकती है। भारत में तीन प्रकार के ब्रेलर-पार्किन्स ब्रेलर, ताज ब्रेलर तथा मार्बर्ग ब्रेलर प्रयोग में लाये जाते हैं।

4. **पॉकेट फ्रेम–** ब्रेल स्लेट का आकार बड़ा होने के कारण उसे इधर-से-उधर ले जाना एक कठिन कार्य होता है। इसे ध्यान में रखते हुए पॉकेट फ्रेम का निर्माण किया गया। जैसा कि नाम से ही ज्ञात होता है, इस यन्त्र को जेब में रखकर इधर-से-उधर ले जाया जा सकता है।

5. **स्टाइलस–** ब्रेल स्लेट एवं पॉकेट पर ब्रेल लिखने के लिए स्टाइलस का प्रयोग किया जाता है। इस यन्त्र में धातु की नुकीली संरचना होती है तथा उसके ऊपर पकड़ने के लिए प्लास्टिक से बनी संरचना होती है। ब्रेल लिखते समय जिस बिन्दु को दबाना है, उस बिन्दु पर स्टाइल्स रखकर उसे दबाते हैं।

(ख) गणितीय उपकरण– दृष्टिबाधित बालकों के गणित शिक्षण के लिए विभिन्न प्रकार के उपकरण प्रयोग में लाये जाते हैं। उच्च कक्षाओं में गणित में कुछ सामग्री दृश्य माध्यम में होती है जिससे विभिन्न उपकरणों का प्रयोग करके स्पर्श माध्यम में बदल दिया जाता है। इससे दृष्टिबाधित बालकों को गणित शिक्षण में आसानी होती है। दृष्टिबाधित बालकों को गणित पढ़ाने के लिए विभिन्न उपकरण निम्नलिखित हैं-

1. **टेलर फ्रेम** – एक ऐसा यन्त्र है जिसकी सहायता से अंकगणित एवं बीजगणित में प्रयुक्त वाले चिह्न व संख्याओं को प्रकट करते हैं या लिखते हैं। जैसा कि नाम से विदित है, इसमें एक लकड़ी का फ्रेम होता है, जिसके अन्दर एल्यूनिनियम की एक मोटी चादर (Sheet) लगी होती है। इस चादर में अष्टकोणीय छिद्र बने होते हैं। इन छिद्रों में विशेष प्रकार से बने टाइप्स को भिन्न-भिन्न प्रकार से लगाकर संख्याएँ, विभिन्न चिह्न एवं प्रतीकें को लिखा जाता है।

2. **अबेकस** – अबेकस एक ऐसा यन्त्र है जिसकी सहायता से विभिन्न अंकगणितीय संक्रियाएँ की जाती हैं, जिसमें गिनती, गुणा, भाग, जोड़ना,

घटाना आदि शामिल हैं। अबेकस का सर्वप्रथम प्रयोग चीन में किया गया। अबेकस आयताकार होता है जिसमें लम्बवत् रूप में लोहे की 13 या 15 मोटी तारें होती हैं जिसमें मोती पिरोये हुये होते हैं एवं एक तार में पाँच मोती होते हैं।

3. **ज्यामितीय किट–** बिना किसी उपकरण की सहायता से दृष्टिबाधित बालकों को रेखागणित पढ़ाना व विभिन्न रेखागणितीय प्रत्यय देना एक बहुत कठिन कार्य है, क्योंकि रेखागणित के अधिकतर प्रत्यय दृश्य आधारित होते हैं। इस कठिनाई को दूर करने के लिए एक ज्यामितीय किट राष्ट्रीय दृष्टिबाधित संस्थान, देहरादून द्वारा विकसित की गयी, जिसमें दृष्टिबाधित बालकों को रेखागणित के विभिन्न प्रत्यय देने के लिए कई यन्त्रों का समावेश किया गया।

4. **स्पर्शीय ज्यामितीय बोर्ड–** स्पर्शीय ज्यामितीय बोर्ड एक ऐसा बोर्ड है, जिस पर रेखागणित के विभिन्न प्रत्ययों को बनाकर आसानी से समझा जा सकता है। इस बोर्ड में लकड़ी के बोर्ड पर जाली लगी होती है जिस पर कोई भी कागज रखकर यदि नुकीली चीज से कोई आकृति बनाई जाए तो पेपर के दूसरी ओर उसी आकृति का चित्र बन जाता है।

5. **बनहम ज्यामितीय यन्त्र–** पश्चिम के देशों में ज्यामिति के चित्र को बनाने हेतु बनहम यन्त्र का प्रयोग किया जाता था। इस यन्त्र में लकड़ी का एक आयताकार बोर्ड होता है, जिस पर छिद्र बने हुए होते हैं और कागज पर निशान बनाने के लिए एल्यूमीनियम की छोटी-छोटी कीलनुमा पिन होती हैं। इसका चलन भारत में सम्भव नहीं हो पाया।

(B) आधुनिक उपकरण

1. **कम्प्यूटर के लिए स्क्रीन रीडिंग सॉफ्टवेयर –** कम्प्यूटर सभी के लिए पढ़ने एवं लिखने का उत्कृष्ट साधन है। कम्प्यूटर में स्क्रीन रीडर उपलब्ध होता है, तब स्क्रीन रीडर सॉफ्टवेयर टेक्स्ट-टू स्पीच सॉफ्टवेयर (TTS) की सहायता से प्रासंगिक सूचना को बालकर बताता है। स्क्रीन रीडर की गुणवत्ता उसके टेक्स्ट टू स्पीच सॉफ्टवेयर पर निर्भर करती है। हम अपने स्क्रीन रीडर में विभिन्न आवाजों कोसुन सकते हैं। अगर हमारे कम्प्यूटर में कई टेक्स्ट टू स्पीच सॉफ्टवेयर उपलब्ध होते हैं।

उदाहरण– जावा, विंडो आइज, सुपरनोवा (JAWS, Window Eyes, Supernova) आदि।

2. स्क्रीन रीडर युक्त मोबाइल फोन– आधुनिक मोबाइल फोन के लिए भी स्क्रीन रीडर विकसित किये गये हैं। दृष्टिबाधिता की कार्य क्षमताओं को बढ़ाने वाली कुछ विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

- ऐड्रेस बुक (Address Book) पढने की सुविधा
- बहुभाषी शब्द कोश
- जी.पी.एस. (GPS) आधारित संचलन
- ई–मेल (E-Mail) लेखन एवं पठन
- कक्षा में व्याख्या एवं छोटे सन्देश ध्वन्यक्ति करना।
- अलार्म घड़ी आदि।

कम्प्यूटर और मोबाइल फोन के लिए स्क्रीन आवर्धन सॉफ्टवेयर – फॉन्ट आकार बढ़ाना, अग्रभूमि तथा पृष्ठभूमि रंग और स्पष्ट रूप से पहचान योग्य माउस प्वाइंटर (Mouse Pointer) अल्प दृष्टि वाले एक व्यक्ति को कम्प्यूटर का उपयोग करने की सुविधा देते हैं। स्क्रीन आवर्धन सॉफ्टवेयर आँखों में तनाव को कम करने के लिए वाणी का प्रयोग भी करते हैं।

परीक्षापयोगी प्रश्न

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. प्राथमिक तथा माध्यमिक स्तर पर अंधेपन के प्रभावों की व्याख्या कीजिए।
2. चुनिंदा शैक्षिक व्यवसायों का वर्णन कीजिए।
3. शिक्षण सिद्धान्तों की विवेचना कीजिए।
4. विस्तारित कोर पाठ्यक्रम से आप क्या समझते हैं? स्पष्ट कीजिए।
5. दृष्टिबाधितों की सहायक सामग्री का उल्लेख कीजिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. न्यूरोलॉजिकल असमान्ताएँ से आप क्या समझते हैं ?
2. भाषा तथा मौखिक संज्ञान का उल्लेख कीजिए।
3. स्थानिक प्रतिनिधित्व से आप क्या समझते हैं ?
4. रोगजार प्रक्रिया से आपका क्या तात्पर्य है ?
5. उपकरणों का रख–रखाव किस प्रकार किया जाता है? स्पष्ट कीजिए।

5 बहरापन-अंधापन

NOTES

अध्याय में सम्मिलित विषय-सामग्री :

- उद्देश्य
- प्राक्कथन
- बधिरता की आई.ई.डी.ई. के अन्तर्गत परिभाषा।
- बहरे-अंधों का प्रसार।
- बहरे-अंधों के निदान हेतु पात्रता।
- दोहरी संवेदी हानि की परिभाषा।
- दृष्टिविकार तथा वैध अंधापन।
- दैनिक जीवन की गतिविधियों पर बहरेपन-अंधेपन के प्रभाव।
- बहरेपन की जाँच, मूल्यांकन, पहचान तथा हस्तक्षेप रणनीतियाँ।
- प्रारंभिक संचार विकास को बढ़ावा देना। तरीके, सहायक उपकरण तथा प्रथाएँ।
- बधिरता वाले छात्रों के अभिविन्यास तथा शैक्षिक आवश्यकताओं को सम्बोधित करना।
- परीक्षापयोगी प्रश्न

उद्देश्य–

इस अध्याय अध्ययन के पश्चात् आप निम्न तथ्यों को समझ सकेंगे-

- बधिरता की आई.ई.डी.ई. के अन्तर्गत परिभाषा।
- बहरे-अंधों का प्रसार।
- दोहरी संवेदी हानि की परिभाषा।
- दृष्टिविकार तथा वैद्य अंधापन।
- दैनिक जीवन की गतिविधियों पर बहरेपन-अंधेपन के प्रभाव।
- बहरेपन की जाँच, मूल्यांकन, पहचान तथा हस्तक्षेप रणनीतियाँ।
- प्रारंभिक संचार विकास को बढ़ावा देना। तरीके, सहायक उपकरण तथा प्रथाएँ।
- बधिरता वाले छात्रों के अभिविन्यास तथा शैक्षिक आवश्यकताओं को सम्बोधित करना।

NOTES

प्राक्कथन

सुनवाई और दृष्टि विकार पुराने वयस्कों में सामान्य पुरानी स्थितियां हैं जिन्हें एकल संवेदी विकलांगता के रूप में बड़े पैमाने पर अध्ययन किय गया है। दोहरी संवेदी हानि (डीएसआई), या समवर्ती सुनवाई एवं दृष्टि विकार, पुराने वयस्कों में भी होता है लेकिन कम अच्छी तरह से समझ में आता है। ऐतिहासिक रूप से, सुनवाई और दृष्टि की हानि का पुनर्वास, क्रमशः ऑडिओलॉजिस्ट और ऑप्टोमेट्रिस्टर्स/नेत्र रोग विशेषज्ञों द्वारा किया गया है, डीएसआई वाले व्यक्तियों के लिए विषयों के बीच छोटी बातचीत के साथ। इन विषयों में चिकित्सकों को पता है।

दैनिक जीवन एवं संचार की गतिविधियों के लिए श्रवण और दृष्टि कार्य का महत्व; हालांकि, डीएसआई वाले व्यक्तियों के लिए संयुक्त पुनर्वास कार्यक्रम कम हैं। ऑडियोलॉजिस्ट के लिए, दृष्टि विकार वाले व्यक्ति ऑडियो लॉजिकल पुनर्वास श्रवण धारणा प्रशिक्षण, संचार रणनीतियों प्रशिक्षण, और परामर्श के द्वारा इलाज किया जाता है। श्रवण हानि वाले व्यक्ति अक्सर संचार सुधारने के लिए दृष्टि संकेतों पर भरोसा करते हैं (जैसे, भाषण पढ़ना) और उनके प्रवर्धन उपकरणों का उपयोग और देखभाल करने के लिए (उदाहरण के लिए, बैटरी बदलना, दैनिक सफाई)। इसी प्रकार, श्रवण हानि वाले व्यक्ति कमजोर पड़ने और अंधेरे पुनर्वास कार्यक्रमों में अद्वितीय चुनौतियों क उत्पादन कर सकते हैं। दृष्टिहीन हानि तथा कानूनी अंधापन वाले व्यक्तियों को अक्सर ऑप्टिकल और गैर ऑप्टिकल कम दृष्टि वाले उपकरणों के साथ प्रदान किया जाता है, जिनके लिए अवलोकन या "बात करने" उपकरणों जैसे घड़ियों, टेप पर किताबें, या बार-कोडित लेबल पाठकों को बढ़ाने के लिए श्रवण संकेतों की आवश्यकता हो सकती है। डीएसआई वाले व्यक्तियों के प्रभावी पुनर्वास, व्यक्ति को वैकल्पिक संवेदी इनपुट का उपयोग करने की अक्षमता से बाधित किया जा सकता है।

क्षतिपूर्ति फैशन। यदि एक संवेदी हानि की तुलना में डीएसआई के कार्यात्मक और मनोवैज्ञानिक प्रभाव के सम्बन्ध में अधिक जानकारी प्राप्त होती है तो पुनर्वास प्रयासों को भी बढ़ाया जा सकता है। हालांकि सबूत निर्णायक नहीं हैं, हालांकि कुछ साहित्य बताते हैं कि डीएसआई एक संवेदी हानि से अधिक कमजोर है, जबकि अन्य साहित्य से पता चलता है कि डीएसआई का दृष्टि हानि घटक संवेदी हानि है जिसका व्यक्ति पर मुख्य प्रभाव पड़ता है। अध्ययनों से पता चलता है कि डीएसआई वाले व्यक्तियों की गतिविधियों के साथ कम कार्य के लिए जोखिम बढ़ गया है।

रोजमर्रा की जिंदगी (उदाहरण के लिए, महत्वाकांक्षा, खाने) और दैनिक जीवन की वाद्य गतिविधियों (उदाहरण के लिए, टेलीफोन उपयोग, दवा प्रबंधन) एक संवेदनात्मक हानि व्यक्तियों की तुलना में, जबकि अन्य अध्ययनों से पता चलता है कि श्रवण हानि एक को और कम नहीं करती है रिपोर्ट में पया गया है कि दृष्टिहीन व्यक्तियों में दृष्टिहीन हानि के बिना व्यक्तियों की तुलना में गरीब सुनवाई संवेदनशीलता हो सकती है, जो दोनों इंद्रियों के साथ हानि में अंतर्निहित जैविक योगदान को सुझाव देते हैं। पुराने दिग्गजों के लिए पुनर्वास प्रक्रिया में सहायता करने के लिए व्यक्तियों पर डीएसआई के प्रभाव के सम्बन्ध में बेहतर समझना आवश्यक है। वृद्धावस्था संवेदी हानि के लिए एक अच्छी तरह से स्थापित जोखिम कारक, और यू. एस. आबादी की आयु के रूप में, डीएसआई होगा।

वृद्ध वयस्क U.S population के सबसे तेजी से बढ़ते खंड का प्रतिनिधित्व करते हैं, खासकर बहुत पुराने (यानी 85+ वर्ष) [13]। वर्तमान अनुमानों का अनुमान है कि 2002 और 2020 के बीच 85+ अनुभवी आबादी 58 प्रतिशत बढ़ जाएगी और 90+ अनुभवी आबादी 235 प्रतिशत बढ़ जाएगी। अनिवार्य रूप से, डीएसआई का दिग्गज स्वास्थ्य प्रशासन (वीएचए) में भावी स्वास्थ्य देखभाल रुझानों पर बढ़ता प्रभाव पड़ता है। पुराने दिग्गजों की पूर्ववर्ती बढ़ती आबादी के फलस्वरूप, वीएचए डीएसआई में तेजी से दिलचस्पी ले रहा है, जैसा कि हालिया सम्मेलन के प्रमाण पत्र विभाग (वीए) पुनर्वास अनुसंधान और विकास (आरआर एंड डी) उत्कृष्टता केंद्र केंद्र द्वारा आयोजित सम्मेलन के प्रमाण में हैं।

पुनर्वास श्रवण अनुसंधान इस सम्मेलन से सर्वसम्मति यह थी कि डीएसआई के बारे में वैज्ञानिक साक्ष्य कई क्षेत्रों में कमी है, जिसमें डायग्नोस्टिक्स, पुनर्वास, मनोवैज्ञानिक प्रभाव, तथा संज्ञानात्मक कार्यकलाप शामिल हैं। डीएसआई में ब्याज भी डीएसआई निदान कोड, V49.85, 1 अक्टूबर, 2007 को प्रभावी रोगों के अंतर्राष्ट्रीय वर्गीकरण-9 में संशोधन नैदानिक संशोधन (आईसीडी-9-सीएम) मैनुअल के लिए जोड़ा गया है। यद्यपि यह निदान कोड सामान्य है कि डीएसआई को संयुक्त श्रवण हानि और दृष्टि विकार की किसी भी डिग्री के रूप में परिभाषित किया गया है, आईसीडी-9-सीएम मैनुअल को इस कोड के अतिरिक्त यह दर्शाता है कि डीएसआई एक नई मान्यता प्राप्त समस्या है डीएसआई को स्कीमेटिक रूप से मॉडलिंग किया जा सकता है कि एक श्रवण चैनल तथा एक दृष्टि चैनल के साथ दो चैनल निरंतरता। निरंतर श्रवण और दृश्य कार्य निरंतरता पर बाएं चरम पर है, जबकि श्रवण और दृश्य का पूरा

नुकसान समारोह (यानी, बहरा और अंधा) सही चरम पर है। धराशायी ऊर्ध्वाधर रेखाओं के मध्य का क्षेत्र निरंतरता के एक वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है जिसमें ऐसे व्यक्ति शामिल होते हैं जो दोनों इंद्रियों या व्यक्तियों के साथ संवेदी कार्य को बरकरार रखते हैं, जिनके पास संभावित रूप से डीएसआई है, जो वीएचए से सेवाओं की मांग करने वाले दिग्गजों का सबसे संभावित मामला है प्रमुख मुद्दा यह है कि एकल संवेदी हानि की विभिन्न डिग्री के संयोजन द्वारा बनाई गई डीएसआई के कार्यात्मक और मनोवैज्ञानिक प्रभाव अज्ञात हैं। कई कारण इस अनिश्चित सबूत में योगदान देते हैं। एक कारण यह है कि सुनवाई तथा दृष्टि विकार घटकों की मानकीकृत परिभाषाओं का उपयोग डीएसआई को निर्धारित करने के लिए हनीं किया जाता है। दूसरा कारण यह है कि दो संवेदी हानियों के विभिन्न संयोजन भिन्न-भिन्न व्यक्तियों को प्रभावित कर सकते हैं। डीएसआई वाले व्यक्तियों के तीन मामले एक सुनवाई में दोनों श्रवण हानि और दृष्टि विकार दोनों के संयोजन की जटिलताओं को दर्शाते हैं। व्यक्ति ए में गंभीर दृष्टि की हानि के साथ हल्की श्रवण हानि होती है, व्यक्ति बी को दोनों इंद्रियों में मामूली हानि होती है, और व्यक्ति सी में गंभीर श्रवण हानि तथा हल्की दृष्टि में हानि होती है। डीएसआई को परिभाषित करने में समस्याएं डीएसआई की एक एकीकृत परिभाषा में एकल संवेदी हानि को एकीकृत करने में शामिल कठिनाइयों से ग्रस्त हैं। उदाहरण के लिए, व्यक्ति में प्रत्येक अर्थ में एक मामूली हानि के कार्यात्मक तथा मनोवैज्ञानिक प्रभाव अज्ञात हैं लेकिन उन्हें योजक से कम माना जा सकता है।

additive, या कुछ मामलों में, compounded। व्यक्ति के लिए, इसलिए, डीएसआई की डिग्री माध्यम या बदतर हो सकती है, लेकिन कार्यात्मक रूप से, संवेदी हानि का संयुक्त प्रभाव अज्ञात है। मानकीकृत डीएसआई परिभाषा का विकास डीएसआई के प्रभाव की पूर्ण समझ के लिए मूलभूत है। डीएसआई प्रसार डेटा एक मानक परिभाषा की कमी को दर्शाता है। कई अध्ययनों से डेटा इंगित करता है कि वयस्क आबादी में डीएसआई की प्रसार दर 1.3 से 35.0 प्रतिशत है [2-3, 8-12, 16-17]।

बधिरता की आईडीईए के तहत परिभाषा

बधिर-अंधापन संगत सुनवाई और दृश्य विकारों को संदर्भित करता है, जिसके संयोजन से इस तरह के गंभीर संचार और अन्य विकास और शैक्षणिक जरूरतों का कारण बनता है, जिन्हें उन्हें विशेष रूप से बहरेपन या अंधेपन वाले छात्रों के लिए विशेष रूप से बहरेपर या अंधेपन वाले छात्रों के

NOTES

लिए अन्य विकास और शैक्षणिक जरूरतों का कारण बनता है, जिन्हें उन्हें विशेष रूप से बहरेपन या अंधेपन वाले छात्रों के लिए विशेष शिक्षा कार्यक्रमों में समायोजित नहीं किया जा सकता है। बधिर-अंधेरे का अवलोकन संचार में छात्रों और बहु कौशल, गतिशीलता तथा उपयुक्त सामाजिक कौशल हासिल करने में बड़ी कठिनाइयों का अनुभव करने वाले छात्रों के बहुमत में अनुभव और सुनने की दोनों हानि होती है। चूंकि इन व्यक्तियों को संवेदी औपचारिकता से स्पष्ट तथा सुसंगत जानकारी प्राप्त नहीं होती है, इसलिए उत्तेजना के वांछित स्तर को प्राप्त करने के भीतर की ओर जाने की प्रवृत्ति मौजूद होती है। इसलिए व्यक्ति निष्क्रिय, गैर-प्रतिक्रियाशील और/या गैर-अनुपालनशील दिखाई दे सकता है। बधिर-अंधापन वाले छात्रों (जिसे दोहरी संवेदी हानि के रूप में भी जाना जाता है) दूसरों के साथ उचित बातचीत का जवाब नहीं दे सकते हैं या अक्सर व्यवहार को प्रदर्शित नहीं कर सकते हैं जो अक्सर सामाजिक रूप से अनुचित माना जाता है। बहरापन, अंधापन दृष्टि और सुनने की हानि का संयोजन है, जरूरी नहीं कि पूरी तरह से बहरापन और पूर्ण अंध ापन। बधिर-अंधे व्यक्तियों के बीच गहराई से गुणा करने के लिए उपहार देने के मध्य सोच और विकास क्षमता की एक विस्तृत श्रृंखला है। बधिर-अंध ापन गतिशीलता और संचार के क्षेत्रों में भी अतिरिक्त समस्याएं उत्पन्न करता है। (कैलिफोर्निया बधिर-ब्लाइंड सेवाएं)। जिन लोगों को बहरे-अंधेरे हैं, उनके आसपास की दुनिया में उनकी समझ और रूचि को प्रोत्साहित करने के लिए प्रारंभिक हस्तक्षेप और व्यक्तिगत ध्यान देने की आवश्यकता है। यह जानकारी कि अधिकांश छात्रों को पिकअप को स्वाभाविक रूप से दोहरी संवेदी हानियों वाले छात्रों के साथ जानबूझकर पेश किया जाना चाहिए। बधि र-अंधापन वाले शिशुओं तथा बच्चों के लिए प्रभावी कार्यक्रम छात्र-और परिवार केंद्रित दोनों हैं। छात्र केंद्रित दृष्टिकोण छात्रों की व्यक्तिगत जरूरतों को पूरा करने पर ध्यान केंद्रित करते हैं, जबकि परिवार केंद्रित दृष्टिकोण छात्र इकाई के सदस्य के रूप में छा.ा पर केंद्रित होता है। परिवार की जरूरतों, संरचना और वरीयताएं अक्सर प्रारंभिक हस्तक्षेप सेवाओं (रैमी और रैमी) की डिलीवरी को चलाती हैं। संचार और गतिशीलता अक्सर बीफ अंधापन वाले व्यक्ति के लिए जीवन के सबसे प्रभावित क्षेत्रों होते हैं जो अलगाव और अकेलापन की भावना उत्पन्न करते हैं। क्षतिपूर्ति कौशल का विकास इस अंतर को पुल करने में मदद कर सकता है। ट्रेनिंग और निर्देशक रणनीतियों माता-पिता/अभिभावकों और संचार और गतिशीलता के सापेक्ष शिखकों के लिए उपलब्ध हैं। (कैलिफोर्निया बधिर-ब्लाइंड सर्विसेज)

NOTES

बहरे-अंधे का प्रसार

यू.एस. डिपार्टमेंट ऑफ एजुकेशन के मुताबिक, डेफ-ब्लिंडनेस विशेष शिक्षा में वर्गीकरण वाले सभी छात्रों के 1.0 प्रतिशत से कम प्रतिनिधित्व करता है।

बधिरों के अंधेरे वाले छात्रों की विशेषताएं बधिर ब्लाइंड सर्विसेज डिवीजन के अनुसार, बहरा और अंधेरे के लिए यूटा स्कूल (एनडी) शुरूआत की उम्र के आधार पर, बधिर अंधापन ज्ञान, संचार, सामाजिक बातचीत के क्षेत्रों में सीखने को प्रभावित कर सकता है, मोटर कौशल, और प्रेरणा। बधिर-अंधकार के संकेतक में सम्मिलित हैं :

- छात्र को संचार में कठिनाई है।
- छात्र विकृत धारणा हो सकती है। पूरी तस्वीर देखना मुश्किल है या एक तत्व को पूरी तरह से जोड़ना मुश्किल है।
- छात्र को यह समझने में कठिनाई हो सकती है कि क्या होने जा रहा है। पर्यावरण से या चेहरों/दूसरों के कार्यों से सुराग पढ़ने में मुश्किल हो सकती है।
- छात्र-कुछ हद तक अप्रचलित हो सकता है। वांछनीय होने के लिए चीजें देखी या सुनाई नहीं जा सकती हैं।
- छात्र को मुख्य हाथ के अनुभवों के माध्यम से मुख्य रूप से सीखने की आवश्यकता है।

दृष्टि और सुनवाई की कमी आकस्मिक या समूह सीखने के अनुभवों के माध्यम से सीखना मुश्किल बनाती है।

संचार संवाद में समस्याएं

पर्यावरण नेविगेट करने में समस्याएं

Deafblindness का निदान करने के लिए प्रयुक्त प्रक्रियाएँ और आकलन उपाय

यदि किसी छात्र को बधिर-अंधकार होने का संदेह है, तो दृश्य विकार और श्रवण हानि दोनों के लिए मूल्यांकन किया जाएगा: दृश्य विकार के मूल्यांकन के लिए निम्नलिखित शामिल होना चाहिए:

NOTES

1. एक नेत्र रोग विशेषज्ञ या ऑप्टोमेट्रिस्ट द्वारा मूल्यांकन, जो सर्वोत्तम संभव सुधार के साथ आंख की स्थिति को दस्तावेज करता है।

2. एक लिखित कार्यात्मक दृष्टि और मीडिया मूल्यांकन, दृश्य विकार वाले छात्रों के लाइसेंस प्राप्त शिक्षक द्वारा पूरा या संकलित, जिसमें निम्न सम्मिलित हैं :

स्कूल, घर या अन्य वातावरण में दृश्य व्यवहार का अवलोकन

आंख की रिपोर्ट से प्राप्त जानकारी के आधार पर आंख की स्थिति के शैक्षिक प्रभाव

विस्तारित कोर पाठ्यक्रम कौशल (अभिविन्यास और गतिशीलता, सामाजिक बातचीत, दृश्य दक्षता, स्वतंत्र जीवन, मनोरंजन और अवकाश, करियर शिक्षा, सहायक प्रौद्योगिकी और क्षतिपूर्ति कौशल) के आकलन और/या स्क्रीनिंग के साथ-साथ छात्र के पढ़ने और लेखन का मूल्यांकन कौशल, जरूरतों, उपयुक्त पढ़ने तथा मीडिया लिखना और ब्रेल के लिए वर्तमान और भविष्य की जरूरतें।

- स्कूल इतिहास और शैक्षणिक प्रदर्शन के स्तर

Visual विकृति कक्षा या सीखने के माहौल में शैक्षणिक प्रदर्शन को प्रतिकूल रूप से कैसे प्रभावित करती है, इसका दस्तावेजीकरण और मूल्यांकन। सुनवाई में कमी के लिए मूल्यांकन में निम्न शामिल होना चाहिए: स्पीच पैथोलॉजी में एक राज्य बोर्ड ऑफ एक्जामिनर्स द्वारा लाइसेंस प्राप्त एक ऑडियोलॉजिस्ट द्वारा एक ऑडियो लॉजिकल मूल्यांकन ऑडियोलॉजी;

एक मेडिकल स्टेटमेंट या एक स्वास्थ्य मूल्यांकन बयान यह दर्शाता है कि श्रवण हानि, यदि प्रवाहकीय है, तो इलाज योग्य है तथा क्या प्रवर्धन का उपयोग अनुबंध-संकेत है;

संदिग्ध विकलांगता के प्रभाव को निर्धारित करने के लिए आकलन :

(i) छात्र के शैक्षणिक प्रदर्शन पर जब छात्र 21 वर्ष से अधिक आयु के बाल विहार के लिए पात्रता की उम्र में है, या

(ii) छात्र की विकास प्रगति पर जब छात्र किंडरगार्टन के लिए योग्यता की उम्र के द्वारा तीन वर्ष की आयु हो;

इन मूल्यांकन उपायों के अलावा, निम्नलिखित पर विचार किया जाना चाहिए:

NOTES

यदि किसी छात्र को आईडीईए में निर्धारित परिभाषा के तहत बहरे-अंधापन होने का संदेह है, तो निम्नलिखित मूल्यांकन उपायों पर भी विचार किया जाना चाहिए :

सामान्य कक्षा सेटिंग में छात्र के अकादमिक प्रदर्शन के छात्र के सामान्य शिक्षा शिक्षक के अलावा किसी टीम के सदस्य द्वारा एक अवलोकन; या विद्यालय की आयु से कम या विद्यालय से बाहर के छात्र के मामले में, आयु वर्ग के वातावरण में आयोजित एक टीम सदस्य द्वारा एक अवलोकन

यदि आवश्यक हो तो एक विकास इतिहास

बौद्धिक क्षमता का मूल्यांकन

भाषा और भाषा की हानि की विशेषताओं के अन्य आकलन यदि छात्र निम्नलिखित क्षेत्रों में से किसी एक या अधिक में हानि प्रदर्शित करता है: संज्ञान, ठीक मोटर, अवधारणात्मक मोटर, संचार, सामाजिक या भावनात्मक तथा धारणा या स्मृति। ये मूल्यांकन मूल्यांकन किए जा रहे विशिष्ट विशेषताओं में जानकार विशेषज्ञों द्वारा पूरा किए जाएंगे।

संचयी अभिलेखों की समीक्षा, पिछले व्यक्तिगत शिक्षा कार्यक्रम या

व्यक्तिगत परिवार सेवा योजनाओं तथा शिक्षक ने काम के नमूने एकत्र किए

यदि आवश्यक समझा जाता है, तो एक मेडिकल स्टेटमेंट या स्वास्थ्य मूल्यांकन विवरण यह दर्शाता है कि क्या कोई शारीरिक कारक है जो छात्र के शैक्षणिक प्रदर्शन को प्रभावित कर सकता है संदिग्ध विकलांगता के प्रभाव को निर्धारित करने के लिए आकलन: छात्र के शैक्षणिक प्रदर्शन पर जब छात्र की उम्र हो 21 साल के माध्यम से किंडरगार्टन के लिए योग्यता छात्र की विकास प्रगति पर जब छात्र किंडरगार्टन के लिए पात्रता की उम्र के माध्यम से तीन वर्ष की उम्र में है।

छात्र की शैक्षिक आवश्यकताओं की पहचान करने के लिए आवश्यक अतिरिक्त मूल्यांकन या आकलन।

बहरे-अंधेरे के निदान के लिए पात्रता

बधिर-अंधेरे वाले छात्र के रूप में विशेष शिक्षा सेवाओं के लिए पात्र के रूप में पहचानने तथा निर्धारित करने के लिए, आईईपी समिति दस्तावेज करेगी कि निम्नलिखित मानकों को पूरा किया गया है। आईईपी समिति ने यह निर्धारित

किया है कि छात्र विशेष शिक्षा के लिए योग्यता मानदंडों को पूरा करता है दृष्टि विकार के साथ एक छात्र। और आईईपी समिति ने यह निर्धारित किया है कि छात्र सुनवाई में कमी के साथ एक छात्र के रूप में विशेष शिक्षा के लिए पात्रता मानदंडों को पूरा करता है। या छात्र सुनवाई या दृष्टि विकार के लिए योग्यता मानदंडों को पूरा करता है, लेकिन प्रदर्शन करता है और संवेदी क्षेत्र में असंगत एवं असंगत प्रतिक्रियाएं। अन्य संवेदी क्षेत्र में एक कार्यात्मक मूल्यांकन उस क्षेत्र में हानि की उपस्थिति को साबित करता है; या छात्र सुनवाई या दृष्टि विकार के लिए न्यूनतम मानदंडों को पूरा करता है और इसमें एक संक्रमणीय बीमारी या रोगविज्ञान है जो अन्य संवेदी क्षेत्र की तीव्रता को प्रभावित करता है। छात्र की अक्षमता का छात्र के शैक्षणिक प्रदर्शन पर प्रतिकूल असर पड़ता है जब छात्र 21 साल के माध्यम से बाल विहार के लिए पात्रता की उम्र में है, या छात्र की प्रगति पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

जब छात्र किंडरगार्टन के माध्यम से तीन वर्ष की आयु है; और छात्र को विशेष शिक्षा सेवाओं की आवश्यकता है। आईईपी समिति ने छात्र की विशेष शिक्षा योग्यता पर विचार किया है, तथा यह निर्धारित किया है कि पात्रता पढ़ने या गणित में या सीमित अंग्रेजी दक्षता के कारण निर्देश की कमी के कारण नहीं है।

दोहरी संवेदी हानि की परिचालन परिभाषा

हमारे अनुभवी नमूने में डीएसआई के प्रसार का अनुमान लगाने के लिए, हमने प्रत्येक संवेदी हानि की पूर्व वर्णित श्रेणियों का उपयोग करके डीएसआई की एक परिचालन परिभाषा तैयार की। डीएसआई के दृश्य हानि घटक को बेहतर आंखों में 20/40 से भी बदतर सबसे अच्छी तरह से संशोधित दृश्य acuity के रूप में परिभाषित किया गया था, जिसमें कानूनी अंधापन की अमेरिकी परिभाषा शामिल थी (यानी, बेहतर आंखों में $\leq 20/200$ की सर्वश्रेष्ठ सही दृश्य दृश्यता, या दृश्य क्षेत्र < 20 डिग्री)। दृष्टि की हानि बेहतर आंखों के आधार पर वर्गीकृत की जाती है, जबकि प्रत्येक कान के लिए श्रवण हानि परिभाषित की जाती है। के साथ स्थिरता के लिए

दृष्टि परिभाषाएं तथा व्यावहारिक कारणों से, डीएसआई की श्रवण हानि घटक केवल शुद्ध शुद्ध स्वर सीमाओं के साथ कान के लिए परिभाषित किया जाता है। सुनवाई में कमी की परिभाषाएं बिना किसी सीमा के आधार पर आधारित

NOTES

हैं (यानी, श्रवण सहायता के बिना प्राप्त सीमाएं); इसलिए, बेहतर कान में एक मामूली सुनवाई में हानि या बदतर (यानि >40 डीबी एचएल पीटीए) चुना गया था, क्योंकि श्रवण हानि की इस डिग्री वाले व्यक्तियों को प्रत्यारोपण उपकरणों के उपयोग के बिना ज्यादातर स्थितियों में काफी सुनने की कठिनाइयों की संभावना होगी। प्रसंस्करण ए पूर्ववर्ती चार्ट समीक्षा उन दिग्गजों पर डेटा प्राप्त करने के लिए पूरी हो गई जिन्होंने माउंटेन में वीए मेडिकल सेंटर में ऑप्टोमेट्री और ऑडियोलॉजी आउट पेशेंट क्लीनिक दोनों में उपचार मांगा।

होम, टेनेसी, 1 जून, 2004 और 21 मई, 2005 के बीच। क्योंकि इन दो क्लीनिकों में देखे गए मरीजों ने अपने चिकित्सा चार्ट में उनकी दृष्टि तथा सुनवाई की स्थिति पर नैदानिक डेटा मानकीकृत किया था, कम्प्यूटरीकृत अस्पताल डेटाबेस से एक प्रश्न सभी की एक सूची उत्पन्न हुई इन दो क्लीनिकों में देखे गए अद्वितीय रोगी (एन = 1,472)। डीएसआई एवं उम्र के प्रसार के बीच संबंधों के कारण, रोगी की सूची उम्र के अनुसार निम्नलिखित चार समूहों में विभाजित हुई : (1) <65 वर्ष (एन = 505, रेंज = 44-64 वर्ष), (2) 65 से 74 साल (एन = 363), (3) 75 से 84 वर्ष (एन = 485), और (4) 85+ साल (एन = 119, रेंज = 85-95 साल)। हमने याद्दच्छिक रूप से चार आयु समूहों में से प्रत्येक के 100 रोगियों का चयन किया। डीएस आई के साथ दिग्गजों के प्रसार तथा नैदानिक विशेषता को निधरित करने के लिए चिकित्सा चार्ट से निम्नलिखित डेटा प्राप्त किए गए : (1) यात्रा के समय उम्र, (2) सर्वोत्तम-बेहतर आंखों में सही दूरी दृश्य दृश्यता, (3) दृष्टि विकार की इंटियोलॉजी, (4) शुद्ध स्वर, 250 से 8,000 हर्ट्ज से बेहतर कान में वायु चालन सीमाएं, (5) बेहतर कान में शांत में शब्द-पहचान प्रदर्शन, और (6) श्रवण सहायता के कब्जे। इस अध्ययन को स्थानीय संस्थागत समीक्षा बोर्ड तथा स्थानीय अनुसंधान और विकास समिति ने इसकी शुरूआत से पहले अनुमोदित किया था। ऑडियोलॉजिस्ट और ऑप्टिमेट्रिस्टर्स ने मेडिकल चार्ट से प्राप्त नैदानिक डेटा एकत्र किया। सब ऑडीमेट्रिक परीक्षण (ग्रासन-स्टैडलर ऑडिओमीटर, मॉडल 61, कार्डिनल हेल्थ; डबलिन, ओहियो) डालने वाले इयरफोन (ईएआर-3 एएस; इंडियानापोलिस, इंडियाना) का उपयोग करके डबल-दीवार वाले ध्वनि-इलाज बूथ (आईएसी; ब्रॉक्स, न्यूयॉर्क) में आयोजित किया गया था। शुद्ध स्वर थ्रेसहोल्ड को संशोधित ह्यूगसन-वेस्टलेक प्रक्रिया के उपयोग के साथ मापा गया था। शब्द पहचान को वीए कॉम्पैक्ट डिस्क पर दर्ज नॉर्थवेस्टर्न यूनिवर्सिटी ऑडिटरी टेस्ट नं। 6

NOTES

के साथ मापा गया था। आमतौर पर, शब्द पहचान का मूल्यांकन दो स्तरों 20 डीबी के अलावा किया गया था, निचले स्तर के न्यूनतम 60 डीबी एचएल पर। दूरी दृश्य acuity एक अनुमानित Snellen चार्ट के साथ मापा गया था जिसमें जगह पर सबसे अच्छा प्रदर्शन सुधार था। जब उपलब्ध हो, दृश्य क्षेत्र के परिणाम में योगदान

हम्फ्री ऑटोमेटेड विजुअल फील्ड विश्लेषक (मॉडल एचएफए II-i, कार्ल जीस, डबलिन, कैलिफोर्निया) या मैनुअल गोल्डमैन परिधि (हाग-स्ट्रेट इंटरनेशनल; मेसन, ओहियो) से कानूनी अंधापन की परिभाषा की समीक्षा की गई थी। सांख्यिकीय आंकड़े

हम सुनवाई के साथ दिग्गजों के अनुपात का आकलन करने के लिए प्रसार डेटा की गणना की अकेले विकार, अकेले दृष्टि में हानि एवं प्रत्येक आयु वर्ग के लिए डीएसआई के साथ। प्रसार दर एक नमूना से गणना की गई एक मान है जो जनसख्या मूल्या का सर्वोत्तम अनुमान प्रदान करती है। प्रसाद दर जो बहुत छोटी नहीं थी (उदा), >5%), 95% आत्मविश्वास अंतराल (सीआई) की गणना की गई थी। यह अंतराल कई मूल्य प्रदान करता है जिसमें प्रत्येक आयु वर्ग में संवेदी हानि वाले दिग्गजों का जनसंख्या अनुपात 95 प्रतिशत निश्चितता के साथ आता है। 100 के नमूना आकार के साथ छोटी प्रसार दर (उदा, <5%) के लिए, द्विपक्षीय वितरण के आधार पर पूर्व निर्धारित 95% सीआई का उपयोग किया गया था। आयु वर्ग के प्रसार में अंतर के महत्व का एक परीक्षण ओमिबस ची-स्क्वायर टेस्ट के साथ किया गया था। संवेदी हानि और डीएसआई के पोवरॉल, आयु वर्ग समूहों में कुल प्रसार गिर गया, इसकी गणना भी की गई थी। स्तरीकृत नमूने के कारण, कुल प्रसार की गणना की गई थी जिसमें पीआई आयु वर्ग में प्रसाद दर है और वाई आयु वर्ग में दिग्गजों का अनुपात है जो चार आयु समूहों में से प्रत्येक में दिग्गजों के निम्नलिखित अनुपात द्वारा अनुमानित है। मूल डेटाबेस (एन = 1,472): (1) 34.3 प्रतिशत, <65 वर्ष; (2) 24.7 समझो

65 से 74 साल;

(3) 32.9 प्रतिशत, 75 से 84 साल; और (4) 8.1 प्रतिशत, 85+ साल। समग्र प्रसार के लिए 9.5% सीआई अनुमान निर्धारित किया गया था जिसमें एन आयु वर्ग समूह में नमूना आकार है। विंडोज (एसपीएसएस इंक, शिकागो, इलिनोइस) के लिए एसपीएसएस 14.0 का इस्तेमाल अन्य सभी सांख्यिकीय विश्लेषणों के संचालन के लिए किया गया था।

NOTES

परिणाम

चूंकि डीएसआई की परिचालन परिभाषा एकल संवेदी हानि की परिभाषाओं के संयोजन से ली गई थी, प्रसार की हानि तथा 95% सीआई सुनने की हानि, दृष्टि विकार/कानूनी अंधापन, और डीएसआई की गणना की गई थी (समीकरण 1-2)। इसके अतिरिक्त, चार आयु समूहों के लिए प्रसार और सीआई प्रत्येक संवेदी हानि एवं डीएसआई के लिए निर्धारित किए गए थे।

श्रवण हानि

प्रत्येक शुद्ध समूह के लिए बेहतर कान में औसत शुद्ध स्वर, वायु-चालन सीमाएं पारंपरिक पीटीए के औसत मूल्यों और बेहतर कान के लिए शब्द-पहचान स्कोर के साथ तालिका 2 में सूचीबद्ध हैं। जैसा कि पुराने प्रतिभागियों के इस नमूने के साथ अपेक्षित है, औसत ऑडियोग्राम एवं पीटीए प्रत्येक आयु वर्ग के लिए उच्च आवृत्ति सुनवाई में कमी दर्शाता है जो बढ़ती उम्र के लिए वर्गीकृत की गई थी। याद रखें कि श्रवण हानि की डिग्री, जिसे परिभाषित किया गया था।

बेहतर कान में 500, 1,000 और 2,000 हर्ट्ज पर थ्रेसहोल्ड के पीटीए द्वारा, सामान्य, हल्के, मध्यम, मध्यम-गंभीर, गंभीर तथा गहन [20] के रूप में वर्गीकृत किया गया है। तालिका 3 आयु वर्ग द्वारा प्रत्येक श्रवण हानि श्रेणी के लिए प्रतिभागियों के प्रतिशत और 95% सीआई सूचीबद्ध करता है। आमतौर पर, तालिका में डेटा दर्शाता करता है कि बढ़ती उम्र (X^2 (15, एन = 400) = 161.3 पी <0.001) के साथ श्रवण हानि में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। केवल कुछ पुराने वयस्कों में गंभीर (एन =17) और गहराई (एन =3) सुनने की हानि थी। कुल मिलाकर, भारित फॉर्मूला (समीकरण 1) के आधार पर, प्रतिभागियों के 41.6 प्रतिशत (95% सीआई = 31.1-46.1) में मामूली या बदतर सुनवाई मं कमी आई थी (>40 डीबी एचएव पीटीए)। सर्वोत्तम सुधारित सुनवाई सीमा से संबंधित डेटा अनुपलब्ध था; हालांकि, श्रवण सहायता रखने वाले प्रतिभागियों की संख्या उपलब्ध थी तथा प्रत्येक श्रवण हानि श्रेणी के लिए तालिका 4 में सूचीबद्ध है। पहले 500, 1,000, और 2,000 हर्ट्ज पीटीए से जुड़े दो कॉलम में डेटा पर विचार करें (एचएफपीटीए से जुड़े दो कॉलमों में डेटा को बाद के खंड में माना जाएगा)। पारंपरिक पीटीए से जुड़े आंकड़ों से पता चलता है कि 400 प्रतिभागियों में से अधिकांश ने श्रवण सहायता (एन = 357, 89%) सुनाई थी। दिलचस्प बात यह है कि 66 में से 40

NOTES

तथाकथित "सामान्य" सुनवाई वाले प्रतिभागियों को श्रवण सहायता थी। यह संख्या प्रतीत हो सकती है सामान्य सुनवाई वाले व्यक्तियों के लिए खतरनाक उच्च; हालांकि, याद रखें कि श्रवण हानि 500, 1,000 और 2,000 हर्ट्ज के पारंपरिक पीटीए पर आधारित थी, जो निम्न और बीच आवृत्तियों पर जोर देती है। सामान्य सुनवाई के रूप में परिभाषित प्रतिभागियों को पीटीए <25 डीबी एच एल हो सकता है लेकिन उच्च आवृत्ति सुनवाई में कमी हो सकती है जो श्रवण सहायता क्यों की थी, प्रत्येक श्रवण हानि श्रेणी के लिए औसत ऑडियोग्राम चित्र 2 में दिखाया गया है। ध्यान दें कि पारंपरिक पीटीए के आधार पर सामान्य सुनवाई (भरे सर्किल) के रूप में परिभाषित प्रतिभागियों को एक 4,000 और 8,000 हर्ट्ज पर मध्यम श्रवण हानि, जो पीटीए के साथ आवृत्ति सीमा से ऊपर है। ये प्रतिभागी शांत वातावरण में एक-एक-एक या छोटी समूह सेटिंग्स में वार्तालाप को अच्छी तरह से समझते हैं लेकिन पृष्ठभूमि शोर (जैसे, रेस्तरां, पाटियों) में बातचीत को समझने में कठिनाई हो सकती है या जब दृश्य संकेत सीमित होते हैं (उदाहरण के लिए, कार में, टेलीफोन) [21-22]। सामान्य सुनवाई के रूप में परिभाषित प्रतिभागियों में इन संचार कठिनाइयों को वारंट श्रवण सहायता हस्तक्षेप के लिए काफी पर्याप्त माना जाएगा। परंपरागत पीटीए के आधार पर सुनवाई में कमी का वर्गीकरण गुमराह करना तथा उससे परे है।

पीटीए का मूल उद्देश्य उपयोग। सामान्य सुनवाई संवेदनशीलता प्रत्येक आवृत्ति पर थ्रेसहोल्ड <25 डीबी एचएच के साथ फीचर 2 में छायांकित क्षेत्र द्वारा चित्रित किया गया है। शेष शुद्ध स्वर दहलीज में चित्र 2 श्रवण हानि की पांच शेष श्रेणियों में से प्रत्येक के लिए प्रतिभागियों की औसत सुनवाई संवेदनशीलता का प्रतिनिधित्व करता है। श्रवण हानि की शुद्ध स्वर विन्यास प्रकृति में उच्च आवृत्ति है, जो उम्र से संबंधित श्रवण हानि के साथ विशिष्ट है। प्रत्येक फंक्शन के बाईं ओर कोष्ठक में संख्या प्रतिभागियों की संख्या को दर्शाती है जिन्हें श्रवा हानि की इसी श्रेणी के रूप में परिभाषित किया गया था। पारंपरिक पीटीए के आधार पर, ये संख्याएँ बताती हैं कि अधिकांश प्रतिभागियों में हल्की या मामूली सुनवाई में कमी आई थी और कुछ प्रतिभागियों को गंभीर या गहन सुनवाई में कमी आई थी।

क्योंकि परंपरागत पीटीए श्रवण हानि की विशेषता में भ्रामक था, हम

1,000, 2,000, और 4,000 पर थ्रेसहोल्ड के एचएफपीटीए का उपयोग कर शुद्ध स्वर डेटा को पुनः वर्गीकृत किया हर्ट्ज। एचएफपीटीए उच्च आवृत्तियों

को अधिक वजन देता है तथा जैसा कि कई अध्ययनों का सुझाव है, एक है परंपरागत पीटीए [21-23-38] की तुलना में सुनवाई समारोह का बेहतर संकेतक। तालिका 5 में उम्र सूचीबद्ध है, प्रत्येक सुनवाई के लिए शुद्ध स्वर थ्रेसहोल्ड, पारंपरिक पीटीए, एचएफपीटीए, और शब्द पहचान स्कोर हानि श्रेणी जो परंपरागत पीटीए (शीर्ष भाग) और एचएफपीटीए पर आधारित थी। (नीचे भाग)। जैसे-जैसे उम्र बढ़ जाती है, शुद्ध स्वर सीमा बढ़ जाती है और शब्द-पहचान स्कोर होते हैं। कमी, जो इतन तीन चार के बीच संबंधों की उम्मीद है। प्रत्येक श्रवण-हानि के लिए श्रेणी, एचएफपीटीए पारंपरिक पीटीए की तुलना में औसत 12 डीबी गरीब है। इस 12 का प्रभाव

दृष्टि विकार और कानूनी अंधकार

प्रतिभागियों को बेहतर दृष्टि में उनके सर्वश्रेष्ठ-सही दूरी दृश्य दृश्यता के आधार पर तीन दृष्टि श्रेणियों में बाँटा गया था : (1) सामान्य/सामान्य सामान्य $\geq$ 20/40; (2) दृष्टि विकार, 20/50 से 20/100; या (3) कानूनी अंधापन, $\leq$ 20 /100। प्रत्येक आयु वर्ग के लिए तीन दृष्टि श्रेणियों में से प्रत्येक का प्रसार दर और 95% सीआई तालिका 6 में सूचीबद्ध है। प्रत्येक आयु वर्ग के प्रतिभागियों ने अधिकांश सामान्य/निकट-सामान्य श्रेणी में दृश्य acuities को सही किया है। उदाहरण के लिए, <65 वर्ष की आयु के सभी प्रतिभागियों को सामान्य/नज़दीकी सामान्य दृश्यता के रूप में परिभाषित किया गया था। सभी आयु समूहों में कुल 26 रोगियों को दृष्टि विकार का निदान किया गया था तथा अतिरिक्त 17 को कानूनी अंधापन का निदान किया गया था। दृष्टि विकार का समग्र प्रसार

तथा कानूनी अंधापन 7.4 प्रतिशत (9.5% सीआई = 5.0-9.8) था, जो भारित मूल्य (समीकरण 1) है। अंत में, आंकड़े बढ़ती उम्र (X^2 (6, एन = 400) = 42.0, पी <0.001) के साथ दृष्टि विकार एवं कानूनी अंधापन के प्रसार में उल्लेखनीय वृद्धि दर्शाते हैं। दृष्टि में हानि एवं कानूनी अंधापन से जुड़े निदान तालिका में दिए गए हैं। कुछ प्रतिभागियों के पास कई निदान थे, जिसके परिणामस्वरूप कुल संख्या और प्रतिशत अधिक थे। मैकुलर अपघटन सबसे आम निदान था, इसके बाद ग्लूकोमा और मोतियाबिंद। ये निदान कई आबादी आधारित अध्ययनों के अनुरूप है जिन्होंने दृष्टि की हानि के लिए जोखिम कारक के रूप में आयु की भूमिका का प्रदर्शन किया है [27,39]।

डीबी शिफ्ट श्रवण हानि की श्रेणियों में प्रतिभागियों के वितरण में परिलक्षित होता है। उदाहरण के लिए, जब हमने पारंपरिक पीटीए का इस्तेमाल किया,

NOTES

तो 13 9 प्रतिभागी हल्के वर्ग में थे; जब हम एचएफपीटीए का इस्तेमाल करते थे तो यह संख्या 65 प्रतिभागियों में कमी आई थी। यदि एचएफपीटीए का इस्तेमाल श्रवण हानि के समग्र प्रसार को निर्धारित करने के लिए किय गया था, तो प्रतिभागी की औसत सुनवाई में कमी या बदतर के साथ 74.6 प्रतिशत (95% सीआई = 70.3-78.9) होगा। जब हमने एचएफपीटीए का इस्तेमाल किया, तो 41.6 प्रतिशत की प्रसार दर की तुलना में ~30 प्रतिशत अधिक प्रतिभागियों को कम से कम एक मामूली सुनवाई में कमी के साथ बाँटा गया है।

जब हमने पारंपरिक पीटीए का प्रयोग किया। यह समझने के लिए कि कौन सा शुद्ध स्वर मीट्रिक बेहतर श्रवण सहायता उपयोग के मामले में कार्यात्मक सुनवाई में कमी को परिभाषित करता है, फिर से तालिका 4 में डेटा पर विचार करें, जिसमें प्रत्येक सुनवाई हानि श्रेणी में प्रतिभागियों की संख्या सूचीबद्ध होती है, जिनके पास बी.ए. जारी किए गए श्रवण सहायता थी। एचएफपीटीए से जुड़े दाएं सबसे अधिक कॉलम में डेटा दिखाता है कि एचएफपीटीए के आधार पर सामान्य सुनवाई के साथ केवल 8 प्रतिभागियों ने परंपरागत पीटीए के आधार पर सामान्य सुनवाई के साथ 40 प्रतिभागियों की तुलना में श्रवण सहायता की थी। डेटा दर्शाती है कि एचएफपीटीए के साथ श्रवण हानि वर्गीकृत करना कार्यात्मक सुनवाई के साथ अधिक संगत है

परंपरागत पीटीए की तुलना में श्रवण सहायता उपयोग द्वारा संकेत के रूप में स्थिति। इस दृष्टिकोण से, पारंपरिक पीटीए की तुलना में एचएफपीटीए श्रवण हानि का एक और मान्य संकेतक है।

दैनिक जीवन की गतिविधियों पर बहरे-अंधापन के प्रभाव

- गंभीर विकलांगता और बीमारी अंधापन ... वाह! निश्चित रूप से इस नए छात्र की विकलांगता उनके लिए शैक्षणिक चुनौतियों का सामना करने जा रही है।
- निर्देश के सम्बन्ध में क्या ?
- प्रशिक्षक को सीखना या बदलने की अपेक्षा करने के लिए आपको क्या करना चाहिए?

यह आपके लिए एक नया अनुभव हो सकता है, लेकिन बाकी आश्वासन दिया कि आप अकेले नहीं हैं। जबकि बधिर अंधापन दुर्लभ है, इस आबादी के लिए चुनौतियों की हमारी समझ बढ़ रही है। 10,000 से अधिक बच्चों

NOTES

को अब बहरा अंधापन का अनुभव है एवं सेवाओं की आवश्यकता है।

- बहुत से बच्चे जो गंभीर और कई विकलांगताओं का अनुभव करते हैं, वे भी सुनवाई और / या दृष्टि हानि का अनुभव करते हैं।
- नुकसान के कारण हो सकता है :

सुनवाई और / या दृष्टि प्रणाली को नुकसान;

मस्तिष्क क्षति जो सीखने वाले के मस्तिष्क को दृश्य और /या श्रवण संकेतों को समझने से रोकती है; या

- दोनों स्थितियां दृष्टि तथा श्रवण हानि में योगदान दे सकती हैं। लेबल "बहरा अंधापन" परिभाषित शब्द नहीं है।
- इस लेबल वाले बच्चों की आवश्यकताएँ काफी अलग हो सकती हैं?
- बधिर अंधापन का मतलब है कि बच्चे को दृष्टि के कुछ प्रकार का अनुभव होता है और सीखने को प्रभावित करने के लिए काफी महत्वपूर्ण सुनवाई होती है।

बच्चे का अनुभव हो सकता है :

- अन्य अक्षम करने की स्थितियों (उदाहरण के लिए, सेरेब्रल पाल्सी या बौद्धिक घाटे) और
- अन्य स्वास्थ्य परिस्थितियों (उदा, जब्त या चयापचय विकार)।

कोई भी परिभाषा नहीं है जिसमें गंभीर तथा कई विकलांगता के सभी कारण शामिल हैं।

- हालांकि, सीखने वाले जो गंभीर और कई विकलांगता अनुभव करते हैं, साझा करते हैं।

विशेषताओं। वे :

एक साथ 2 या अधिक विकलांगताओं से प्रभावित होते हैं;

- अनुकूली कौशल की सारणी में महत्वपूर्ण समर्थन की आवश्यकता है;
- अक्सर अनुभव बौद्धिक कार्य, अनुकूली कौशल, मोटर विकास, और / या संवेदी हानि अनुभव।

इन उदाहरणों पर विचार करें-

यह भी ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि गंभीर तथा कई विकलांगों का अनुभव करने वाले शिक्षार्थियों का आकलन करना मुश्किल है :

- उनकी दृष्टि और सुनवाई आकलन अधूरा या गलत हो सकता है।
- क्योंकि दृष्टि और / या श्रवण हानि अक्सर गंभीर विकलांगताओं के साथ होती है, एक चेतावनी

  शैक्षणिक टीम संवेदी हानि के व्यवहार संबंधी संकेतों के लिए देखेगी, भले ही इस तरह की हानि विशेष रूप से पहचाना न जाए।

  शैक्षिक विचारों ने संदर्भ शिक्षार्थियों को प्रस्तुत किया जो बहरापन का अनुभव करते हैं। वे पहचानकर्ताओं को गंभीर और एकाधिक विकलांगताओं के साथ या बिना संवेदी हानि के भी लागू कर सकते हैं।

अद्वितीय है : बहरा-अंधापन

- बधिर अंधापन एक अनूठी विकलांगता है, जो सुनने की हानि या केवल दृष्टि का अनुभव करने से काफी अलग है।
- 2004 में विकलांग शिक्षा शिक्षा अधिनियम (आईडीईए) के व्यक्तियों के पुनर्विधिकरण ने निम्नानुसार बहरा अंधापन परिभाषित किया।
- संयोगजनक सुनवाई और दृश्य हानि, जिसके संयोजन से इस तरह के गंभीर संचार तथा अन्य विकास और शैक्षिक आवश्यकताओं का कारण बनता है, जिन्हें उन्हें विशेष शिक्षा कार्यक्रमों में पूरी तरह से बहिष्कार या अंधेपन वाले बच्चों के लिए समायोजित नहीं किया जा सकता है।

बधिर अंधापन का अनुभव करने वाले शिक्षार्थियों को श्रवण हानि के साथ एक दृष्टि हानि या अंधा के साथ बहरे के रूप में नहीं सोचा जा सकता है जैसे अक्षमता प्रभाव को बस जोड़ा गया था।

- इसके बजाय प्रभाव जटिल और महत्वपूर्ण है कि इसे शैक्षिक विचारों के अनूठे तथा अच्छी तरह से सोचा जाना आवश्यक है।

इन उदाहरणों पर विचार करें इकट्ठा करने पर संवेदी घाटे के उदाहरण

उपर्युक्त उदाहरण पढ़ने के बाद, एक शिक्षक निम्नलिखित प्रश्न पूछ सकता है :

NOTES

- आने वाले या आने वाले होने के सम्बन्ध में बधिर अंधापन के साथ बच्चे को कौन से संकेत उपलब्ध हैं?
- बहरे अंधेरे वाले बच्चे सुरक्षित रूप से सड़क पार करते हैं, जानते हैं कि उन्हें खेलने के लिए आमंत्रित किया जाता है, समय पर कक्षा में मिलता है, या एक गड़बड़ी मिलती है?

हालांकि दूसरे विचार पर, बेहतर प्रश्न हो सकते हैं :

- मैं आगे क्या हो रहा है के सम्बन्ध में बधिर अंधापन के साथ एक शिक्षार्थी को सुराग प्रदान कर सकता हूं?
- पर्यावरण से जानकारी इकट्ठा करने के लिए मैं बहरे अंधेपन वाले बच्चे की मदद कैसे कर सकता हूँ ?
- मैं दूसरों के साथ बातचीत करने में उनकी सहायता कैसे कर सकता हूँ?
- ये प्रश्न संवेदी घाटे की परीक्षा को ठंडा करते हैं और संचार या बातचीत साझेदार पर बच्चे को जानकारी प्रदान करने की जिम्मेदारी देते हैं। हमें दुनिया को बधिर अंधापर के साथ सीखने के लिए लाया जाना चाहिए।

श्रवण हानि का अनुभव करने वाले बच्चे सुनवाई याद कर सकते हैं .....

जो बच्चे दृष्टिहीन हैं वे देख सकते हैं ... बस की आवाज आने पर बस की आवाज आती है।

एक दोस्त ने अपना नाम बुलाया

खेल का मैदान। शब्दकोष बोलने के लिए बहुत सी भाषा। घंटी कक्षा की शुरूआत को संकेत देती है। घबराहट की नज़दीकी आवाज एक हिल रही है। बस सड़क पर चलने के बाद आने वाली बस। एक दोस्त उनके सामने दौड़ रहा है, अपना नाम बुला रहा है। चेहरे और शरीर के भाव जो भाषा को अर्थ देने में मदद करते हैं।

घंटी की आवाज पर कक्षाओं में जाने वाले हर कोई। चट्टान की आवाजाही।

- आइए जाने कि कुछ अनुकूलन, संशोधन और तकनीकी की जांच करके ऐसा कैसे करें जो शिक्षार्थियों के लिए एक पूर्ण शैक्षणिक अनुभव बताते हैं।

5 गतिविधि-मूल इंटरैक्शन कौशल

- हाथ से हाथ की तकनीक का अभ्यास महत्वपूर्ण है तथा एक विशेष शिक्षक या दृष्टिहीन लोगों का शिक्षक आपको इस तकनीक को सीखने और अभ्यास करने में सहायता कर सकता है।

NOTES

गतिविधि-संवेदी पर्यावरण

- सिमुलेशन व्यायाम : बटन छंटनी और एक इंटरलॉकिंग पहेली कर रहे हैं।
- जोड़े में, एक व्यक्ति को छात्र की भूमिका के लिए और अन्य को पहेली कार्य के लिए शिक्षक को असाइन करें। शिक्षक निर्देश कार्ड का पालन करता है। विद्यार्थी अंधेरे बहरा अंधापन को अनुकरण करने के लिए गतिविधि चुपचान किया जाता है।
- बटन सॉर्टिंग कार्य के लिए भूमिकाएं स्विच करें।
- जब सभी जोड़ने ने अभ्यास पूरा कर लिया है, तो आपके अनुभवों को एक बड़े समूह की चर्चा करें।
- आपने एक छात्र के रूप में क्य सीखा ?
- शिक्षक के रूप में आपने क्या सीखा ?
- यदि आप पहले छात्र थे, तो उसके आपको शिक्षक होने के सम्बन्ध में क्या सिखाया?

गतिविधि-दृष्टि में कमी :

- रंग को निर्देशों का एक हिस्सा बनाना

मस्तिष्क के नुकसान वाले बच्चे के परिणामस्रूप दृश्य क्षेत्र तथा खराब दृश्य स्मृति कम हो गई। एक मामूली श्रवण हानि के रूप में अच्छी तरह से।

श्रवण सहयोगी और एक प्रवर्धन प्रणाली सुनने के लिए सीखने की क्षमता को अनुकूलित करती है।

हालांकि, वह अभी भी दृश्य स्मृति के साथ समस्याएं प्रदर्शित कर रहा है।

- उसके शिक्षक ने अक्षरों और अंकों को लाल रंग में प्रस्तुत करना शुरू किया और डेटा में परिवर्तन देखा।

- बच्चे ने अक्षरों और अंकों को सीखने की अपनी क्षमता में सुधार किया। यह जानकर, शिक्षक रंग के उपयोग का लाभ लेना चाहता है। अब वह अंक तथा पत्र लिखना सीख रहा है।
- छोटे समूहों में, अनुकूलन या संशोधनों की पहचान करें जो शिक्षक इस तथ्य को लाभ उठाने के लिए उपयोग कर सकते हैं कि लाल लगते हैं उदाहरणामें सम्मिलित हैं :
- छात्र लाल पेंसिल के साथ लिखते हैं।
- प्रीप्रिंट किए गए अंकों / अक्षरों का पता लगाने के लिए लाल मार्कर का उपयोग करें।
- छात्र का नाम पूरे कमरे में अपने सामाने पर लाल हो सकता है।
- छात्र नीचे सफेद लाल शिल्प की पतली परत के साथ एक सफेद प्लेट में अंक का पता लगा सकता है।

पर्यावरण संबंधी विचार : श्रवण हानि :

- किसी भी पर्यावरण की सावधानीपूर्वक तैयारी शिक्षार्थियों को उनकी सुनवाई का उपयोग करने के लिए बधिर अंधापन के साथ अनुमति देती है।
- बधिर अंधापन वाले सभी शिक्षार्थियों को सीखने में बाधा डालने के लिए पर्याप्त श्रवण हानि का अनुभव होता है। हानि का प्रकार और सीमा सीखने वाले को अवशिष्ट, या शेष, सुनवाई का प्रभावी ढंग से उपयोग करने में सहायता करने के लिए आवश्यक आवास चलाती है।
- ध्यान दें कि प्रत्येक कान में नुकसान समान है।
- सीखने वाले के पास एक कान में बेहतर सुनवाई हो सकती है तथा यह निर्देश दे सकता है कि एक वार्तालाप साथी कहाँ बैठना चाहेगा या जहां प्रशिक्षक को श्रवण उत्तेजना पेश करनी चाहिए।
- श्रवण से मेल खाने वाले आवासों का चयन करने में अक्षम सुनने वाले शिक्षक का शिक्षक महत्वपूर्ण होगा।
- कई पर्यावरणीय संशोधन हैं जिन्हें श्रवण हानि वाले छात्रों के लिए हमेशा माना जाना चाहिए:

- श्रवण अव्यवस्था को कम करना,
- अच्छा ध्वनिक सुनिश्चित करना, और
- ध्वनि की स्पष्टता में सुधार।

NOTES

- श्रवण अव्यवस्था तब होती है जब पृष्ठभूमि शोर एवं अन्य ध्वनियां पर्यावरण में ओवरलैप होती हैं। कल्पना करें कि फोन पर बात करते समय टीवी और ड्रायर दोनों जा रहे हैं। अगर आपका बच्चा अंदर आता है और पूछता है कि क्या उसके पास अप्रत्याशित रूप से नाश्ता हो सकता है, तो आपको अपने बच्चे को प्रश्न दोहराने की आवश्यकता हो सकती है।
- श्रवण हानि वाले बच्चे को लगातार एक ही कठिनाई का सामना करना पड़ सकता है। कक्षा में, विचार करें :
- गलीचा या गलीचे से जोड़ना,
- कक्षा के दरवाजे को बंद करने से श्रवण अव्यवस्था को कम करने में सहायता मिल सकती है।
- एक अच्छी तरह से वयस्क या सहकर्मी द्वारा लगातार बकवास अनावश्यक श्रवण अव्यवस्था प्रदान कर सकता है।

संक्षिप्त तथा सरल बयान सबसे अच्छे हैं। श्रवण हानियों का अनुभव करने वाले शिक्षार्थियों के लिए श्रवण अव्यवस्था को सीमित करने का प्रयास करें-

- ध्वनिक परिभाषित किया जाता है कि ध्वनि को कितनी स्पष्ट रूप से प्रसारित किया जा सकता है और/या सुनाया जा सकता है पर्यावरण या उसके ध्वनिकों के गुणों पर निर्भर करता है।
- एक इमारत के ध्वनिक सुधारने के लिए निर्माण के दौरान विशेष निर्माण तकनीकों तथा सामग्रियों का उपयोग किया जा सकता है।
- ध्वनि की स्पष्टता सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है।

  श्रवण सहायता, श्रवण प्रशिक्षकों, और कोक्लेयर इम्प्लांट्स ध्वनि बनाने, सुधारने या बढ़ाने के तरीकों के सभी उदाहरण हैं।
- इन प्रणालियों पर दैनिक जाँच यह सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक है कि वे निर्धारित अनुसार प्रदर्शन कर रहे हैं।

NOTES

बच्चे जो सिर्फ ध्वनि के अनुकूल हैं, वे अपने सिस्टम को बंद करना सीख सकते हैं, इसलिए अधिक बार जांच आवश्यक हो सकती है।

शिक्षार्थियों को श्रवण इनपुट के अनुकूलन और उपयोग करने में मदद करने के लिए विशेष प्रशिक्षण की आवश्यकता हो सकती है।

- बधिर अंधापन के साथ विचारशील वयस्कों एवं शिक्षार्थियों के साथियों पर विचार करें ...

श्रवण अव्यवस्था;

ध्वनि की स्पष्टता;

ध्वनिक;

अवगत करके और सीखना

सुनने की एक शिक्षक अक्षम,

एक विशेष शिक्षा शिक्षक,

परिवार के सदस्य,

अन्य टीम के सदस्य

शिक्षार्थियों का आकलन जो डेफब्लिंडनेस का अनुभव करते हैं –

- आकलन एक कठिन प्रक्रिया है एवं सावधानीपूर्वक योजना की आवश्यकता है।
- कुछ उपकरणों को विशेष रूप से उन शिक्षार्थियों के साथ उपयोग के लिए डिजाइन किया गया है जो बहरा अनुभव करते हैं।

अंधापन या यहाँ तक कि कई विकलांगताएं भी

- सीखने में प्रशिक्षित करने या भाग लेने में सीखने की क्षमता में बाधा आ सकती है।

कम संज्ञानात्मक कार्य, सीमित मोटर फंक्शन, और इसकी कमी जैसी कठिन परिस्थितियां संवादात्मक या भाषा कौशल।

बधिर अंधापन का अनुभव करने वाले छात्र का आकलन करना चाहिए:

परिवार के सदस्यों सहित एक अंत: विषय टीम शामिल है,

NOTES

- कार्य करने की आधार रेखा एकत्र करने के लिए अभिलेखों की समीक्षा सम्मिलित करें:
- परिचित दिनचर्या और पारंपरिक के साथ पूरक के संदर्भ में नई जानकारी इकट्ठा करें।

उपयुक्त के रूप में औपचारिक परीक्षण,

- जाँच करें कि कैसे बच्चे विभिन्न प्रकार के प्राकृतिक वातावरण में प्रदर्शन करता है।
- परिवारों सहित विभिन्न प्रकार के स्रोतों से जानकारी इकट्ठा करें।
- डेटा एकत्रण, जबकि छात्र के व्यक्तिगत कार्यक्रम की योजना बनाने के लिए महत्वपूर्ण है, भी है। निरंतर सफलता के लिए महत्वपूर्ण है।
- प्रगति दस्तावेज तथा भविष्य की योजना बनाने के लिए चल रहे प्रदर्शन डेटा का उपयोग किया जाना चाहिए परिणामों।
- मूल्यांकन प्रक्रिया में परिवारों को सक्रिय होने की आवश्यकता है।
- सपने, लक्ष्यों और जरूरतों के सम्बन्ध में जानकारी प्रदान करते हैं;
- मूल्यांकन गतिविधियों के बारे में इनपुट दें; तथा

वास्तव में कुछ मूल्यांकन कार्य कर सकते हैं -

- मूल्यांकनकर्ता जो शिक्षार्थी से अपरिचित हो कसते हैं :
- उन शिक्षार्थियों के साथ काम करने का अनुभव है जो बधिर अंधापन का अनुभव करते हैं,
- छात्र के साथ संचार के अपने पसंदीदा रूप से सीधे संवाद करें।

बोली जाने वाली भाषा, साइन लैंग्वेज, इशारे, चित्र, ऑब्जेक्ट्स या किसी अन्य सिस्टम की संचार।

- बधिर अंधापन का अनुभव करने वाले शिक्षार्थियों के साथ उपयोग के लिए परीक्षण वस्तुओं को अपनाने से परिचित रहें;
- परीक्षण प्रक्रिया शुरू करने से पहले सीखने वाले को जानने में समय व्यतीत करें। जानना सीखने वालों की पसंद तथा नापसंद एक चिकनी मूल्यांकन सुनिश्चित करने में मदद करेंगे;

NOTES

- धैर्य रखें और महसूस करें कि प्रतिक्रिया को प्राप्त करने में अतिरिक्त समय लग सकता है। इन शिक्षार्थियों की जरूरत है। सफल होने तथा ज्ञान साबित करने के लिए अतिरिक्त समय।

बहरेपन की जाँच, मूल्यांकन, पहचान तथा हस्तक्षेप रणनीतियाँ

"अतिरिक्त समर्थन की जरूरतें" – प्रत्येक शिक्षार्थी को समर्थन की आवश्यकता होती है, लेकिन कुछ शिक्षार्थियों, जो भी कारण से, सीखने के लिए अतिरिक्त समर्थन की आवश्यकता हो सकती है। अतिरिक्त समर्थन आवश्यकताओं को किसी भी कारक से उत्पन्न किया जा सकता है जो सीखने में बाधा उत्पन्न करता है, चाहे वह कारक सामाजिक, भावानात्मक, संज्ञानात्मक, भाषाई, अक्षमता, या परिवार तथा देखभाल परिस्थितियों से संबंधित हो। उदाहरण के लिए, किसी बच्चे या युवा शक्ति के लिए अतिरिक्त सहायता की आवश्यकता हो सकती है, जिसमें सीखने की कठिनाइयां होती हैं; धमकाया जा रहा है; व्यवहारिक कठिनाइयाँ हैं; एक माता पिता है; एक संवेदी या गतिशीलता हानि है; स्कूल छोड़ने का खतरा है या शोकग्रस्त हो गया है। इनके अतिरिक्त कई अन्य उदाहरण भी हैं। कुछ अतिरिक्त समर्थन आवश्यकताओं को दीर्घकालिक होते हैं जबकि अन्य अल्पकालिक होते हैं। वे बच्चे से बच्चे के प्रभाव में भिन्न होते हैं। सभी मामलों में यह है कि ये कारक व्यक्तिगत बच्चे के सीखने पर कैसे महत्वपूर्ण होते हैं जो महत्वपूर्ण हैं तथा प्रभाव आवश्यक समर्थन प्रावधान के स्तर को निर्धारित करता है।

"सहायक उपकरण" – एक शैक्षिक सहायक उपकरण कोई भी उपकरण है जिसे किसी विशेष शैक्षणिक कार्य में एक शिक्षार्थी की सहायता के लिए डिजाइन, बनाया या अनुकूलित किया जाता है। इसका उद्देश्य किसी भी प्रकार की कार्यात्मक सीमा को क्षतिपूर्ति करना है जो किसी शिक्षार्थी के लिए पाठ्यक्रम तक पहुँचने में अक्षमता के लिए कठिन बनाता है। व्हीलचेयर, प्रोस्थेस, गतिशीलता सहायक उपकरण, श्रवण सहायता, दृश्य सहायक उपकरण एवं विशेष कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर और हार्डवेयर जैसे सहायक उपकरण और प्रौद्योगिकी गतिशीलता, सुनवाई, दृष्टि और संचार क्षमताओं में वृद्धि करती हैं। इन प्रौद्योगिकियों की सहायता से, काम करने में हानि वाले लोग स्वतंत्र रूप से जीने और अपने समाज में भाग लेने में सक्षम हैं।

"सहायक तकनीक" – एक छतरी शब्द जिसमें विकलांग लोगों के लिए सहायक, अनुकूली और पुनर्वास उपकरण शामिल हैं और इसमें शिक्षा संदर्भ

में चयन, ढूँढ़ने और उनका उपयोग करने में प्रयोग की जाने वाली प्रक्रिया भी शामिल है। सहायक तकनीक ऐसे कार्यों को पूरा करने के लिए आवश्यक तकनीक के साथ बातचीत करने के तरीकों को बढ़ाने या बदलने के तरीकों को शैक्षिक कार्यों को करने में सक्षम बनाती है, जिन्हें वे पहले पूरा करने में असमर्थ थे या उन्हें पूरा करने में बड़ी कठिनाई थी।

"Augmentative और वैकल्पिक संचार (एएस)" – एएसी रणनीतियों का वर्णन है कि लोग अपने संचार को पूरक करते हैं जब वे स्पष्ट रूप से उनके आसपास के लोगों द्वारा समझने के लिए पर्याप्त रूप से बात नहीं कर सकते हैं। इन रणनीतियों में सहायक संचार उपकरणों के लिए जेस्चर तथा संचार बोर्डों से लेकर संचार विधियों की एक विस्तृत श्रृंखला सम्मिलित है।

"सीखने के लिए बाधाएं" - संपूर्ण रूप से शिक्षा प्रणाली के भीतर उत्पन्न होने वाली कठिनाइयों का संदर्भ लें, सीखने की साइट और / या सीखने वाले के भीतर जो सीखने एवं विकास तक पहुंच को रोकती है।

"कैस मैनेजर" - सीखने वालों द्वारा आवश्यक समर्थन पैकेजों पर मूल्यांकन प्रक्रिया और निर्णय लेने के समन्वय के लिए स्कूल, सर्किट या जिला स्तर पर एक केस मैनेजर की पहचान की जा सकती है, तथा शिक्षार्थियों के लिए प्रावधान का समर्थन एवं निगरानी।

"अक्षमता की श्रेणी" - स्कूलों में डेटा संग्रह के लिए वर्तमान आयोजक। इन आयोजनकों को पादित किया गया है और उनमें बहुसंख्यक विकलांग, बहरे, सुनवाई की कठोर, अंधा, आंशिक रूप से दृष्टि, बहरा/अंधा, सेरेब्रल पाल्सी, विशिष्ट सीखने की अक्षमता, व्यवहार संबंधी विकार, हल्की या मध्यम बौद्धिक अक्षमता, गंभीर बौद्धिक अक्षमता, गहन बौद्धिक अक्षमता, शारीरिक, अक्षमता, ऑटिस्टिक स्पेक्ट्रम विकार, मिर्गी, ध्यान खाटे विकार, अति सक्रियता के साथ/बिना।

"पाठ्यचर्या भेदभाव" - पाठ्यचर्या भेदभाव विभिन्न सीखने शैलियों और जरूरतों के साथ शिक्षार्थियों की आवश्यकताओं के जवाब देने के लिए एक महत्वपूर्ण रणनीति है। इसमें शिक्षण पद्धतियों, शिक्षण रणनीतियों, मूल्यांकन रणनीतियों तथा पाठ्यक्रम की सामग्री को संशोधित करने, बदलने, अनुकूलित करने, विस्तार करने और बदलने की प्रक्रिया शामिल हैं। यह लेखकों के कामकाज, रूचियों एवं पृष्ठभूमि के स्तर को ध्यान में रखता है। पाठ्यचर्या भेदभाव सामग्री, शिक्षण पद्धतियों, मूल्यांकन और सीखने के माहौल के स्तर

NOTES

पर किया जा सकता है।

"जिला आधारित सहायता टीम (डीबीएसटी)" - जिला स्तर पर एक प्रबंधन संरचना,

जिसकी जिम्मेदारी समावेशी शिक्षा को समन्वयित और बढ़ावा देना है; प्रशिक्षण; पाठ्यचर्या वितरण; संसाधनों का वितरण; बुनियादी ढाँचे का विकास; सीखने के लिए बाधाओं की पहचान, आकलन और पता लगाना। डीबीएसटी को यह सुनिश्चित करने के लिए नेतृत्व तथा सामान्य प्रबंधन प्रदान करना होगा कि जिले के भीतर स्कूल सीखने, देखभाल और समर्थन के समावेशी केंद्र हैं। संरचना के लिए नेतृत्व जिला वरिष्ठ प्रबंधन द्वारा प्रदान किया जाना चाहिए जो समर्थन प्रदान करने के लिए ट्रांसवर्सल टीमों को नामित कर सकता है।

"विशेष समर्थन के डॉमेन" - निम्नलिखित डोमेन में से एक या अधिक में निम्न, मध्यम या उच्च स्तर पर विशिष्ट समर्थन प्रदान या सुविधा प्रदान की जा सकती है :

- एकीकृत स्कूल स्वास्थ्य कार्यक्रम के हिस्से के रूप में स्वास्थ्य (मानसिक स्वास्थ्य सहित)
- दृष्टि (अंध, कम दृष्टि/आंशिक दृष्टि, बहरा अंधापन)
- सुनवाई (बहरा, सुनने की कड़ी मेहनत)
- संचार (छोटे या कोई कार्यात्मक भाषण, Augmentative और वैकल्पिक संचार की आवश्यकता है)
- मोटर
- संज्ञान (मध्यम, गंभीर और गहन बौद्धिक अक्षमता या सीखने की अक्षमता)
- न्यूरोलॉजिकल और न्यूरोडिफॉर्ममेंट हानि (मिर्गी, सेरेब्रल पाल्सी, ध्यान घाटे विकार, विशिष्ट सीखने की अक्षमता, दर्दनाक मस्तिष्क की चोट, भ्रूण शराब सिंड्रोम एँवं ऑटिज़्म सहित)
- व्यवहार और सामाजिक कौशल
- कौशल और व्यावसायिक शिक्षा

- एकाधिक और जटिल सीखने और विकासात्मक समर्थन

NOTES

"उच्च स्तरीय समर्थन के लिए पात्रता" – एक शिक्षार्थी जो पाठ्यचर्या भेदभाव, विशेष समर्थन, सहायक प्रौद्योगिकी, विशेष एलटीएसएम और/या एक उच्च तीव्रता तथा आवृत्ति आधार पर विशेष रूप से प्रशिक्षित शिक्षक के क्षेत्रों में समर्थन की आवश्यकता है। ऐसे उच्च स्तरीय समर्थन तक पहुँच संसाधनों की उपलब्धता द्वारा निर्धारित की जाती है। "पूर्ण सेवा स्कूल (एफएसएस)" - सामान्य स्कूल जो सभी संस्कृतियों के समावेशी और स्वागत करते हैं, उनकी संस्कृतियों, नीतियों और प्रथाओं के संदर्भ में। ऐसे स्कूल अपनी शिक्षा, संस्कृति, क्षमताओं या विकलांगता, उनके लिंग या जाति के बावजूद अपनी पूरी क्षमता विकसित करने के लिए सभी विद्यार्थियों को समर्थन प्रदान करके भागीदारी को बढ़ाते हैं तथा बहिष्कार को कम करते हैं। इन विद्यालयों को पूर्ण समावेशीता के प्रमुख स्कूलों के रूप में कार्य करने के लिए एक समावेशी शिक्षा सेटिंग में सीखने के लिए बाधाओं की पूरी शृंखला को संबोधित करने के लिए मजबूत एवं उन्मुख किया जाएगा।

"उच्च स्तर का समर्थन प्रावधान" – उच्च गुणवत्ता वाले समर्थन प्रावधान, सार्वजनिक नीतियों के समर्थन के लिए कार्यक्रम नीतियों, रेखा बजट, तथा मानदंडों और मानकों द्वारा कवर किए गए प्रावधानों के ऊपर और ऊपर हैं। ये प्रावधान विशेष हैं, विशेषज्ञ कक्षा/स्कूल संगठन, सुविधाओं और कर्मियों की आवश्यकता होती है जो उच्च आवृत्ति और उच्च तीव्रता के आधार पर उपलब्ध हैं। विशेष विद्यालयों में उच्च स्तर का समर्थन प्रावधान उपलब्ध होगा लेकिन साइट को प्रतिबंधित के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए। ऐसे मामले में जहां एक विशेष विद्यालय पहुंच के भीतर नहीं है,

वैकल्पिक उपाय

यह सुनिश्चित करने के लिए रखा जाना चाहिए कि एक ऐसे छात्र जो उच्च-समर्थन प्रावधान तक पहुंच की आवश्यकता है, को सामान्य स्कूल में उचित आवा मिल सकता है।

"व्यक्तिगत सहायता योजना" - उन योजनाओं के लिए डिजाइन की गई योजना जिन्हें माता-पिता एवं स्कूल आधारित सहायता टीम के परामर्श से शिक्षकों द्वारा विकसित अतिरिक्त समर्थन या विस्तारित अवसरों की आवश्यकता होती है। "समर्थन प्रावधान का स्तर" - सिस्टम, स्कूल, शिक्षक तथा शिक्षार्थी स्तर पर समर्थन की आवश्यकता और समर्थन की तीव्रता। यह समावेशी शिक्षा प्रणाली

प्रणाली में स्कूलों, वित्त पोषण और प्रावधान के लिए मुख्य आयोजक बन जाता है। "निम्न स्तर का समर्थन प्रावधान" – कम मूल्यांकन वाले समर्थन प्रावधान निवारक और सक्रिय हैं। इसमें आम तौर पर लागू विभागीय कार्यक्रमों, नीतियों, रेखा बजट तथा मानदंडों और सार्वजनिक स्कूलों के मानों के लिए प्रदान किए जाने वाले समर्थन प्रावधान सम्मिलित हैं।

"समर्थन प्रावधान का मध्यम स्तर" – समर्थन प्रावधान जो मध्यम, कवर समर्थन प्रावधानों को रेट किया गया है जो सामान्य सार्वजनिक विद्यालयों के लिए कार्यक्रमों, नीतियों, रेखा बजट और मानदंडों और मानकों द्वारा कवर किए गए प्रावधानों के ऊपर हैं। ऐसे प्रावधान एक मध्यम आवृत्ति, अंत:क्रियात्मक या अल्पकालिक आधार पर या भौतिक उपकरणों के ऋण के माध्यम से एक बार उपलब्ध कराए जाते हैं। ऐसे प्रावधानों के कार्यान्वयन को आमतौर पर साधारण स्कूल या कक्षा में समायोजित किया जा सकता है। एक शिक्षण प्रणाली तथा सहायक उपकरण संसाधन केन्द्र से संचालित एक ऋण प्रणाली, पहचानने ाले शिक्षार्थियों को शैक्षिक सहायक उपकरण और तकनीक प्रदान कर सकती है।

ऋण

केंद्रारें के सभी स्कूलों के लिए सुलभ होने के लिए भौगोलिक रूप से समान रूप से फैलाया जाना चाहिए। सामान्य स्कूल जिन्हें पूर्ण-सेवा स्कूलों के रूप में नामित किया गया है, उन्हें मध्यम स्तर का समर्थन पैकेज प्राप्त होगा। हालांकि, सभी शिक्षार्थियों को ऐसे उपलब्ध समर्थन तक पहुँचने में सक्षम होना चाहिए।

"डीबीएसटी द्वारा समर्थन प्रावधान की निगरानी" – सभी स्तरों पर उत्तरदायित्व सुनिश्चित करने के लिए अतिरिक्त समर्थन उपायों के आवेदन की निगरानी स्कूल तथा कक्षा के दौरे, परामर्श और परामर्श के रूप में हो सकती है, या समर्थन लाइन वस्तुओं के खिलाफ व्यय पर लिखित रिपोर्ट की आवश्यकता के द्वारा हो सकती है।

"गहन बौद्धिक अक्षमता" – गहन बौद्धिक अक्षमता वाला व्यक्ति है।

दैनिक शारीरिक देखभाल, स्वास्थ्य एवं सुरक्षा के सभी पहलुओं के लिए दूसरों पर निर्भर है, हालांकि वह इन गतिविधियों में से कुछ में भी भाग लेने में सक्षम हो सकता। गंभीर शारीरिक हानि वाले व्यक्ति घर पर कुछ दैनिक कार्यों में सहायता कर सकते हैं, जैसे टेबल पर व्यंजन लेना। वस्तुओं के साथ

NOTES

सरल कार्य कुछ व्यावसायिक गतिविधियों में भागीदारी का आधार हो सकता है जिसमें चल रहे समर्थन के उच्च स्तर हैं। सह-होने वाली भौतिक तथा संवेदी हानियां घर, मनोरंजक एवं व्यावसायिक गतिविधियों में भागीदारी (देखने से परे) में लगातार बाधाएं होती हैं। Maladaptive व्यवहार एक महत्वपूर्ण अल्पसंख्यक में मौजूद है।

"समर्थन का कार्यक्रम" – समर्थन के कार्यक्रम विशिष्ट समय के फ्रेम के भीतर स्कूलों और कक्षाओं में वितरित संरचित हस्तक्षेपों का संदर्भ देते हैं। पाठ्यक्रमों तक पहुंच को रोकने वाली बाधाओं को दूर करने के लिए निम्नलिखित समर्थन कार्यक्रमों को रखा जाना चाहिए:

- विशेष पेशेवर कर्मचारियों द्वारा विशेषज्ञ सेवाओं का प्रावधान।
- पाठ्यचर्या भेदभाव जिसमें मूल्यांकन में समायोजन और आवास सम्मिलित हैं।
- विशेष शिक्षण और शिक्षण सहायता सामग्री और सहायक प्रौद्योगिकी का प्रावधान
- शिक्षकों, प्रबंधकों और सहायक कर्मचारियों के प्रशिक्षण और परामर्श।

"उचित आवास" - का मतलब आवश्यक और उचित संशोधन –

समायोजन एक असमान या अनावश्यक बोझ को लागू नहीं करते हैं, जहाँ किसी विशेष मामले में आवश्यक है, विकलांग व्यक्तियों को यह सुनिश्चित करने के लिए कि सभी मानव अधिकोरों और मौलिक स्वतंत्रता के अन्य लोगों के साथ समान आधार पर आनंद या अभ्यास (पर सम्मेलन के अनुच्छेद 2 में दी गई परिभाषा विकलांग व्यक्तियों के अधिकार) "स्कूल-आधारित सहायता टीम (एसबीएसटी)" - विद्यालय स्तर के समर्थन तंत्र के रूप में सामान्य और आगे की शिक्षा के स्कूलों द्वारा स्थापित टीम, जिसका प्राथमिक कार्य सह-समन्वयित स्कूल, शिक्षार्थी और शिक्षक सहायता को जगह में रखना है। एसबीएसटी के लिए नेतृत्व स्कूल प्रिंसिपल द्वारा यह सुनिश्चित करने के लिए प्रदान किया जाता है कि स्कूल सीखने, देखभाल और समर्थन का एक समावेशी केंद्र बन जाए। यह टीम एक संस्थान-स्तर सहायता टीम के समान है।

स्क्रीनिंग, पहचान और नीति शुरू करना :

नीति का उद्देश्य

(1) स्क्रीनिंग, पहचान, आकलन और समर्थन (एसआईएएस) पर नीति का उद्देश्य उन सभी शिक्षार्थियों के लिए कार्यक्रमों की पहचान, मूल्यांकन और प्रदान करने के लिए प्रक्रियाओं के मानकीकरण के लिए नीति ढाँचा प्रदान करना है, जिन्हें उनकी भागीदारी बढ़ाने के लिए अतिरिक्त सहायता की आवश्यकता है।

(2) एसआईएएस नीति का लक्ष्य कमजोर शिक्षार्थियों के लिए गुणवत्ता शिक्षा तक पहुँच में सुधार करना है और जो सीखने के लिए बाधाओं का अनुभ्व करते हैं, जिनमें निम्न शामिल हैं:

- सामान्य और विशेष स्कूलों में शिक्षार्थियों जो किसी भी प्रकृति (पारिवारिक व्यवधान, भाषा के मुद्दों, गरीबी, सीखने की कठिनाइयाँ, अक्षमता इत्यादि) की बाधाओं के कारण सीखने में नाकाम रहे हैं।
- अनिवार्य स्कूल जाने वाली उम्र और युवा जो स्कूल से बाहर हो सकते हैं या कभी भी उनकी अक्षमता या अन्य बाधाओं के कारण स्कूल में नामांकन नहीं किया है।

(3) नीति का मुख्य फोकस उन शिक्षार्थियों के लिए शिक्षण और सीखने की प्रक्रियाओं का प्रबंधन और समर्थन करना है जो राष्ट्रीय पाठ्यचर्या वक्तव्य ग्रेड आर -12 के ढांचे के भीतर सीखने के लिए बाधाओं का अनुभव करते हैं।

(4) नीति प्रारंभिक पहचान की एक निर्बाध प्रणाली स्थापित करने तथा सीखने के टूटने और संभावित ड्रॉपआउट को कम करने के लिए प्रभावी हस्तक्षेप स्थापित करने के लिए एकीकृत स्कूल स्वास्थ्य नीति के साथ निकटता से गठबंधन है।

(5) नीति प्रणाली को निर्देश देती है कि सभी स्तरों पर योजना, बजट एवं कार्यक्रम समर्थन कैसे करें।

(6) पॉलिसी को विशेष आवश्यकता शिक्षा पर शिक्षा श्वेत पत्र 6 की सिफारिशों के अनुरूप एक समावेशी शिक्षा प्रणाली की ओर शिक्षा प्रणाली के परिवर्तन को सुनिश्चित करने के लिए एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया के रूप में देखा जाना चाहिए: एक समावेशी शिक्षा तथा प्रशिक्षण प्रणाली (2001)।

NOTES

(7) नीति विशेष विद्यालयों और सेटिंग्स में शिक्षार्थियों को नामांकित करने पर स्पष्ट दिशा निर्देश प्रदान करती है जो माता-पिता और शिक्षकों (शिक्षा श्वेत पत्र 6, पी 7) द्वारा निभाई गई केंद्रीय भूमिका को भी स्वीकार करते हैं।

(8) नीति में शिक्षकों द्वारा अनुभव की गई बाधाओं की पहचान, पहचान तथा आकलन करने की प्रक्रिया में शिक्षकों, स्कूल-आधारित सहायता टीमों और जिला-आधारित सहायता टीमों द्वारा उपयोग किए जाने वाले आधि कारिक रूपों के एक सेट के साथ-साथ आधिकारिक रूपों का एक सेट सम्मिलित है। जिला-आधारित सहायता टीम द्वारा कार्यक्रमों और निगरानी के अनुसार समर्थन प्रावधान की योजना बनाना।

(9) प्रोटोकॉल जिले में नियुक्त कर्मचारियों के समर्थन कार्यों और समर्थन के प्रावधान और प्रावधान के लिए जिम्मेदार स्कूल संरचनाओं की रूपरेखा तैयार करता है।

(10) यह एक समावेशी शिक्षा प्रणाली, अर्थात् स्कूल-आधारित सहायता टीमों और जिला-आधारित सहायता टीमों के कार्यान्वयन के लिए आवश्यक प्रमुख समन्वय संरचनाओं की संरचना और संचालन को भी नियंत्रित करता है जो स्कूल में समर्थन प्रावधान को तर्कसंगत बनाने और अधि कतम करने के उद्देश्य से ट्रांसवर्सेबल संरचनाएं हैं एवं जिला स्तर।

(11) स्क्रीनिंग, पहचान, आकलन और समर्थन (एसआईएएस) पर नीति बुनियादी शिक्षा रणनीतियों के अन्य विभागों के साथ संरेखित है जिसका उद्देश्य स्कूलों में शिक्षकों, प्रबंधकों, जिलों तथा माता-पिता का समर्थन करना है।

संबंधित अनुदान और नीतियां

(1) इस नीति दस्तावेज का उद्देश्य प्रवेश और समर्थन सेवाओं को तर्कसंगत बनाने और मानकीकृत करना है और निम्नलिखित संधि, कानून और नीति दस्तावेजों के संयोजन के साथ पढ़ना चाहिए :

- दक्षिण अफ्रीका का संविधान (1996 का अधिनियम संख्या 108)
- दक्षिण अफ्रीका स्कूल अधिनियम (1999 का अधिनियम संख्या 84)
- विशेष आवश्यकता शिक्षा पर शिक्षा श्वेत पत्र 6: एक समावेशी शिक्षा और प्रशिक्षण प्रणाली का निर्माण (2001)

NOTES

- विकलांग व्यक्तियों के अधिकार पर सम्मेलन (2006), विशेष रूप से अनुच्छेद 24
- द कन्वेंशन ऑन द चाइल्ड ऑफ द चाइल्ड (1989) विशेष रूप से अनुच्छेद 23
- प्रारंभिक बचपन विकास पर शिक्षा व्हाइट पेपर 5 (2001)
- बाल अधिनियम (2005 का अधिनियम संख्या 38)
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या और आकलन नीति वक्तव्य, जीआर-12 (2011)
- शिक्षा नीति में एचआईवी तथा एड्स (1999)
- एकीकृत स्कूल स्वास्थ्य नीति (2012)
- शिक्षण एवं शिक्षण (सीएसटीएल) कार्यक्रम के लिए देखभाल और सहायता (2008)
- स्कूल पोषण नीति (2013)
- पब्लिक स्कूल इंफ्रास्ट्रक्चर के लिए न्यूनतम वर्दी मानदंड और मानक (2013)
- 2002 के मानसिक स्वास्थ्य देखभाल अधिनियम, अधिनियम 17
- सूचना अधिनियम, 2000 तक पहुँच का प्रचार (2000 का अधिनियम संख्या 2)
- समानता भेदभाव अधिनियम, 2000 (पीईपीयूडीए या समानता अधि नियम, 2000 का अधिनियम संख्या 4) की समानता और रोकथाम का प्रचार।

स्क्रीनिंग, पहचान पर नीति का आरक्षण

आकलन और समर्थन (एसआईएएस)

शिक्षा श्वेत पत्र

(1) विशेष आवश्यकता शिक्षा पर शिक्षा श्वेत पत्र 6: एक समावेशी शिक्षा और प्रशिक्षण प्रणाली (2001) का निर्माण, यह बताता है कि अतीत के भेदभावपूर्ण प्रथाओं और असंतुलन को कैसे सही किया जा सकता है और इस प्रणाली में आने वाली बाधाओं पर ध्यान केंद्रित करके प्रचार के सिद्धांतों को बढ़ावा दिया जाता है।

(2) इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए कि सभी शिक्षार्थियाओं जो सीखने के लिए बाधाओं का अनुभव करते हैं, विकलांग लोगों सहित, उचित समर्थन तक पहुँच है, यह नीति स्क्रीनिंग, पहचान, मूल्यांकन तथा समर्थन की एक और कठोर और लगातार प्रक्रिया सुनिश्चित करने के लिए है। व्यवस्था भर में शिक्षार्थियों। यह प्रवेश, समर्थन और वित्त पोषण के मामले में अधिक न्यायसंगत अभ्यास सक्षम करेगा।

(3) नीति शिक्षा व्हाइट पेपर (पीपी 7-8) के मुख्य सिद्धांतों के कार्यान्वयन का समर्थन करती है।

(4) स्क्रीनिंग, पहचान, आकलन और सहायता नीति विशेष रूप से अनुभवी सीखने की बाधाओं (1) को पहचानने का लक्ष्य रखती है, (2) अनुभवी बाधाओं से उत्पन्न समर्थन की आवश्यकता होती है और (3) उस समर्थन कार्यक्रम को विकसित करने के लिए जिसमें आवश्कयक होना आवश्यक है के प्रभाव को संबोधित करने की जगह सीखने की प्रक्रिया पर बाधा।

व्यक्तियों के अधिकारों पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन :

अक्षमता (यूएनसीआरपीडी)

(1) नीति विकलांग व्यक्तियों (2007) के अधिकारों पर सम्मेलन की कैबिनेट द्वारा अनुमोदन के बाद पहली बार है, अनुच्छेद 24 के संदर्भ में, उनकी अक्षमता के आधार पर शिक्षार्थियों को शून्य अस्वीकृति होगी।

(2) यह आगे के उपायों में रखता है कि पूरी तरह से समावेशी शिक्षा प्रणाली में उचित आवास प्रदान किया जा सकता है, जिससे अक्षमता वाले प्रत्येक बच्चे के लिए एक समावेशी, गुणवत्ता तथा मुफ्त प्राथमिक शिक्षा तक पहुंच हो सकती है, और माध्यमिक शिक्षा उन समुदायों में दूसरों के साथ बराबर आधार जिसमें वे रहते हैं।

(3) यह भी स्वीकार करता है कि प्रभावी, व्यक्तिगत समर्थन उपायों को उन वातावरणों में प्रदान करने की आवश्यकता है जो पूर्ण समावेश के लक्ष्य के साथ अकादमिक तथा सामाजिक विकास को अधिकतम करते हैं।

सीखने और विकास के लिए बार्सियों को संबोधित करना

(1) अक्सर शिक्षार्थियों को सीखने की प्रक्रिया में चुनौतियों का सामना करना पड़ता है जो कक्षा में, स्कूल में, घर पर, समुदाय में, और/या स्वास्थ्य की

NOTES

स्थिति या विकलांगता के परिणामस्वरूप अनुभवों की एक विस्तृत श्रृंखला का परिणाम हैं। इन चुनौतियों को 'सीखने तथा विकास के लिए बाधा' कहा जाता है।

(2) सीखने और विकास के लिए बाधाओं में शामिल हो सकते हैं :

सामाजिक-आर्थिक पहलुओं (जैसे बुनियादी सेवाओं तक पहुंच की कमी, गरीबी और अविकसितता)

ऐसे कारक जो शिक्षार्थियों को जोखिम में रखते हैं, उदाहरण के लिए, शारीरिक, भावनात्मक और यौन शोषण, राजनीतिक हिंसा, एचआईवी तथा एड्स और अन्य पुरानी स्वास्थ्य स्थितियां

- दृष्टिकोण
- स्कूलों में लचीला पाठ्यक्रम कार्यान्वयन
- भाषा और संचार
- अप्राप्य एवं असुरक्षित संरचनात्मक वातावरण
- समर्थन सेवाओं के अनुचित और अपर्याप्त प्रावधान
- अभिभावकीय मान्यता तथा भागीदारी की कमी
- विकलांगता
- मानव संसाधन विकास रणनीतियों की कमी
- सुलभ शिक्षा और शिक्षण सहायता सामग्री एवं सहायक प्रौद्योगिक की अनुपलब्धता।

सभी सीखने वालों की सहायता की जरूरत

(1) स्क्रीनिंग, पहचान, आकलन और समर्थन (एसआईएएस) नीति इस तरह से संरचित की जाती है कि यह सुनिश्चित करता है कि शिक्षकों तथा स्कूल राष्ट्रीय शिक्षा पाठ्यक्रम और ओकलन नीति वक्तव्य (2011) की डिलीवरी बढ़ाने के लिए सभी शिक्षार्थियों की समर्थन आवश्यकताओं को समझें।

(2) इस नीति में उल्लिखित स्क्रीनिंग, पहचान, आकलन और समर्थन (एसआईएएस) प्रक्रिया स्कूलों और कक्षाओं में आवश्यक समर्थन के

NOTES

स्तर और सीमा का आकलन करने के लिए सीखने की प्रक्रिया में शिथार्थियों की भागीदारी को अनुकूलित करने के लिए है।

- यह आवश्यक अतिरिक्त समर्थन के स्तर और सीमा को स्थापित करने के लिए, घर और स्कूल संदर्भ के संबंध में व्यक्तिगत शिक्षार्थियों की आवश्यकताओं की पहचान करने की प्रक्रिया की रूपरेखा तैयार करता है।
- एकीकृत स्कूल स्वास्थ्य नीति (2012)
- शिक्षण और शिक्षण (सीएसटीएल) कार्यक्रम के लिए देखभाल और सहायता (2008)
- स्कूल पोषण नीति (2013)
- पब्लिक स्कूल इंफ्रास्ट्रक्चर के लिए न्यूनतम वर्दी मानदंड तथा मानक (2013)
- 2002 के मानसिक स्वास्थ्य देखभाल अधिनियम, अधिनियम 17
- सूचना अधिनियम, 2000 तक पहुंच का प्रचार (2000 का अधिनियम संख्या 2)
- समानता भेदभाव अधिनियम, 2000 की समानता और रोकथाम का प्रचार (पीईपीयूडीए या समानता अधिनियम, 2000 का अधिनियम संख्या)

स्कूल के संबंध में स्कूल प्रबंधन

स्क्रीनिंग, पहचान, आकलन और समर्थन (एसआईएएस)

एकीकृत समुदाय-आधारित समर्थन प्रावधान

(1) जैसा कि शिक्षा श्वेत पत्र 6 में उल्लिखित है, स्क्रीनिंग, पहचान, आकलन और समर्थन पर नीति के कार्यान्वयन का समर्थन एकीकृत प्रावधान के एकीकृत समुदाय आधारित मॉडल का प्रस्ताव है।

(2) इसमें शिक्षा जिला, सर्किट, जिला स्थित समर्थन दल (डीबीएसटी) से सहायक कर्मचारियों को शामिल करना शामिल है जिसमें पाठ्यक्रम, स्कूल प्रबंधन और शासन, वित्तीय, कर्मियों और शारीरिक नियोजन, मूल्यांकन, मनो-सामाजिक समर्थन, देखभाल से कर्मचारी शामिल हैं तथा

NOTES

शिक्षण और शिक्षण (सीएसटीएल) ढांचे में सहायता, पूरे स्कूल मूल्यांकन (डब्ल्यूएसई), ईसीडी, एलटीएसएम, ई-लर्निंग इत्यादि। जो कि प्रणालीगत और अन्य बाधाओं की विस्तृत श्रृंखला को पहचानने और संबोधित करने के लिए स्कूलों का समर्थन करने के लिए ट्रांसवर्सल टीमों के रूप में कार्य करता है, और इसके सभी आयामों में समावेशी शिक्षा को लागू करने के लिए स्कूल एवं गाइड स्कूल।

(3) जिला स्थित समर्थन टीमों के साथ सहयोग विशेष स्कूल संसाधन केंद्र और पूर्ण सेवा या समावेशी स्कूल है जो एक जिले के सभी सामान्य और विशेष विद्यालयों तक पहुंचने के लिए विशेष कौशल और संसाधनों से लैस हैं। शुरूआती बचपन विकास केंद्र और गंभीर और गहन विकलांग बच्चों के लिए विशेष देखभाल केंद्र जो अभी तक स्कूलां में नामांकित नहीं हैं।

(4) स्कूल स्तर पर समर्थन सेवा की डिलीवरी संरचना स्कूल आधारित सहायता टीम (एसबीएसटी) है।

(5) शैक्षिक सहायता प्रणालियों को शिक्षण और शिक्षण (सीएसटीएल) ढाँचे के लिए देखभाल और सहायता के द्वारा समर्थन के नेटवर्क की स्थापना का उपयोग करना चाहिए तथा बढ़ावा देना चाहिए, जो अन्य सरकारी विभागों, सामुदायिक सेवाओं, निजी पेशेवरों सहित सभी मौजूदा सेवाओं का समन्वय करता है, गैर-सरकारी संगठन (एनजीओ), अक्षम लोगों के संगठन (डीपीओ), प्रारंभिक हस्तक्षेप प्रदाताओं तथा समुदाय आधारित पुनर्वास सेवाएं।

प्रांरभिक संचार विकार को बढ़ावा देना : तरीके, सहायक उपकरण और एएसी सहित प्रथाओं

हम कौन हैं : कोलोराडो शिक्षा स्कूल के एसडब्ल्यूएएएसीएस (राज्यव्यापी सहायक प्रौद्योगिक, उन्नति और वैकल्पिक संचार) टीम राज्य के स्कूल जिलों में बहुआयामी सहायक प्रौद्योकिी सेवाएं देती हैं ताकि विकलांग छात्रों को पाठ्यक्रम और पूर्ण भागीदारी के बराबर पहुँच मिल सके। अपनी शिक्षा और कक्षा में। बोल्डर वैली स्कूल जिला की एसडब्ल्यूएएसी टीम को "सहायक प्रौद्योगिकी टीम" (या एटी टइम) के रूप में जाना जाता है और इसमें एक व्यावसायिक चिकित्सक, एक विशेष शिक्षा शिक्षक तथा एक भाषण/भाषा रोगविज्ञानी शामिल हैं, सभी सहायक प्रौद्योगिकी के उपयोग में विशेष प्रशिक्षण के साथ संचार प्रणाली/ उपकरणों। एटी टीम का लक्ष्य संसाधन और

NOTES

छात्र/स्टाफ प्रशिक्षण प्रदान करना है ताकि विकलांग छात्रों को उचित शैक्षणिक अनुभवों में भाग ले सकें और जो कुछ पता हो उसे संवाद कर सकें।

एएसी: "Augmentative या वैकल्पिक संचार (एएसी) कोई उपकरण, सिस्म या विधि है जो प्रभावी ढंग से संवाद करने के लिए संचार विकार वाले बच्चे की क्षमता में सुधार करता है।" हमारी बीवीएसडी सहायक प्रौद्योगिक टीम जटिल संचार आवश्यकताओं वाले छात्रों के साथ काम कर रही हैं (और उनके स्कूल टीमों और परिवारों) चूंकि टीम का गठन 1993 में हुआ था, और हमने धीरे-धीरे हमारे दृष्टिकोण और प्रक्रियाओं को व्यवस्थित किया है। यह पुस्तक स्कूल-आधारित सेवा प्रदाताओं के लिए एक छोटी सी व्यावहारिक प्रारंभिक मार्गदर्शिका है और यह संचार और एएसी सिस्टम पर पृष्ठभूमि सामग्री से प्राकृतिक प्रगति का पालन करती है।

(टूल्स) विशिष्ट कार्यान्वयन प्रक्रियाओं और रणनीतियों के संक्षिप्त वर्णन के माध्यम से हमें उपयोगी पाया गया है, और अंत में, प्रासंगिक परिपत्रों, सूचियों, डेटा शीट्स और हैंडआउट्स के वर्गीकरण वाले कई परिशिष्ट। अतिरिक्त जानकारी और / या विवरण मांगने वाले पाठकों को ग्रंथसूची में सूचीबद्ध संसाधनों को साहित्य की प्रारंभिक खोज के लिए मूल्यवान माना जा कसता है। एएसी के साथ काम करने के लिए टीम दृष्टिकोण एक सामान्यवादी और संचार-प्रोत्साहन के लिए एक "बहुआयामी" दृष्टिकोण पर आधारित है तथा संवादात्मक इरादे के किसी भी और सभी संकेतों को बढ़ाने और वास्तविक संवादात्मक कृत्यों। हम सीमित "या/या" दृष्टिकोण का समर्थन नहीं करते हैं (यानी, एक समाधान सभी छात्रों या सभी परिस्थितियों में फिट बैठता है); बल्कि, हम "दोनों/और" दृष्टि को गले लगाते हैं। कई संभावित "एएसी टूलबॉक्स में उपकरण" हैं एवं विशिष्ट उपकरण जो एक परिस्थिति में सबसे प्रभावी हो सकता है, शायद दूसरे में काम नहीं कर सकता है। रणनीतियों को बदलने, समायोजित करने, नाचने की भी आवश्यकता है - हमने पाया है कि अतिरिक्त फ्लेक्सिबिलिटी और खुले दिमाग को रखना बिल्कुल महत्वपूर्ण है। इसके अतिरिक्त, ठोस शोध और सबूत-आधारित अभ्यास (अनावश्यक अनुमान के बजाए) से उत्पन्न रणनीतियों का उपयोग सर्वोपरि है। छात्र स्कूल सहायक टीम या परिवार द्वारा संदर्भित हमारी सहायक प्रौद्योगिकी टीम के केसेलोड का हिस्सा बन जाते हैं जो सोच सकते हैं कि किसी भी प्रकार का प्रौद्योगिकी मौजूद है जो उनके छात्र को कुछ लाभ होगा। वैकल्पिक रूप से, उन्होंने कुछ प्रकार की तकनीक के सम्बन्ध में सुना होगा जो उन्हें लगता है

NOTES

अपनी एटी टीम को स्कूल जाने पर एएसी मूल्यांकन करने के लिए व्यवस्था करते हैं (यह विस्तार से वर्णित है हमारी पुस्तक बीवीएसडी सहायक प्रौद्योगिकी संचार मूल्यांकन में)। एक एएसी मूल्यांकन छात्र की क्षमताओं और चुनौतियों के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान कर सकता है और मात्रात्मक प्रस्तुत कर सकता है।

डेटा तथा विभिन्न सहायक प्रौद्योगिकी रणनीतियों के लिए एक ठोस सबूत-आधारित तर्क-कोशिश करने के लिए एक उत्कृष्ट जगह। एक बार छात्र हमारे एटीटीम कैसेलोड का हिस्सा बनने के बाद, उसे ग्रेड से ग्रेड और स्कूल से स्कूल तक पढ़ाया जाएगा जब तक वह सिस्टम से स्नातक न हो या अन्यथा उसे हमारी सेवाओं की आवश्यकता नहीं होगी।

पृष्ठभूमि

"अगर मेरी संपत्ति एक अपवाद के साथ मुझसे ली गई थी, तो मैं संचार की शक्ति को बनाए रखना चुनूंगा, इसके लिए मैं जल्द ही बाकी सभी को वापस प्राप्त करूंगा।" (डेनियल वेबस्टर) संचार को "सूचना का आदान-प्रदान करने की प्रक्रिया" विचारों। एक सक्रिय प्रक्रिया में, इसमें एन्कोडिंग, ट्रांसमिटिंग और डिकोडिंग इच्छित संदेशों को शामिल किया जाता है। "भाषा एक कोड है जिसमें हम विशिष्ट प्रतीकों को किसी चीज़ के लिए खड़े करते हैं। ये प्रतीक और कोड मनमानी हैं और उन्हें सीखा जाना चाहिए: कोई उद्देश्य नहीं है कि "घर" शब्द (या शब्द में शामिल विशिष्ट ध्वनियों) को "एक इमारत जिसमें लोगों, खासकर एक परिवार के सदस्य रहते हैं। "एक भाषा के लिए एकमात्र आवश्यकता यह है कि कोड एक ही समुदाय या भाषा समूह के सदस्यों द्वारा सहमत (और पारंपरिक) है। भाषण विशेष भाषा के लिए उपयुक्त मुखर ध्वनि पैटर्न को बोलकर इस कोड का उत्पादन करने का वास्तविक व्यवहार है। भ्रामक भाषा संदेश (भाषा समझ) को डिकोड करने का संदर्भ देती है, जबकि अभिव्यक्तिपूर्ण भाषा एन्कोडिंग को संदर्भित करती है तथा संदेशों को एक संचार हिस्सेदारी को तैयार करती है।

संचार के लिए भाषण तथा भाषा महत्वपूर्ण हैं, लेकिन वे केवल एक हिस्सा हैं

संचार। स्पीच प्रोसोडी (भाषण का "संगीत" अभिव्यक्ति के लिए भी महत्वपूर्ण है: एक मोनोटोन में एक उच्चारण दिया जा सकता है, या सावधानी, तनाव, वितरण की दर, और विराम/हिचकिचाहट के सम्बन्ध में ध्यान से मॉड्यूल किया जा सकता है। संचार के इस पहलू को "पैरालिंगुस्टिक" कहा

जाता है। गैर-भाषाई संचार भी महत्वपूर्ण है जिसमें जेश्चर, मुद्रा, चेहरे की अभिव्यक्ति, आंखों की नजर, और प्रॉक्सीमिक्स (संचारकों के बीच भौतिक दूरी) जैसी चीजें सम्मिलित हैं। मातृभाषात्मक संचार भाषा के सम्बन्ध में बात करने, इसका विश्लेषण करने से संबंधित है, सामाजिक संदर्भ में स्वीकार्यता के लिए इसका निर्णय लेना, त्रुटियों के लिए इसकी निगरानी करना आदि।

NOTES

सीखने संचार कौशल

आम तौर पर विकासशील बच्चों में भाषा अधिग्रहण की प्रक्रिया आमतौर पर चिकनी और निर्बाध होती है और अलग-अलग "चरण" शायद ही ध्यान देने योग्य होते हैं और आने लगते हैं और जल्दी जाते हैं। अधिक जटिल संचार आवश्यकताओं वाले व्यक्तियों के लिए, चरण धीरे-धीरे, अंत:क्रियात्मक रूप से तथा एक मूर्खतापूर्ण फैशन में विकसित हो सकते हैं। भाषा अधिग्रहण के लिए कई विकासशील स्कीमा हैं, और ये स्कीमा भिन्न हैं। मामला-मामलें से थोड़ा सा विवरण में; कुछ ओवरलैप, कुछ दूसरे पर एक कौशल पर बल देते हैं, कुछ को कुछ हद तक असमान रूप से अनुक्रमित किया जाता है और उनकी तुलना करने या उन्हें एक-दूसरे के साथ मिलाने के लिए वास्तव में "विभाजन बाल" होता है। मॉडल जो हमारे बीवीएसडी सहायक प्रौद्योगिकी दल को छात्रों के लिए सबसे उपयोगी और व्यावहारिक पाया गया है। हम साथ काम करते हैं संचार की क्षमता के तीन स्तरों पर आधारित है। (हमने चैरिटी रोवलैंड तथा फिलिप श्वेइगर्ट द्वारा उपयोग की जाने वाली स्कीमा के कई स्तरों को ध्वस्त कर दिया है) 2 हमारा मूल प्रतिमान यह है कि व्यक्ति कुछ फैशन में प्रगति करता है; पूर्व-जानबूझकर और पूर्व-प्रतीकात्मक संचार प्रतीकों का उपयोग करके समय, और बाद में विशिष्ट क्रम (वाक्य विन्यास) के साथ कई प्रतीकों का उपयोग कर।

संचार क्षमताओं के तीन स्तर

हमारा मानना है कि उचित स्तर पर हमारे छात्रों की आवश्यकताओं को पूरा करना महत्वपूर्ण है: बहुत अधिक या बहुत कम नहीं (यानी, Vygotsky "निकटवर्ती विकास का क्षेत्र" या जेडपीडी)। बहुत कम उन्हें बोलेगा और बहुत अधिक उन्हें परेशान करेगा-किसी भी तरह से यह सशक्त है तथा छात्रों को दुनिया की अपनी अनोखी दृष्टि को संवाद करने के लिए प्रोत्साहित नहीं करता है। इस मुद्दे को हल करने के लिए, और अधिक प्रभावी ढंग से हमारी छात्र आबादी की सेवा करने के लिए, हमने अपने छात्रों को समूहबद्ध करने

NOTES

के लिए उपयोगी पाया है, जो उपरोक्त उल्लिखित तीन सामान्यीकृत संचार प्रोफाइलों के अनुसार : उभरते संवाददाता, प्रतीकात्मक संवाददाताओं और मध्यवर्ती प्रतीकात्मक संवाददाताओं की शुरूआत करते हैं। कृपया ध्यान रखें कि ये प्रोफाइल केवल अनुमानित हैं: कई बार छात्र "स्प्लिंटर कौशल" प्रदर्शित करते हैं या दो अलग-अलग स्तरों के मध्य एक संक्रमणकालीन चरण में काम करते प्रतीत होते हैं।

स्तर 1 – उभरते हुए संचारक ये पूर्व-प्रतीकात्मक संवाददाता हैं जो रिफ्लेक्सिव/प्रतिक्रियाशील व्यवहार (हंसी, रोना) प्रदर्शित कर सकते हैं जिसे पर्यवेक्षक द्वारा संवादात्मक के रूप में वर्णित किया जाता है, और यह स्तर उन व्यक्तियों के माध्यम से फैलता है जो जानबूझकर goaldirected व्यवहार प्रदर्शित करते हैं (जरूरी नहीं कि निर्देशित एक और व्यक्ति), तथा आखिरकार उन लोगों के माध्यम से जो जानबूझकर संवादात्मक व्यवहार (लक्ष्य निर्देशित व्यवहार किसी अन्य व्यक्ति के प्रति निर्देशित) प्रदर्शित करते हैं, इशारा या प्राकृतिक गैर-प्रतीकात्मक साधनों का उपयोग करते हैं।

स्तर 2 – सिंबलिक कम्युनिकेटर शुरू करना कुछ प्रतीकों का उपयोग कर सकता है: मैन्युअल साइन या साइन अनुमान, vocalizations, स्टाइलिज्ड जेस्चर (पॉइंटिंग सहित) और verbalizations या मौखिक अनुमान (लगभग 503 के माध्यम से)। वे एक समय में प्रतीकों का उपयोग करते हैं तथा यदि उन्हें बिल्कुल मिलते हैं तो उन्हें एक साथ जोड़ना शुरू नहीं किया है। वे एक साधारण ग्रीटिंग, पसंदीदा गतिविधि को बहाल करने की इच्छा या दो गतिविधियों के बीच एक विकल्प को इंगित करने के लिए चित्र या ऑब्जेक्ट-आधारित संचार रणनीतियों, या एकल या डबल-संदेश भाषण जनरेटिंग डिवाइस का उपयोग (या कोशिश कर सकते हैं) कर सकते हैं।

स्तर 3 – इंटरमीडिएट सिंबलिक कम्युनिकेटर कई (लगभग 25 या अधिक) प्रतीकों का उपयोग कर सकते हैं: मैन्युअल संकेत या साइन अनुमान, vocalizations, verbalizations (या मौखिक अनुमान) एक समय में - वे प्रतीकों का संयोजन हो सकता है (जो इंगित करेगा अपने प्रदर्शन में 50 प्रतीकों के करीब) कम से कम एक प्राथमिक वाक्य विन्यास या शब्द क्रम में, उदाहरण के लिए, मुझ चाहिए ..... मुझे पंसद है ... मुझे पसंद नहीं है ..... मैं जाता हूं .... आदि।

एएसी क्या है ?

NOTES

संचार की एएसी प्रणाली भाषण पर भरोसा नहीं करती है। कुछ बच्चों के लिए, एक एएसी संचार का प्राथमिक साधन हो सकता है; अन्य लोग अपने भाषण (मैकनेरन और शिओलेनो 2000) को स्पष्ट तथा विस्तारित करने के लिए एएसी का उपयोग कर सकते हैं। एएसी सिस्टम को कई तरीकों से बाँटा जाता है (हेलर 2004)। नीचे सामान्य शब्दावली है। कोई तकनीक नहीं (कोई तकनीक नहीं): ये एएसी सिस्टम केवल व्यक्ति के शरीर को शामिल करते हैं। कुछ प्रणालियों में औपचारिक भाषाएँ शामिल हैं, जैसे अमेरिकन साइन लैंग्वेज (एएसएल)। एक सरल प्रणाली में एक विशेष बच्चे को अनूठा इशारा सम्मिलित हो सकता है जो देखभाल करने वाला समझता है (उदाहरण के लिए, जब कोई बच्चा गले लगाने के लिए उसके गाल को छूता है)। कम तकनीक (कम तकनीक): कम तकनीक प्रणाली गैर इलेक्ट्रॉनिक हैं लेकिन ची के बाहर सामग्री हैं।

उदाहरण वेल्क्रो या धातु के छल्ले के साथ प्लेक्सीग्लस (या आसानी से साफ किया गया कोई अन्य हल्के सामग्री) के टुकड़े तक रखे गए नोटबुक या फोटो एलबम में रखे गए फोटो, चित्र, और/या शब्द हैं। एक लो-टेक सिस्टम में ऑब्जेक्ट्स का संग्रह भी शामिल हो सकता है (जैसे एक चम्मच खाने की इच्छा का प्रतिनिधित्व करने के लिए; बॉक्स में रखा जाता है या उसे, वह Plexiglas से जुड़े पुस्तक कवर की तस्वीरों से चुन सकते हैं। शर्ट पहनने के विकल्पों की पेशकश करते समय, उनकी मां रंगीन महसूस के छोटे टुकड़ों के साथ पुस्तक कवर का आदान-प्रदान कर सकती है। बच्चे अपनी पसंद का प्रतिनिधित्व करने वाले प्रतीक को इंगित करता है, देखता है, या अन्यथा इंगित करता है। उच्च तकनीक (उच्च तकनीक): उच्च तकनीक प्रणालियों में इलेक्ट्रॉनिक संचार बोर्डों और/या कम्प्यूटरीकृत भाषा सिंथेसाइज़र का उपयोग सम्मिलित है। इलेक्ट्रॉनिक संचार बोर्डों में फोटोग्राफ, रेखाचित्र, वाक्यांश, शब्द, या अक्षरों का उपयोग करके संचार संदेश का प्रदर्शन होता है।

संदेश प्रिंटआउट या संश्लेषित/डिजिटलीकृत भाषण का उत्पादन करने के लिए स्पर्श या लेजर बीम द्वारा सक्रिय किया जाता है (संश्लेषित भाषण कम्प्यूटर उत्पन्न होता है; डिजिटलीकृत भाषण मानव आवाज का उपयोग करके दर्ज किया जाता है)।

NOTES

एक एएसी प्रणाली का विकास

एक विशिष्ट बच्चे के लिए एक विशेष एएसी प्रणाली का चयन सबसे अच्छा होता है।

सहयोगी टीम निर्णय लेने की प्रक्रिया। टीम सक्रिय रूप से परिवार के सदस्यों को सम्मिलित करती है और आमतौर पर शिक्षकों, बाल देखभाल प्रदाताओं, प्रशासकों, एएसी तकनीशियनों, चिकित्सकों तथा भाषण और भाषा, व्यावसायिक और शारीरिक चिकित्सक सम्मिलित करती है। नीचे दिए गए सवालों का जवाब टीम को निर्णय लेने में सहायता कर सकता है।

एक अलग बच्चे (ब्लैकस्टोन और हंट बर्ग 2003) के लिए एएसी सिस्टम का सबसे उपयुक्त प्रकार। बच्चे की संचार की जरूरतें क्या हैं? विचार करें कि बच्चे अब और क्यों संचार करता है। क्या उसे बुनियादी जरूरतों को पूरा करने के लिए संवाद करने की आवश्यकता है (जैसे भूख)? क्या उसे सहकर्मियों के साथ खेलने के लिए तथा अधिक संवाद करने की जरूरत है? बच्चे की क्षमताओं पर कौन सी एएसी प्रणाली बनाने की संभावना है? उदाहरण के लिए, एक बच्चा जिसने संवाद करने के लिए अपनी खुद की जेस्चरल प्रणाली विकसित की है, वह संकेत भाषा के साथ अच्छा प्रदर्शन कर सकती है। एक एएसी सिस्टम का उपयोग कर बच्चे कैसे संवाद करेगा? बच्चे की मोटर क्षमताओं पर विचार करें। क्या वह इंगित कर सकती है? पहुंचें और स्पर्श करें? उसकी उंगलियों के साथ फार्म संकेत? क्या वह आंखों पर नजर रखती है? क्या उसे एक प्रमुख सूचक की आवश्यकता होगी?

बच्चे की संज्ञानात्मक और दृश्य क्षमताओं क्या हैं? एक बच्चा जो अभी तक अक्षरों को समझने में सक्षम नहीं है, चित्रों, चित्रों या तस्वीकरों का उपयोग करके सिस्टम से लाभ उठा सकता है, तथा एक बच्चा जो चित्रों या छवियों को समझने में सक्षम नहीं है, वस्तुओं की आवश्यकता हो सकती है। एक दृश्य विकलांगता वाले बच्चे को पर्याप्त रूप से प्रतीकों की आवश्यकता होगी तथा पर्याप्त विपरीत दिखाई देने के साथ। प्रतीक प्रणाली कैसे प्रदर्शित की जाएगी? इस बात पर विचार करें कि बच्चे को एएसी कैसे उपलब्ध कराया जाए। एक बच्चा जो व्हीलचेयर का उपयोग करता है उसे अपनी कुर्सी से जुड़े संचार बोर्ड की आवश्यकता हो सकती है। एक शारीरिक रूप से सक्रिय बच्चा अपने बेल्ट से जुड़े चित्र कार्ड का एक छोटा सा सेट पंसद कर सकता हूँ। बच्चे किसके साथ बातचीत कर रहा है। इस सवाल का जवाब देने में यह निर्धारित करने में मदद मिलेगी कि सिस्टम को पोर्टेबल कैसे होना चाहिए

NOTES

और किस प्रकार के संवादात्मक संदेश शामिल किए जाने चाहिए। एक बच्चा जो अक्सर अपनी बहन के साथ चुट्स और सीढ़ियों को बजाता है, उस गतिविधि के बारे में संवाद करने के लिए प्रतीक होना चाहिए। एक बच्चा जिसका परिवार लंबी पैदल यात्रा का आनंद लेता है उसे बहुत हल्का और पोर्टबल सिस्टम की आवश्यकता हो सकती है। सिस्टम का विवरण आमतौर पर होता है। एक भाषण एवं भाषा चिकित्सक, एक विशेष शिक्षक, और/या एक एएसी तकनीशियन द्वारा घनिष्ठ परामर्श में काम किया। शब्दावली का चयन करना पहला कदम है। पहले शब्दों को बच्चे को प्रेरित करना चाहिए-उदाहरण के लिए पसंदीदा खिलौने, गतिविधियों, खाद्य पदार्थों या पेय का नामकरण करना। माता-पिता तथा अन्य देखभाल करने वाले बच्चे की वरीयताओं और जरूरतों में मूल्यवान अंतदृष्टि प्रदान कर सकते हैं। शब्दावली को बच्चे और संस्कृति की संस्कृति को भी प्रतिबिंबित करना चाहिए जिसमें बच्चा एएसी सिस्टम (जेनजेन 2003) का उपयोग करेगा। चूंकि बच्चे एएसी के उपयोग में पुराने तथा अधिक कुशल बन जाते हैं, भावनाओं को संवाद करने में सक्षम होते हैं, प्रश्न पूछते हैं, और अपने साथियों की शब्दावली का उपयोग अधिक महत्वपूर्ण हो जाते हैं।

घर पर और प्रारंभिक शिक्षा व्यवस्था में एएसी का उपयोग करना :

भाषा हस्तक्षेप कार्यक्रम सबसे प्रभावी होते हैं जब वे बच्चे की प्राकृतिक भाषा-सीखने की सेटिंग्स (उदाहरण के लिए घर, स्कूल या समुदाय में) होते हैं तथा जब बच्चे का परिवार सक्रिय रूप से शामिल होता है। (Wetherby & Prizant 1992; राट्रीय शोध परिषद 2001; आगे के शोध के लिए "एएसी सिस्टम की प्रभावशीलता पर अनुसंधान" देखें)। अधिकांश माता-पिता और बाल देखभाल प्रदाताओं जिनके पास एएसी सिस्टम के साथ बहुत कम या कोई अनुभव नहीं है, उन्हें आमतौर पर एक भाषण चिकित्सक से पेशेवर मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है। एक प्रणाली का उपयोग शुरू करने के लिए। जल्द ही वे सिस्टम के उपयोग और निरंतर विकास में सक्षम और रचनात्मक बन जाते हैं। एएसी का उपयोग करते समय घर पर सिस्टम, यह महत्वपूर्ण है कि परिवार अपने दैनिक दिनचर्या बनाए रखें। पेशेवर परिवारों को अपनी सामान्य गतिविधियों में सिस्टम को शामिल करने में सहायता कर सकता है।

नाटक प्रणाली के दौरान चार साल के साथ एक एएसी प्रणाली का उपयोग कर एक मां का उदाहरण यहां दिया गया है: जूलियन, ब्लू, लाल पीले एवं

NOTES

सफेद नाटक के अलग-अलग फोटो के साथ क्लारा ए प्लेक्सीग्लस चित्र बोर्ड दिखाता है। प्रत्ये तस्वीर बोर्ड के एक अलग कोने से जुड़ा हुआ है। जूलियन ने क्लारा से पूछा, "नाटक के भाग का कौन सा रंग आपको पसंद आएगा"। जब क्लारा नीली नाटक की तस्वीर को इंगित करके अपनी पसंद बनाती है, तो जूलियन ने उसे नाटक आटा और कहा, "यहां नीली नाटक आटा है जिसे आपने पूछा था। "जूलियन ने अगली बार संचार आटा (जिसमें रोलिंग पिन और कुकी कटर) के साथ उपयोग की जाने वाली औजारों की तस्वीरें सम्मिलित होती हैं, लेकिन वह उपकरण रखती हैं।

जब भी वह एक अलग उपकरण चाहती है तो क्लारा को अपनी पसंद के टूल की तस्वीर को इंगित करना होता है। क्लारा इस एएसी सिस्टम का उपयोग करता है क्योंकि उसके पास एक और जटिल प्रणाली सीखने की क्षमता है और यह सीखने की प्रक्रिया में पहला कदम है। अपने पूरे खेल में, जूलियन क्लारा से बात करती है कि वह क्या कर रही है तथा उसके एएसी सिस्टम के साथ जो विकल्प बनाती है उसके बारे में।

कक्षा में एक प्रणाली को एकीकृत करना :

प्रारंभिक शिक्षा सेटिंग में एक एएसी प्रणाली को चल रही गतिविधियों में एकीकृत किया जाना चाहिए। प्रोफेशनल, जैसे कि भाषण चिकित्सक, विशेष तथा प्रारंभिक हस्तक्षेपकर्ता, एएसी का उपयोग करने में अनुभवी, बाल देखभाल प्रदाताओं के साथ सहयोग कर सकते हैं, ताकि यह निर्धारित किया जा सके कि बच्चा सिस्टम का उपयोग कैसे कर सकता है दिनचर्या और खेल गतिविधियों। शिक्षक समूह में अन्य बच्चों को एएसी प्रणाली को समझने एवं बच्चे के साथ संवाद करने के लिए इसका उपयोग करने में सहायता कर सकत हैं। वयस्कों को बात करना जारी रखना चाहिए और बच्चे को आवाज या बोलने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। कार्यक्रम के दैनिक दिनचर्या के दौरान एएसी प्रणाली का उपयोग करने का एक उदाहरण यहां दिया गया है: चार वर्षीय डिएगो और उनकी जुड़वां बहन एम्मा अपने पिता मैनी के साथ बाल देखभाल केंद्र पहुंचती हैं। डिएगो को सुनने और समझने में गंभीर श्रवण हानि है।

भाषण एम्मा की सुनवाई सामान्य है। शैनन, शिक्षक उन्हें नमस्कार, HI पर हस्ताक्षर। मैनी और डिएगो ने HI को वापस साइन किया तथा एम्मा शैनन को एक सुप्रभात गले लगाती है। आज सब कैसे हैं?

शैनन पूछता है, और एक संक्षिप्त विनिमय के बाद, उसने कहा ठीक है, बच्चे। अपने जैकेट ले लो और उन्हें लटकाओ। वह जैकेट ऑफ पर हस्ताक्षर करती है। तथा बच्चों के कब्बे में हुक को इंगित करती है। जुडवां अपने पिता को अलविदा कहते हैं। शैनन, प्ले पर हस्ताक्षर करते समय कहते हैं, अब एक नाटक गतिविधि चुनने का समय है। एम्मा जल्दी से ब्लॉक चुनती है और शैनन को बताती हैं कि वह चिड़ियाघर बनाना चहता है। डिएगो संकेत पेंट। शैनन कहते हैं (और संकेत) ग्रेट, डिएगो। आप ईजेल पर ब्रश के साथ पेंट जा सकते हैं। पूरे दिन शैनन ने डायगो के साथ साइन एवं बोली जाने वाली भाषा के साथ बातचीत की, जिससे उन्हें अपनी आवश्यकताओं को संवाद करने के लिए दोनों संकेत और भाषण का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया गया। हर दिन के अंत में, जुड़वा घर जाने के बाद, वह अगले दिन डिएगो को पेश करने के लिए कई नए संकेत सीखती है। टीचर्स परिवार एएसी सिस्टम के लिए एक बच्चे का मूल्यांकन करने, सिस्टम की खरीद के लिए सुरक्षित धनराशि रखने, और व्यवस्था करने के लिए समुदाय एजेंसियों के साथ सहयोग करके संसाधनों को प्राप्त करने में सहायता कर सकते हैं। उन लोगों के लिए प्रशिक्षण जो बच्चे को सिस्टम का उपयोग करना खीखने में सहायता करेंगे। कुछ परिवारों के पास निजी स्वास्थ्य बीमा होता है जो भाषण और भाषा चिकित्सा और एएसी सिस्टम के लिए भुगतान करता है। सार्वजनिक स्कूलों से विशेष शिक्षा सेवाएं प्राप्त करने वाले तीन और बच्चे सहायक कतनीक प्राप्त कर सकते हैं।

सेवाएं प्रदान की जाती हैं हालांकि विकलांग व्यक्ति शिक्षा अधिनियम (आईडीईए; भाग बी, धारा 619; 34 सीएफआर और 300.308) के तहत स्कूल प्रणाली, यदि सेवाओं को किसी बच्चे की व्यक्तिगत शिक्षा योजना (आईईपी) में निर्दिष्ट किया गया है। सेवाओं में बच्चे की आवश्यकताओं का मूल्यांकन करना शामिल हो सकता है, जो सहायक प्रौद्योगिकी उपकरणों (जैसे एएसी सिस्टम) के अधिग्रहण के लिए उपलब्ध कराता है, तथा उपकरणों के उपयोग में परिवारों और पेशेवरों के लिए प्रशिक्षण और सहायता प्रदान करता है। इसके अतिरिक्त केस–दर–मामले आधार पर, आईडीईए स्कूल के खरीदे गए सहायक प्रौद्योगिकी उपकरणों को किसी बच्चे के घर या अन्य सेटिंग में उपयोग करने की अनुमति देता है।

तीन साल से कम उम्र के बच्चों के लिए, यदि सहायक तकनीकी की पहचान बच्चे की व्यक्तिगत परिवार सेवा योजना (आईएफएसपी) के हिस्से के रूप में की जाती है तथा यदि परिवार ने मेडिकेड या स्वास्थ्य बीमा जैसे वित्त पोषण

के अन्य सभी संभावित स्रोतों को समाप्त कर दिया है, तो इसे बिना किसी कीमत पर प्रदान किया जाना चाहिए। आईडीईए (34 सीएफआर और 303. 527) के भाग सी के तहत पारिवारिक की भुगतान करने में असमर्थता के कारण कोई योग्य बच्चा सहायक प्रौद्योगिकी उपकरण या सेवा से इनकार नहीं किया जा सकता है। एएसी के लिए वित्त पोषण के सम्बन्ध में अतिरिक्त जानकारी बढ़ती और वैकल्पिक संचार के लिए वेब संसाधन में सूचीबद्ध एनईसीटीएसी वेबसाइट पर दिए गए लिंक पर पाई जा सकती है।

बधिरता वाले छात्रों के अभिविन्यास तथा शैक्षिक आवश्यकताओं को सम्बोधित करना :

बच्चे अपने पर्यावरण के सम्बन्ध में सीखते हैं क्योंकि वे इसके माध्यम से जाते हैं लोगों और वस्तुओं, आकारों, और दूरी के बारे में आत तौर पर विकाशील बच्चों के लिए दृष्टि और सुनवाई की इंद्रियों की खोज के लिए सबसे बड़ी पेरणा प्रदान करती है। ये बच्चे अपने स्वयं के शरीर और आंदोलन की अपनी क्षमताओं को समझने में बढ़ते हुए अपने आसपास के बारे में जानकारी इकट्ठा करने के लिए अपनी दृष्टि तथा सुनवाई का उपयोग करेंगे। खिलौनों या लोगों की दृष्टि और आवाज या वस्तुओं की आवाज उन्हें स्थानांतरित करने और खोजने के लिए प्रोत्साहित करती है। जैसे-जैसे वे ऐसा करते हैं, वे संवेदी जानकारी की एक अद्‌भुत श्रृंखला को इकट्ठा करते हैं, पहचानते हैं और व्याख्या करते हैं। एक बच्चा जो बहरा है, उसे अपने पर्यावरण को कम से कम या विकृत दृश्य एवं श्रवण जानकारी के साथ समझना सीखना चाहिए। सीमित दृष्टि और/ या सुनवाई प्राकृतिक जिज्ञासा और आगे बढ़ने के लिए प्रेरणा को रोक सकती है। एक समूह के रूप में, बधिर-अंधेरे सीखने वाले लोग काफी विविध हैं और संयुक्त सुनवाई और दृष्टि हानि के अलावा शारीरिक, संज्ञानात्मक या स्वास्थ्य समस्याओं वाले बच्चों को सम्मिलित कर सकते हैं। कुछ अंदर जाने के दौरान असुरक्षित या भयभीत महसूस कर सकते हैं। एक पर्यावरण वे न तो देख सकते हैं और न ही स्पष्ट रूप से सुन सकते हैं। अन्य ट्रैक टीम पर चल सकते हैं या मोटरसाइकिल व्हीलचेयर का उपयोग कर सकते हैं। कुछ भाषण या साइन लैंग्वेज के साथ संवाद करते हैं, जबकि अन्य लोगों के पास उस पर्यावरण के बारे में बुनियादी अवधारणाओं या उसमें पाए जाने वाली वस्तुओं के सम्बन्ध में बुनियादी अवधारणाओं को समझने के लिए पर्यावरण में पर्याप्त अनुभव नहीं हो सकते हैं। यह जरूरी है कि बहरे-अंधेरे वाले बच्चे सीखने

NOTES

के अवसर और निर्देश प्राप्त करें जो उद्देश्यपूर्ण आंदोलन को सुविधाजनक बनाए। अभिविन्यास और गतिशीलता (ओ एंड एम) निर्देश उन छात्रों को प्रदान करता है जो अपने पर्यावरण को समझने के लिए अवशिष्ट दृश्य, श्रवण और अन्य संवेदी जानकारी का उपयोग करने के लिए आधारभूत कौशल के एक सेट के साथ बहरे हैं। बहरे-अंधेरे वाले बच्चे के लिए, आंदोलन इकट्ठा करने का अवसर है।

संवेदी जानकारी, संवाद करने तथा विकल्पों को बनाने के लिए। ओ एंड एम निर्देश प्रदान करता है। अवसरों और कौशल जो पर्यावरण के बारे में छात्र की जागरूकता को बढ़ा सकते हैं, जिसके परिणामस्वरूप प्रेरणा, स्वतंत्रता और सुरक्षा में वृद्धि हुई है।

निम्नलिखित उदाहरण पर विचार करें: एलेक्स, एक दृष्टि और अनुवाईहीन, बच्चा, अपने बेडरूम में सेजन, उनके भाई जो बहरे-अंधे हैं, के साथ खेल रहा है। जब एलेक्स सामने वाले दरवाजे खोलता है, तो वह मानता है कि उसकी मां काम से घर आ गई है। यह व्याख्या तब मजबूत होती है जब वह परिवार के कुत्ते को उत्तेजित करता है। दरवाजे पर अपनी मां को बधाई देने की इच्छा रखते हुए, वह जल्दी से अपने शयनकक्ष से चलता है, सुरक्षित रूप से फर्श पर बिखरे हुए कई खिलौनों से परहेज करता है, हॉल की यात्रा जारी रखता है।

रसोईघर और डाइनिंग टेबल के चारों ओर घूमना। अपनी मां को बधाई देने के दौरान, वह देखता है कि वह एक बड़ा स्क्वायर कार्डबोर्ड बॉक्स ले जार रही है। लेकिन लोगों से पहचानते हैं पसंदीदा पिज्जा रेस्तरां, वह जानता है कि उसने अपना पसंदीदा रात्रिभोज, एक परेशानी पिज्जा लाया है। उत्साह से वह, बौक्स को रसोई में वापस ले जाने की पेशकश करता है और इस कार्य को सफलतापूर्वक पूरा करता है।

इस बल्कि नियमित घटना में, केवल कुछ ही मिनटों में फैले हुए, एलेक्स ने इकट्ठा और व्याख्या की है। बहुत दृश्य और श्रवण जानकारी। न केवल वह समझता है कि उसकी मां घर है, लेकिन यह भी कि वह उसे सामने के दरवाजे पर नमस्कार कर सकता है अगर वह जल्दी करता है, और वे अपने पसंदीदा खाने वाले हैं भोजन। क्षणों में, उन्होंने एकत्रित और संसाधित संवेदी जानकारी उन्हें आसान पहुंच प्रदान की। अपने पर्यावरण के लिए, उसे घर के द्वारा सुरक्षित आंदोलन की इजाजत दी। उसे तत्काल भविष्य की गतिविधि के सम्बन्ध में सुराग प्रदान किया।

NOTES

जेसन के लिए, हालांकि, परिदृश्य थोड़ा अलग है। वह जानता है कि किसी ने घर में प्रवेश किया है क्योंकि कुत्ते के साथ खेल रहा था जब जानवर अचानक उत्साहित हो गया, छाल शुरू कर दिया, तथा फिर कमरे से बाहर भाग गया। जेसन आंशिक रूप से देखकर या इस गतिविधि में से कुछ को समझ या सुन सकता है उसे कुत्ते को सतर्क महसूस कर रहा है। अपने ओ एंड एक निर्देश के परिणामस्वरूप, वह अब हाल में यात्रा करता है। खिलौनों के चारों ओर सुरक्षित रूप से स्थानांतरित करने के लिए एक सुरक्षात्मक तकनीक का उपयोग करना। वह रसोई के माध्यम से चलता है और डाइनिंग टेबल के आसपास अब तक, वह पिज्जा की गंध महसूस कर सकता है और पिज्जा है उत्साहित हो जाता है उनके पसंदीदा, खाद्य पदार्थों में से एक है। उनके ओ एंड एम प्रशिक्षण ने उन्हें सिखाया है कि उनके माध्यम से सुरक्षित रूप से स्थानांतरित किया जाए। पर्यावरण, यह निर्धारित करना कि उसकी मां कहां हो सकती है। उसकी मां उसे सलाम करती है, उसे महसूस करने की अनुमति देती है।

गर्म बॉक्स, और संचार करता है कि उसने घर पिज्जा लाया है। रसोई घर जाने के लिए निर्देशित यात्रा। ओ एंड एम निर्देश से, जेसन ने उपलब्ध संवेदी जानकारी की व्याख्या और उपयोग करना सीखा है। वह जानता है कि पर्यावरण के द्वारा सुरक्षित रूप से कैसे स्थानांतरित किया जाए और उसे सफलता के साथ पुरस्कृत किया जाता है। वह जानना चाहता था कि वह क्या जानना चाहता था।

निर्देशक रणनीतियां :

मूल्यांकन के साथ शुरू होने वाली प्रक्रिया के रूप में, छात्र के आईईपी या आईएफएसपी में पहचाने जाने वाले ओ एंड एम निर्देश को देखना सर्वोत्तम होता है। प्रक्रिया चक्रीय एवं चल रही है। एक बार प्रोग्राम विकसित और कार्यान्वित हो जाने के बाद, मूल्यांकन जारी है, जिसमें डेटा के लिए आवश्यक परिवर्तनों के सम्बन्ध में निर्णय लेने के लिए उपयोग किया जाता है। प्रत्येक बच्चे के कार्यक्रम के सभी निर्देशक घटकों को आवश्यकतानुसार संशोधनों के साथ प्रभावशीलता के लिए निरंतर मूल्यांकन किया जाना चाहिए।

मूल्यांकन

ओ एंड एक कौशल का प्रारंभिक मूल्यांकन भावी कार्यक्रम की योजना के लिए आधार प्रदान करता है। उचित मूल्यांकन तकनीकों की पहचान और कार्यान्वयन के लिए ओ एंड एम विशेषज्ञ अन्य टीम के सदस्यों के साथ मिलकर काम करेगा। आकलन में निम्नलिखित सम्मिलित हो सकते हैं:

NOTES

- अनौपचारिक छात्र अवलोकन, प्राकृतिक वातावरण में आयोजित किया जाता है जिसमें छात्र बातचीत करता है (घर, स्कूल, आदि)।
- संचार कौशल करने वाले साक्षात्कार।
- अभिविन्यास और गतिशीलता कौशल का औपचारिक मूल्यांकन।
- सीखने के तरीकों का आकलन।
- विकास का आकलनः संवेदी कौशल। अनुभूति। मोटर कौशल (सकल और ठीक)।
- पर्यावरण विश्लेषण पर्यावरण विश्लेषण मूल्यांकन प्रक्रिया का एक प्रमुख घटक है। जिसमें छात्र सम्मिलित हैं, वे विभिन्न वातावरण सुरक्षा के लिए मूल्यांकन किए जाने चाहिए। किसी भी संशोधन की आवश्यकता जो बच्चे की यात्रा करने तथा पर्यावरण को समझने की क्षमता को बढ़ा सकती है, उसका मूल्यांकन भी किया जाना चाहिए। कार्यक्रम विकास और कार्यान्वयन संचार।

संवाद करने के तरीकों का विकास करना उन बच्चों के लिए सबसे महत्वपूर्ण चुनौती प्रस्तुत करता है जो बहरे-अंधे हैं। संचार मुद्दों को निर्देश के प्रत्येक पहलू में संबोधित किया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए, अवधारणा विकास जैसे क्षेत्रों में निर्देश की योजना को ध्यान में रखना चाहिए कि यद्यपि बच्चा हॉलवे चौराहे के आकार या कॉन्फिगरेशन को समझने में सक्षम हो सकता है, लेकिन उसे विशिष्ट भाषा (त्रिकोण या सिखाया जा सकता है) कोने उस धारणा के लिए। बच्चे जो बहरे-अंधे हैं, स्पर्श चिह्न सहित विभिन्न प्रकार के संचार तरीकों का उपयोग करते हैं। भाषा या अमेरिकी साइन लैंग्वेज (एएसएल), भाषण, इशारे, उंगलियों की वर्तनी, संवर्द्धन उपकरण, चित्र, वस्तुओं, शरीर की गतिविधियों, व्यवहार तथा चेहरे की अभिव्यक्तियां। निर्देश रणनीतियों में बच्चे के प्राथमिक संचार विधियों को शामिल करना होगा। मोटर विकास में सकल और बढ़िया मोटर कौशल दोनों शामिल हैं और छात्र की मोटर क्षमताओं को विकसित करने और बढ़ाने पर केंद्रित है। इन कौशलों में चलने या दौड़ने जैसी बड़ी मांसपेशियों की गति, साथ ही हाथ और कलाई की गति से जुड़े बेहतर कौशल सम्मिलित हैं। विकास को सामान्य संज्ञानात्मक विकास से निकटता से जोड़ा जाता है। इसमें वस्तुओं, आकारों और वस्तुओं के कार्यों, साथ ही स्थानिक और स्थितिगत की समझ शामिल है।

इसमें किसी के अपने और किसी अन्य के सम्बन्ध में जागरूकता और ज्ञान, शरीर के अंगों की समझ, उनकी आंदोलन क्षमताओं तथा शरीर के अंग संबंध

ों का ज्ञान शामिल है। विकास के अलावा पर्यावरण के सम्बन्ध में समझ और ज्ञान भी शामिल है। उदाहरण के लिए, एक बच्चा जो बहरा-अंधेरा है, विशिष्ट निर्देश के बिना बहु इतिहास भवन की अवधारणा को समझ नहीं सकता है। वह जान सकता है कि वह सीढ़ियों की उड़ान पर चला गया है, लेकिन क्या वह समझता है कि वह उस हॉलवे के ऊपर है? क्या वह जानता है कि उसके ऊपर अभी भी कई कहानियां हो सकती हैं?

संवेदी विकास अवशिष्ट दृष्टि और सुनवाई, साथ ही साथ स्पर्श, घर्षण, एवं संवेदनात्मक इंद्रियों की इंद्रियों का उपयोग करने की एक छात्र की क्षमता को अनुकूलित करता है। बहरे-अंधेरे वाले अधिकांश छात्र अवशिष्ट सुनवाई और दृष्टि रखते हैं, और उन्हें इस संवेदी जानकारी का उपयोग करने में सहायता करने के लिए प्रदान किया जा सकता है ताकि वे अपनी इंद्रियों के माध्यम से एकत्रित जानकारी को समझ सकें। बच्चे संवेदी जानकारी की व्याख्या करने के के लिए सिखाना महत्वपूर्ण है, जिससे वह उद्देश्यपूर्ण आंदोलन के लिए इस जानकारी का उपयोग करने में सहायता कर रहा है।

अभिविन्यास कौशल छात्रों को पर्यावरण में उद्देश्य से स्थानांतरित करने के लिए संवेदी जानकारी का उपयोग करने में सक्षम बनाता है। अभिविन्यास कौशल निर्देश छात्रों को पर्यावरण के संकेतों (उदाहरण के लिए, ध्वनियां, गंध और दृश्य या स्पर्श उत्तेजना) का उपयोग करने के लिए डिजाइन किया गया है ताकि वर्तमान स्थान तथा अन्य स्थानों के सापेक्ष इस स्थान के बारे में जानकारी प्रदान की जा सके। उदाहरण के लिए, एक बच्चा यह जानना सीख सकता है कि वह कॉफी के बर्तन या रहने वाले कमरे की गंध से रसोई में है क्योंकि उसके पैरों के नीचे कालीन की सनसनी है। यह जानकारी पर्यावरण के सम्बन्ध में उसकी समझ को बढ़ाती है और इसके भीतर कैसे स्थानांतरित होती है।

गतिशीलता कौशल उन ओ एंड एम तकनीकों को शामिल करता है जो पर्यावरण के द्वारा सुरक्षा और आसानी से आंदोलन को बढ़ावा देते हैं। इन कौशल में किसी अन्य व्यक्ति (निर्देशित यात्रा) आत्म-सुरक्षा कौशल और गन्ना यात्रा के साथ चलना शामिल है। कुछ के लिए, इनमें कुत्ते गाइड तथा इलेक्ट्रॉनिक ट्रैवल एड्स का उपयोग भी शामिल है। छोटे बच्चों के लिए, इन गतिशीलता कौशल में प्रारंभिक उद्देश्यपूर्ण शामिल होगा।

मूल्यांकन

आईईपी में सभी लक्ष्यों और उद्देश्यों को मानदंड कहा जाना चाहिए ताकि टीम के सदस्य बच्चे की प्रगति और निर्देशिक रणनीतियों की प्रभावशीलता का

NOTES

मूल्यांकन कर सकें। यह आवश्यक है कि टीम के सदस्य आईईपी लक्ष्यों एवं उद्देश्यों और प्रत्येक के लिए स्थापित मानदंण्डों को समझें। किसी बच्चे के शैक्षणिक कार्यक्रम में लागू सभी रणनीतियों का मूल्यांकन प्रभावशीलता के लिए किया जाना चाहिए तथा आवश्यकतानुसार बदला जाना चाहिए।

गतिशीलता कौशल की मूल बातें :

कई पाठ्यक्रम गतिशीलता कौशल और तकनीकों पर चर्चा करते हैं जो छात्रों के लिए उचित हैं जो बहरे-अंधे हैं (संसाधन सूची देखें)। ये कौशल और तकनीक पर्यावरण के माध्यम से आंदोलन के तरीके प्रदान करती हैं जो बच्चे को सुरक्षित महसूस करने तथा भाग लेने में सक्षम बनाती हैं। विभिन्न प्रकार की गतिशीलता कौशल और प्रत्येक कौशल के उद्देश्य की बेहतर समझ का एक अवलोकन प्रदान करने के लिए मूलभूत जानकारी प्रस्तुत की जाती है। अतिरिक्त जानकारी के लिए, एक ओ एंड एम विशेषज्ञ से परामर्श करना आवश्यक है जो किसी विशेष बच्चे के लिए उपयुक्त विशिष्ट गतिशीलता कौशल को परिष्कृत और वैयक्तिकृत करने में सहायता कर सकता है, व्यक्तिगत निर्देशक कार्यक्रम विकसित कर सकता है, और अतिरिक्त संसाधन जानकारी की सिफारिश कर सकता है।

निर्देशित यात्रा

कई लोग दृष्टि मार्गदर्शिका यात्रा के रूप में किसी अन्य व्यक्ति के साथ चलने में शामिल गतिशीलता तकनीक का उल्लेख करते हैं। हालांकि, एक प्रभावी मार्गदर्शिका होने के लिए आवश्यक नहीं है, और इसलिए मार्गदर्शित यात्रा और मानव गाइड शब्द हैं इस तकनीक का उपयोग करते हुए, बहरे-अंधेरे बच्चे गाइड की बांह पर निरंतर पकड़ बनाए रखते हैं, जबकि वे पर्यावरण के माध्यम से बाधाओं के चारों ओर गाइड का पालन करते हैं। एक पकड़ बनाए रखने के लिए जो यात्रा में सक्रिय भागीदारी की अनुमति देता है, बच्चे गाइड की बांह को समझना चाहिए ताकि अंगूठे को बाहर की ओर खींचा जा सके, शेष अंगुलियों को हाथ के अंदर पकड़ना। बच्चे आधे कदम पीछे और गाइड के पक्ष में है, जिससे गाइड' हथियारों के आंदोलन के माध्यम से पर्यावरण के सम्बन्ध में संकेत देते हैं, जैसे कि संकेतों से संकेत मिलता है कि वे सीढ़ियों, दरवाजे या संकीर्ण जगहों पर आ रहे हैं। मार्गदर्शिका मार्गदर्शक हाथ को उसकी पीठ के पीछे ले जा सकती है ताकि यह इंगित किया जा सके कि वे संकीर्ण स्थान पर आ रहे हैं तथा चलना चाहिए एकल फाइल। सीढ़ियों और दरवाजों को इंगित करने के लिए अन्य संकेत दिए जा सकते हैं।

परिवारों और टीम के सदस्यों के लिए व्यावहारिक रणनीतियां :

1. अपने बच्चे या छात्र के लिए अपने सभी क्षेत्रों का पता लगाने के अवसर प्रदान करें। पर्यावरण, विशेष रूप से घर। बच्चे को स्थिर स्थलों का पता लगाने में सहायता करें। संदर्भ बिंदु प्रदान करें। उदाहरण के लिए, एक बच्चा जानता है कि वह अपने विशेष कमरे के हैंडल के साथ अपने ड्रेसर का पता लगाने के बाद अपने बेडरूम में है। उसे इस ड्रेसर को खोजने की अनुमति देना सुनिश्चित करें ताकि वह जान जाए कि वह बेडरूम में कब है।

2. अपने बच्चे या छात्र को विभिन्न प्रकार की सतहों का अनुभव करें जैसे कालीन, टाइल वाले फर्श, विनाइल फर्श, घास, फुटपाथ, रेत, असमान फुटपाथ आदि।

3. अपने बच्चे या छात्र को गतिविधियों में पूरी तरह भाग लेने की अनुमति दें। उदाहरण के लिए, यदि वह खिलौलों के साथ खेलना चाहता है, तो उसे उस स्थान पर जाने में मदद करें जहां खिलौने स्थित हैं और खिलौने का चयन करें जो उसके हित में है। एक साथ खेल क्षेत्र में वापस यात्रा करें। खिलौनों को आसानी से लाए जाने की तुलना में, यह प्रक्रिया उन्हें अपने पर्यावरण को और अधिक समझने की अनुमति देती है।

4. 'संदर्भ बिंदु' का पूरा उपयोग करें, उन सुराग जो हमें यह जानने में सहायता करते हैं कि हम कहां हैं। एक परिचित स्थलचिह्न का पता लगाने के बाद, हम सभी को एक अपरिचित शहर में खो दिया है, केवल 'पुनर्विचार' बनने के लिए। इसी तरह, जिन बच्चों को बहरे-अंधेरे हैं उन्हें संदर्भ बिंदुओं का उपयोग करना सीखना है ताकि वे अपने पर्यावरण में उन्मुख बने रह सकें। संदर्भ बिंदु श्रवण, स्पर्श, घर्षण, या दृश्य हो सकता है।

5. अपने बच्चे या छात्र को यथासंभव स्वतंत्र रूप से यात्रा करने के लिए प्रोत्साहित करें। अगर वह स्वतंत्र रूप से चल सकता है, तो उसे ऐसा करने की अनुमति दें। यदि वह एक गाइड के साथ चलना सीख रहा है, तो उसका हाथ पकड़ो तथा अपने साथ खींचें। यदि वह वांछित खिलौने का पता लगाने में सक्षम हैं तो उसे लाकर उसे 'जादुई रूप से प्रकट' करने की अनुमति प्रदान करें।

6. सुनिश्चित करें कि प्रकाश उन बच्चों के लिए पर्याप्त है जिनके पास अवशिष्ट दृष्टि है। उच्च उपयोग विरोधाभास कुछ छात्रों की सहायता भी

कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, एक अंधेरे कालीन पर एक हल्की गलीचा का उपयोग करने से बच्चे को एक अलग कमरे में संक्रमण की पहचान करने में सहायता मिल सकती है। भौतिक सीमाओं का उपयोग करें ताकि बच्चा अपने परिवेश को बेहतर ढ़ंग से समझ सके। एक बड़े कमरे के बीच में मनमानी जगह की तुलना में दीवार विभाजक से घिरे एक खिल क्षेत्र को समझना बहुत आसान है।

7. बच्चे या छात्र के लिए समस्याओं को हल करने के अवसर प्रदान करें। उसे समय से पहले उसे बचाने से बचें।

8. उन बच्चों के साथ परिचित खिलौनों तथा वस्तुओं को एक बच्चे या छात्र सहयोगी की सहायता करें जिसमें उनका उपयोग किया जा सके। उदाहरण के लिए, स्नान के लिए बाथरूप में जाने से पहले या स्कूल जिमनासियम जोने से पहले गेंद को धोने से पहले उसे कपड़े धोएं।

मुद्दे

एक बदलती जनसंख्या

संयुक्त राज्य अमेरिका के भीतर 1963-64 रूबेला महामारी, जो बहरे अंधेरे वाले बच्चों को शिक्षित करने के लिए एक संघीय दृष्टिकोण के निर्माण के लिए उत्प्रेरक के रूप में कार्य करती थी, ने उन बच्चों की आबादी की शुरूआत की जो जन्मजात रूप से बहरे अंधे थे, जो अद्वितीय शैक्षिक आवश्यकताओं को संवादात्मक तथा व्यवहारिक रूप से प्रस्तुत करते थे। (एनरस्टवेड 1966)। जन्मजात रूबेला सिंड्रोम (सीआरएस) के परिणामस्वरूप बहरे अंधेरे उत्पन्न हुए बहुत से बच्चे अतिरिक्त शारीरिक, संज्ञानात्मक और स्वास्थ्य से संबंधित चुनौतियों का अनुभव करते थे (शतरंज, फर्नाडीज, और कॉर्न, 1978)। कुछ शोधकर्ताओं ने सीआरएस (शतरंज और फर्नांडीज, 1980) से पैदा हुए व्यक्तियों में दुर्भावनापूर्ण व्यवहार की उपस्थिति की भी सूचना दी। बधिर अंध ापन के क्षेत्र के रूप में अविभाज्य के साथ एक साथ विकसित किया बच्चों, चिकित्सकों तथा शोधकर्ताओं की इस आबादी के प्रभाव को चुनौतीपूर्ण व्यवहारों (हार्ट, 2006) से निपटने और बदलने के लिए बच्चों के लिए विश्वसनीय संचार प्रणालियों के साथ-साथ शिक्षण रणनीतियों के विकास के लिए हस्तक्षेप की तलाश करने के लिए एक साथ चुनौती दी गई थी। 1986-1995 के दशक के दौरान, सीआरएस की शिक्षा तथा पुनर्वास सेवाओं (रिगियो, 1992) प्राप्त करने वाले बच्चें और वयस्कों की आबादी का लगभग एक तिहाई हिस्सा था 2007 में।

NOTES

किलोरन ने राष्ट्रीय बहरे अंधेरे बच्चे की गिनती की दस साल की समीक्षा लिखी और पाया कि बधिर अंधापन के शीर्ष दस प्रमुख कारण सूचीबद्ध हैं, जो सूचीबद्ध बच्चों के 70% में स्थिति के लिए उत्तरदायी है, एक दशक में स्थिर रहा है लेकिन रैंक आदेश बदल गया है। चार्ज सिंड्रोम को बधिर अंधापन से जुड़े अग्रणी एकल सिंड्रोम के रूप में पहचाना गया था, जबकि आनुवंशिकता तथा समयपूर्वता रैंक सबसे आम ईटियोलॉजी (किलोरन, 2007) के रूप में थी। किलोरन ने यह भी बताया कि जनगणना में दर्ज 90% बच्चों में अतिरिक्त विकलांगताएं थीं।

परिभाषा

यद्यपि बधिर अंधा शब्द सुनवाई और दृष्टि की पूरी अनुपस्थिति का तात्पर्य है, लेकिन बहरे अंधेरे के रूप में माना जाने वाले अधिकांश बच्चों में कुछ कार्यात्मक दृष्टि या सुनवाई होती है। (एनसीडीबी, 2007)। संघीय परिभाषा राज्यों को वित्त पोषित करने के लिए पात्रता निर्धारित करने के लिए प्रयोग की जाती हैं: बधिर-अंधापन का अर्थ संयोगजनक सुनवाई तथा दृश्य हानि का मतलब है, जिसके संयोजन से इस तरह के गंभीर संचार और अन्य विकास और शैक्षणिक जरूरतों का कारण बनता है जिसे उन्हें विशेष शिक्षा कार्यक्रमों में पूरी तरह से बहरापन वाले बच्चों के लिए समायोजित नहीं किया जा सकता है। बधिर-अंधापन की यह परिभाषा सीएफआर में एकमात्र अक्षमता परिभाषा है जो शैक्षिक नियुक्ति के मामले में विकलांगता को परिभाषित करती है। एक बेहतर अधिक उपयोगी परिभाषा छात्रों की सीखने की आवश्यकताओं और दोहरी संवेदी हानियों के प्रभाव पर केंद्रित होगी। बधिकर अंधापन की मुख्य विशेषता यह है कि नुकसान का संयोजन श्रवण और दृश्य जानकारी तक पहुंच सीमित करता है। बधिक अंधापन वाले बच्चों को उन शिक्षण विधियों की आवश्यकता होती है जो उन बच्चों के लिए भिन्न हैं जिनके पास केवल सुनवाई या दृष्टि हानि है। जब दोनों विजन और सुनवाई प्रभावित होती है, खासकर जन्म से या जीवन में शुरूआती, सीखने और संवाद करने के प्राकृतिक अवसरों को गंभीर रूप से सीमित किया जा सकता है।

यद्यपि बधिक अंधापन की परिभाषा दुनिया भर में भिन्न होती है, लेकिन हानिकारक प्रभावों की सार्वभौमिक मान्यता है कि दोहरी संवेदी हानि पर्यावरण की जानकारी तक पहुंच के साथ-साथ यह स्वीकार करते हैं कि इस अनूठी अक्षमता के लिए विशिष्ट शिक्षण रणनीतियों को सीखने और समर्थन का समर्थन करने की आवश्यकता है।

शैक्षिक प्रोग्रामिंग प्रारंभिक पहचान के सिद्धांत

बधिर बच्चों की पहचान करने के लिए सुनवाई और दृष्टि हानि की प्रारंभिक

पहचान आवश्यक है अंधे तथा उन्हें उचित संवर्धन (चश्मा, श्रवण सहायता, एफएम) प्रदान करने के लिए सिस्टम आदि) जो पर्यावरण सूचना और संचार तक पहुंच को अधिकतम कर देगा, और शैक्षिक प्रोग्रामिंग के लिए जो उनकी आवश्यकताओं को पूरा करता है। अपनी 2009 की रिपोर्ट में शुरूआती रिपोर्ट में शिशुओं की पहचान जो बहरे अंधे हैं, मलोय एट अल। राष्ट्रीय से निष्कर्ष निकाला बधिर–ब्लाइंड चाइल्ड गिनती (एनसीडीबी, 2008) जिसमें उन बच्चो पर डेटा शामिल है जो बहरे–अंधे हैं हर राज्य में 21 साल के माध्यम से जन्म। बच्चे की गिनती के अनुसार, लगभग दोगुनी हैं। 0 से 3 साल की उम्र के बच्चों की उम्र 3 से 6 साल की उम्र के बच्चों की तुलना में, यह सुझाव देते हुए कई बच्चे जो बहरे हैं, 3 साल या उससे अधिक आयु तक राज्य डेफब्लिंड परियोजनाओं में संदर्भित नहीं किया जाता है।

जाहिर है, बच्चों की पहचान की जा रही है क्योंकि वे स्कूल में प्रवेश करते हैं उन वर्षों के दौरान जब प्रारंभिक हस्तक्षेप उनकी भाषा पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाल सकता था तथा संज्ञानात्मक विकास (मलोय एट अल। 2009 मुलर, 2006; नेशनल चाइल्ड गिनती, 2008)। जितनी जल्दी हो सके संगत सुनवाई तथा दृष्टि हानि वाले बच्चों की पहचान करना चाहिए।

परिवारों और युवा वयस्कों के लिए समर्थन और नेतृत्व प्रशिक्षण

बच्चों के परिवारों जो डेफब्लिंड हैं, उनके पास उन विशेषज्ञों से समर्थन तथा प्रशिक्षण तक पहुंच होनी चाहिए जो अपने बच्चों के विकास का समर्थन करने के लिए आवश्यक उपकरणों को हासिल करने के लिए बहरेपन के सम्बन्ध में जानकार हैं। परिवार उनके बच्चों के सबसे शक्तिशाली एवं स्थायी समर्थक हैं (मैकनल्टी, 1995); इसलिए इन परिवारों को उनके बच्चों की अनूठी जरूरतों के लिए समर्थन देने में सहायता करने के लिए समर्थन प्रदान करना महत्वपूर्ण है। इसी तरह, कुछ युवा वयस्क जो डेफब्लिंड हैं, वे भयावहता और उनके परिवारों के छात्रों के लिए समर्थन और सेवाओं के लिए वकालत करने वाले तथा प्रवक्ता के रूप में कार्य कर सकते हैं। किशोर युवाओं के लिए पीछे हटना, प्रशिक्षण और नेतृत्व के अवसर जो लोग हैं, एक बढ़ते राष्ट्रीय नेटवर्क के विकास की सुविधा प्रदान कर सकते हैं।

वकील और प्रवक्ता (कारर, 1995; पार्कर, ब्रूस, स्पियर, रेसा, डेविडसन, 2010)। युवा वयस्कों और किशोर जो बहरे हैं, वे वयस्क सलाहकारों के साथ बात करने से लाभ उठा सकते हैं जो आत्म–वकालत पर दृष्टिकोण प्राप्त करने और पहचान की एक मजबूत भावना विकसित करने के लिए बहरे हैं।

NOTES

बधिर अंधापन में अनुसंधान

डेनब्लिंडनेस के क्षेत्र में किए गए शोध की अंतर्राष्ट्रीय समीक्षा में रोनबर्ग और बोर्ग (2001)। ने निष्कर्ष निकाला कि क्षेत्र में अनुसंधान की कमी इस कारण थी: डेफब्लिंडनेस वाले व्यक्तियों की विषमता, प्रयोगात्मकता डिजाइनों के लिए पद्धति तथा वैज्ञानिक बाधाएं। इन चुनौतियों के बावजूद, पिछले 40 वर्षों में शैक्षणिक शोध प्रकाशित किया गया है जिसमें प्रतिभागियों को विभिन्न आयु (पार्कर, डेविडसन और बांदा, 2007) में बहरापन सम्मिलित किया गया है। समेकित, गुणात्मक और मात्रात्मक दोनों शोध के इस कॉर्पस, चिकित्सकों और माता-पिता मार्गदर्शन करते हैं दोहरी संवेदी हानि वाले छात्रों को शिक्षण और समर्थन के लिए तथापि कई अंतराल अभी भी मौजूद हैं। अनुसंधान जो प्रभावी प्रथाओं तथा उभरते हुए वादा प्रथाओं की पहचान करता है प्रगति के लिए महत्वपूर्ण है। कम-घटना विकलांगता जैसे डेफब्लिंडनेस के लिए, इन शोध प्रयासों का समर्थन करने के लिए विशिष्ट संघीय समर्थन आवश्यक है।

परीक्षापयोगी प्रश्न

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. बहरेपन की जाँच, मूल्यांकन तथा हस्तक्षेप रणनीतियों की व्याख्या कीजिए।

2. बाधिरों के संचार को प्रोत्साहन देने वाले उपकरणों तथा प्रथाओं का उल्लेख कीजिए।

3. बधिरता वाले छात्रों के अभिविन्यास तथा आवश्यकताओं की व्याख्या कीजिए।

4. दैनिक जीवन की गतिविधियों पर बहरेपन एवं अंधेपन के प्रभावों को समझाइए।

लघुउत्तरीय प्रश्न

1. I.E.D.E. के अन्तर्गत बधिरों को परिभाषा का उल्लेख कीजिए।

2. बहरे अंधों के प्रसार से आप क्या समझते हैं?

3. दोहरी संवेदी हानि की परिभाषा दीजिए।

4. दृष्टिविकार तथा वैध अंधापन से आप क्या समझते हैं?

MADHYA PRADESH BHOJ (OPEN) UNIVERSITY
Raja Bhoj Marg (Kolar Road), Bhopal - 462016,
Phone : 91-755-2424660, Fax : 91-755-2424640
Website :www.bhojvirtualuniversity.com